ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक
मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी



प्रथम संस्करण
१९५८
मूल्य चार रुपये



मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

ये अनुवाद

एण्टन पाव्लोविच चेखवके नाटकोंके ये तीनों अनुवाद अंग्रेजीके निम्न अनुवादोंके आधारपर किये गये हैं :

हंसिनी [सीगल] =१, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, एलिसावेता फेन

चॅरीका बगीचा =१, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, अब्राहम यार्मोलिन्स्की
३, एल० नाव्जोरोव [मॉस्को संस्करण]

तीन बहनें =१, कॉन्स्टान्स गार्नेट
२, बॅर्नार्ड गिलबर्ट ग्यॅर्नी

भावके प्रति अधिक सचेत और अर्थके प्रति अधिक आश्वस्त होनेके लिये ही मैंने एकसे अधिक अनुवादोंका सहारा लिया है, फिर भी कह सकनेमें असमर्थ हूँ कि प्रस्तुत अनुवाद कहाँ तक सफल है। इसका कारण आत्म-विश्वासकी कमी नहीं, बल्कि वे मूल अनुवाद ही हैं। वे अनुवाद कहीं-कहीं तो आश्चर्य-जनक रूपसे एक दूसरेसे अलग हैं। मॉस्कोसे अभी "चॅरी-ऑचर्ड"का अनुवाद आया है इसलिये इन सबमें उसे ही सबसे अधिकारी अनुवाद माना जा सकता है। लेकिन स्थान-स्थानपर यह अनुवाद अपने साथी अनुवादोंसे इस हद तक भिन्न हो गया है कि पहले तो मुझे सचमुच विश्वास नहीं हुआ। हिन्दी वाले अर्थका अनर्थ करनेके लिये बदनाम हैं, लेकिन इधर जब दो-तीन सालसे अनुवादोंके चक्करमें पड़नेका दुर्भाग्य हुआ, तो पाया कि इस दिशामें अपने साथी काफी हैं। अंग्रेजीके अनुवादक मूलकी अपेक्षा अपनी ही भाषाके प्रति अधिक सतर्क रहे हैं,

और हिन्दीवाले मूलको ही ऐसा पकड़कर बैठ जाते हैं कि उन्हें अपनी भाषाका ध्यान नहीं रहता।

वस्तुतः भाषा कोई भी हो, अनुवादकों की सीमाएँ सभी जगह प्राय एक जैसी हैं, और चाहे जैसा अच्छा अनुवाद हो, उसकी भाषा-शैली मौलिक रचनाओंसे अलग होती ही है—होनेको बाध्य है। जहाँ भी अनुवाद "मौलिक कृति"-सा लगता है वहाँ निश्चित रूपसे अनुवादक काफी स्वच्छन्दता ले लेता है। उसे अनुवादकी अपेक्षा भावोंका पुनर्कथन कहना अधिक अच्छा है।

खैर, फिर भी प्रस्तुत अनुवादकी कमियों और कमजोरियोंके लिये यह सब बचाव काफी नहीं है, निश्चित रूपसे वे मेरी ही कमियाँ और

५-ए ग्रीकचर्च रो
कलकत्ता—२६,
२५-२-५८

—राजेन्द्र यादव

चेखव : जीवन और दर्शन

"यह चेखव कौन है ? यह कहाँसे धरती फोड़कर निकल पड़ा ?"

"हमारे पैसे वापिस दो।"

"नाटकवाले ऐसे खेल क्यों देते हैं ?"

"लगा दो आग।"

उस दिन अलैक्जेन्द्रिस्की थियेटरमें इतना-हल्ला-गुल्ला और गुल गपाड़ा मचा था कि कान पड़ी बात नहीं सुनाई देती थी। लोग सीटोंसे उछल रहे थे, गालियों और तने हुए घूँसोंसे वातावरण गूँज रहा था, और जिस नाटक 'सीगल' का जनता इस तरह स्वागत कर रही थी उसका लेखक कानों तक ओवरकोट चढ़ाए चुप-चाप हॉलसे बाहर भाग आया था। तीन बजे सुबह तक चेखव पीटर्स वर्गकी सड़कों पर पागलकी तरह भटकता फिरा, उसने निश्चय कर लिया कि चाहे सात-सौ साल और जीवित रहना पड़े— नाटक नामकी कोई चीज अब नहीं लिखनी। आजसे नौ वर्ष पहले मॉस्कोमें खेले गये अपने 'आइवानोव' नाटकका जनता द्वारा किया गया ऐसा ही 'स्वागत' उसके दिमागमें घूम रहा था। दूसरे दिन अखबारोंमें उसने पढ़ा कि नाटकोंके इतिहासमें इससे अधिक असफल नाटक आज तक नहीं हुआ।

असलमें जनताके लिये 'आइवानोव' की विषय-वस्तु और 'चेखव' दोनों ही नये थे। अभी तक जनता तो जानती थी हास्यरसके प्रसिद्ध लेखक 'एण्टन चैखोन्ते' को। चेखवने अपनी प्रारम्भिक रचनाएँ इसी नामसे लिखी थीं। और 'मॉस्को आर्ट थियेटर' द्वारा खेले गये उसी चेखवके 'सीगल' 'अंकिलवान्या' 'थ्रीसिस्टर्स' 'चॅरी ऑर्चर्ड' ने नाटकोंके इतिहासमें अभूत

पूर्व सफलता पाई, लेकिन पहली असफलताओंके प्रभावने उसे थियेटरों और अभिनेताओंके प्रति इतना कटु और असहिष्णु बना दिया कि उसने अक्सर लिखा "तुम इन थियेटरोंको शिक्षा और आत्मनिर्माणकी जगह बताते हो, इनमें गुलगपाडेके सिवा कुछ भी नहीं होता। यह थियेटर शहरकी बीमारियाँ हैं।" (प्लैश्चयेवको पत्र) तिखोनोवसे एक बार उसने कहा था—"ऐसा लगता है कि हमारे यहाँ अभिनेताओंका असभ्य और अशिक्षित होना एक स्वयंसिद्ध नियम बन गया है जब जरा नये-नये होते हैं तो ये लोग हाथ-पाँव पटकते और खच्चरोंकी तरह हिनहिनाते हैं और जब जरा बडे हुए तो, दिन रात शराब और अय्याशीमें अपनी आवाज इत्यादि सबको खराब कर डालते हैं।" और इसी वातावरणमें 'चेखव' के नाटकोंने, थियेटरके इतिहास और नाटकोंके साहित्यमें एक नई-बागको जन्म दिया। कुछ लोगोंने तो कहा कि शैक्सपियरके बाद 'चेरीका बगीचा' जैसा नाटक लिखा ही नहीं गया, तथा 'तीन बहनें' संसारके सर्वश्रेष्ठ नाटकोंमेंसे है। कहानीकार तो वह निर्विवाद रूपसे संसारका श्रेष्ठतम है ही। किन्तु उसे कभी भी अपने लिखनेसे सन्तोष नहीं हुआ और उसने हमेशा ही अपने लिखे हुए को बडी हेय दृष्टिसे देखा। उसने सुवोरिन नामके अपने एक घनिष्ठ मित्रको लिखा था "मेरा तो विश्वास है कि जो कुछ मैं लिखना चाहता था, और जिस उत्साहसे मैं लिख सकता था—उस सबके मुकाबले आज तक जो भी कुछ मैंने लिखा है सब बेकार है। मेरे दिमागमें ऐसे लोगों—चरित्रोंकी पूरी पलटन भरी है जो दिन-रात अपनी मुक्तिके लिए प्रार्थना करते रहते हैं कि मैं एक शब्द कह दूँ और वे निकल पडें। मुझे बडा दुख होता है जब देखता हूँ कि आज तक मैंने जिन विषयों पर लिखा है, वे सब कूडा हैं, जब कि अच्छेसे अच्छे विषय मेरे दिमागके कबाडखानेमें पडे सड रहे हैं।" अपनी आन्तरिक इच्छाको उसने लजारेव ग्रुजिस्कीके पत्रमें इस प्रकार व्यक्त किया है, "काश, मुझे

चालीस सालका समय और मिल जाता तो मैं खूब पढ़ता और मेहनतसे लिखना सीखता...अब क्या है? जैसे औरे हैं, एक मैं भी हूँ। मैंने अभी तक जो कुछ भी लिखा है, पाँच-दस सालमें लोग सब भूल-भाल जायेंगे। लेकिन सन्तोष मुझे बस यही है कि मैंने जो रास्ता खोल दिया है वह जीवित रहेगा। यही मेरी लेखककी दृष्टिसे सबसे बड़ी सफलता होगी।"

असन्तोष और तटस्थता यह चेखवकी सफलताके मूल रहस्य हैं। लेकिन इन दोनों विशेषताओंको प्राप्त करनेके लिए उसे क्या मूल्य चुकाना पड़ा था, यह बहुत कम लोग जानते हैं। चूँकि लिखना उसे पैसेके लिए पड़ा इसलिए अपने लिखेसे उसे कभी सन्तोष नहीं हुआ, और अपनी इस विवशताके प्रति तीव्र-वितृष्णाने उसमें अपने अपनी रचनाओं, अपने समसामयिकों सभी के प्रति एक ऐसी तटस्थताकी भावना भर दी कि वह बड़ी निर्लिप्तिसे सभीके प्रति अपने विचार प्रगट कर सकता था।

१७ जनवरी १८६० से २ जुलाई १९०४ के बीचका लगभग ४४ वर्षोंका चेखवका जीवन कुछ ऐसी असाधारण परिस्थितियोंमें विकसित हुआ कि उसमें चेखवके प्रारम्भिक दिनोंकी पृष्ठभूमि हमेशा ही झलकती रही। हालाँकि चेखवने सुवेरिनको एक पत्रमें लिखा कि उसने 'अपने भीतरके गुलामकी आखिरी बूँद तक निचोड़ फेंकी है' लेकिन यह सही है कि उसके पात्रोंमें छाई उदासी, निराशाकी अमिट छाप उस 'गुलाम' की ही देन है। चेखवके दादा, मिखायलोविच चेखव राजस्थानी गोलोंकी तरह गुलाम थे, और उन्होंने ३५०० रूबल देकर अपनी स्वतन्त्रता खरीदी थी। साथ ही अपने बेटे पावेल इगोरोविच चेखवको उन्होंने एक जनरलस्टोर की दूकान भी खुलवा दी थी। इन्हींके पाँच बेटे और एक लड़की चेखवके भाई-बहन थे। पावेलका स्वभाव बहुत क्रूर था और वह बात-बातमें अपने बच्चोंको बुरी तरह मारते, पत्नीको गालियाँ सुनाते थे। अपनी गुलामीके दिनोंमें— उन्होंने जनरल चैरत्कोवको अपने नौकरोंके साथ जो व्यवहार करते देखा

था ठीक वही व्यवहार वह अपने नौकरोंसे करते थे। उन्होंने चूँकि रईसी और गुलामी एक ही जीवनमें देखी थी, इसलिये रईसोंकी भी अच्छाइयों की जगह बुराइयाँ ही अधिक ग्रहण कीं—जब भी बाहर निकलते थे तो बिल्कुल 'टिप-टॉप'। बच्चोंको जबर्दस्ती गिरजामें भेजते, प्रार्थनाएँ कराते और जरा-सी गलती होने पर बुरी तरह मारते। बचपनकी इसी क्रूरताने चेखवकी 'आत्मामें एक ऐसा घाव' छोड़ दिया जिसकी पीड़ा वह जीवनके अन्तिम दिनों तक अनुभव करता रहा 'कैदियोंकी तरह खड़े होकर प्रार्थना करने' की विवशताने उसे ऐसा नास्तिक बना दिया कि आगे चलकर हर सिद्धान्तके प्रति उसका विश्वास टूट गया, और एक अजब अनास्था उसे मथती रही। कर्जदार हो जानेके कारण पूरा परिवार बादमें मॉस्को चला आया और चेखव तागनरोग में ही पढ़ता रहा। स्कूलमें वह बुद्धू किस्मके लड़कोंमें से था।

इसके बाद मॉस्को आकर उसने डाक्टरीकी पढ़ाई शुरू की। वह जीवन उसके कठिनतम संघर्षोंका युग था। भाइयोंके दुर्व्यसनों सहित पूरे परिवारका पालन और अपनी पढ़ाई। चेखवने ट्यूशन किये, दर्जीके यहाँ नौकरी की और गोर्कीके अनुसार "उसे जवानीकी सारी शक्ति जीवित रहने के लिये झोंक देनी पड़ी।" उसने एकसे अधिक बार कहा कि "मैंने कभी बचपन जाना ही नहीं।" स्कूलमें भी हमेशा संगी-साथी-हीन अकेले ही उसका समय बीतता। अपनी 'तीन वर्ष' शीर्षक लम्बी कहानीमें लैविनन के बचपनके रूपमें चेखवने बहुत कुछ अपना ही जीवन दिया है और इसी सबको लिखनेको एक बार उसने सुवेरिनके पत्रमें लिखा था—"यदि तुम लिख सकते हो तो एक ऐसे लड़केकी कहानी लिखो जिसे जिन्दगीमें सिवा दु:खके कुछ नहीं मिला—अच्छा खाना-पहनना नहीं मिला। मारके सिवा जिससे कभी किसीने प्रेमसे बात नहीं की। स्कूलमें हमेशा फिसड्डी रहा और अछूतकी तरह माना जाता रहा।"

चेखवकी पहली रचना 'एक समझदार पड़ोसीको खत' थी जो 'ड्रैगन-फ्लाई' नामक पत्रिकामें छपी, फिर तो वह 'अलार्मक्लॉक' इत्यादिमें निरन्तर लिखता रहा। उसे पता भी नहीं था कि उनका वह लिखना क्या प्रभाव पैदा कर रहा है। जब वह पहली बार मॉस्कोसे पीटर्सबर्गमें आया तो उसका ऐसा स्वागत हुआ कि वह दंग रह गया। लोग उसे काफी बड़ा कहानीकार मानने लगे थे और उन्होंने "फारसके शाह" की तरह उसका अभिनन्दन किया। अभी तक वह ए० चेखोन्तेके नामसे लिखता था। यहीं उसका परिचय प्रसिद्ध लेखक अलेक्सी सुवोरिनसे हुआ और शीघ्र ही वह उसके पत्र 'नया-जमाना' में धारावाहिक रूपसे लिखने लगा। यहाँ उसे अपनी रचनाओंके पैसे भी अधिक मिलते थे—बादमें तो इसी पत्रमें ४० कॉपेक हर पंक्तिके हिसाबसे मिलने लगे।

यद्यपि टॉल्सटाय इत्यादिने हमेशा ही कहा कि उसके लेखनमें उसकी डॉक्टरी बाधक है, लेकिन स्वयं चेखवका विचार था कि इसने उसके लेखनको अधिक तर्कसंगत और सन्तुलित किया है और उसे दैनिक जीवनमें होनेवाली ऐसी छोटी-छोटी गलतियोंसे बचा लिया है, जो बड़े-से-बड़े लेखकमें पाई जाती हैं। उसने लिखा: "डॉक्टरी मेरी वैध पत्नी है और साहित्य प्रेयसी। मैं जब एकसे ऊब जाता हूँ तो दूसरीके पास जाता हूँ" बादमें जब अपनी जायदाद मिलीखोवेमें वह बस गया था तो तीन-घण्टे नियमपूर्वक मुफ्त लोगोंको अपनी डॉक्टरी की सेवाएँ देता था।

जब १८८८ में उसे 'पुश्किन-पुरस्कार' मिला तब तक लोग उसकी प्रतिभाको पहचान चुके थे और ग्रिगोरोविचके अनुसार उसमें वह प्रतिभा थी जो नये लेखकोंके मण्डलसे ऊँचा उठा देती है, यद्यपि साहित्यमें बड़ी तेजीसे उसका स्थान बनता जा रहा था लेकिन यह भर्त्सना उसे खाये जा रही थी कि अपनी वैध-पत्नी—डॉक्टरी—के प्रति उसका रवैया

सख्त हरामखोरीका है। उन दिनोंके पत्रोंमें उसका यह मानसिक द्वन्द्व बड़े मुखर रूपमें आया है। उन्हीं दिनों लोगोंने अचानक सुना कि हमेशा बीमार रहनेवाला चेखव कील-काँटेसे लैस होकर साइबेरियाको पार करके लम्बे भयानक यात्राका प्रोग्राम बनाकर साढे छः हजार मील शाखा-लिन 'द्वीप' जानेके लिए निकल पडा है। उस समय व्लादीविस्तकसे लेलिनग्राड तक जानेवाली ससारकी सबसे बडी रेलवे-लाइन नहीं बनी थी। अतः प्रायः सारा ही सफर घोडा-गाडी या नावमें तय करना था। शाखालिन द्वीपमें उन दिनों रूसके आजन्म कारावास पाये कैदी भेजे जाते थे। डॉक्टरीको कुछ नई देन वह अपनी इस 'क्रिकजोटिक' (स्वयं चेखवने ही अपनी यात्राको यह नाम दिया) यात्रासे दे सकेगा—यही बात उस समयके उसके पत्रोंमें पाई जाती है। सुवोरिन और अपनी बहन मेरिया कैसीलेवको उस यात्रा का विस्तृत विवरण देते हुए चेखवके पत्र जहाँ एक ओर चेखवके अदम्य साहस और अटूट निष्ठाके प्रमाण हैं, वहाँ संसारके पत्र-साहित्यकी अमूल्य निधियाँ भी हैं। किस तरह बर्फीली आँधियों, बाढ़ों और दलदलोंको पार करता हुआ बवासीरका बीमार, टी० बी०में—खून थूकता यह व्यक्ति शाखालिन पहुँचा, सचमुच उन वर्णनको पढकर मन सिहर उठता है। लौटते समय उसने समुद्री रास्ता लिया और सिंगापुर-कोलम्बो होता हुआ लौटा। यह तीन महीनेकी यात्रा उसके जीवन और साहित्यमें एक बहुत बडा मोड है। इसी यात्राने उसे टॉल्सटायके सत्याग्रह और आत्म-संयमवाले 'आत्मघाती' दर्शनसे मुक्त किया।

'शाखालिन'का बाह्य-वर्णन देते हुए यद्यपि उसने 'शाखालिन' नाम की पुस्तक लिखी, लेकिन उसकी मानसिक उथल-पुथलका विशद चित्र हमें उन्हीं दिनों लिखे गये उसके लघु-उपन्यास 'द्वन्द्व'में मिलता है। उसकी दूसरी लम्बी कहानी "वार्ड नं० ६" तथा "मेरा जीवन" के आलोचकोंने

अधिक महत्व दिया है, लेकिन मेरा विश्वास है कि लम्बी कहानीको कलाकी दृष्टिसे ही नहीं, उन दिनोंके चेखव-मानसको समझनेके लिए 'द्वन्द्व'से अच्छा कोई उदाहरण नहीं है। उन दिनों उसने 'सुवोरिन'को एक पत्रमें लिखा था "मेरा तो कहना यह है कि हर लेखकको शाखालिन अवश्य ही जाना चाहिये। मैं भावुक नहीं हूँ। अगर होता तो यहाँ तक कहनेको तैयार हो जाता कि हमें शाखालिन जैसी जगहों की उसी तरह तीर्थ-यात्रा करनी चाहिये, जैसे तुर्क मक्काकी करते हैं. ऐसी जगहमें तो केवल उसी देशको कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती, जो शाखालिनमें हजारों आदमियोंको निर्वासन न देता हो, और जिनका लाखों रुपया उसपर खर्च न होता हो। ऑस्ट्रेलियाके सिवा और ऐसी कौन-सी जगह है जहाँ कैदियोंके पूरे उपनिवेश बसे हों? हम मन्दिरोंमें बैठकर मानवताकी भलाईकी प्रार्थना करते हैं लेकिन कभी हमने सोचा है शाखालिन जैसी जगहमें मानव पर क्या बीतती है? शाखालिन ऐसी असहाय यन्त्रणाओंका स्थान है जिन्हें मानवके सिवा—चाहे वे गुलाम हों या स्वतन्त्र—कोई और सह ही नहीं सकता.. कल्पना करो, हमने लाखों आदमियोंको किस तरह सडने-मरने और कुत्तोंकी मौत पानेके लिए वहाँ छोड दिया है। कडकडाती ठण्डमें जंजीरोंसे बाँधकर हाँका है। हाँ, हमें अपने देशके कलंक इस शाखालिनको देखनेकी बेहद जरूरत है। दुख मुझे यह था कि कोई और इस सबको देखनेके लिए मेरे साथ नहीं था।" वहाँ कैदियोंपर किये जानेवाले भयंकर अमानुषिक अत्याचारोंको देखकर उसकी आँखोंके आगेसे जैसे एक पर्दा हट गया। उसने अपनी पुस्तक 'शाखालिन'में लिखा—"क्या कैदियोंका इस अत्याचार, कोडेबाजी, बेगार और भ्रष्टाचारका प्रतिरोध न करना उनके अफसरोंका 'हृदय-परिवर्तन' कर उन्हें अच्छा आदमी बना सकता है? वहाँ तो वर्षोंसे यही होता आ रहा है। और अगर सचमुच 'पापका प्रतिकार न करो'का सिद्धान्त, कोई प्रभावशाली सिद्धान्त होता तो

शाखालिन पहली जगह है जहाँ उसका प्रभाव दिखाई देना चाहिये।"

'द्वन्द्व' में लायव्स्की और वॉनकॅरेनके विचारोंका संघर्ष उनके इस मानसिक आन्दोलनको लेकर आता है। लायव्स्की भावुक पराजयवादी और निकम्मे क़िस्मका व्यक्ति है जो दार्शनिक उक्तियों और आप्तवाक्योंमें अपनी दुर्बलताओंको छिपाना चाहता है। जीव-वैज्ञानिक वॉनकरेन ठोस व्यावहारिक है—और अन्तमें वैज्ञानिक व्यावहारिकताके साथ मानवतावादकी विजय होती है। वार्ड नं० ६ में तो डा० रागिन (जो टाल्सटायके सिद्धान्तोंका प्रतीक है और नौकरसे पानी भी माँगनेमें हिचकता है) पागल होकर मरता है। वहाँ तो उस दर्शनको चेखवने पूरी तरह उतार फेंका है। अपनी पत्नी ओल्गानिपरको उसने लिखा था "अफसोस, मैं कभी भी टालसटायन नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं स्त्रियोंमें सबसे अधिक उनके सौन्दर्यको प्यार करता हूँ। मनुष्यके इतिहासमें मुझे सुन्दर गलीचों, स्प्रिङ्गदार गाड़ियों और मेधाकी तीव्रताके रूपमें आनेवाली संस्कृति पसन्द है।"

चेखवके अन्य जीवनी-लेखकोंने—यहाँतक कि उसके चचेरे भाई मिखायल चेखव तकने—उसकी शाखलिन-यात्राके एक कारणको काफी हदतक नजरन्दाज किया है। शायद इसका कारण यह है कि इस बातका जिक्र उसके पत्रोंमें नहीं आया है और प्रसिद्ध आलोचक शुस्तोवके शब्दोंमें यह हमें स्वीकार करना होगा कि "चेखवकी पूरी जीवनी कोई नहीं जानता।" फिर भी डेविड मैगार्शकने इस सिलसिलेमें उसकी महिला-मित्र—या प्रेमिका—लिडिया एविलोवको लिखे गये पत्रों तथा एविलोवकी पुस्तक 'मेरे जीवनमें चेखव' की ओर ध्यान खींचा है। और किसी हदतक 'द्वन्द्व' कहानीसे इस बातकी पुष्टि भी होती है

सचमुच एविलोवसे चेखवकी मित्रता एक पहेली बनकर उसके जीवन में आई। पीटर्सबर्गमें उसका नाटक 'आइवानोव' खेला जानेको था—और वह रिहर्सलोंके समय वहीं था। पीटर्सबर्गमें वह 'पीटर्सबर्ग गजट' के

सम्पादक खुदकोवसे मिलने गया। वहीं उसकी साली, एविलोव मिली। यह एक बच्चेकी माँ थी लेकिन दोनों एक दूसरेसे इतने प्रभावित हुए कि प्रथम-दर्शनमे ही एक दूसरेको घण्टो आँखें फाड़े देखते रहे। एविलोवके शब्दोंमे : "हम दोनों एक दूसरेकी आँखोंमें देखते रहे, लेकिन उन्हीं दृष्टियों मे हमने कितना कुछ विनिमय कर लिया था। मुझे तो ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर एक विस्फोट हो उठा है—प्रकाश, आह्लाद और विजयका विस्फोट। मैं समझ गई कि चेखवकी भी हालत यही है।' और इन दोनों की अन्तिम मुलाकात वह थी जब 'सीगल' का मॉस्को आर्ट-थियेटर द्वारा चेखवके लिये व्यक्तिगत रूपसे अभिनय किया गया और बुलानेपर भी वह नहीं आई। चेखव और लिडिया बिना एक दूसरेके रह नहीं सकते थे, और जब भी वे मिलते थे तो लड पडते थे। जो कुछ चेखव चाहता था और प्राप्त नहीं कर सकता था, साथ ही जिसके बिना रह भी नहीं सकता था, उसीकी कशमकशमे वह शाखालिनकी ओर चल पडा। 'द्वन्द्व' कहानीमें नायक लायव्स्की भी 'अन्नाकैरेनिना' की तरह एक विवाहित महिला नाद्याफ्योदोरोव्नाको लेकर सुदूर काकेशस् प्रान्तमें चला जाता है। 'सीगल' नाटकके तीसरे दृश्यमें 'नीना' प्रेमका सन्देश ठीक लिडियाकी तरह भेजती है। एक बार लिडियाने जौहरीसे, बिल्कुल छोटी किताबकी शक्लका जेबघडीकी जजीरमें लटकनेवाला झुमका बनवाया, उसके एक तरफ खुदवाया गया "चेखवकी कहानियाँ" और दूसरी तरफ "पृष्ठ २६७, लाइन छः-सात" यह संकेत था चेखवकी 'पडोसी' कहानीकी एक लाइनकी ओर : "अगर तुम्हे कभी भी मेरे प्राणोंकी आवश्यकता पडे, तो निःसंकोच आना और ले लेना।" और इसके बाद शायद मित्रता समाप्त हो गई।

चेखवका विवाह हुआ 'मास्को आर्ट थियेटर' की प्रसिद्ध अभिनेत्री ओल्गानिपर से। वह उसके नाटक 'सीगल' मे आर्कदीना इरीना

निकोलायेव्ना बनी थी। उसने उन दिनों सुवोरिनको लिखा कि "मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारी इरीनासे प्रेम करने लगा हूँ।" मॉस्को आर्ट थियेटर' चेखवके नाटक खेलता रहा और दोनों एक दूसरेके निकट आते रहे। चेखव इन दिनों 'मिलिखोवो' में था। विवाहके विषयमें भी उसके विचार बडे विचित्र थे। रोज-रोज दीखनेवाली पत्नीके पक्षमें वह नहीं था—वह तो ऐसी पत्नी चाहता था जो चाँदकी तरह दीखे और छिप जाये। उनका विवाह 'मास्को' के एक एकान्त गिरजेमें हुआ। उस समय केवल ओल्गानिपर की ओर के दो आदमी थे।

मास्कोके बिना चेखव रह नहीं सकता था और वहाँका जलवायु उसे वहाँ रहने नहीं देता था। अतः कभी मॉस्को और कभी बाहर आते-जाते ही उसका समय बीता। अन्तिम दिनोंमें जब उसकी तबियत बहुत खराब हो गई तो पति-पत्नी जर्मनीके बीदनकीलर क्लिनिक चले गये, और वहीं उसकी मृत्यु हुई। वास्तवमें वह इतनी प्रचण्ड जिजीविशा वाला व्यक्ति था कि उसने बीमारीसे कभी हार नहीं मानी। उसने अपने एक मित्रको लिखा था "बीमारीसे लडना मेरा स्वभाव बन गया है। बिल्कुल ऐसा लगता है कि एक राक्षस है जो हमेशा मेरे सामने रहता है। कभी वह मुझे पछाड देता है, कभी मैं उस पर चढ बैठता हूँ।" मृत्युके कुछ मिनट पहले तक वह अंग्रेजो और अमेरिकनोंके खाऊपने पर एक ऐसा मजेदार किस्सा निपरको सुना रहा था कि वह मारे हँसीके सोफे पर दुहरी हो गई थी। चेखवके अन्तिम समयका जो हृदयस्पर्शी वर्णन उस समय 'निपर' ने दिया है, वह 'व्यक्ति' चेखवके साहसका अद्वितीय उदाहरण है। बात करते-करते उसे दौरा आ गया, जीवनमें पहली बार उसने डाक्टरके लिए कहा। डाक्टर आया तो उसने शैम्पेन दी। बडे विचित्र ढगसे मुस्कुराकर चेखवने कहा—"बहुत दिन हो गये शैम्पेन पिये हैं।" और जर्मनमें बोला—"अब मैं जा रहा हूँ।"

चेखवको नीचता, ओछेपन और गन्दगीसे सदैव ही घृणा रही—वह उनका कट्टर दुश्मन था। इनको उसने कभी भी क्षमा नहीं किया और गोर्कीके अनुसार मृत्युके बाद जैसे इन्हीं सब चीजोंने उससे मिलकर बदला लिया—"उसकी शव यात्राके पीछे मुश्किलसे सौ आदमी थे। उनमेसे दो वकील तो मुझे अभी भी याद है। दोनो नये जूते और रंगीन टाइयाँ पहने थे और दूल्हो-से लग रहे थे। पीछे चलते हुए मैने सुना, एक तो कुत्तोंकी बुद्धिमत्ता पर बहस कर रहा था, और दूसरा अपने गाँवके घरके आराम तथा आस-पासके दृश्योंका बखान कर रहा था।"

गोर्की, स्तैनिस्लेव्स्की, प्लैश्चयेव, कोरोलैंको, टाल्सटाय, इत्यादि चेखवके घनिष्ठ मित्रोमेंसे थे। ओल्गा-निपर और एविलोवके पत्रोंमें, जो प्रेम पत्रोंके अद्भुत उदाहरण हैं, उसने जिस ढंगसे गोर्कीका ज़िक्र किया है, उससे तो ऐसा लगता है कि पुरुष मित्रोंमे सबसे अधिक स्नेह उसे गोर्कीसे ही था। एविलोवको उसने लिखा "तुम गोर्कीसे मिली हो? देखनेमे वह आवारा-सा लगता है, लेकिन वास्तवमे वह बहुत ही शिष्ट और सभ्य व्यक्ति है। स्त्रियोंसे बहुत शर्माता है, मै चाहता हूँ उसे कुछ स्त्रियोंसे मिलाऊँ।" उसने स्वय गोर्कीको लिखा "तुम सचमुच अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हो। तुम्हारी "खदरोमे" कहानी पढ कर मै बहुत ही प्रसन्न हुआ, वाह! क्या कहानी है! काश, वह मैने लिखी होती।" जब वह याल्टामे था तो गोर्की उनके घर आकर अपने जीवनके अनुभवोंके अक्षय भण्डारमे से अजब-अजब किस्से चेखव-दम्पत्तिको सुनाया करता था। लेकिन उसने गोर्कीके "गढे हुए मनोविज्ञान" और 'गूँजने गरजने' वाले शब्दो, छाया-वादी शैलीकी सूक्ष्म-अभिव्यक्तिकी बेलौस आलोचना की। गोर्कीने अपना 'फोमागार्जयेव' उपन्यास लेखकको भेट किया है, और शायद सबसे अधिक कटु आलोचना चेखवने उसकी ही की है। फिर भी जब चेखवको राज्यकी 'साइन्स एकाडमी' का सदस्य चुना गया, लेकिन गोर्कीके राजनैतिक विचारोंके

कारण, 'जार' ने व्यक्तिगत हस्तक्षेप करके गोर्कीकी सदस्यता छीन ली तो चेखव और कोरोलैंकोने स्वयं विरोध स्वरूप सदस्यतासे त्यागपत्र देकर राज्यके सबसे बड़े सम्मानको ठुकरा दिया। इसी तरह जोलाका लिखना उसे कभी पसन्द नही आया, लेकिन जब उसे कैप्टेन ड्रीफ़ुसके सिलसिलेमें झूठा मुकदमा चलाकर सजा हो गई, तो उन्हीं दिनो सुवोरिनके पत्र 'नया जमाना' को अधिकारियोका पक्ष लेता हुआ देखकर उसका खून खौल उठा। उसने अपने भाई मिखायलको लिखा: "यह सुवोरिन जरा भी अच्छा आदमी नहीं है। .मेरा मन नहीं होता कि उसे पत्र लिखूं.. न चाहता हूँ कि वह मुझे लिखे. !"

साहित्यकी तीन दिशाओंमे चेखव ससारके सर्वश्रेष्ठ लेखकोंमे है: कहानी, नाटक और व्यक्तिगत पत्र—और तीनोंमे ही उसका निश्छल 'महान् मानव-हृदय' बोलता है।

चेखवकी कला और विषय वस्तुकी एक मात्र विशेषता है सादगी और बनावटसे बचना। कहानीको इतने सादे और सीधेपनसे अनायास ही वह प्रारम्भ और समाप्त कर देता है, पाठक चकित रह जाता है। उसमें टैकनीक और शिल्पके ओ. हैनरी जैसे कमाल नहीं है, सामाजिक आडम्बरको तेज नश्तरी चाकूकी तरह स्तैमाल करके वह मोपासाकी तरह पाठकको स्तम्भित नहीं करता—बल्कि ऐसी स्वाभाविकतासे अपनी कहानीको कहना प्रारम्भ कर देता है कि उसकी कथा उसके पात्र, वार्तालाप सब कुछ हमारे हृदयकी धड़कनोंके साथ, मिल जाते है। वर्षों याद रहते है! उसकी नाचनेवाली लडकीका कथानक अगर मोपासाके पास होता तो शायद वह 'सिग्नल'से भी अधिक तीखा, व्यग्य लिख डालता। उसकी कहानी 'चुडैल' 'घोडाचोर' 'काला सन्यासी' 'प्रियतमा-पडोसी' 'चुम्बन' 'दलदल' इत्यादि जैसे अपने साथ हमे विभिन्न वातावरणोंमे घुमाती है। 'दलदल' का कथानक 'नाना' के हिस्सेकी याद दिलाता है जहाँ जार्ज और फिलिप्पे दोनो भाई नानाके पास

आते-जाते हैं। लेकिन जोला और चेखवमें फर्क है। मुझे तो सबसे अधिक आकर्षित चेखवकी इस बातने किया है न तो उसमें तीखापन है और न उसके पास 'विलेन' है। व्यंग्य और हास्य संसारके किसी भी लेखकसे उसके पास कम है, यह कहना गलत होगा, लेकिन उसका व्यंग्य तिलमिलाने वाला व्यंग्य नहीं, रुलानेवाला व्यंग्य है—जैसे 'दिलका दर्द' या 'दूसरा शमादान' कहानी में। और जब वह हँसता है तो बिना किसी द्वेषके जी खोलकर हँसाता है जैसे, 'अपराधी', 'गिरगिट' इत्यादि कहानियोंमे! सचमुच कितने छोटे-छोटे विषयों पर उसने कहानियाँ लिखी है—लेकिन कितनी प्रभावशाली और स्मरणीय! उसकी 'प्रियतमा' कहानी की आलोचना करते हुए टॉल्सटायने लिखा था—"अद्वितीय चुहल और हास्यके बावजूद, मेरी आँखोंमे तो कमसे कम इस आश्चर्यजनक कहानी के कुछ हिस्सोंको पढकर बिना आँसू आये नहीं रहे।"

उसका स्वयं विचार था कि आप संसारकी हर चीजके साथ चालाकी और धोखा कर सकते हैं लेकिन कलाके सामने तो आपको मुक्त हृदयसे ही आना ही होगा। या "साहित्य एक ऐसी वैध पत्नी है जो आपसे पूरी ईमानदारी की माँग करती है।" अलैक्जैन्द्रको उसने पत्र लिखा था—"लेखककी मौलिकता उसकी शैलीमें ही नहीं, उसकी आस्थाओं और उसके विश्वासोंके रूपमें भी अपने आपको अभिव्यक्त करती है।'

उसके जीवन कालमे स्कैविशेव्स्की और मरते ही शुस्तोव जैसे आलोचकोंने उसके विषय-पात्रोंके अत्यन्त ही साधारण और उपेक्षणीय होनेकी शिकायत की है। शुस्तोवने तो उसकी असहाय मृत्योन्मुख कातरताको ही उसकी रचनाओं—उसके सभी पात्रो—का मूल मानकर उसके साहित्यकी व्याख्या कर डाली है। अपने प्रसिद्ध लेखमें वह लिखता है "हालाँकि ऐसे भी आलोचक थे जो कहते थे कि वह कला कलाके लिये के सिद्धान्त का गुलाम था और उन्होंने उसकी तुलना एक उडते हुए निश्चिन्त पक्षीसे

कर डाली है, लेकिन सचाई तो यह है कि उसका अपना उद्देश्य ही अलग है। मैं तो एक शब्दमें कहूँगा कि वह निराशावादका कवि था" आगे वह कहता है कि चेखवमें "हर जगह आपको वही निराशावाद, बीमारी, अनिवार्य मृत्यु ही मिलेगी, जैसे कहीं कोई आशा न हो, स्थितिमें रत्तीभर परिवर्तनकी गुञ्जायश न हो!" लेकिन चेखवकी इसी सचाईको कालनिनने दूसरी तरह स्वीकार किया है कि तत्कालीन रूसी हृदयको समझनेके लिये, चेखवसे अधिक सही, सच्ची और जीवित तस्वीर हमें कहीं नहीं मिल सकती। यही वह रूसी हृदय था जो सन् १७ की महान् क्रान्तिके लिये तैयार हो रहा था। अगर चाहें तो कह सकते हैं कि रूसी हृदयकी वास्तविकताको चेखवने पकड़ा और उसकी महत्वाकांक्षाओं—परिवर्तनकी अदम्य इच्छाकी आवाजको गोर्कीने ऊँचा उठाया। अपनी विवशताको चेखवने बड़ी ईमानदारीसे स्वीकार किया है—'अक्सर मेरी भर्त्सनाकी गई है कि—और उन भर्त्सना करनेवालोंमें टालस्टाय भी हैं, कि मैंने बहुत छोटी-छोटी चीजों पर लिखा है, मेरे पास कर्मठ नायक नहीं हैं, अलैक्जैन्डर और मैकेडोन जैसे क्रान्तिकारी नहीं हैं, यहाँ तक कि लैस्कोवकी कहानियों जैसे ईमानदार पुलिस-इन्सपेक्टर भी नहीं हैं, लेकिन आप बताइये, यह सब मैं कहाँसे लाता? घोर साधारण हमारा जीवन है, हमारे शहर ऊबड़-खाबड़ और गाँव गरीब हैं। लोग जीर्ण-शीर्ण हैं। जब हम लोग बच्चे होते हैं तो गिलहरियोंकी तरह घूरों पर आनन्दसे खेलते हैं—और जब चालीस पर पहुँचते हैं तब तक बुड्ढे हो चुके होते हैं—मृत्युके बारेमें सोचना शुरू कर देते हैं.. सोचिये तो सही, किस तरहके नायक हम लोग हैं?" (मोरोजोवके यहाँ तिखानोवसे वार्तालाप) शायद इन्हीं सब आक्षेपोंसे क्षुब्ध होकर उसने अपनी नोट बुकमें लिखा: "हमारे शहरोंकी जिन्दगीमें कोई निराशावाद नहीं है, कोई मार्क्सवाद नहीं है, किसी भी तरहकी कोई हलचल नहीं है, अगर कुछ है तो वह है अवरोध, बेवकूफी

और छिछलापन।" और इसीलिए उसने जिस यथार्थवादको अपनाया वह था कि "आदमी तभी अच्छा बन सकेगा जब आप उसे दिखादें कि वास्तवमें वह है क्या।" (नोट बुक, ५५) यों शुस्तोवकी तरह यह कह देना शायद उसके साथ बहुत बडा अत्याचार है कि "वस्तुतः चेखवका वास्तविक और एक मात्र हीरो हताश मनुष्य है। सिवा पत्थर पर सिर फोडनेके, जीवनमें जिसके लिए कोई काम ही नहीं बचा है।'

यह ठीक है कि किसी भी प्रकारका 'लेबिल' लगाये जानेसे उसे घृणा थी—"कुछ विशेष बातोंमें ऊपर न उठ जानेकी सामर्थ्य ही मनुष्यके पूर्वाग्रहोंकी जड है कलाकारको तो तटस्थ दर्शक होना चाहिये, मैं न तो उदार-पंथी हूँ न पुराणपंथी. मुझे तो स्वतन्त्र कलाकार होना पसन्द है।" और उसने १८८८, अक्टूबरमें प्लेश्चयेवको लिखा कि "उन लोगोंसे मुझे शुरूसे डर रहा है जो उदारपंथी या रूढिपंथी—इन खेमोंमें मुझे बाँटकर देखना चाहते हैं। मैं साधु, सन्त, उदार-रूढ कुछ भी नहीं हूँ। इसलिए इन लेबिलोंको दुराग्रह मानता हूँ। ये ट्रेडमार्क खतरनाक है।" उसकी इसी प्रकारकी उक्तियोंके आधारपर हिन्दीमें श्रीबनारसीदासजी चतुर्वेदी जैसे लेखक उसे उसके शेष जीवनसे काटकर, "शुद्ध कलाकार" सिद्ध करके पूजने लगते है, लेकिन इसके साथ ही मैं प्लेश्चयेवको लिखे गये इसी पत्रके अगले हिस्सेकी ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट करूँगा—"मेरी पवित्रतम आराध्य है मानवता, (हवाई मानवता नहीं—ले०) मानवका शरीर—स्वास्थ्य, बुद्धि, प्रतिभा, प्रेम और मुक्ति—झूठ और द्वेषसे मुक्ति।" ग्रिगोरोविचको उसने लिखा "जो व्यक्ति किसीसे डरता नहीं है, किसीको प्रेम नहीं करता और किसी भी वस्तुकी आकांक्षा नहीं करता वह चाहे जो बन जाय, कलाकार नहीं बन सकता।" और लिडियाको लिखा गया वाक्य तो इन सब आरोपोंका एक साथ जवाब है। "मैं मानवताके लिए कुछ कर रहा हूँ यही एक भाव है जो मुझे जीवित रखे

हुए है वर्ना मैं कबका आत्महत्या कर चुका होता। 'मॉस्कोआर्ट थियेटर' की स्थापनाके समयका संस्मरण लिखते हुए स्टैनिस्लेवकीने कहा है "जीवनको सुन्दरतर बनानेके जो भी प्रयत्न होते थे उस सबसे उसे हार्दिक प्रसन्नता होती थी।"

हाँ, सिद्धान्तहीन कोरी नारेबाजीके चेखव खिलाफ था—उसने अपनी नोट बुकमें [८१] लिखा है—"अगर आप चिल्लाते हैं 'आगे बढो!' तो निश्चित रूपसे आपको आगे बढनेका रास्ता बताना होगा। क्योंकि बिना दिशा बताये अगर आप अपने इन शब्दोंसे एक क्रान्तिकारी और सन्यासी दोनोंको साथ-साथ उत्तेजित कर देते हैं तो वे निश्चित रूपसे दो विरोधी दिशाओंकी ओर बढते चले जायेंगे।" इसके अलावा डाक्टरी द्वारा अपने स्थानके आस-पासके गाँवोंकी जिस निष्ठासे वह सेवा करता था,—उसकी शाखालिन यात्रा या अन्य ऐसी ही बीसियों जीवनकी घटनाएँ हैं जो बताती हैं कि वह 'तटस्थ' और 'शुद्ध कलाकार' ही नहीं था। सक्रिय राजनैतिक सिद्धान्तोंको न अपना पाना उसकी सबसे बडी कमजोरी थी। इस दिशामें उसकी अपनी कहानी 'प्रियतमा' विचित्र तरह उसके जीवनसे मिलती है। ओलेङ्का बिना किसीके प्यारका आधार पाये रह नहीं सकती, और एकके बाद दूसरेके प्यारमें अपनेको डुबाती जाती है, इसी प्रकार चेखवके विचारोंकी यात्राके भी चार टिकाव हैं—लेविन, सुवोरिन टॉल्सटाय और फिर गोर्की। अपने अन्तिम दिनोंमें तो वह गोर्कीसे इस हद तक सहमत हो गया था कि "ईसाइयत और सामाजिक दोनों दृष्टिकोणोंसे 'फिलिस्तीनवाद' एक पाप है। नदीके बाँधकी तरह यह हमेशा जीवनमें गतिरोध पैदा कर देता है और गोर्कीके ये शराबी गँवार और आवारे ही इस गतिरोधके खिलाफ सबसे सही इलाज दिखाई देते हैं। हालाँकि इससे गतिरोध बिल्कुल तो नहीं टूटता फिर भी एक भयानक दरार उसमें जरूर पड जाती है।" (२ फरवरी १९०३ को

सुम्वातोवको पत्र) तथा इन्हीं दिनों अपनी कहानी 'दुलहन' (१६०३) में उसने लिखा—"हाँ, बहुत जल्दी ही वह नया स्वच्छ जीवन आनेको है, जब हर आदमी सीधे और निर्भय होकर अपने भाग्यकी आँखोंमे आँखे डालकर देख सकेगा,—सच्ची प्रसन्नताका अनुभव कर सकेगा।" और 'तीन-बहने' नाटकका नायक कहता है—'समय आ गया है, एक भयकर दुर्जेय तूफान उठनेवाला है। यह तूफान हमारी ओर बढता चला आ रहा है, बहुत पास आ गया है। शीघ्र ही हमारे समाजकी काहिली, मुर्दनी, मेहनतको घृणासे देखनेकी भावना और सडी-गली गन्दगीको यह उखाड फेकेगा" और उसने डायरीमें लिखा "यह राज-सत्ता बडी जल्दी ही चूर-चूर हो जायेगी। चारो तरफ गरीबी और भुखमरी है। गरीब लोग फटे कपडे पहने जोकरों-से लगते है।" इन वाक्योंके साथ ही हमे हमेशा यह भी याद रखना चाहिये कि चेखवने फैशन और शौकके लिए कभी कोई बात नहीं कही। उसका हमेशा आग्रह रहा (उसने अपने भाई अलैकजेन्द्रको लिखा) "उस दुख-तकलीफका वर्णन मत करो, जिसे तुमने स्वयं अनुभव नहीं किया—न उस दृश्यका वर्णन करो जिसे तुमने देखा ही नहीं।"

जीवनका कोई सक्रिय सिद्धान्त उसके सामने नहीं था इसका स्वयं उसे कम दुख नही रहा। दो-एक बार उपन्यास लिखनेकी कोशिश करने पर भी जब वह सफल नहीं हुआ तो उसने ग्रिगोरोवियको बड़े दुखी स्वर मे लिखा—"मैने जीवनकी कोई राजनैतिक, दार्शनिक और धार्मिक रूप-रेखा अपने सामने नहीं रखी—और जो कुछ थी भी वह मै हर महीने बदलता रहा, इसीलिये कि मुझे अपनेको सिर्फ इन्हीं वर्णनोंमें बाँधकर सन्तोष करना पडा कि कैसे मेरे पात्र प्यार करते हैं, बच्चे पैदा करते है, बाते करते है और मर जाते हैं।"

चेखवकी महत्वाकांक्षा, अकुलाहट और विवशता सभीको गोर्कीकी इस कल्पनामें कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति मिली है "मानो चेख़व, उदास और दुखी ईसाकी तरह मुरझाए, निर्जीव और हताश लोगोंकी भीड़के सामनेसे गुजर रहा हो और मन ही मन पीड़ासे कराह उठता हो—'भाई, सचमुच तुम बहुत बुरी दशामें हो'।"

इस संक्षिप्त परिचयके साथ मैं चेखवके तीन नाटकोंका अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूँ। भारतका सामान्य नागरिक आज बड़ी तेजीसे अपनी राष्ट्रीयताके प्रति सचेत होनेके साथ-साथ विश्व-धरातलपर उठ रहा है। राजनैतिक-मताग्रहोंमें, है विश्वकी बात करते समय हो सकता है हम 'लोहेकी दीवार' के दूसरी ओरकी दुनियाँको भूल जायँ, लेकिन विश्व-साहित्यकी (विशेष रूपसे कथा-साहित्यकी) बात बिना रूसी दिग्गजोंके, एक कदम नहीं चल सकेगी। आज भी अगर विश्वके सारे कथा-साहित्य से छः मूर्धन्य नाम छाँटनेकी बात आये तो तीन केवल रूससे और दो फ्रांससे लेने होंगे।

इन नाटकोंके बारेमें मैं जान-बूझकर कुछ नहीं कह रहा—इब्सन, चेखव और शॉकी त्रिमूर्ति आजके नाटक अध्येताके लिए सुपरिचित है।

विषय-क्रम



हंसिनी

सी-गल

१—'सी-गल' का किसी भी प्रकार अनुवाद 'हंसिनी' नहीं किया जा सकता, यह मैं मानता हूँ। किन्तु हिन्दीमें 'सी-गल' के लिए कोई शब्द ही नहीं मिल सका। दूसरे, नाटकमें केवल एक ऐसे पक्षीकी आवश्यकता थी जो समुद्र या झीलके किनारोंपर रहता हो। वैसे भी 'सी-गल' में जो एक उन्मुक्त भावनात्मक स्पर्श है, साथ ही जिस कोमल प्रतीकके रूपमें उसका उपयोग किया गया है उसे काफी दूर तक 'हंसिनी' में निभाया जा सका है—मुझे ऐसा लगा।

२—तत्कालीन रूसी समाजमें विदाई और स्वागतके अवसरपर आपसमें चूमनेका रिवाज है—किसी न किसी रूपमें पश्चिमके सभी देशोंमें है। उसे ज्यों का त्यों रहने दिया है।

पात्र

इरीना निकोलायेव्ना आर्कदीना— [श्रीमती त्रेपलेव]—एक अभिनेत्री
कान्स्तान्तिन गाव्रिलोविच त्रेपलेव—[आर्कदीनाका लड़का] एक नवयुवक।
प्योत्र निकोलायेविच सोरिन— [आर्कदीनाका भाई]
नीना मिखायलोवा जरेच्न्या— एक धनी जमींदारकी युवती बालिका।
इल्या अफ्नास्येविच शार्मयेव— एक पेंशनयाफ्ता लैफ्टीनेंट : सोरिनका कारिन्दा।
पोलिना अन्द्रेव्ना— कारिन्दाकी पत्नी।
माशा— [पोलिनाकी पुत्री]
बोरिस अलैक्सीविच त्रिगोरिन— लेखक।
यैव्गेनी सर्जाएविच् दोर्न— डॉक्टर।
सिमियन सिमोनोविच मैद्वीद्वेंको— स्कूल मास्टर।
याकोव— मजदूर।

रसोइया और महरी

घटनास्थल : सोरिनका घर और बाग।

[तीसरे और चौथे अंकके बीचमें दो वर्षका अन्तराल]

पहला अंक

[सोरिनकी जमींदारीमें बगीचेका एक हिस्सा। चौड़ी रविश दर्शकोंकी ओरसे पीछे दूर झील तक गई है। व्यक्तिगत रूपसे शौकिया नाटक दिखानेके लिए बनाये गये एक भोंडे-से स्टेजने रविशका रास्ता रोककर झीलको छिपा लिया है। स्टेजके दाहिनी और बायीं ओर झाड़ियाँ हैं। सामने कुछ कुर्सियाँ और एक छोटी मेज।

सूरज अभी छिपा है। याकोव और अन्य मजदूर उस स्टेजपर पर्देके पीछे काम कर रहे हैं। धरती कूटने और खाँसनेकी आवाजें। माशा और मैद्वीद्वेंको घूमकर वापिस आते हैं। बायीं ओरसे प्रवेश]

मैद्वीद्वेंको—तुम यह हमेशा काले कपड़े क्यों पहने रहती हो ?

माशा—क्योंकि मुझे तो जिन्दगी भर रोना है। मैं दुखी हूँ।

मैद्वीद्वेंको—मगर क्यों ? [विचार-मुद्रामें] बात मेरी समझमें नहीं आती स्वास्थ्य तुम्हारा अच्छा-खासा है। बाप तुम्हारा बहुत रईस न सही, फिर भी खाता-पीता है। तुम्हारी जिन्दगीसे तो मेरी जिन्दगी काफी कठिन है। महीनेमें मुझे सिर्फ तेईस रूबल मिलते हैं, और उसमेंसे भी पेंशनके लिए कुछ न कुछ कट जाता है, मगर फिर भी, मैं तो ये काले-वाले कपड़े नहीं पहनता।

माशा—पैसा ही तो सब कुछ नहीं है। सुखी तो गरीब भी हो सकता है।

मैद्वीद्वेंको—हाँ, सैद्धान्तिक रूपसे। लेकिन व्यवहारमें उसका रूप यह है कि मेरी दो बहनें हैं, माँ और छोटा भाई भी है, मैं हूँ—और

तनख्वाह मेरी सिर्फ तेईस रूबल है। हमें खानेको चाहिए, पीनेको चाहिए—चाहिए न ? फिर आदमीको चाय और चीनीकी भी जरूरत पडती है, तम्बाकू भी चाहिए ही। अब आप खींच-तान कीजिये और घसीटिये .

माशा—[उस स्टेजके चारों ओर देखकर] खेल शुरू ही होनेवाला है।

मेद्वीद्वेंको—हाँ, जरेश्न्या अभिनय करेगी। नाटक कान्स्तान्तिन गाव्रिलिचका लिखा है। उन दोनोंमें आपसमें भी बडा प्यार है और आज तो उन दोनोंकी आत्माएँ कलाको साकार करनेमें एकाकार हो जायेंगी। लेकिन तुम्हारा और मेरा हृदय एक हो सके ऐसी कोई जगह नहीं है। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। इतना बेचैन रहता हूँ कि घरपर मुझसे रहा ही नहीं जाता। रोज चार मील इधरसे और चार मील उधरसे चलना पडता है, लेकिन तुम्हारी तरफसे उपेक्षाके सिवा कभी कुछ नहीं मिलता। ठीक है, मैं समझता हूँ। साधन मेरे पास कुछ है नहीं, बहुत बडा परिवार है ऐसे आदमीसे कौन भला शादी करना चाहेगा जिसके पास खाने तकका ठिकाना न हो ?

माशा—उँह, क्या बकवास है ! [चुटकी भरकर सुँघनी चढाती है] तुम्हारा प्यार मेरे दिलको छूता है, लेकिन बस। मैं इसके बदलेमें प्यार-व्यार नहीं दे सकती . [सुँघनीकी डिब्बी उसकी तरफ बढाकर] सुँघनी लो

मेद्वीद्वेंको—नहीं, मन नहीं करता।

[चुप्पी]

माशा—कैसी उमस है। आज रातको जरूर आँधी-पानी आयेगा।. तुम या तो हमेशा सिद्धान्त बघारते रहते हो या बस फिर पैसेको रोते हो तुम समझते हो कि गरीबीसे बढकर और दुर्भाग्य नहीं

है, लेकिन मेरे लिए थियटरोंमें घूमना भीख मांगना हजारगुना बेहतर है बजाय इसके कि खैर, इस सबको तुम नहीं समझ सकते

[दाहिनी ओरसे सोरिन और त्रेपलेव आते है ।]

सोरिन—[अपनी बेंतपर झुककर] बेटा, गांवमे मुझे खुद अच्छा नहीं लगता । और सीधी बात है कि मैं इसका अभ्यस्त भी नहीं हो पाऊँगा । अब कल रातको ही लो । मैं दस बजे सोया और आज सुबह नो बजे उठा तो ऐसा लग रहा था जैसे इतना ज्यादा सोने से मेरा भेजा खोपडीमें जम गया हो । [हँसता है] खानेके बाद ऐसा हुआ कि मैं गलतीसे फिर सो गया और अब ऐसी थकान है जैसे चूर-चूर हो गया हूँ । लगता है जैसे वाकई मैंने रातभर बुरे-बुरे सपने देखे हो. .

त्रेपलेव—जी हाँ, आपको तो शहरमें ही रहना चाहिए । [माशा और मेद्वीद्देंकोको देखते हुए] भाई, जब खेल शुरू होगा तो तुम लोगोंको बुलवा लेंगे—लेकिन इस समय यहाँ तुम्हारी जरूरत नहीं है । चाहो तो जा सकते हो ।

सोरिन—[माशासे] मार्या इलिनिश्ना, जरा अपने बापूसे कुत्तेकी जञ्जीर खोलनेको कहती जाओगी ?—भोंके जा रहा है । पिछली रातको बहन फिर नहीं सो सकी

माशा—बापूसे आप खुद ही कह दीजियेगा । माफ करें, मैं तो नहीं कहूँगी । [मेद्वीद्देंकोसे] आओ चलें ।

मेद्वीद्देंको—[त्रेपलेवसे] तो नाटक शुरू होनेसे पहले किसीको भेजकर हमें बुलवा लेंगे न ?

[माशा और मेद्वीद्देंको जाते है ।]

सोरिन—यानी कि कुत्ता फिर रात भर भोंकता रहे । अच्छा मजाक है ।

देखो न मैं जैसे चाहता हूँ गाँवमें कभी रह ही नहीं पाता। पिछले दिनों महीने भरकी छुट्टी लेकर यहाँ आराम करने या और कामोंसे आया करता था, लेकिन जरा-जरा-सी बातोंको लेकर ये लोग मुझे इतना तंग कर मारते थे कि दो दिन बाद ही यहाँसे भाग जानेको तड़पने लगता। [हँसता है] इस जगहसे पिण्ड छूटनेपर हमेशा खुशी हुई. लेकिन अब तो मैं रिटायर्ड लोगोंमें हूँ, और सच बात तो यह है कि जाऊँ भी तो कहाँ? चाहूँ या न चाहूँ मुझे तो यहीं मरना है

याकोव—[त्रेपलेवसे] कान्स्तान्तिन गाव्रिलिच, हम लोग नहाने धोने जा रहे हैं।

त्रेपलेव—अच्छा ठीक है। लेकिन दस मिनटसे ज्यादा मत लगाना। [घड़ी देखकर] जल्दी ही हम लोग शुरू कर देंगे।

याकोव—अच्छा सरकार।

त्रेपलेव—[उस स्टेजके इधर-उधर देखकर] यह है हमारा स्टेज। परदा, पहला विंग, फिर दूसरा, और इसके बाद खुली जगह। किसी तरहका कोई दृश्य नहीं—बस क्षितिज और झीलका खुला नजारा। जैसे ही चाँद निकला कि हम लोग ठीक साढ़े आठ बजे पर्दा उठा देंगे।

सोरिन—वाह, बहुत सुन्दर।

त्रेपलेव—अगर नीनाने देर कर दी तो सारा मजा किरकिरा हो जायेगा। अब तक उसे आ जाना चाहिए था। उसका बाप और सौतेली माँ उसपर बड़ी कड़ी नजर रखते हैं—इसलिए उसका घरसे निकलना जेलसे भाग आने जैसा ही मुश्किल है। [मामाकी नेकटाई सीधी करता है] आपकी दाढ़ी और बाल बहुत बेतरतीब हो गये हैं। या तो यह छँटने चाहिए या कुछ और

सोरिन—[दाढ़ी सुलझाते हुए] यह मेरे जीवनकी सबसे बड़ी कमजोरी रही है। अपनी जवानीके दिनोंमें भी मैं ऐसा दिखाई देता था जैसे या तो छिप-छिपकर पीता या ऐसे ही और काम करता होऊँ। औरतोंने मुझे कभी पसन्द नहीं किया। [बैठते हुए] आज तुम्हारी माँका मिजाज कैसे बिगड़ा है?

त्रेपलेव—कैसे क्या? वह ऊब जो रही है। [उसकी बगलमें बैठकर] वह कुढ़ती है कि क्यों उनकी जगह नीना इस खेलमें अभिनय कर रही है। इसीलिए वह मेरे विरुद्ध हो गई है। इस खेलके खेले जानेके खिलाफ है, मेरे नाटकके खिलाफ है। मेरे नाटकको वे जानती तक नहीं है लेकिन उससे नफरत करती है

सोरिन—[हँसता है] बहुत अच्छे!

त्रेपलेव—उन्हें इसी बातकी तकलीफ है कि इस छोटेसे स्टेजपर वे नहीं बल्कि नीना ही 'दिग्विजयी' होने जा रही है। [घड़ी देखते हुए] मेरी माँ एक मनोवैज्ञानिक कुण्ठा है। और इसमें तो शक ही नहीं है कि वे बहुत प्रतिभावान् है, विदुषी है—किसी भी किताबको पढ़कर रोने लगती है निक्रासोव की लाइनेंकी लाइनें उन्हें जबानी याद है, देवीकी तरह बीमारोंकी सेवा करती है, लेकिन उनके सामने कभी 'डूज'[1] की तारीफ कर देखिये!—ओफ्फोह!—गजब हो जायेगा। तारीफ अगर आपको किसीकी करनी है तो उनकी, अगर किसीके बारेमें लिखना है तो उनके, अन्धा-धुन्ध उनकी प्रशंसा किये जाइये—'कैमल्याके साथ एक महिला' या 'जीवनके फन' में उनके अद्भुत अभिनयपर उल्लाससे उछल पड़िये। लेकिन यहाँ गाँवमें तो उनको उस तरहका नशा नहीं मिलता न, इसीलिए वह उकताती है और झुँझलाती है। हम सब तो

१ दुखान्त अभिनय करनेवाली विश्व-प्रसिद्ध इटेलियन अभिनेत्री।

उनके दुश्मन है—सारी बुराईकी जड तो हम ही है। अन्धविश्वासी वे इतनी है कि तीन मोमबत्ती जलाने या तेरहकी संख्या तकसे डरती है। रुपयेको दॉतसे पकडती है। मुझे अच्छी तरह पता है कि ओडेसाकी एक बैंकमें इनके नामसे सत्तर-हजार रूबल जमा है, लेकिन आप उनसे एक पैसा तो मॉग देखिये, फूट-फूट कर रोने लगेगी।

सोरिन—यह सिर्फ तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारी मॉ को तुम्हारा नाटक पसन्द नहीं है। बस इतनी-सी बातपर इतने बौखला रहे हो? मनको शान्त करो। बहुत ही प्यार करती है तुम्हारी मॉ तुम्हे।

त्रेपलेव—[एक-एक करके एक फूलकी पत्तियोंको नोचते हुए] प्यार करती है जी नहीं, प्यार नहीं करती प्यार करती है नहीं प्यार करती करती है. नहीं करती [हॅसता है] सुनिये, वे मुझे प्यार नहीं करती। यों मुझे यह सब सोचना नहीं चाहिए। वे तो जिन्दा रहना चाहती है, प्यार करना चाहती है, सोफियाने रगके छपे ब्लाउज, कपडे पहनना चाहती है—और मै पच्चीसका हो गया हूँ। यानी कि मै हमेशा उन्हे याद दिलाता रहता हूँ कि वे अब नवयुवती नहीं रही। जब मै यहाँ नहीं होता तो वे बत्तीसकी होती है, लेकिन मेरे आते ही तेतालीस की हो जाती है। इसीलिए उन्हे मुझसे नफरत है। अच्छा, वह यह भी जानती है कि थियेटरमे मुझे कोई आस्था नहीं है। उन्हे रगमच पसन्द है—वे कल्पना करती है कि मानवताके लिए कुछ कर रही है—कलाकी पवित्र आराधनामें लगी है। जब कि मेरे खयालसे आजकलके ये रगमच, परम्पराओं और रूढियोंकी लकीर पीटनेके सिवा कुछ है ही नहीं। जब पर्दा उठते ही, तीन दीवारों वाले कमरेकी नकली रोशनियों मे—ये बडे-बडे 'प्रतिभाशाली', ये

'महान कलाके सेवक', आपको दिखाते हैं, कि कैसे लोग खाते हैं, शराबे पीते हैं, चलते-फिरते हैं—कपड़े पहनते हैं जब बिल्कुल निरर्थक, तुच्छ वाक्यों और दृश्योंसे ये लोग अर्थ और उपदेश निकालनेकी कोशिश करते हैं, ऐसे-ऐसे भोंडे अर्थ कि हर चलता-फिरता आदमी जिन्हे जानता है, घरमे रोज प्रयोगमें आते हैं—और जब हजारो बार घुमाव फिरावसे यही-यही चीजें पेश की जाती है तो उठकर भाग जानेको मन करता है। शायद इसी सब गन्दगीमे ऊब कर मोपासाँ 'एफिल टावर' छोडकर भाग खडा हुआ था।

सोरिन—मगर रंगमंचके बिना काम भी तो नहीं चलता न।

त्रेपलेव—अब हमे अभिव्यक्तिके नये तरीकोंकी जरूरत है—कोई नया ढंग। अगर वह नहीं मिलता तो अच्छा हो हम कुछ भी न करें। [घडी देखकर] मुझे अम्मासे बहुत-बहुत प्यार है, लेकिन वे अपने उसी छिछले ढंगसे रहना चाहती है। हमेशा इस साहित्यिकके साथ चिपकी रहती है—हमेशा उनका नाम अखबारोंमे उछाला जाता है—और यही सब मुझे चुभता है। कभी-कभी एक मानव-सुलभ आत्माभिमान मुझे कचोटने लगता है कि काश, मेरी माँ एक प्रसिद्ध अभिनेत्री न होकर साधारण औरत होती, तो मै कितना खुश होता। मामा, मेरी स्थितिसे ज्यादा दुखी और निराशाजनक स्थिति किसकी होगी? अम्मासे मिलनेवाले आते है—बडे-बडे लोग, लेखक और कलाकार—उन सबके बीचमे बस, मै ही ऐसा होता हूँ जो कुछ भी नहीं होता। मै चूँकि उनका बेटा हूँ इसलिए मुझे भी 'सह' लिया जाता है। और मै हूँ कौन? हूँ ही क्या? थर्ड-ईयरमे मैंने यूनिवर्सिटी छोड दी, बकौल सम्पादकोंके 'उस कारणसे जिसमे हमारा कोई वश नहीं था'। कोई प्रतिभा मुझमे नहीं, अपना एक पैसा नहीं। मेरे पासपोर्टपर लिखा

है कि मैं कीवका रहनेवाला मध्यमवर्गका आदमी हूँ। आप जानते हैं, मेरे पिताजी भी 'कीव' के रहनेवाले मध्यम वर्गके थे लेकिन वे भी बहुत बड़े अभिनेता थे। सो जब भी अम्माकी बैठकमें ये कलाकार और लेखक लोग दयाभरी दृष्टिसे मुझे देखते हैं, तो मुझे हमेशा लगता है जैसे मेरी तुच्छता और हीनता नाप रहे हों। मैं उनके विचारोंको पढ़ता हूँ और अपमानकी आगसे जल उठता हूँ

सोरिन—अच्छा छोड़ो। एक बात जरा बताओ। यह साहित्यिक कैसा आदमी है? उसका कुछ पता ही नहीं चलता। कभी कुछ बोलता ही नहीं।

त्रेपलेव—बड़ा विद्वान्, बहुत खुश-मिजाज और कुछ खोया-खोया सा। आदमी बहुत ही अच्छा है। अभी मुश्किलसे चालीसका भी नहीं होगा, लेकिन खूब प्रसिद्ध हो चुका है। जीवनमें उसने काफी देखा-सहा है। जहाँ तक लिखनेकी बात है क्या कहना चाहिए? उसके लिखनेमें कला है, आकर्षण है लेकिन जोला और तोल्सतोय पढ़ चुकनेके बाद त्रिगोरिनको पढ़नेको मन नहीं करता

सोरिन—अच्छा है। बेटा, मुझे लेखक लोग पसन्द हैं। कभी वक्त था जब मेरे मनमें सिर्फ दो ही प्रबल इच्छाएँ थीं एक तो मैं शादी करना चाहता था, दूसरे लेखक होना चाहता था। लेकिन हा दोनों में से एक भी नहीं पाया। सचमुच छोटा-मोटा लेखक होना भी बहुत बड़ी बात है।

त्रेपलेव—[सुनते हुए]—किसीके पैरोंकी आवाज सुनाई दे रही है [मामाको बाँहोंमें भरकर]—अम्माके बिना मैं रह ही नहीं सकता उनकी पगध्वनि तक बड़ी प्यारी है मैं बहुत-बहुत

खुश हूँ [नीना जरेच्न्याके प्रवेशके साथ ही उससे मिलने लपकता है ।] मेरी मोहनी मेरी स्वप्न

नीना—[घबराकर] मुझे देर तो नहीं हो गई ? निश्चय ही अभी देर नहीं हुई ।

त्रेपलेव—[उसके हाथ चूमकर]—ना—ना—ना—

नीना—दिन भर बड़ी बेचैनी रही । मैं तो ऐसी डर गई थी कि बस डर यही था कि पिताजी मुझे आनेसे न रोक दे लेकिन वे सौतेली माँके साथ अभी कहीं गये हैं । आसमानपर लाली छाई थी चाँद निकलने लगा था और मैं घोड़ा दौड़ाये चली आ रही थी [हँसती है] लेकिन अब सचमुच मैं खुश हूँ [जोशसे सोरिनसे हाथ मिलाती है ।]

सोरिन—[हँसते हुए] तुम्हारी आँखोंसे तो लगता है जैसे रोती रही हो । छि. छि'—यह तो अच्छी बात नहीं है ।

नीना—उँह, कुछ भी तो नहीं देखिए न, कैसी हाँफ रही हूँ । आध घण्टेमें ही मुझे लौटना है । जरा जल्दी कीजिए । ज्यादा देर मैं नहीं ठहर सकूँगी । भगवान्‌के लिए, मुझे देर मत कराइए । पिताजीको मालूम नहीं कि मैं यहाँ हूँ ।

त्रेपलेव—शुरू करनेका समय तो हो ही गया, हमें जाकर औरोंको बुला लाना चाहिए ।

सोरिन—मैं अभी इसी वक्त चला जा रहा हूँ [दाहिनी ओर गाता हुआ चला जाता है "चले दो सिपहिया " फिर चारों ओर देखता है ।] एक बार जब मैं ऐसे ही गा रहा था तो एक सरपंच बोला—"सरकार आपकी आवाज तो बड़ी अच्छी है ।' फिर कुछ देर सोचकर उसने यह और बढ़ा दिया था— "बस जरा सुरीली नहीं है । [चारों ओर देखता है ।]

नीना—पिताजी और उनकी वह महारानी साहिबा मुझे आने ही नहीं देते थे। कहते है यह जगह जरा 'महान्' लोगोकी है वे डरते है मै अभिनय न करने लगूँ ..लेकिन मेरा मन तो हमिनीकी तरह इस झीलमे डुबकियाँ लगानेको कर रहा है . मेरे दिलमे तो तुम समाये हो [चारो ओर देखती है।]

त्रेपलेव—हमलोग अकेले ही है न ?

नीना—लगता है, वहाँ कोई है।

त्रेपलेव—कोई भी तो नही है।

[एक दूसरेको चूमते है।]

नीना—यह कौन-सा पेड है ?

त्रेपलेव—सालका पेड है।

नीना—चारो ओर इतना अँधेरा क्यो हो गया ?

त्रेपलेव—साँझका वक्त है न। चारो ओर कालिमा छा रही है। सुनो मेरा कहना मानो—जल्दी मत जाना।

नीना—जाना तो है ही।

त्रेपलेव—अच्छा, नीना, अगर मै भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ? तुम्हारी खिडकीको देखते हुए रात भर बगीचेमे खडा रहूँगा।

नीना—तुम खडे रह ही नही सकते। चौकीदार देख लेगा। कुत्ता ट्रेसर भी तुम्हे नही पहचानता। वह भी भोकेगा।

त्रेपलेव—मै तुम्हे प्यार करता हूँ।

नीना—चुप. ।

त्रेपलेव—[किसीके पैरोकी आवाज सुनकर] कौन है ? याकोव तुम हो क्या ?

याकोव—[नेपथ्यमे] हाँ, सरकार।

त्रेपलेव—अच्छा, अपनी-अपनी जगह पहुँच जाओ। खेल शुरू करनेका समय हो गया है। देखना, चाँद निकल आया है क्या?

याकोव—जी हाँ, सरकार।

त्रेपलेव मैथिलेटेड स्प्रिट है न तुम्हारे पास? गन्धक भी होगी न? जब लाल-लाल आँखें दिखाई दें तभी गन्धककी गन्ध होनी चाहिए। [नीनासे] तुम जाओ। सब तैयार है। घबरा तो नहीं रही?

नीना—हाँ, घबराहट तो बुरी तरह हो रही है। तुम्हारी माँ की तो कोई बात नहीं, उनसे मैं नहीं डरती, लेकिन त्रिगोरिन . उनके सामने अभिनय करनेमें बड़ी झिझक और शर्म लगती है इतने बड़े लेखक है? नौजवान हैं क्या?

त्रेपलेव—हाँ।

नीना—कितनी ऊँचे दर्जेकी होती हैं उनकी कहानियाँ।

त्रेपलेव—[निर्जीव स्वरसे] मुझे नहीं मालूम। मैंने नहीं पढ़ी।

नीना—तुम्हारे खेलमें अभिनय करना बड़ा मुश्किल है। उसमें कोई सजीव पात्र ही नहीं है।

त्रेपलेव—जीते-जागते सजीव पात्र? जीवन जैसा है या उसे जैसा होना चाहिए, उसका वैसा ही चित्रण तो हमें नहीं कर देना है। बल्कि जो हम सपनोंमें देखते हैं—हमें वह दिखाना है।

नीना—घटनाएँ भी तो नहीं हैं तुम्हारे खेलमें—भाषण ही भाषण है बस। फिर मेरा विचार है कि नाटकमें प्रेम भी होना ही चाहिए।

[दोनों स्टेजके पीछेकी ओर चले जाते हैं।]

[पोलिना अन्द्रेव्ना और दोर्न का प्रवेश।]

पोलिना—यहाँ ओस पड़ रही है। जाकर अपने पाँव-बन्द पहन आओ।

दोर्न—मुझे तो गर्मी लग रही है।

पोलिना—सच, तुम अपनी जरा भी फिक्र नहीं करते। यह तुम्हारी जिद है। खुद डाक्टर हो और जानते हो कि यह सीली हवा तुम्हारे लिए अच्छी नहीं है। तुम्हें तो बस मुझे सताना। कल शामको जानबूझकर तुम बाहर बरामदेमें बैठे रहे थे।

डोर्न—[गुनगुनाता है] "मत कहो जवानी गई बीत ...."

पोलिना—तुम इरीना निकोलायेव्नासे बातोंमें ही ऐसे मस्त थे ..कि ठण्डका ध्यान ही नहीं था .... मान लो, तुम्हें उसकी सुन्दरता खींचती है।

डोर्न—देखो, मेरी उम्र पचपन सालकी है।

पोलिना—बकवास! पुरुषके लिए यह कोई ज्यादा उम्र थोड़े ही है। अपनी उम्रके हिसाबसे तो तुम काफी जवान दिखाई देते हो, और औरतोंके लिए तो अब भी आकर्षक हो

डोर्न—अच्छा हूँ तो फिर? तुम्हें क्या है?

पोलिना—तुम सबके सब पुरुष एक एक्ट्रेसके तलुए चाटनेमें लगे हो।

डोर्न—[गुनगुनाते हुए] "मैं खड़ा हूँ मुग्ध तेरे सामने फिर"—अगर बनिये-व्यापारियोंकी अपेक्षा कलाकारोंका समाजमें अधिक आदर है या उनके साथ दूसरी तरहका व्यवहार होता है तो वह उनके गुणके कारण ही तो। यही तो आदर्श है।

पोलिना—औरतें हमेशा तुम्हें प्यार करती रहीं, अपनेको तुमपर निछावर करती रहीं—यह भी आदर्श है?

डोर्न—[कन्धे उचकाकर] हाँ, यह बात तो है। मेरे प्रति औरतोंका व्यवहार ज्यादातर स्निग्धतापूर्ण ही रहा है। लेकिन मुझमें खास तौरसे वे जो चीज प्यार करती थीं वह है एक कुशल डाक्टर। तुम्हें याद है, दस-पन्द्रह साल पहले पूरे जिलेमें मैं ही अकेला

करानेमें सबसे कुशल डाक्टर था। मैं तो तब भी हमेशा ही ईमानदार रहा।

पोलिना—[उसका हाथ पकड़कर] प्रियतम !

दोर्न—चुप चुप लोग आ रहे हैं।

[सोरिनकी बाँहमें बाँह डाले हुए आर्कादीना, त्रिगोरिन, शार्मयेव, मैद्वीद्वैंको और माशाका प्रवेश।]

शार्मयेव—सन् १८७३ में पोल्तावाके मेलेपर इन्होंने क्या कमालका अभिनय किया था। बस, मजा आ गया। उस दिन तो इनका अभिनय गजबका था। [आर्कादीनासे] अच्छा हाँ, वह मजाकिया ऐक्टर पावेल सिम्योनिच चादिन आजकल कहाँ है ? उसने रासिप्लीयेवका पार्ट तो सादोव्स्कीसे भी कितना अच्छा किया था। सच कहता हूँ कि उसकी कोई नकल भी नहीं कर सकता। आजकल है कहाँ वह ?

आर्कादीना—तुम मुझसे हमेशा गड़े मुर्दोंके बारेमें ही पूछते हो। मुझे क्या मालूम, कहाँ है ? [बैठती है।]

शार्मयेव—[गहरी साँस लेकर] पाश्‌का चादिन। वैसे ऐक्टर अब हैं नहीं। इरीना निकोलायेव्ना, रंगमंच तो अब रसातलमें चला गया है। पुराने जमानेमें कैसे-कैसे बड़े बैलूतके पेड़ थे—अब तो ठूँठोंके सिवा कुछ भी दीखता नहीं।

दोर्न—यह बात तो सच है कि आजकल प्रतिभाशाली ऐक्टर कम हैं, फिर भी अभिनयका सामान्य-स्तर पहलेसे बहुत ऊँचा है—यह मानना पड़ेगा।

शार्मयेव—मैं आपकी बात नहीं मान सकता। खैर, फिर भी यह तो अपनी-अपनी रुचिकी बात है। क्यों इसपर बेकार खींचतान की जाय।

[त्रेपलेव उस स्टेजके पीछेसे आता है।]

आर्कदीना—[बेटेसे] बेटा, कब शुरू हो रहा है?

त्रेपलेव—बस एक मिनट। जरा-सा धीरज रख लो।

आर्कदीना—['हैमलेट' में से बोलती है] "ओ हैमलेट, अब और मत बोल, तू मेरी निगाहोंको मेरी अपनी ही आत्मामें, उसे परखनेके लिए मोड़े दे रहा है, और उस आत्मामें मुझे ऐसे काले-काले दाग और धब्बे दिखाई दे रहे हैं जिनकी छाप शायद कभी नहीं मिटेगी।"

त्रेपलेव—[हैमलेटसे ही] "मुझे अपने दिलको ऐंठ लेने दो, ताकि मैं देखूँ कि क्या सचमुच ही वह किसी कोमल तत्त्वका बना है।"

[उस स्टेजके पीछेसे एक तुरही बजती है।]

त्रेपलेव—देवियो और सज्जनो, अब हम खेल शुरू कर रहे हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप ध्यानसे देखें, [रुककर] अब मैं शुरू करता हूँ, [छड़ीसे ठोककर ज़ोरसे बोलना शुरू करता है।] हे रातके समय इस झीलपर मँडराने-वाली पुराने देवताओंकी छायाओ, हमें लोरियाँ सुनाओ कि हम सो जायँ और आजसे दो लाख सालका समय पार करके सपनेमें जागें।

सोरिन—दो लाख साल बाद तो कुछ होगा ही नहीं।

त्रेपलेव—तो उस "कुछ नहीं" को ही इन लोगोंको दिखाने दीजिये।

आर्कदीना—अच्छी बात है, देखें। हम लोग सोये जाते हैं।

[पर्दा उठता है। झीलका दृश्य खुलता है। चाँद क्षितिजसे उठ चुका है। उसकी परछाईं पानीपर झिलमिला रही है। उधर

से नीचे तक सफेद कपड़े पहने नीना जरेश्न्या एक बड़े-से पत्थरपर बैठी है।]

नीना—आदमी, शेर, चीलें और तीतर—बारहसिंघे, बतखें, मकड़े, पानी में चुप-चुप तैरनेवाली मछलियाँ, तारों-जैसी मछलियाँ, आँखोंसे न दिखाई देनेवाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े—सारे प्राणी, सारे जीव, सारे चेतन अपने दु:खोंका चक्र पूरा करके समाप्त हो चुके हैं,

'हजारों सालसे धरतीने किसी जीवित प्राणीको अपनी गोदमें जन्म नहीं दिया और यह बेचारा चाँद अपने प्रकाश-दीपको जलाये रखनेका उद्देश्य भूल चुका है। घासके मैदानोंमें अब बगुले एक चीख मारकर चौंकते हुए जाग नहीं पड़ते और नीबूके पेड़ोंपर भौंरोंकी भनभनाहट गूँजना बंद हो गई है। सब कुछ शान्त ' जड़ ''शीत-स्तब्ध ! शून्य सुनसान सन्नाटा !

भीषण भयानक 'आतंकोत्पादक ! [रुककर] जीवित प्राणियोंके शरीर धूलमें मिलकर न जाने कबके खो चुके हैं और उस मूल-तत्त्वने सभीको चट्टानों, पानी और बादलोंके रूपमें बदल दिया है—सिर्फ उनकी आत्माएँ एक दूसरेमें घुलकर समा गई हैं—और मैं ही वह विश्वात्मा हूँ मैं. महान् सिकन्दरकी आत्मा मेरे भीतर है. .सीजर, शैक्सपियर और नेपोलियनकी आत्माएँ भी मुझमें समाई हुई हैं छोटी-से-छोटी जोंक तककी आत्मा भी मुझमें है ..मेरे भीतर ही मानवके प्राण और अन्य जीवोंकी आत्माएँ घुल-मिलकर एकाकार हो गई हैं . मुझे सब.. सब सब कुछ याद है और हर छोटा-से-छोटा जीवन मेरे भीतर पुनर्जीवित हो उठा है..

[सत्राटेकी आत्माका प्रवेश]

आर्कडीना—[धीरेसे] यह तो कुछ 'पतनोन्मुख लोगों' जैसी बातें है।

त्रेपलेव—[झिझकते प्रार्थनाके स्वरमें] अम्मा!

नीना—मैं बिलकुल अकेली हूँ। दो सौ सालमें एक बार बोलनेके लिए मेरे होंठ फड़कते हैं! और मेरी आवाज शून्य अन्तरिक्षमें बिलखती-सी भटकती रहती है! उसे सुननेवाला कोई नहीं है। ओ, सुर्ख छायाओ, तुम भी तो उसे नहीं सुन पाती। दिनकी रोशनी फटने से पहले पथरीई दल-दल तुम्हें जन्म देती है और पौ फटने तक तुम इधरसे उधर भटकती रहती हो। भावहीन—इच्छा-रहित और जीवनके स्पन्दनोंसे दूर! शाश्वत-भूतोंका स्वामी 'पाप' खुद डरता है कि कहीं तुममें फिरसे जीवन न जाग उठे। वह चट्टानोंके रूपमें, बहते पानीके रूपमें, अणुओंको तुम्हारे भीतर भी उँडेलता रहता है और तुम हमेशा—अनवरत रूपसे बदलती रहती हो क्योंकि इस अखिल ब्रह्माण्डमें आत्माको छोड़कर कुछ भी स्थायी और नित्य नहीं है।

. [रुककर] अन्धे कुएँमें पड़े कैदीकी तरह मुझे नहीं मालूम मैं कहाँ हूँ और आगे यहाँ क्या होनेवाला है! मैं इसके सिवा और कुछ नहीं जानती कि मुझे 'पाप' से लड़ना है, और भौतिक-शक्तियोंके स्वामी 'पाप' के साथ होनेवाले इस क्रूर और निरन्तर संघर्षमें अन्तिम विजय मेरी ही होगी! उसके बाद जड़ और चेतन मधुर-संगीतकी तरह एकात्म और एकलय हो जायेंगे तब वस्तुतः विश्वेच्छाका अवतरण होगा लेकिन यह सब धीरे-धीरे होगा . लम्बे-लम्बे हजारों सालोंके बाद जब चाँद लुब्धक तारा. धरती सभी कुछ धूल धूलमें बिखर जायेंगे तब यह महाभयानक आतङ्क [चुप्पी। दो लाल-लाल चमकदार धब्बे झीलकी पृष्ठभूमिमें उभरते हैं] अब मेरा महान् शत्रु

'पाप' आ रहा है. मुझे उसकी लाल-लाल चमकती भयङ्कर आँखे दीख रही है.

आर्कदीना—गन्धककी बदबू-सी आ रही है। क्या उसकी भी जरूरत थी?

त्रेपलेव—जी हाँ।

आर्कदीना—[हँसकर] अच्छा तो यह रङ्ग-मञ्चका प्रभाव पैदा करने को है।

त्रेपलेव—अम्मा!

नीना—बिना मनुष्यके अस्तित्वके 'पाप' अपने-आपसे उकता चुका है।

पोलिना—[डोर्नसे] तुमने अपना टोप उतार लिया है। पहन लो न, ठण्ड लग जायेगी..

आर्कदीना—डाक्टर साहबने शाश्वत-भूतोंके स्वामी 'पाप' के स्वागतमे टोप उतार लिया है।

त्रेपलेव—[भडककर चीखते हुए] बस! बहुत हो चुका! खेल खत्म किया जाता है। पर्दा गिराओ!

आर्कदीना—इतना नाराज होनेकी क्या बात है?

त्रेपलेव—बस, बस, बहुत हो चुका! पर्दा गिरा दो! आने दो पर्देको नीचे [पैर पटककर] पर्दा। [पर्दा गिरता है] माफ कीजिये भाइयो, मै इस बातको बिलकुल ही भूल गया था कि सिर्फ कुछ चुने हुए लोग ही नाटक लिख सकते है, और कुछ चुने हुए ही अभिनय कर सकते है। मैने उनकी बपौतीको हथियानेकी कोशिश की. मै मै .

[कुछ और कहनेकी कोशिश करता है, लेकिन सिर्फ हाथोंको झटककर बाईं ओर चला जाता है।]

आर्कदीना—इसे हो क्या गया?

सोरिन—इरीना बहन, तुम्हें बच्चोंके भी आत्म-सम्मानका ध्यान रखना चाहिये।

आर्कडीना—मैंने उसे कहा क्या था?

सोरिन—तुमने उसकी भावनाओंको चोट पहुँचाई है।

आर्कडीना—उसने तो मुझसे पहले ही कहा था कि यह प्रहसन है इसलिए मैंने उसके खेलको प्रहसन ही समझा।

सोरिन—फिर भी.

आर्कडीना—अच्छा तो अब पता लगा कि उसने एक महान् कृतिको जन्म दिया है! यह सारा नाटक मनोरंजनके लिए नहीं रचा गया, हमारे चारों ओर यह गन्धककी बदबू परिहासके लिये नहीं, बल्कि हमें सचका प्रभाव सिखानेके लिए फैलाई गई है! हमें वह लिखना और अभिनय करना सिखाना चाहता था। यह ज्यादती है। तुम कुछ कहो दादा, लेकिन मुझे लेकर हमेशा यह खिल्ली उड़ाना, हमेशा यह तानाकशी—इससे किसीका भी धीरज टूट सकता है। यह लड़का बड़ा ही घमण्डी और सनकी है।

सोरिन—उसने तो तुम्हारा मन ही बहलाना चाहा था।

आर्कडीना—सचमुच? फिर उसने कोई साधारण-सा खेल क्यों नहीं चुना?—क्यों हमें 'पतनोन्मुख' लोगोंकी पागलपनेकी बकवास सुनवाना चाहा? ठीक है मजाकके लिए मैं बकवास भी सुननेको तैयार हूँ लेकिन नाम तो हम 'कलाका नया दृष्टिकोण', 'नया कलारूप' जैसे देते हैं। मेरे ख्यालसे नये कलारूपसे इसका कोई सम्बन्ध है नहीं।—उलटे विकृत मानसिक स्थिति की नुमाइश है।

त्रिगोरिन—हर आदमी अपनी पसन्द और सामर्थ्यके अनुसार ही तो लिख पाता है।

आर्कदीना—अरे, उसका जो मन हो और जो वह लिख सके सो लिखे—बस मुझे शान्तिसे रहने दे।

दोर्न—जुपीटर[1] साहब, तो नाराज हो गये।

आर्कदीना—जुपीटर नही, मै औरत हूँ [सिगरेट जलाती है] नाराज मै नही हूँ, फिर भी झुँझलानेकी तो बात ही है कि एक नौजवान इस बुरी तरह अपना वक्त बरबाद करे। मै उसकी भावनाओंको चोट पहुँचाना नही चाहती थी

मैद्वीदैंको—यह जान-बूझकर भी कि चेतना भौतिक अणुओंके मिश्रणसे ही बनी है, जडको चेतनसे अलग कर डालनेका किसीको कोई अधिकार नही है। [जोशमे त्रिगोरिनसे] लेकिन देखिये, किसीको इस विषयपर नाटक लिखकर अभिनय करना चाहिये कि हम बेचारे अध्यापक कैसे जीते है। हमलोगोकी जिन्दगी बडी कठोर है।

आर्कदीना—यह सब तो ठीक है। फिर भी क्यो न हम नाटको और अणुओंके अलावा किसी और विषयपर बाते करे? कैसी सुहावनी सन्ध्या है! आपलोग सुनते है न, कोई गा रहा है [सुनती है] कैसा सुरीला है!

पोलिना—गीत झीलके उस पारसे आ रहा है।

[चुप्पी]

आर्कदीना—[त्रिगोरिनसे] यहाँ बैठो, मेरे पास। दस-पन्द्रह साल पहले इस झीलपर रोज ही रातको संगीत और गानेके स्वर लहराया करते थे! झीलके किनारोपर छः झोंपडियाँ है। मुझे याद है: यहाँ हर समय हँसी, कोलाहल, कहकहे, किलकारियाँ और प्रेमके किस्से

---

१. रोमका सर्वश्रेष्ठ देवता: इन्द्र।

ही छाये रहते थे और उन दिनों उन छहों बगलोंके आराम कृष्ण-कन्हैया हमारे मित्र [डोर्नकी ओर इशारा करके] डा० यैव्गेनी सर्जीएविच ही थे। मन-मोहन तो यह अब भी हैं, लेकिन उन दिनोंकी तो कुछ पूछिये ही मत। पर मेरी आत्मा मुझे अब कोस रही है। बेचारे बच्चेकी भावनाओंको मैंने ठेस क्यों पहुँचाया ? मुझे बड़ी चिन्ता है [पुकारती है] कोस्त्या, बेटा कोस्त्या !

माशा—मैं जाकर देखती हूँ, कहाँ है।

आर्कदीना—ज़रा चली जाना बेटी।

माशा—[बायीं ओर जाते हुए] अरे ओऽकोन्स्तान्तिन गाव्रिलिच ! ओऽऽऽ [चली जाती है]

नीना—[उस स्टेजके पीछेसे आते हुए] अब खेल तो होगा ही नहीं। इसलिए मैं निकली आती हूँ। नमस्कार !

[आर्कदीना और पोलिनाके हाथ अभिवादनके लिए चूमती है।]

सोरिन—शाबास ! शाबास !

आर्कदीना—शाबास ! हमें तुम्हारा अभिनय बहुत ही पसन्द आया। ऐसा सौन्दर्य, ऐसा मधुर स्वर। तुम कहाँ गाँवमें पड़ी हो ? यह गलती है। प्रतिभा तो तुममें है ही। सुन रही हो ? तुम्हें रंगमंचको अपना लेना चाहिए

नीना—हाय, वही तो मेरा भी एक-मात्र स्वप्न है। [सोच्छ्वास] लेकिन यह कभी सच नहीं होगा।

आर्कदीना—कौन कह सकता है। अच्छा आओ, तुम्हारा परिचय करा दूँ। आप हैं बोरिस अलेक्सीविच त्रिगोरिन !

नीना—सचमुच, मुझे बड़ी खुशी हुई [एक दम विह्वल-सी होकर] मैं हमेशा आपकी चीजें पढ़ती

आर्कदीना—[उसे अपने पास बैठाते हुए] चिड़िया, शरमाओ मत। ये बहुत बड़े आदमी हैं, लेकिन बड़े ही सीधे सरल-हृदय। देखो न, यह तो खुद ही झेंप रहे हैं।

दोर्न—मेरा ख्याल है अब पर्देको हटा ही दिया जाय। बड़ी घुटन है।

शार्मयेव—[पुकारता है] याकोव, पर्दा उठा देना, भैया!

त्रिगोरिन—समझमें तो मेरी जरा भी नहीं आया, लेकिन अच्छा बहुत लगा। तुमने बहुत ही सधा अभिनय किया। दृश्यावली भी बहुत ही सुन्दर थी। [थोड़ी देर चुप रहकर] इस झीलमें तो मछलियाँ भी बहुत होंगी...

नीना—जी हाँ।

त्रिगोरिन—मुझे मछलियाँ पकड़नेका बड़ा शौक है। सन्ध्याको नदीके किनारे बैठकर धाराके बहावको ताकते रहनेसे अधिक आनन्द मुझे किसीमें नहीं आता।

नीना—लेकिन मैं सोचती हूँ जिसने एक बार रचना करनेका आनन्द जान लिया है उसके लिए तो कोई दूसरा आनन्द है ही नहीं

आर्कदीना—[हँसकर] यो मत कहो। जब लोग इनसे प्रशंसा भरी वाणीमें अच्छी अच्छी बातें करते हैं तो यह बेचारे चित आ जाते हैं।

शार्मयेव—मुझे याद है, मॉस्को आर्ट थियेटरमें एक बार प्रसिद्ध गायिका सिल्वाने पंचमका 'सा' उठाया। मजा देखिये, वहीं गैलरीमें हमारे चर्चकी संगीत-मण्डलीका पंचम-स्वर गानेवाला भी बैठा था। आप हमारे आश्चर्यका अन्दाजा लगाइये जब हमने अचानक गैलरीसे सुना—'शाबास सिल्वा' पूरेके पूरे सातों स्वरोंका सरगम एक ही बारमें [गला भींचकर पञ्चम स्वरमें] 'शाबास सिल्वा' सारे दर्शक स्तब्ध रह गये ।

[कुछ देर चुप्पी]

डोर्न—सन्नाटेकी आत्मा हमारे ऊपर भी छा गई है।

नीना—अब मेरे जानेका समय हो गया है। अच्छा नमस्कार!

आर्कादीना—अरे चल कहाँ दी? इतनी जल्दी कैसे? भई, हम तो नहीं जाने देंगे··

नीना—पिताजी मेरी राह देख रहे होंगे

आर्कादीना—सचमुच कैसे व्यक्ति हैं [उसका चुम्बन लेकर] अच्छा, तब तो कोई चारा ही नहीं। मुझे बड़ा दुःख है, तुम्हें जाने देनेमें मुझे अच्छा नहीं लग रहा

नीना—आप मानिये, जाते हुए मुझे भी बुरा लग रहा है।

आर्कादीना—मुन्नी, किसीको तुम्हारे साथ घर तक पहुँचाने भेज दे

नीना—अरे नहीं नहीं

सोरिन—[नीनासे खुशामदके स्वरमें] रुक ही जाओ न?

नीना—प्योत्र निकोलायेविच्, मैं रुक नहीं सकती।

सोरिन—एक घण्टा और रुक जाओ। इसमें क्या बात है?

नीना—[एक मिनट सोचकर आँखोंमें आँसू भरे हुए] मैं रुक नहीं सकती।

[हाथ मिलाती है और तेजीसे चली जाती है।]

आर्कादीना—सचमुच बड़ी अभागी लड़की है बिचारी। लोग कहते हैं, इसकी माँने सारी अपनी अपार जायदाद उसके बापके नाम कर दी थी—एक-एक पाई। लड़कीको एक फूटी कौड़ी नहीं मिली। अब बापने सब कुछ दूसरी बीबीके नाम कर दिया है। बड़ी मुश्किल

डोर्न—हाँ, इसका बुड्ढा बाप बड़ा बदमाश आदमी है। उसको तो गाली देना ही सबसे बड़ा सत्कार है।

सोरिन—[अपने ठिठुरे हुए हाथ मलते हुए] अब चला जाय । ठण्ड हो रही है । मेरे पैरोंमे दर्द होने लगा है ।

आर्कदीना—बिल्कुल लकडी जैसे हो गये है । तुमसे चला थोडे ही जायेगा । आओ, दादा, चले ।

[बोह थामती है]

शार्मयेव—[अपनी पत्नीकी ओर बाँह बढाकर] श्रीमती जी

सोरिन—मुझे लगता है कुत्ता फिर भौंक रहा है [शार्मयेवसे] इल्या अफनासिच, जरा महरबानी करके उसकी जंजीर खोलनेको तो कह दो. .

शार्मयेव—यह तो नही हो सकता प्योत्र निकोलायेविच्, कही खलिहानमे चोर-वोर घुस जॉय तो ? [अपने साथ चलते मैद्वीद्वेंकोसे] हॉ तो उसने सरगमके सातो स्वर एक ही साथ सुना डाले 'शाबास सिल्वा !' खुद वह कोई अच्छा गायक नहीं था—बस चर्चकी सगीत-मडलीका एक मामूली-सा आदमी था .

मैद्वीद्वेंको—सगीत-मण्डलीके आदमीको कितना मिलता होगा महीने मे ?

[दोर्नके सिवा सब चले जाते हैं ।]

दोर्न—[स्वगत] मै नहीं जानता . शायद मै समझ ही न पाया होऊँ या हो सकता मेरा दिमाग ही साथ न दे रहा हो, लेकिन नाटक मुझे तो पसन्द आया. .उसमे था कुछ ! जब वह लडकी सन्नाटे और एकान्तके बारेमे बोल रही थी और जब 'पाप' की ऑखे दिखाई दे रही थी तब मै तो ऐसे भावावेशमे आ गया कि मेरे हाथ कॉपने लगे थे एकदम मौलिक.. सीधा-सादा ढग...मुझे लगता है वह आ रहा है . जितना मुझसे होगा उसकी तारीफ करूँगा..

त्रेपलेव—[प्रवेश करते हुए] सब लोग चले गये...

दोर्न—मै हूं !

त्रेपलेव—माशेंका मुझे सारे बागमें खोजती फिर रही है। बड़ी दुष्ट है।

दोर्न—कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिच, मुझे तो तुम्हारा खेल बहुत ही पसन्द आया। एकदम अद्भुत चीज थी। हालाँकि मैंने उसका अन्त नहीं सुना, लेकिन इतनेका ही मेरे ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा है। तुम प्रतिभाशाली आदमी हो... लगे रहो।

[त्रेपलेव आवेशमें उसका हाथ दबाता है और अचानक बाँहोंमें भर लेता है।]

दोर्न—छि: कैसे पागल आदमी हो। रोने लगे। मेरा मतलब यह थोड़े ही था। तुमने अपना विषय निराकार भावोंकी दुनियामेंसे लिया है, और होना भी यही चाहिए। किसी भी महान् कलाकृतिका कोई न कोई सन्देश होना चाहिए। कृतिकी श्रेष्ठताके लिए उसमें गम्भीरता होनी चाहिए। क्या, ऐसे सुस्त क्यों हो रहे हो?

त्रेपलेव—तो आपकी यह सलाह है कि मैं लगा रहूँ?

दोर्न—हाँ हाँ, मगर बस लिखो महत्त्वपूर्ण और स्थायी चीज ही। जानते हो, मुझे जीवनके तरह तरहके अनुभव हैं और मैंने सभीका आनन्द लिया है। अब मनमें कोई साध नहीं है। फिर भी अगर कहीं उस आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँच पाना मेरे भाग्यमें होता जिसे कलाकार रचना करते समय छू लेता है तो मेरा विश्वास है कि मैं जरूर ही इस शारीरिक अस्तित्व और इसके साथ लगी दुनिया भरकी तुच्छताओंसे घृणा करने लगता—इन सारे सांसारिक झंझटोंसे जितना बन पड़ता पीछा छुड़ा लेता।

त्रेपलेव—माफ कीजिये बीचमें एक बात—इस वक्त नीना कहाँ गयी?

दोर्न—एक बात और भी। हर कलाकृतिमें एक साफ सुथरा निश्चित विचार होना चाहिए। आपके लिखनेका उद्देश्य क्या है यह आपको साफ पता हो। क्योंकि अगर आप बिना किसी निश्चित

लक्ष्यके इस रंग-बिरंगे रास्तेपर जिधर मन हुआ चलते चले गये तो भटक जायेंगे और आपकी प्रतिभा आपको ले डूबेगी।

त्रेपलेव—[अधीरतासे] नीना कहाँ है ?

दोर्न—वह तो चली गई घर।

त्रेपलेव—[हताश-सा] अब क्या करूँ. मैं तो उससे मिलना चाहता हूँ मुझे उससे मिलना ही है.. मैं जरूर जाऊँगा।

[माशाका प्रवेश]

दोर्न—[त्रेपलेवसे] बेटा, जरा धीरज रखो।

त्रेपलेव—अब तो कुछ हो. मैं जा ही रहा हूँ ..

माशा—भीतर चलो कान्स्तान्तिन गाव्रिलिच, अम्माने बुलाया है। वे बड़ी चिन्तित है .

त्रेपलेव—उनसे कह दो, मैं चला गया.. और मैं तुमसे .तुमसे प्रार्थना करता हूँ मुझे तङ्ग मत करो...मुझे अकेला रहने दो, मेरे पीछे मत पड़ो।

दोर्न—चलो चलो आओ बेटा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए अच्छी बात नहीं है

त्रेपलेव—[गीले स्वरमें] नमस्कार डाक्टर साहब शुक्रिया .।

[चला जाता है]

दोर्न—[गहरी साँस लेकर] नौजवान लोग हैं। अपने मनकी ही करेंगे।

माशा—लोगोंको जब कुछ और कहनेको नहीं मिलता तो कहते हैं "नौजवान लोग हैं, नौजवान लोग हैं।"

[चुटकी भरकर सुँघनी चढ़ाती है।]

डोर्न—[उसकी सुँघनीकी डिबिया झाड़ीमें फेंकते हुए] यह बदतमीजी है। [कुछ देर चुप रहकर] मुझे लगता है, भीतर वे लोग पियानो बजा रहे हैं। आओ भीतर ही चलें।

माशा—जरा रुकिये न।

डोर्न—क्या बात है?

माशा—मैं बार-बार आपसे कह रही हूँ। मेरा आपसे बातें करनेको बड़ा मन कर रहा है। [आवेशमें आते हुए] बापूसे मुझे विशेष प्रेम नहीं है, लेकिन आपके लिए मनमें बड़ी श्रद्धा है। पता नहीं कैसे यह मेरे दिलमें जम गया है कि आप मेरे हृदयके बहुत ही निकट हैं। मुझे बचाइये, या तो बचा लीजिये, नहीं तो मैं कुछ पागलपना कर डालूँगी। मैं अपनी जिन्दगीके साथ कोई खिलवाड़ कर डालूँगी—अपना सत्यानाश कर लूँगी। अब मुझसे सहा नहीं जाता।

डोर्न—यह सब क्या है? किससे तुम्हें बचा लूँ?

माशा—मैं बड़ी दुखी हूँ। कोई भी, किसीको भी तो नहीं पता मैं कितनी दुखी हूँ। [उसकी छातीपर अपना सिर रखकर धीरेसे] मैं त्रेपलेवसे प्यार करती हूँ।

डोर्न—सब लोग कैसे पागल हो गये हैं! कैसे पागल! प्यार ही प्यार! कितना ढेर लग गया है, यह सारा जादू इस झीलका ही है! [स्निग्ध स्वरमें] लेकिन बिटिया, मैं क्या करूँ? क्या? क्या?

[पर्दा गिरता है।]



दूसरा अङ्क

[क्रॉकेट (लकड़ीकी गेंद और बल्लोंसे खेला जानेवाला खेल) खेलनेका लॉन । दायी ओर पृष्ठभूमिमें एक बड़ेसे बरामदेवाले मकानका हिस्सा । बायी ओर तेज धूपमें चिलकती झील दिखाई दे रही है । क्यारियाँ फूलोंसे भरी हैं । समय दोपहर । आर्कदीना, दोर्न और माशा लॉनके एक ओर पुरानेसे नीबूके पेड़की छायामें एक बेंचपर बैठे हैं । दोर्नके घुटनोंपर एक किताब खुली रखी है ।]

आर्कदीना—[माशासे] चलो, अब उठें [दोनों उठती हैं] आओ, जरा मेरे पास तो आकर खड़ी होना इधर । तुम बाईस सालकी हो और मैं तुमसे करीब-करीब दुगुनी हूँ । येव्गैनी सर्जाएविच्, देखना, हम दोनोंमें कौन छोटा दिखाई देता है ?

दोर्न—साफ है, तुम्हीं तो छोटी लगती हो ।

आर्कदीना—वही तो ! अच्छा उसका कारण क्या है जानती हो ? मैं मेहनत करती हूँ । मुझे हमेशा ऐसा लगता है जैसे कुछ करना है. . तुम तो जब देखो तब बस एक ही जगह बैठी रहती हो । यह भी कोई जिन्दगी है तुम्हारी मेरा उसूल है : कभी भी भविष्यकी चिन्ता मत करो । मैं कभी भी बुढ़ापे और मौतकी बातें नहीं सोचती । अरे, जो होना होगा, होगा ।

माशा—और मुझे तो हमेशा ऐसा लगता है न जाने किस युगमें मेरा जन्म हुआ था और जैसे जिन्दगीकी अछोर शृङ्खलाको पीछे घिसटते कपड़ेकी तरह घसीटे लिये जा रही हूँ लिये जा रही हूँ कभी-

कभी तो यों जिये चले जानेसे मन बुरी तरह ऊब जाता है—जरा भी मन नहीं होता। [बैठ जाती है] ठीक है, ये सब बेकारकी बातें हैं, मुझे इन बातोंको दिमागसे झटक देना चाहिए।

डोर्न—[धीरे-धीरे गुनगुनाता है] 'मेरी कलियो उससे कहना ...'

आर्कादीना—मैं अंग्रेजोंकी तरह नियम कायदेमें रहती हूँ। बेटी, मेरे साथ तो वह कहावत है, "अपना काम अपने हाथ"—मैं हमेशा कपड़े इत्यादि ढंगसे पहने रहती हूँ—हमेशा चोटी किये रहती हूँ। क्या सिर्फ ड्रेसिंग-गाउनमें या बाल खोले हुए कभी बगीचे तक जाती हूँ? कभी नहीं। मेरे इस तरह बने रहनेका रहस्य ही यह है कि मैं कभी भी गन्दी नहीं रहती—जैसी और औरतें रहती हैं उस तरह तो मैं रह ही नहीं सकती। [हाथ पीछे कमरपर रखे हुए इधर से-उधर टहलती है।] देखो न मुझे, चिड़िया जैसी फुर्ती भरी है मुझमें। अब भी पन्द्रह सालकी लड़कीका पार्ट कर लेती हूँ।

डोर्न—अच्छा छोड़ो, अब मैं किताब पढ़ना शुरू करता हूँ [किताब उठाता है] हमने अन्नके व्यापारी और चूहोंपर पढ़ना छोड़ा था।

आर्कादीना—और चूहों पर ही थे। आगे पढ़ो [बैठ जाती है] अच्छा लाओ किताब मुझे दो। मैं पढ़ती हूँ। अब मेरा नम्बर है [किताब लेकर देखते हुए] हाँ और चूहे क्या...? अच्छा यह रहा। [पढ़ती है] "कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि समाजके लोगोंका, उपन्यासकार को पालना तथा उनसे प्रोत्साहन देना [illegible] है जैसा अन्नके व्यापारीका अपने गोदाममें चूहोंको पालना। फिर भी, ये उनसे प्यार करते हैं। ठीक इसी तरह जब कोई औरत किसी लेखकको चुन लेती है जिसे अपना मुलाकाती [illegible]

चाहती है तो उसकी तारीफो, खुशामदो और उसके प्रति पक्षपातका जाल फेंक कर उसके चारो ओर एक घेरा डाल देती है"...खैर यह बात फ्रासीसियोंके साथ हो तो हो, हमारे यहॉ यह सब नही है। तुम खुद नहीं देखते? यहॉ तो लेखकको गुलाम बनानेकी बात सोचनेसे पहले ही अक्सर औरत स्वयं उसके प्यारमे अन्धी हो चुकी होती है। दूर क्यो जाते हो. त्रिगोरिन और मुझे ही लो..

[नीनाके साथ सोरिनका अपनी छडी पर सहारा देकर झुके हुए प्रवेश।-उसके पीछे नहानेकी कुर्सी धकेलते हुए मैद्विद्वैंको।]

सोरिन—[बडे लाडके स्वरमें, जैसे किसी बच्चेसे कह रहा हो] अच्छा! आज तो हमलोग बहुत ही खुश है, न? [बहनसे] आज हमारे मॉ-बाप त्वैर चले गये है। अब तो हमे पूरे तीन दिनकी छुट्टी है।

नीना—[आर्कदीनाके पास बैठते हुए उसे बाँहोंमें भर कर] आज तो मै बहुत खुश हूँ। आज मैने अपना सारा कार्यक्रम, आपके ऊपर ही छोड दिया है।

सोरिन—[अपनी नहानेकी कुर्सीपर बैठता है] आज यह अप्सरा जैसी सुन्दर लग रही है।

आर्कदीना—इसने कपडे भी आज ढङ्गसे पहन रखे है। सच, बडी अच्छी लग रही है रानी बेटी [नीनाका चुम्बन लेती है] लेकिन अब हम ज्यादा तुम्हारी तारीफ नही करेंगे—कही नजर लग-लगा जाय। बोरिस अलेक्सीविच कहॉ है?

नीना—वे तो घाटकी छतरीमें बैठे मछली पकड रहे है।

आर्कदीना—मुझे यही ताज्जुब ह कि उसका मन नही उकताता। [फिर पढना शुरू करना चाहती है]

नीना—यह कौन-सी किताब है?

आर्कादीना—मोपासाँकी "सूर ल्यो" (Sur l'eau) है बेटी। [मन ही मन कुछ पंक्तियाँ पढ़कर] छोड़ो, बाकीमें कोई ख़ास बात नहीं है—सही भी नहीं है। [किताब बन्द कर देती है] मेरा तो जी घबरा रहा है। बताओ न, मेरे बेटेको क्या हो गया है? ऐसा मुरझाया और झल्लाया-सा क्यों रहता है? वह झीलपर ही सारा दिन गुजार देता है। कभी मेरे सामने ही नहीं पड़ता।

माशा—उनका मन बड़ा उद्विग्न है [नीनासे डरते-डरते] जरा उनके नाटकसे ही कुछ सुनाओ न?

नीना—[कन्धे झटककर] पसन्द आयेगा तुम्हें? बड़ा नीरस नाटक है।

माशा—[आवेग दबाकर] जब खुद वे कोई चीज पढ़ते हैं तो उनका चेहरा खिल जाता है, लेकिन आँखें चमकने लगती हैं। उनकी आवाजमें बड़ा दर्द है—भाव-भङ्गीमें कवियों जैसा प्रभाव है।

[सोरिनके खर्राटोंकी आवाज़]

डोर्न—नाइट, यहाँ तो रात होगई।

आर्कादीना—पेत्रूशा!

सोरिन—आँऽऽ?

आर्कादीना—सो रहे हो क्या?

सोरिन—नहीं तो, नहीं तो..

[चुप्पी]

दोर्न—[परेशान होकर] अच्छा, अच्छा ठीक है। अर्क-धतूरेकी कुछ बूँदे ले लो।

आर्कदीना—मुझे लगता है किसी गन्धक-वन्धकके सोतेमे नहाना इन्हे फायदा करेगा।

दोर्न—हॉऽऽ, वहाँ भी जा सकते है, या शायद जाना न पसन्द करे...

आर्कदीना—यह आपने कैसे जाना ?

दोर्न—जाननेको क्या बात ? यह तो साफ ही है।

[चुप्पी]

मेद्वीद्वेंको—प्योत्र निकोलायेविचको तम्बाकू पीना छोड देना चाहिए।

सोरिन—यह सब बकवास है।

दोर्न—नही, यह बकवास नहीं है। शराब और तम्बाकू आदमीका सारा रङ्ग-ढङ्ग बिगाड देती है। एक सिगार या एक गिलास वोद्का पीनेके बाद आप सिर्फ प्योत्र निकोलायेविच ही नहीं रह जाते। इसके साथ कुछ और भी हो जाते है। आपका "मै" बिखर जाता है, और आप अपने आपको यो समझने लगते है, जैसे वह कोई दूसरा हो।

सोरिन—[हँसकर] बहस तो बडी अच्छी कर लेते हो। तुमने तो जिन्दगीके खूब मजे लिये है, मैने अट्ठाईस साल कानूनके महकमेमे काम किया, फिर भी आजतक जीवन ही नही देखा। सच पूछो तो न तो मै कुछ कर ही पाया, न देख ही सका। इसलिए मै बहुत दिनों जिन्दा रहना चाहता हूँ यह बिल्कुल स्वाभाविक है। तुम्हारे पास काफी है। चिन्ता तुम्हें कुछ है नही इसलिए तुम दार्शनिकता बघारते हो। मगर मै तो जिन्दा रहना चाहता हूँ। इसलिए रातको खानेके वक्त शेरी लेता हूँ, सिगार वगैरा पीता हूँ।.. सो जनाब बात यों है..... .।

दोर्न— जीवनको हमेशा गम्भीरता पूर्वक लेना चाहिए। साठ सालका होनेपर भी दवाएँ खाते चले जाना, हर वक्त यह रोना कि हाय, हमने जवानीमें जीवन नहीं देखा, बुरा न मानिए ये सब—[illegible] छिछली बातें हैं।

माशा—[उठते हुए] खानेका समय हो गया है। [पाँव घिसटाते हुए आलससे चलती है] मेरे तो पाँव सो गये [चली जाती है]।

दोर्न— जाकर खाना खानेसे पहले दो गिलास चढ़ायेगी।

सोरिन—बेचारीकी जिन्दगीमें अपना सुख ही क्या है?

दोर्न— सब बकवास है, नवाब साहब।

सोरिन—तुम तो हमेशा ऐसे ढंगसे बातें करते हो जैसे जो जो तुमने चाहा सभी मिल गया हो।

आर्कादीना—उफ, इन उकतानेवाली गँवारू गप्पोंसे बढ़कर और क्या उकतानेवाला होगा। ऐसी गर्मी, जिसमें किसीको कुछ करना नहीं—बस, हर एकको सिद्धान्त बघारने। भाई, तुम लोगोंके साथ रहना, तुम लोगोंकी बात सुननेमें भी एक आनन्द है। लेकिन किसी होटलके कमरेमें बैठकर अपना पार्ट याद करनेका और इस सबका क्या मुकाबला?

नीना—[जोशसे] ठीक, बिल्कुल ठीक। मैं आपकी बात मानती हूँ।

सोरिन—जरूर शहर यहाँसे अच्छा होगा। वहाँ आप अपने अध्ययन [illegible] बैठे हैं, चपरासी बिना बताये किसीको घुसने नहीं देता है, टेलीफोन है [illegible] सड़कपर गाड़ियाँ [illegible] दुनिया भरकी भीड़, शोरगुल [illegible]।

दोर्न—[गुनगुनाता है] मेरी [illegible], उसकी [illegible]।

[शाम्रयेव और उसके पीछे पालिना आन्द्रेयेवनाका प्रवेश]

शाम्रयेव—अरे, सब लोग यहाँ हैं। नमस्कार भाइयो। [[illegible]

आर्कदीनाका और फिर नीनाका हाथ चूमता है] आपको स्वस्थ देखकर बड़ी खुशी हुई। [आर्कदीनासे] मेरी पत्नी कहती थीं कि आप उनके साथ आज बाहर गाँवोंमे ताँगेपर घूमने जाने को कह रही है। ऐसा है क्या ?

आर्कदीना—हाँ, सोच तो रहे है हमलोग।

शामंयेव—हुं. बहुत अच्छा तो है। लेकिन आप जायेंगी कैसे ? आज तो लोग गाडीमे अनाज ढो रहे है—सभी लगे है। मै भी तो सुनूँ—कौन-से घोड़े ले जायेंगी ?

आर्कदीना—कौनसे घोड़े ? मुझे क्या मालूम कौनसे ?

सोरिन—मगर हमारे पास ताँगेवाले घोड़े भी तो है।

शामंयेव—[गुस्सेसे] ताँगेवाले घोड़े ! उनके लिए मै साज कहाँसे लाऊँगा ? वाह, यह अच्छी रही। मेरी समझमे नही आता। [आर्कदीनासे] माफ कीजिये, मै आपकी प्रतिभाका बड़ा कायल हूँ—अपनी जिन्दगीके दस साल आपकी सेवाके लिए निछावर कर सकता हूँ, लेकिन घोड़े बिल्कुल नही ले जाने दूँगा।

आर्कदीना—लेकिन मुझे जाना ही हो तो ? क्या अजीब बात करते हो।

शामंयेव—आप जानती नहीं, खेती किसे कहते हैं ?

आर्कदीना—[भड़ककर] यह सब मै बहुत सुन चुकी। अगर यही बात है तो मै आज ही मॉस्को लौटी जा रही हूँ। मेरे लिये गाँवसे भाड़े पर घोड़े मँगा दो—नहीं तो स्टेशन तक भी पैदल ही चली जाऊँगी।

शामंयेव—तो फिर मेरा भी इस्तीफा ले लीजिए। कोई दूसरा कारिन्दा तलाश कर लीजिए। [जाता है]

आर्कदीना—हर गर्मियोंकी छुट्टियोंमे यही होता है। हर बार गर्मियोंमे यहाँ मेरा अपमान होता है। अब मै यहाँ कभी कदम नहीं रखूँगी।

[बांयी ओर, जहाँ घाटकी छतरी है, चली जाती है। फिर एक मिनट बाद ही मकानमें प्रवेश करती दिखाई देती है। पीछे पीछे बर्सी, डोर और डोलची लिये हुए निगोरिन जाता है।]

सोरिन—[भड़ककर] यह सरासर गुस्ताखी है! हद कर दी है। मेरी तो नाकमें दम आ गया है। अच्छा, अभी इसी वक्त सारे घोड़ोंको यहाँ लाओ।

नीना—[पोलिनासे] इरीना निकोलायेव्ना जैसी मशहूर ऐक्ट्रेसकी किसी भी इच्छा—या मान लो सनक ही सही—को इन्कार कर देनेका नतीजा आपकी सारी खेतीसे कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है? सचमुच, यह तो बड़ी बुरी बात है।

पोलिना—[बेबसीसे] इसमें मैं कर भी क्या सकती हूँ? तुम अपनेको मेरी जगह रखकर देखो। मैं क्या करूँ?

सोरिन—[नीनासे] चलो, आर्कादीनाके पास चलें। हम सभी उसे समझायेंगे कि न जाय। ठीक है न? [जिधर शामरायेव गया है उधरकी ओर देखकर] दुष्ट! चाण्डाल!

नीना—[उसे उठनेसे रोकते हुए] बैठे रहिये, बैठे रहिये। हम आपको भीतर ले चलेंगे [वह और मेद्वेदेंको उसकी कुर्सी धकेलते हैं] हाय, कैसी बुरी बात है!

सोरिन—हाँ, हाँ बुरी बात है, लेकिन वह यह आदत छोड़ेगा नहीं। मैं उसे साफ़ साफ़ जवाब दे दूँगा। [ये लोग चले जाते हैं। मंचपर डॉर्न और पोलिना ही अकेले रह जाते हैं]

डॉर्न—[illegible] तुम्हारे इस पतिको [illegible] निकाल देना चाहिए। लेकिन [illegible] [illegible] और [illegible]

यह बुढिया ही जाकर उससे माफी मॉग लेगे। चलो किस्सा खत्म हुआ।

पोलिना—इन्होने ही तो भिजवाया था तॉगेके घोडोको भी खेतपर काम कराने। रोज इसी तरहकी उलटी-सीधी बाते होती है। काश, आप जान पाते, यह बाते मुझे कितना दुखी कर डालती है। मेरा तो जी खराब कर देती है—देखिये न, अभी तक कैसे कॉप रही हूँ .....यह सब जंगलीपना मुझसे तो नही सहा जाता [खुशामदके स्वरमे] येव्गैनी, प्रियतम, मेरे नयनोकी ज्योति, मुझे अपने साथ रख लो न ..हमारी उम्र गुजरी जा रही है. ....अब तो हम नौजवान भी नही है......काश, जीवनके अन्तिम दिनोमे तो इस लुका-छिपी और झूठसे पीछा छूटता.. ।

[चुप्पी]

दोर्न—मै पचपन सालका हो चुका हूँ। अब मेरे लिए जीवनके रवैयेको बदलनेका वक्त नही रहा।

पोलिना—मुझे पता है। तुम मुझसे इसलिए कतराते हो कि तुम्हारी अपनी औरते भी तो है न। उन सभीको तो तुम अपने साथ नही रखोगे। मै सब समझती हूँ। बुरा मत मानना, तुम मुझसे ऊब चुके हो.. ..

[मकानके पास ही नीना दिखाई देती है। वह फूल चुन रही है।]

दोर्न—नही-नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है।

पोलिना—घुल-घुलकर मेरा बुरा हाल है। जानती हूँ तुम डाक्टर हो, औरतोसे दूर-दूर कहॉ तक रह सकते हो।

दोर्न—[नीना से—जो उनके पास तक आ गई है] अब क्या हाल-चाल है?

नीना—इरीना निकोलायेव्ना रो रही है और प्योत्र निकोलायेविचको नॉसका दौरा पड़ गया है।

डोर्न—[उठते हुए] अच्छा! मैं चलकर उन दोनोंको अर्क तगर [वैलेरियन] की कुछ बूँदें दिये देता हूँ।

नीना—[उसे फूल देकर] ये आपकी भेंट हैं।

डोर्न—शुक्रिया! [मकानकी तरफ चलता है]

पोलिना—[उसके साथ जाते हुए] कैसे सुन्दर फूल हैं! [मकानके पास जाकर बड़ी भिंची आवाजमें] ये फूल मुझे दे दो। दो मुझे ये फूल! [फूल लेकर मसलकर फेंक देती है। दोनों घरमें चले जाते हैं]

नीना—[स्वगत] इतनी प्रसिद्ध अभिनेत्रीको रोते देखकर कैसा आश्चर्य होता है—और वह भी इतनी सी बातके लिए। अजीब नहीं लगता यह सब अद्भुत? एक प्रसिद्ध लेखक—जनता जिसे पूजती है, अखबारोंमें जिसके बारेमें खबरें निकलती हैं, जिसकी तस्वीरें बिकती हैं, जिसकी रचनाओंका विदेशी भाषाओंमें अनुवाद होता है—वह सारे दिन बैठा मछलियाँ पकड़ा करता है। इसी बात पर खुश होता है कि उसने दो बड़ी मछलियाँ पकड़ ली हैं। मैं सोचा करती थी कि बड़े आदमियोंमें बड़ा घमण्ड होता होगा, वे किसीसे मिलना पसन्द नहीं करते, भीड़-भाड़से नफ़रत करते। अपने यश और नामके सहारे, वंश और धनको [illegible] हुए रहनेवाले लोगोंसे वे लोग अपनेको ऊपर समझकर [illegible] बदला लेते होंगे [illegible] लेकिन ये तो साधारण लोगोंकी तरह [illegible] मछलियाँ मारते हैं, हँसते हैं, और झुंझलाते [illegible]।

त्रेप्लेव—[नंगे सिर, हाथमें बन्दूक और एक मरी हुई सीगल लिये प्रवेश करते हुए] क्या तुम यहाँ अकेली हो?

नीना—हाँ, हूँ तो।

[त्रेपलेव हंसिनीको उसके पैरोंके पास रख देता है।]

नीना—इसका क्या मतलब ?

त्रेपलेव—आज इस हंसिनीकी साँसे छीनकर मैंने कैसी नीचताका काम किया है ! मैं इसे तुम्हारे चरणोंमे सौंप रहा हूँ।

नीना—यह तुम्हे हो क्या गया है ? [हँसिनीको उठा लेती है और उसे ध्यानसे देखती रहती है]

त्रेपलेव—[कुछ देर चुप रहकर] यो ही एक दिन मै आपको भी मार लूँगा।

नीना—सच त्रेपलेव, तुम बहुत हो बदल गये हो। तुम्हारी बातें मेरी समझमे नही आतीं।

त्रेपलेव—हाँ, उसी दिनसे तो, जिस दिनसे मै तुम्हे नही समझ पाया। मेरे लिए अब तुम वह नहीं रही—तुम्हारी निगाहोमे अब प्यारकी गरमी नहीं रही। तुम्हे मेरा अपने रास्तेमे आना बुरा लगता है।

नीना—तुम तो इधर बहुत ही चिडचिडे हो गये हो.. . जब देखो तब पता नही, किन प्रतीको और अलकारोमे बोलते रहते हो कि मेरी समझमें तो कुछ भी नही आता। हो सकता है यह हंसिनी भी किसी बातका प्रतीक हो ! लेकिन माफ करो, मै इसे समझ नही सकी [हंसिनीको बेंच पर रख देती है] तुम्हें समझ पाना मेरे बसके बाहर है।

त्रेपलेव—इस न समझ पानेका प्रारम्भ तो उसी दिनसे हुआ है जिस दिन मेरे नाटकको भँडैती बताकर सत्यानाश किया गया। नारी कभी भी असफलताको नहीं भूल पाती। मैने उसका एक-एक पन्ना जला डाला है। काश, कि तुम जान पाती मै कितना व्यथित हूँ। तुम्हारा यह ठण्डा पडता प्यार मेरे लिए कितनी

बड़ी सजा है--कैसा भयानक, कितना अ-कल्पनीय। जैसे एक दिन अचानक नींदमें जागकर मैं देखूँ कि सारी झीलका पानी सूख गया है, धरतीने उसे निगल लिया है। तुमने अभी कहा कि मेरी बातें समझना तुम्हारे बसके बाहरकी बात है. हाँ, उनमें रखा ही क्या है समझनेको ? मेरे नाटकको किसीने पसन्द नहीं किया। तुम तो मेरी मूल प्रेरणासे ही नफरत करती हो। अब तुम यह समझने लगी हो कि मैं हजारों-लाखों लोगोंकी तरह एक तुच्छ और मामूली आदमी हूँ. [पैर पटककर] तुम्हारी इन सारी बातोंका अर्थ मैं खूब अच्छी तरह समझने लगा हूँ नीना। मुझे लगता है जैसे किसीने मेरे दिमागमें कीलें ठोक दी हों...काश कि इस सबको, अपने इस अहंकारको कहीं कुँए-भाड़में फेंक पाता—यह मेरे जीवनको साँपकी तरह चूसे ले रहा है [किताब पढ़ते हुए त्रिगोरिनको आते देखकर] लो, असली प्रतिभा तो यह आ रही है। वाह, क्या हाथमें किताब लिये हैमलेटकी तरह चले आ रहे हैं [विद्रूपसे] शब्द ! शब्द। शब्द। [नीनासे] अरे, अभी सूरज तुम्हारे पास तक आया भी नहीं और तुम्हारे होंठोंपर सूरजमुखीकी मुसकराहट छा गई—आँखोंमें किरणें घुलने लगीं। अच्छी बात है, मैं तुम्हारे रास्तेमें नहीं आऊँगा। [तेज़ीसे चला जाता है]।

त्रिगोरिन—[किताबमें लिखता है] सुँघनी चढ़ाती है, और वोद्का पीती है। हमेशा काले कपड़े पहनती है। स्कूल मास्टर उसे प्यार करता है. .

नीना—नमस्कार, बोरिस अलक्सीविच।

त्रिगोरिन—नमस्कार। अचानक परिस्थिति एकदम ऐसी बदल गई कि लगता है आज शायद हम लोग चले जायँ। फिर तो शायद

ही कभी मिल सकें। बड़ा अफसोस है। सुन्दर-सुन्दर नवयुवती लड़कियोंसे मिलनेके बहुत अधिक अवसर मुझे नहीं मिले। अठारह-उन्नीस सालकी उम्रमें कोई क्या सोचता है, यह मेरे दिमागसे अब बिल्कुल ही उतर चुका है—इसलिए मैं स्वयं उसको चित्रित नहीं कर पाता। यही कारण है कि मेरे उपन्यासों और कहानियोंमें युवतियाँ बड़ी ही काल्पनिक और नकली-सी हैं। मेरे मनमें आता है कि काश, एक घण्टे भरके लिए ही अगर कहीं मैं तुम्हारी जगह हो पाता, देख पाता तुम लोग क्या सोचती हो—किस तरहकी होती हो।

नीना—और मेरा मन होता है—काश, मैं आपकी जगह होती।

त्रिगोरिन—किस लिए?

नीना—देखती, प्रतिभाशाली, प्रसिद्ध लेखक होकर कैसा लगता है? प्रसिद्ध होना कैसा होता है? प्रसिद्ध होनेका क्या-क्या असर पड़ता है?

त्रिगोरिन—कैसा क्या? कोई खास नहीं। मैंने तो कभी इस बारेमें सोचा तक नहीं [एक क्षण सोचकर] उस स्थितिमें दो बातोंमेंसे एक ही बात होती है—या तो आप लोग यशको बहुत बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं या फिर उस ओरसे बिल्कुल ही आँखें मूँद लेते हैं ..

नीना—लेकिन जब आप अपने बारेमें अखबारोंमें पढ़ते होंगे तब? कैसा लगता होगा आपको?

त्रिगोरिन—लोग जब मेरी तारीफें करते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है, और जब गालियाँ देते हैं तो दो-एक दिन तबियत बड़ी उखड़ी-उखड़ी रहती है।

नीना—कैसी अजीब दुनियाँ है ? काश कि आप जान पाते मुझे आपसे कितनी ईर्ष्या है। क्या-क्या होती हैं लोगोंकी किस्मतें भी! कुछ हैं कि दूसरे हजारों लोगोंकी तरह अपनी नीरस अनजान जिन्दगीको घसीटते भर रहते हैं—दुखी रहते हैं, और दूसरी तरफ लाखोंमेंसे एक आप जैसे हैं कि जिनके दिलचस्प जीवनमें आनन्द है, महिमा है ! वास्तविक सुखी तो आप हैं।

त्रिगोरिन—मैं ? [कन्धे झटककर] हुँः, तुम तारीफों और खुशियोंकी बात करती हो, चमक-दमक भरी दिलचस्प जिन्दगीकी बात करती हो। लेकिन माफ करना, मेरे लिए ये सारे सुन्दर-सुन्दर शब्द ऐसी मिठाइयाँ हैं जिन्हें खुद मैं कभी चखता तक नहीं। अभी तुम बहुत भोली हो—बडी सीधी-सरल हो।

नीना—आपका जीवन बडा शानदार है।

त्रिगोरिन—क्या खास शानदार है इसमें ? [घडी देखकर] अब मैं यहाँसे सीधा जाकर लिखूँगा। क्षमा करना, अब मैं रुक नहीं सकता। [हँसता है] जैसा लोग कहते हैं न, कि तुमने मेरे सोये तारोंको छेड दिया, और मैं हूँ कि भावावेशमें आया जा रहा हूँ—थोडी झुँझलाहट भी आ रही है। अच्छा खैर, आओ, बातें ही सही। हमलोग इस चमक-दमक भरी अपनी शानदार जिन्दगीके बारेमें ही बातें करें.. क्यों ? कहाँसे शुरू किया जाय ? [एक क्षण सोचकर] विचारोंका ध्रुव क्या होता है जानती हो ? आदमी जब रात और दिन एक ही बात सोचता रहता है, जैसे चाँद ! मेरा भी अपना एक ऐसा ही चाँद है। लगातार बस एक ही पागल विचार मेरे दिमागमें हरवक्त चक्कर काटा करता है कि मुझे लिखना है। मुझे लिखना है. .मैं एक उपन्यास पूरा करके चुकता नहीं हूँ कि न जाने क्यों नया शुरू कर देता हूँ . फिर

दूसरा, फिर तीसरा, तीसरेसे चौथा ..बिना रुके अन्धा-धुन्ध बस लिखता ही चला जाता हूँ—इसके सिवा मै कुछ और कर ही नही सकता। मै तुम्हींसे पूछता हूँ, उसमे ऐसा क्या है जिसे शानदार नाम दिया जा सके ? उफ, कैसी वेकार जिन्दगी है यह भी ! अब मै तुम्हारे साथ हूँ, जोशमे हूँ; लेकिन हर क्षण मुझे ध्यान है कि वह अधूरा उपन्यास मेरी राह देख रहा है। देखो, वह सामने जो बडे पयानो जैसी शक्लका बादल दिखाई देता है न, अब मै उसे देखकर सोच रहा हूँ कि किसी कहानीमे लिखना है कि तैरता हुआ बादल ऐसा लगता था जैसे बडा भारी पयानो हो। कही सूरजमुखीके फूलकी गन्ध आ रही है, और मै झपटकर नोट कर लेता हूँ—मुर्झाई-सी गन्ध, विधवाके कपडो जैसे रङ्गका फूल कही गर्मीकी सन्ध्याके वर्णनमे जिक्र करना है . मै अपने आपको और तुम्हे हर वाक्यपर, हर शब्दपर, हरवक्त, तौलता हूँ और फौरन ही निष्कर्षको अपने साहित्यिक गोदाममे जमा कर लेता हूँ कि शायद कही काम आ जायँ। जैसे ही एक किताब पूरी की कि मै थियेटरकी ओर या मछली मारने दौड पडता हूँ। लेकिन नही, फिर कोई नई सूझ तोपके भारी गोलेकी तरह मेरी खोपडीमे भन्नाने लगती है और मै फिर मेजपर आ जमता हूँ—जितनी फुर्तीसे वन पडता है लिखता जाता हूँ, लिखता जाता हूँ। हमेशा-हमेशा यही होता है। मुझे अपने आपसे ही छुट्टी नहीं है और लगता रहता है जैसे मै खुद ही अपने जीवन को खाये जा रहा हूँ। शहदकी खातिर मै अच्छे-अच्छे तरह-तरहके फूलोका नाश किये जा रहा हूँ, मानो उन फूलोको खुद ही तोड-तोडकर कुचल-मसल रहा हूँ। अच्छा, सच कहो मै पागल-सा नहीं दिखाई देता ? मेरे रिश्तेदार या मित्र मेरे

साथ क्या ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा समझदारोंके साथ किया जाता है? "आप आजकल क्या लिख रहे हैं?" "इसबार हमें क्या दे रहे हैं?" हरबार-हरबार बस एक ही, एक ही, सवाल! मुझे लगता है जैसे मेरे दोस्त खुद जानते हैं कि उनकी ये सारी तारीफें, उसके ये सारे जोश-खरोश बिल्कुल झूठे हैं और वे मुझे निकम्मा समझकर सिर्फ धोखा दिये जा रहे हैं। हमेशा मुझे डर लगा रहता है कि वहीं वे मुझे पीछेसे अचानक आकर दबोच न लें और पागल-खानेमें लेजाकर न डाल दें। जवानीके सबसे अच्छे दिनोंमें जब मैंने नया-नया लिखना शुरू किया था, उन दिनों तो यह लिखनेका काम मेरे लिए विशुद्ध यातनासे कम नहीं था। हर छोटा लेखक, खास तौरसे वह छोटा लेखक जिसने अभी सफलताका मुँह न देखा हो अपने आपको बड़ा तुच्छ और बेचारा महसूस करता है। बड़ी जल्दी जोशमें आजाता है, बड़ी जल्दी घबरा जाता है। वह कला और साहित्यसे सम्बन्धित लोगोंके पीछे-पीछे लगे फिरनेके मोहको रोक नहीं पाता। उस समय न तो कोई उसकी तरफ ध्यान देता है न साहित्यमें उसका कोई स्थान होता है। वह शौकमें अन्धे, खाली-जेब जुआरीकी तरह हर किसीसे आँख मिलानेमें डरता है। जाने क्यों, अपने पाठकको मैंने कभी भी, एक अविश्वासी व्यक्ति और शत्रुके सिवा और किसी भी रूपमें कल्पना ही नहीं की। मैं जनता से हमेशा डरता रहा, उससे मुझे हमेशा ही घबराहट रही। जब भी कभी मेरा खेल पहली बार दिखाया जाता है तो मुझे हरक्षण लगता है जैसे सारे काले आदमी द्वेषसे जले जारहे हैं, और सारे गोरे लोग उसकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देरहे—उदासीन हैं। उफ, वह सब कैसी तकलीफ थी, कितना तीखा दर्द था!

नीना—खैर, जो भी हो, रचनाकी प्रेरणा और निर्माणकी प्रक्रिया तो जरूर ही आपको एक अछूते उल्लासके क्षण प्रदान करती होगी।

त्रिगोरिन—हाँ, जब लिखता हूँ तब तो उसका आनन्द लेता ही हूँ। अपने प्रूफ पढनेमे भी बडा अच्छा लगता है. . लेकिन जैसे ही किताब छपी कि मुझसे फिर उसे देखा नहीं जाता। मुझे लगने लगता है कि उसे लिखना व्यर्थ था, अनुचित था—उसे तो लिखा ही नही जाना चाहिये था .....और इसी बातको लेकर मै परेशान हो जाता हूँ, झुँझलाता हूँ ... [हँसता है] और जब जनता पढती है तो कहती है—"वाह, बहुत सुन्दर! चीज तो कमालकी है। लेकिन फिर भी, टालस्टायसे काफी नीचे दर्जेकी है।" या "चीज तो बडे गजब की है लेकिन तुर्गनेव की 'बाप-बेटे' इससे कहीं ऊँची चीज है।"—मेरी मौत तक बस यही होता रहेगा—सुन्दर और कमालकी चीज, सुन्दर और कमाल की चीज! जब मर जाऊँगा तो मेरी कब्रके पाससे गुजरनेवाले मेरे दोस्त कहेगे "यह त्रिगोरिनकी कब्र है। बडा अच्छा लेखक था लेकिन तुर्गनेव जैसा नही।"

नीना—माफ करे, मै आपकी बात माननेको तैयार नही हूँ। आपकी सफलताने आपको बिगाड दिया है।

त्रिगोरिन—सफलता क्या खाक? मुझे कभी अपना लिखा पसन्द ही नहीं आया। पता नहीं क्यो, जो कुछ भी मैं लिखता हूँ मुझे अच्छा ही नहीं लगता। सबसे मजेकी बात यह है कि मै मानो होशमें ही नही रहता। अक्सर मेरी समझमे नहीं आता कि मैं क्या लिख रहा हूँ। मुझे यह झीलका पानी, ये पेड, आसमान इन सबसे बडा प्यार है। मुझे प्रकृतिसे भी बडा मोह है—यह मुझमें एक आवेग, एक दुर्दमनीय इच्छा जगा देती है। मगर मै सिर्फ

दृश्योंका चितेरा ही तो नहीं हूँ, मै एक नागरिक भी हूँ। मुझे अपनी जन्म-भूमिसे प्यार है। यहाँके लोग-बाग अच्छे लगते है। और तब मुझे लगता है कि मै एक लेखक हूँ, मेरा यह परम-कर्तव्य है कि लोगोंके बारेमे लिखूँ, उनके कष्ट-मुसीबतोंके बारेमे लिखूँ, उनके भविष्यके बारेमे लिखूँ, साइंसके बारेमे और मानव अधिकारोंके बारेमे बोलूँ। और तब हर चीजके बारेमे लिखनेकी इच्छा होती है। मै अन्धाधुन्ध, दम तोडकर लिखता हूँ, लेकिन लोग है कि मुझे चारों तरफसे कोचते हैं—मुझसे नाराज रहते है। शिकारी कुत्तोंसे खदेडी जाती लोमडीकी तरह मै इधरसे उधर और उधरसे इधर दौडता हूँ। मेरी आँखोंके सामने ही जीवन और संस्कृति लगातार आगे-आगे बढते चले जारहे हैं और मुझे लगता है रेल छूट जानेके बाद पहुँचनेवाले किसानकी तरह मै पीछे और पीछे ही छूटता चला जा रहा हूँ। नतीजा इसका यह होता है कि अन्तमे मै देखता हूँ कि मैंने सिर्फ ऐसे दृश्योंका ही चित्रण किया है जो सबके सब शुरूसे आखिर तक सरासर झूठे थे।

नीना—असलमे आपने बहुत मेहनत की है, इसलिए अपने महत्वको पहचाननेका न तो आपको समय मिला और न इच्छा ही हुई। आप खुद अपने आपसे चाहे जितने असन्तुष्ट हों, लेकिन दूसरोंके लिए महान् और पूज्य है ही। अगर मै आपकी तरह लेखिका होती तो साधारण लोगोंके लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर देती। बस, मुझे हर वक्त इसका जरूर ध्यान रखना होता कि उन्हे अपने धरातल तक ऊँचा उठानेकी कोशिशसे बढकर दूसरी कोई खुशी नहीं है। तब वे मेरी प्रगतिके रथके लिए अपनेको घोडोंकी तरह सजा लेते।

त्रिगोरिन—क्या कहना है, अपना रथ ! मै क्या कोई *'ऐगामैनन्' हूँ ?

[दोनो मुसकराते है।]

नीना—एक लेखक या कलाकारको जो आनन्द प्राप्त है, उसे पानेके लिए मै गरीबी, निराशा अपने चारो ओरकी घृणा सभी कुछ बरदाश्त करनेको तैयार हूँ। मै उसके लिए मचानपर रह लूँगी और केवल राई (सस्ता रूसी अन्न) की बनी रोटियो पर गुजरकर लूँगी। आपकी तरह अपनी कमियो और कमजोरियोको पहचानकर अपने आपसे कभी भी सन्तुष्ट न हो पानेके अपार कष्टको भी सहनेको मै तैयार हूँ—लेकिन बदलेमे मै सिर्फ एक चीज़ चाहती हूँ—वह है यश ! दिग्दिगन्तरोमे गूँजता-मँडराता यश !...... [दोनो हाथोसे अपना चेहरा ढाँप लेती है] हाय मेरा सिर भन्ना रहा है।

[मकानके भीतरसे आर्कदीनाकी आवाज़]

आर्कदीना—बोरिस अलैक्सीविच् !

त्रिगोरिन—वे लोग मुझे ही बुला रहे है। मेरा ख्याल है, सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी। लेकिन मेरा तो यहाँसे जानेको मन ही नही कर रहा [झीलको चारो ओर देखता है] देखो न, कैसी रमणीक झील है। शानदार !

नीना—आप देख रहे है न, झीलके उस किनारेका मकान और बगीचा ?

त्रिगोरिन—हाँ हाँ।

---

*हैलेनके भगा लिये जानेपर उसके पति मोनिलसके भाई ऐगामैनन् ने ट्रॉयके विरुद्ध फौजें लेकर हमला किया था।

नीना—वही मेरी माँ का मकान है। वहीं मैं पैदा हुई थी। इसी झीलके आस-पास मैंने अपनी सारी जिन्दगी बिताई है। इसके छोटे-से छोटे द्वीपसे मेरा परिचय है।

त्रिगोरिन—बड़ी रमणीक जगह है यह तो सचमुच [हंसिनीको देखकर] अरे, यह क्या है?

नीना—हंसिनी। कान्स्तान्तिन गाव्रिलिचने शिकार किया है।

त्रिगोरिन—कैसा सुन्दर पक्षी है। सचमुच, मेरा जानेको जरा भी मन नहीं करता। इरीना निकोलायेव्नाको रोकनेकी कोशिश कर देखो न।

[अपनी किताबमें लिखने लगता है]

नीना—यह क्या लिखने लगे आप?

त्रिगोरिन—कुछ नहीं, यों ही जरा दो-एक लाइनें लिख रहा था। अचानक एक बात सूझ गई [किताब एक ओर रख देता है] कहानीका एक विषय था। तुम्हारी जैसी एक युवती बालिकाने अपना सारा जीवन झीलके किनारोंपर ही रहकर बिताया है. वह झीलको हंसिनीकी तरह प्यार करती है, हंसिनीकी तरह ही वह उसके आस-पास प्रसन्न और स्वच्छन्द घूमी है, लेकिन अचानक वहाँ एक आदमी आजाता है, उसे देखता है और जब उसकी समझमें कुछ और करनेको नहीं आता तो इस हंसिनीकी तरह ही उसकी हत्या कर डालता है।

[चुप्पी]

[खिड़कीसे आर्कादीना दिखाई देती है]

आर्कादीना—बोरिस अलैक्सीविच्, तुम कहाँ हो?

त्रिगोरिन—आता हूँ [जाते हुए नीनाको पीछे घूमकर देखता है। खिड़कीसे झाँकती आर्कादीना से] क्या बात है?

आर्कदीना—हमलोग आपके लिए रुके है।

[त्रिगोरिन उस मकानमे चला जाता है]

नीना—[कुछ देर विचारोंमें खोयी-सी खडी रहती है, फिर फुट-लाइटो तक बढ जाती है] कैसा मोहक सपना है!

[पर्दा गिरता है]



तीसरा अंक

[सोरिनके मकानका डाइनिंग-रूम। दाहिनी और बायीं अ
दरवाजे। दवाओंकी एक आलमारी। कमरेके बीचो-बीच ए
मेज़। एक बक्स और टोपोंके डिब्बामें चलनेकी तैयारीका प
चलता है। त्रिगोरिन दोपहरका खाना खा रहा है। मा
मेज़के पास खड़ी है।]

माशा—आप लेखक हैं न, इसीलिए मैं आपको यह सब बता रही हूँ हो सकता है कहीं आपके काम ही आजाय। आपसे सच कह हूँ, अगर उन्होंने अपने आपको थोड़ा-सा भी और बुरी त घायल कर लिया होता तो मैं एक क्षण भी जिन्दा न रह पाती फिर भी साहस मुझमें काफी है। मैंने तो तयकर लिया है कि अ मैं उनके इस प्यारको दिलसे निकाल फेकूँगी। जड़से उखा डालूँगी।

त्रिगोरिन—कैसे?

माशा—मैं शादीकर लूँगी—मैद्वीदेंकोसे।

त्रिगोरिन—उस स्कूलमास्टरसे?

माशा—जी हाँ।

त्रिगोरिन—मुझे तो इसमें कुछ तुक नहीं लगती।

माशा—बिना किसी आशाके प्यार किए जानेमें ही या क्या तुक है कुछ होगा—इसी उम्मीदपर सालपर साल बिताये जानेमें क्या तुक है? जब शादी हो जायेगी तो इस प्रेम-प्यारके लिए फुर्सत ही नहीं मिलेगी। नई चिन्ताएँ सारी पुरानी भावनाओंके गले मरोड

टेगी . खैर जो भी हो—आप देखिये, इससे कुछ परिवर्तन तो आयेगा ही। एक गिलास और लेगे ?

त्रिगोरिन—ज्यादा तो नहीं हो जायेगा ?

माशा—अरे, सब ठीक है [दो गिलास भर देती है] इस तरह मेरी ओर मत देखिये। औरतें अक्सर कितनी पीनेवाली होती है आप सोच भी नहीं सकते। कुछ थोडी-सी ही है जो मेरी तरह खुल्लम-खुल्ला पीती है, वर्ना ज्यादा तो चप-चुप ही चढाती है। जी हॉ, और वह भी वोद्का या ब्राण्डी [गिलासोको एक दूसरेसे छुलाकर] मेरी शुभकामनाये ले। आप बडे अच्छे दिलके आदमी है। आपसे बिछुडनेका मुझे बडा दुख है।

[दोनों पीते हैं]

त्रिगोरिन—मेरा मन खुद जानेको नहीं कर रहा।

माशा—उन्हे रुकनेको समझाइये न ?

त्रिगोरिन—नहीं, वे अब नहीं रुकेंगी। उनके प्रति उनके बेटेका व्यवहार अच्छा नहीं है। एक तो उसने खुद अपने गोली मारली, दूसरे सुनते है वह मुझे भी द्वन्द्वके लिए ललकारनेवाला है। और इनका कारण भी तो हो कुछ ? वह बौखलाता है, बर्राता है और कलाके नये रूपोकी वकालत करता है. . भाई, नये-पुराने सभीके लिए जगह है . .इसमे झगडनेकी क्या बात है ?

माशा—हो सकता है इसमे ईर्ष्या भी हो. लेकिन मै ठीक-ठीक नहीं कह सकती .

[चुप्पी। याकोव एक बक्स लेकर दाहिनी ओरसे बायी ओरको जाता है। नीनाका प्रवेश। वह खिडकीके पास खडी हो जाती है।]

माशा—माना स्कूल मास्टर-साहब बहुत विद्वान नहीं हैं, लेकिन आदमी बेचारे बड़े भले हैं। बहुत ही प्यार करते हैं। मुझे उनकी माँ-पर बड़ी दया आती है। खैर, आपके लिए मेरी शुभ-कामनायें हैं। मेरे बारेमें मनमें कोई बुरा खयाल मत रखिये। [बड़े आवेगसे हाथ मिलाती है] आपकी इस आत्मीयताके लिए मैं बहुत ही कृतज्ञ हूँ। अपनी किताबें मुझे जरूर भेजिये, और देखिये, उनपर अपने हाथसे जरूर लिखिये। हाँ, यह मत लिख दीजिये कहीं, कि 'अपनी आदरणीया मित्रको' उसपर लिखिये सिर्फ—'भार्याको, जो किसीकी नहीं है—जीवनमें जिसका कोई नहीं है।' अच्छा नमस्कार।

[चली जाती है]

नीना—[अपनी बँधी मुट्ठीवाला हाथ उसकी ओर बढ़ाकर] दो या एक?

त्रिगोरिन—दो।

नीना—[गहरी साँस लेकर] गलत। मेरे हाथमें सिर्फ एक ही मटरका दाना है। मैं अपना भाग्य देख रही थी कि स्टेज-जीवन अपनाऊँगी या नहीं। काश, कोई मुझे इस बारेमें कुछ बताये।

त्रिगोरिन—ऐसी बातोंमें सलाह दे पाना असम्भव है।

नीना—हम लोग बिछुड़ रहे हैं। शायद अब फिर कभी न मिल पायें। विदाईकी यादमें मेरी ओरसे भेंट यह तमगा स्वीकार करेंगे। मैंने इसके ऊपर आपके नामके अक्षर खुदवाये हैं, दूसरी ओर आपकी किताबका नाम है—'रातें और दिन।'

त्रिगोरिन—चीज तो बड़ी सुन्दर है [तमगेको चूम लेता है] बड़ी मधुर भेंट है।

नीना—कभी-कभी मुझे याद कर लीजिये।

त्रिगोरिन—मैं तुम्हें जरूर याद रखूँगा जरूर याद रखूँगा तुम्हें याद है, उस दिनके वेशमें मैं तुम्हें याद रखूँगा जब हफ्ते भर पहले खुली धूपमें तुम बड़े सोफियाने-से कपड़े पहने थी...हम लोग बातें कर रहे थे.. पास ही बेंचपर सफेद हंसिनी पड़ी थी...

नीना—[व्यथासे] हाँऽऽऽवह हंसिनी [कुछ रुककर] अब हम लोग ज्यादा बातें नहीं कर पायेंगे, कोई आ रहा है। प्रार्थना करती हूँ, जानेसे पहले मुझे दो मिनटका समय दें .

[बायी ओर चली जाती है।]

[उसी क्षण दहिनी ओरसे आर्कदीना, किसी पदवी लगे स्टारवाला कोट पहने सोरिन और पीछे-पीछे सामान लादे याकोवका प्रवेश]

आर्कदीना—दादा, तुम आरामसे यहीं बैठो। अपनी गठियाका ध्यान करके इधरसे उधर घूमना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। [त्रिगोरिनसे] अभी कौन गया? नीना?

त्रिगोरिन—हाँ।

आर्कदीना—माफ कीजिये, हमने बीचमें आकर विघ्न डाला। [बैठ जाती है] अब जाकर सब बाँध-बूँध पायी हूँ। थककर चूर-चूर हो गयी .

त्रिगोरिन—[उस तमगेपर पढ़ता है] 'रातें और दिन' पृष्ठ एक-सौ इक्कीस, लाइन ग्यारह और बारह।

याकोव—[मेज़ पोंछकर] आपके मछली पकड़नेकी चीजें भी बाँध दूँ साहब?

त्रिगोरिन—हाँ-हाँ, मुझे फिर जरूरत पड़ेगी। उनके 'हुक' निकाल लेना।

याकोव—बहुत अच्छा, साहब!

त्रिगोरिन—[स्वगत] पृष्ठ एक-सौ इक्कीस, लाइनें ग्यारह और बारह, क्या होगा इन लाइनोंमें ? [आर्कादीनासे] यहाँ घरमें मेरी किताबें हैं ?

आर्कादीना—हाँ, दादाके पढ़नेके कमरेमें, कोने वाली आलमारीमें रखी हैं।

त्रिगोरिन—पृष्ठ एक-सौ इक्कीस . .

[जाता है]

आर्कादीना—सच दादा, आप घर ही आराम करें न।

सोरिन—तुम तो चली जा रही हो ... तुम्हारे बाद यहाँ रहना मेरे लिए बड़ा मुश्किल हो जायेगा.. .

आर्कादीना—शहरमें ऐसा क्या रखा है ?

सोरिन—यों तो कुछ नहीं.. मगर फिर भी. .. [हँसता है] वहाँ जमेंस्त्वो हॉलका शिलान्यास होगा, दुनिया भरकी बातें होंगी। एक दो घण्टेको ही सही—यहाँके इस बँधे-बँधाये नीरस जीवनसे छूट भागनेको बड़ा मन करता है। पुराने सिगरेट-होल्डरकी तरह इतने दिन तो आल्मारीमें बन्द रह लिया। एक बजे घोड़ोंके लिए मैंने कह दिया है—तभी हमलोग चल पड़ेंगे।

आर्कादीना—[कुछ देर रुककर] सुनो दादा, यहीं रहो। ऊबना मत और ठंड मत खाना। मेरे बेटेकी देखभाल करते रहना। इसे अच्छी-अच्छी बातें समझाना [रुककर] मैं तो अब जा रही हूँ। त्रेपलेवने क्यों अपने गोली मार ली शायद यह बात मुझे कभी भी मालूम न हो पायेगी। मेरा ख्याल है, इसका मुख्य कारण जलन है। त्रिगो-रिनको यहाँसे जितनी जल्दी हटा ले जाऊँ उतना ही अच्छा है।

सोरिन—मैं क्या बताऊँ ? कारण तो कुछ और भी थे। सीधी सी तो बात है। वह नौजवान है, बुद्धिमान है, जङ्गलियोंके बीचमें गाँवमें रहता है—पासमें न पैसा है, न कोई सम्मान, न आगे कोई

भविष्य। उसे करनेको कुछ भी तो नहीं है। उसे अपने निकम्मे-पनसे डर लगता है, शर्म लगती है। मुझे वह बहुत ही अच्छा लगता है, वह भी मुझे काफी चाहता है। इस सबके बावजूद उसे लगता है जैसे घर भरमे वही एक फालतू है। भिखारियोंकी तरह दूसरोंके सिर पडा है. . बडी सीधी-सी बात है—आखिर उसका भी तो आत्म-सम्मान है।

आर्कदीना—मेरे लिए तो वह एक बडी भारी चिन्ता है [सोचते हुए] उसे किसी नौकरीमें भेज दें, क्या ?

सोरिन—[सीटी बजाने लगता है। फिर बडी अनिश्चयात्मकतासे] जहाँ तक मेरा ख्याल है अगर तुम यह कर सको तो उसको सबसे अच्छा रहेगा । उसके पास कुछ पैसा हो जाने दो। सबसे पहले तो उसे भले आदमियोंकी तरह ओढना-पहनना चाहिये जरा उसकी तरफ भी तो देखो...उसी फटी-पुरानी जाकेटमें तीन सालसे इधरसे-उधर घूमता फिरता है, एक ओवर-कोट तक नहीं है। [हँसकर] कभी-कभी मन-बहलाव हो जाय तो इसमें भी कोई नुकसान नहीं है.. जरा घूमने-फिरने या बाहर विदेश चला जाय ..इसमें ज्यादा खर्चा भी नहीं है।

आर्कदीना—अच्छा, ठीक है.. ...। कपडोंका तो मैं शायद इन्तजाम कर दूँ लेकिन. जहाँ तक बाहर जानेकी बात है...नहीं .. . अभी तो कपडोंका भी इन्तजाम मैं नहीं कर पाऊँगी। [दृढतासे] मेरे पास कौडी भी नहीं है।

[सोरिन हँसता है]

आर्कदीना—नहीं है।

सोरिन—बिल्कुल सही है। माफ करना, बहन, मैं तुम्हारा पूरा विश्वास

करता हूँ, नाराज़ मत होओ. तुम बड़ी दयालु महान . महिला हो .

आर्कदीना—[रोती है] मेरे पास पैसा नहीं है।

सोरिन—अगर मेरे पास पैसा होता तो मैं निश्चय ही उसे दे देता। लेकिन करूँ क्या, है ही नहीं—एक कानी कौड़ी भी नहीं है। मेरी सारी पेंशनको वह मुसरा कारिन्दा ले जाकर खेतोंपर, जानवरों और शहदकी मक्खियोंपर फूँक देता है। पैसा बर्बाद होता है। मक्खियाँ मर जाती हैं, गाय-भैंस मर जाते हैं—मौकेपर मुझे घोड़े तक नहीं मिलते......

आर्कदीना—हाँ, मेरे पास पैसा है। लेकिन देखो न, मैं एक्ट्रेस हूँ, मेरे कपड़े ही मेरा दिवाला निकाल देते हैं।

सोरिन—तुम बड़ी दयालु हो.. बड़ी अच्छी हो.. मैं तुम्हारी बहुत इज्ज़त करता हूँ। हाँ-हाँ...मगर.. पता नहीं मुझे कैसा-कैसा लग रहा है......[लड़खड़ाता है] मेरा सिर घूम रहा है। [मेज़को पास आकर पकड़ लेता है] मुझे बेहोशी जैसी कुछ आ रही है . .

आर्कदीना—[चौंककर] पेत्रूशा ! [उसे सहारा देनेकी कोशिश करते हुए] पेत्रूशा, दादा.. ... । [पुकारती है] दादा ! अरे, कोई आओ !

[माथेपर पट्टी बाँधे त्रेपलेव और मेद्वीदेंको आते हैं]

आर्कदीना—दादाको बेहोशी आ गयी है. ..

सोरिन—सब ठीक है .... सब ठीक है [मुस्कुराते हुए थोड़ा पानी पीता है] कोई बात नहीं .. अब सब ठीक हो गया. .

त्रेपलेव—[माँसे] अम्मा डरनेकी कोई बात नहीं है, कोई खतरा नहीं। मामाको आजकल ऐसे दौरे आ जाते हैं [मामासे] मामा, आप लेट जाइये . .

सोरिन—हाँ, थोडी देरके लिए लेटा जाता हूँ . .. लेकिन मै शहर जरूर जाऊँगा। थोडी देर लेटनेके बाद चलने-फिरने लायक हो जाऊँगा . ऐसा तो होता ही रहता है.

[अपनी बेतके सहारे झुककर चला जाता है]

मैद्वीद्वेंको—[उसे अपनी बाँहका सहारा देकर] एक पहेली बताओ... सुबह चार पैरोपर, दोपहरमे दोपर, और सन्ध्याको तीनपर

सोरिन—बिल्कुल ठीक—और रातको पीठके बल! अच्छा, तुम्हारी कृपाके लिए धन्यवाद, अब मै खुद चला जा सकता हूँ......

मैद्वीद्वेंको—अरे छोडिये भी, तकल्लुफकी क्या बात है! [सोरिनके साथ चला जाता है]

आर्कदीना—मुझे दादाने कितना घबरा दिया।

त्रेपलेव—इस गाँवमे रहना उनके लिए ठीक नहीं है। वे बड़े हताश हो जाते है। अच्छा अम्मा, मान लो अचानक ऐसा हो जाय कि तुम्हारे हृदयमे दया उमड पडे और तुम उन्हें हज़ार-दो हजार रूबल उधार दे दो तो वह पूरे साल आरामसे शहरमे बिता सकते है।

आर्कदीना—मेरे पास पैसा ही नही है। मै एक्ट्रैस हूँ। महाजन तो हूँ नही।

[चुप्पी]

त्रेपलेव—अम्मा मेरी पट्टी बदल दो। तुम बडी अच्छी तरह बदलती हो. .

आर्कदीना—[दवाओंकी आलमारीसे थोडा आइडो-फॉर्म और पट्टियोंका सामान निकालते हुए] डाक्टर साहबने बडी देर लगा दी।

त्रेपलेव—उन्होंने दस तक यहाँ आनेको कहा था, और अब दोपहर हो चुकी है।

आर्कदीना—बेटो [माथेकी पट्टी उतारती है] कैसी पगडी-सी लगती है। कल कोई नया आदमी रसोईमे पूछ रहा था कि तुम कहाँके रहनेवाले हो। लेकिन तुम्हारा घाव तो करीब-करीब भर आया। बस, थोडा-सा रह गया है [उसके माथेको चूमती है] मेरे पीछे तो अब कोई ऐसा उपद्रव नही करोगे न ?

त्रेपलेव—नही माँ ! वह तो पता नही निराशाका कैसा एक क्षण था कि मेरा अपनेपर कोई बस ही नही रहा। अब फिर नही होगा [उसके हाथ चूमता है]। कैसे कुशल हाथ है तुम्हारे। मुझे याद है, जब मै छोटा-सा था और तुम इम्पीरियल थियेटरमे ही एक्टिंग किया करती थीं, हमारे आँगनमे झगडा हो गया था—एक धोबिन किरायेदारकी खूब मरम्मत हुई थी। याद है न अम्मा ? उसे बेहोशीमे ही उठा लाया गया था. . तुमने उसकी सेवा-परिचर्या की थी और तुम उसके बच्चोको एक हौदमे नहलाया करती थी—याद है न तुम्हे ?

आर्कदीना—मुझे तो याद नही है।

[नई पट्टी चढाती है]

त्रेपलेव—जिस घरमे हमलोग रहते थे उसी घरमे दो 'बैले' नाच नाचने वाली लडकियाँ रहती थी वे दोनो तुम्हारे पास आकर कॉफी पिया करती थी ...

आर्कदीना—हाँ, यह तो याद है।

त्रेपलेव—कैसी अच्छी सीधी-सादी थी दोनो [कुछ देर रुककर] अभी इन्हीं दिनो अम्मा, मेरे हृदयमे तुम्हारे लिए वैसा ही प्यार, मधुर और सच्चा प्यार उमडता रहा जैसे बचपनमे उमडा करता था। अब मेरा तो तुम्हारे सिवा कोई भी नही रह गया। बस, अम्मा तुममे यही बुराई है, तुम उस आदमीके चक्करमे कैसे फँस गयी हो ?

आर्कदीना—तुमने उसे पहचाना नहीं है, कान्स्तान्तिन ! वह बड़े ऊँचे चरित्रका आदमी है।

त्रेपलेव—और जब उसे यह बताया गया कि मैं उसे चुनौती देने जा रहा हूँ तब उसकी चारित्रिक ऊँचाईने उसे कायरतासे नहीं रोका ? अब वह भागा जा रहा है। काला मुँह कर रहा है।

आर्कदीना—क्या बकते हो ? मैं ही तो उससे जानेको कह रही हूँ।

त्रेपलेव—वाह ! कैसा ऊँचा चरित्र है ! यहाँ हम और तुम उसे लेकर झगड़ रहे हैं, और हो सकता है इसी वक्त बैठक या बगीचेमें बैठा वह हमारी हँसी उड़ा रहा हो.. .. नीनाको प्रोत्साहन दे रहा हो, उसे समझा रहा हो कि वह प्रतिभाशालिनी है।

आर्कदीना—मुझसे यह सब भद्दी बातें करनेमें तुम्हें मजा आता है ? मेरे दिलमें उस आदमीके लिए इज्जत है। विनती करती हूँ, मेरे सामने उसे गालियाँ मत दो..

त्रेपलेव—मगर मेरे दिलमें उसके लिए कोई इज्जत नहीं है। तुम मुझसे यह मनवाना चाहती हो कि वह प्रतिभाशाली है। लेकिन माफ करना, मैं झूठ नहीं बोलूँगा, उसकी किताबें मेरी रूह खुश्क कर देती हैं।

आर्कदीना—यही तो जलन है। अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बननेवालोंसे तो खुदा भी नहीं बचा। खुद तो उनमें प्रतिभा है नहीं, लेकिन सच्चे प्रतिभाशालियोंकी टाँग खींचते हैं। मैं तो कहूँगी उन्हें इसीमें आनन्द आता है।

त्रेपलेव—[व्यंगसे] सच्ची प्रतिभा ! [गुस्सेसे] मुझमें तुम सबसे मिला कर ज्यादा प्रतिभा है। [सिरकी पट्टी फाड़ फेंकता है] तुम . . . तुम लोगोंने अपनी सड़ी-गली रूढ़ियोंसे कलाके सारे गुणोंको चूस डाला है। जो कुछ तुमलोग कर सकते हो, उसके सिवा तुम्हें न

कुछ सत्य लगता है, न सही। बाकी हर चीजका गला घोटकर तुम उसे कुचल डालना चाहते हो। मुझे तुम्हारी बातोंमें कोई आस्था नहीं है! मुझे तुम्हारी और उसकी बातोंपर रत्तीभर विश्वास नहीं है।

आर्कदीना—तुम दिवालिये और 'पतनोन्मुख' हो ... !

त्रेपलेव—जाओ तुम, अपने उसी सुन्दर थियेटरमें जाओ, और उन्हीं ओंधे-सीधे खेलोंमें ऐक्टिंग करो।

आर्कदीना—मैं ऐसे किसी भी खेलमें ऐक्टिंग नहीं करती। मेरे सामनेसे चला जा। तुझसे दो उल्टे-सीधे दृश्य तक तो नहीं लिखे जाते। तू तो बस 'कीव'का बनिया है। दूसरोंके सिर रहने वाला।

त्रेपलेव—कञ्जूस!

आर्कदीना—भिखमगे!

[त्रेपलेव बैठकर चुपचाप रोता रहता है]

आर्कदीना—पिद्दी-न-पिद्दीका शोरवा [गुस्सेमें इधर-उधर घूमती है] रो मत. . मैं कहती हूँ मत रो [रोने लगती है] चुप हो जा [उसके माथे, गालों और सिरको चूमती है] मेरे बेटे मुझे माफ कर दे. . अपनी पापिनी माँको माफ कर दे! मुझे माफ कर दे. तू तो जानता ही है, मैं कैसी बुरी हूँ

त्रेपलेव—[उसे बाहोंमें भरकर] काश! तुम जानती! मेरा सब कुछ लुट गया। नीना अब मुझे प्यार नहीं करती . और मैं कुछ भी लिख नहीं पाता. .. मेरी सारी उम्मीदें बुझ गयीं..

आर्कदीना—यों दिल मत तोड़ो .. सब ठीक हो जायेगा—अब तो वह यहाँसे सीधे जा ही रहे हैं! नीना तुम्हें फिर प्यार करने लगेगी— [आँसू पोंछ लेती है] अब, बस बहुत हो चुका हम लोगोंमें सुलह हो गयी... .

त्रेपलेव—[उसके हाथ चूमकर] अच्छा अम्मा।

आर्कदीना—[प्यारसे] उनसे भी मेल कर लो। अब तो तुम द्वन्द्व नहीं चाहते न ?

त्रेपलेव—अच्छी बात है.. बस, अम्मा तुम मुझे उसके सामने मत पडने दो.. उससे मिलना मेरे लिए बडा दुखदायी है...मुझसे सहा नहीं जाता ...

[त्रिगोरिनका प्रवेश]

देखो वह आ गया. मै अब चलता हूँ...[जल्दीसे पट्टी बाँधनेका सामान आल्मारीमें रख देता है] अब डाक्टर साहब ही आकर पट्टी बाँध देंगे।

त्रिगोरिन—[एक किताबमे पढते हुए] पृष्ठ एक-सौ एकीस.... ये रही ग्यारहवी और बारहवी लाइने . .[पढता है] 'अगर तुम्हे कभी मेरे प्राणोकी जरूरत पडे तो आना और निस्सङ्कोच ले लेना . ।'

[त्रेपलेव फर्शसे पट्टी उठाकर चला जाता है]

आर्कदीना—[अपनी घडी देखकर] घोडे आने ही वाले है... .

त्रिगोरिन—[स्वगत] 'अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणोकी जरूरत पडे तो आना और निस्सङ्कोच ले लेना।'

आर्कदीना—मेरा खयाल है, तुम्हारा सामान तो बँध ही गया होगा।

त्रिगोरिन—[अधीरतासे] हाँ-हाँ [विचारोंमें डूबे हुए] उस निष्पाप आत्माकी आवाज क्यो मुझे छूकर इतना उदास कर गयी है, और जैसे कोई मेरे हृदयको निर्ममतासे मरोडे दे रहा है—'अगर तुम्हे कभी मेरे प्राणोकी जरूरत पडे तो आना और निस्सङ्कोच

ले लेना ।' [आर्कदीनासे] एक दिन और नहीं रुक सकते हम लोग ?

[आर्कदीना सिर हिलाती है]

त्रिगोरिन—रुक जाओ न !

आर्कदीना—प्रियतम, मुझे मालूम है तुम्हें यहाँ कौन खींच रहा है। पर अपने आपको थोड़ा सँभालो। तुम नशेमें हो, जरा गम्भीर होनेकी कोशिश करो।

त्रिगोरिन—मैं कहता हूँ—तुम भी तो जरा-सी गम्भीर, समझदार और उदार बननेकी कोशिश करो। सच्चे दोस्तकी तरह मेरी बातपर गौर करो [उसका हाथ दबाकर] तुम त्याग कर सकती हो। मेरी भलाईके लिए मुझे छोड़ दो. .

आर्कदीना—[तीव्र क्रोधसे] ऐसे पागल हो रहे हो, तुम उसके पीछे ?

त्रिगोरिन—मैं उसकी ओर आकर्षित हूँ। वह मेरे सपनोंकी, आकाक्षाओंकी साकार प्रतिमा है।

आर्कदीना—उस गँवार लड़कीसे प्यार ? हाय, तुम्हें अपना जरा भी खयाल नहीं ?

त्रिगोरिन—कभी-कभी लोग सोते हुए बोलते रहते हैं. मुझे भी ठीक वैसा ही लग रहा है। मैं बातें तुमसे कर रहा हूँ, लेकिन जैसे सो रहा होऊँ और केवल उसके ही सपने देख रहा होऊँ उन मीठे मधुर सपनोंने मुझे बाँध लिया है . मुझे मुक्त कर दो ..

आर्कदीना—[काँपते हुए] नहीं-नहीं। मैं एक मामूली औरत हूँ। मुझसे यह सब मत कहो। मुझे मत सताओ बोरिस, मेरा जी सूखा जा रहा है

त्रिगोरिन—तुम अगर चाहो तो असाधारण भी बन सकती हो! जीवनमे अगर कोई चीज खुशी दे सकती है तो वह केवल प्यार है—जवानी की उमङ्गो, माधुर्य और कवित्वसे लहलहाता प्यार, जो आदमीको सपनोकी दुनियामे पहुँचा देता है। मैने कभी नही जाना ऐसा प्यार ..अपनी जवानीमे तो मुझे कभी फुर्सत ही नही मिली—बस, वही अभावोंसे लडना और इस सम्पादकके दफ्तरसे उस सम्पादकके दफ्तरमे चक्कर लगाना अब आया है वह अलौकिक प्यार—मुझे निमन्त्रण दे रहा है। उससे मुँह मोडकर भागनेमे क्या बुद्धिमानी है?

आर्कदीना—[गुस्सेसे] तुम पागल हो गये हो।

त्रिगोरिन—आखिर क्यो न होऊँ?

आर्कदीना—आज क्या तुम सबने मिलकर मुझे घोट-घोटकर मारनेका ही निश्चय कर लिया है? [रोती है]।

त्रिगोरिन—[अपनी छाती दबाकर] तुम कुछ नही समझती...तुम समझोगी भी नहीं ..

आर्कदीना—मै ऐसी बुड्ढी और बदसूरत हो गयी कि मेरे सामने दूसरी औरतकी बाते करते तुम्हें लिहाज नही होता? [अपनी बाँहे उसके गलेमें डालकर चुम्बन लेती है] हाय, तुम कैसी पागलो-सी बाते करते हो. .मेरे राजा.. प्रियतम ..तुम ही तो मेरे जीवनके आखिरी अध्याय हो [उसके पैरोपर झुकती है] मेरे सुख, मेरे गौरव, मेरे आनन्द [उसके पैरोको बाँहोमें कस लेती है] अगर तुम एक घण्टे भरको भी मुझे छोड जाओगे तो मै बचूँगी नही.. मेरे मोहन, मेरे नाथ, मेरे स्वामी मै पागल हो जाऊँगी ...

त्रिगोरिन—कोई आ जायेगा [उसे उठनेको सहारा देता है]।

आर्कदीना—आने दो. तुम्हारे लिए अपने प्रेमपर मुझे कोई लाज नहीं है [उसके हाथ चूमती है] मेरी निधि, मेरे रूठे साथी, तुम पागलपन करने जा रहे हो...लेकिन मै करने नही दूँगी यह सब मैं नहीं सह पाऊँगी.. [हँसती है] तुम मेरे हो मेरे...तुम्हारा यह माथा मेरा है, ये आँखे मेरी है.. ये रेशमी प्यारे-प्यारे बाल भी मेरे हैं . तुम्हारा अग-अग मेरा है.. तुम कितने प्रतिभावान हो, कलाकार हो, नये लेखकोमे सर्वश्रेष्ठ—रूसकी एकमात्र आशा ! तुममे कितनी सचाई, सरलता, ताजगी और स्वस्थहास्य है.. .. एक लाइनमे ही तुम आदमी या दृश्यकी सारी खूबियाँ उतार देते हो—तुम्हारे चरित्र सजीव है. । तुम्हे पढकर आदमी खुद-बखुद खिल उठता है। तुम समझते हो मै झूठी प्रशसा कर रही हूँ, तुम्हारी चापलूसी कर रही हूँ...लेकिन मेरी आँखोमे देखो.. देखो, मै झूठ बोलती लग रही हूँ ? सुनो, सिर्फ मै ही तुम्हारी सच्चे दिलसे तारीफ कर सकती हूँ—सच-सच कह सकती हूँ। मेरे जीवनधन, एकमात्र प्रियतम . चलोगे न ? बोलो, हाँ। मुझे छोडोगे तो नही ?

त्रिगोरिन—मेरी अपनी कोई इच्छा नही है।.. मेरी अपनी इच्छा नही रही..... दुबला-पतला मरियल, गन्दा हमेशा मिमियाता-सा मै—कैसे ऐसे आदमीपर कोई औरत मर सकती है ? मुझे ले चलो, मुझे यहाँसे दूर ले जाओ . .. लेकिन मुझे अपने पाससे एक कदम मत हटने देना।

आर्कदीना—[स्वगत] अब यह जायेगा कहाँ। [ऐसी स्वाभाविकतासे जैसे कुछ हुआ ही न हो] अगर सचमुच तुम चाहते ही हो, और चलनेका मन न हो तो रुक जाओ—मै अकेली चली

जाऊँगी। तुम बादमे आ जाना—एक हफ्ते बाद आ जाना! आखिर तुम्हे ऐसी जल्दी भी क्या है?

त्रिगोरिन—नहीं—हम लोग साथ ही चलेगे।

आर्कदीना—जैसी तुम्हारी इच्छा। साथ ही चले चलेंगे।

[चुप्पी]

[त्रिगोरिन कुछ लिखता है]

त्रिगोरिन—आज सुबह मैने एक बडा अच्छा वाक्य सुना—"अप्सराका उपवन" शायद किसी काम आ जाय। [अँगडाई लेता है] तो हमे जाना है? फिर वही रेलके डिब्बे, स्टेशन, उपाहार-गृह, मटन-चॉप—गप्पे......

शामयेव—[प्रवेश करके] मुझे बडे अफसोसके साथ खबर देनी पड़ती है कि घोडे तैयार है। [आर्कदीनासे] स्टेशन रवाना होनेका समय हो गया है। गाड़ी दो बजकर पॉच मिनटपर आ जाती है . । इरीना निकोलायेव्ना, बस मेहरबानी करके मेरा एक काम कर दीजिये, ऐक्टर सुल्दात्सेवका क्या हुआ—यह पता लगाना न भूलिये.. . .वह अब भी जिन्दा और स्वस्थ है क्या? एक वक्त था जब हम लोग साथ-साथ शराब पिया करते थे.... . वह "लुटी हुई रेल" मे क्या गजबका काम करता था। मुझे याद है, उन दिनो दुखका पार्ट करनेवाला था इज्म्यालोव, वह 'एलिज्बेथ गार्ड थियेटर'में हमेशा उसके साथ ही काम करता था देखिये, अभी इतनी जल्दी मत कीजिये.. पॉच मिनट और न चले तो भी कोई नुकसान नही है. .. हॉ, तो एक बार एक मेलोड्रामामे वे लोग जालसाजोका अभिनय कर रहे थे। तभी अचानक उनका भण्डाफोड हो गया। इज्म्यालोवको कहना था—

"हम लोग जालमें फँस गये"..... लेकिन कहा उसने 'हम लोग तालमें धँस गये !' [हँसता है] 'तालमें धँस गये !'

[उसके बात करनेके समय याकोव सामानको लेकर व्यस्त दिखायी देता है। नौकरानी आर्कदीनाको उसका टोप, कोट, छाता और दास्ताने लाकर देती है। उसे यह सब चीज़ें पहनानेमें सभी मदद करते हैं। रसोइया बाँयी ओरके दरवाजे पर दिखायी देता है--और कुछ झिझकके बाद भीतर आ जाता है। पोलिना आन्द्रेयव्ना, फिर सोरिन और मेद्वीद्वेंकोका प्रवेश]

पोलिना—[एक डलिया लाती है] रास्तेके लिए ये थोड़ेसे बेर हैं बड़े मीठे हैं...रास्तेमें कुछ अच्छी चीजें खाकर शायद आपका मन प्रसन्न रहे. .

आर्कदीना—पोलिना आन्द्रेयव्ना, तुम बड़ी अच्छी हो।

पोलिना—नमस्कार बहन ! अगर कुछ आपके मनका न हो पाया हो तो माफ कीजिये .... ।

[रो पड़ती है]

आर्कदीना—सब कुछ बड़ा ही अच्छा रहा—बहुत ही अच्छा ! मगर रोओ तो नहीं।

पोलिना--समय कैसा चुपचाप खिसक जाता है।

आर्कदीना—उसमें हमारा बस ही क्या है ?

सोरिन—[भारी-सा कोट पहने, शॉल लपेटे है। सिरपर टोप और हाथमें छड़ी लिये हुए बायीं ओरसे प्रवेश करता है। पूरा मंच पार करके] बहन, चलनेका वक्त हो गया। नहीं तो तुम्हें ही देर हो जायगी मैं ताँगेमें जाकर बैठता हूँ [जाता है]।

मेद्वीद्वेंको—स्टेशन तक मैं भी साथ चलूँगा आप लोगोंको विदा देनेको मैं अभी वहाँ पहुँचता हूँ.. [जाता है]

आर्कदीना—अच्छा सभी लोगोंको मेरा नमस्कार...अगर जिन्दा और चगे रहे तो फिर अगली गर्मियोंमे मिलेंगे [नौकरानी, रसोइया और याकोव उसके हाथको चूमते है] मुझे भूल मत जाना [रसोइये को एक रूबल देती है] यह तुम तीनोके लिए एक रूबल है।

रसोइया—हम लोगोकी ओरसे बहुत-बहुत शुक्रिया बीबीजी। आपका सफर अच्छा कटे—आपकी कृपाके हम सभी अहसानमन्द है।

याकोव—भगवान् आपको सुखी रखे।

शामयेव—आपका पत्र पाकर हमे बडी ही खुशी होगी। बोरिस अलैक्सी-विच, प्रणाम!

आर्कदीना—त्रेपलेव कहाँ है? उससे कहो मैं जा रही हूँ। मै उससे तो मिल लूँ। अच्छा भाई, मेरे बारेमे दिलमे मलाल मत रखना। [याकोवसे] मैने रसोइयेको एक रूबल दे दिया है—वह तुम तीनोंका है।

[सब दाहिनी ओर चले जाते हैं। मञ्च खाली है। नेपथ्यमे लोगोंको विदा देने वाला जाना-पहचाना शोरगुल। महरी मेज़पर रखी बेरोंकी डलिया लेने आती है और लेकर चली जाती है]

त्रिगोरिन—[लौटकर] अपनी छडी तो मै भूल ही गया। शायद बाहर यहो बरामदेमे छूट गयी है।

[जाने लगता है कि चौथी ओरके दरवाजेपर भीतर आती हुई नीनासे मिलता है] अरे तुम यहाँ हो? सुनो हम लोग जा रहे है

नीना—मेरे मनमें आया कि एक बार हमलोग फिर एक दूसरेसे मिल ले [आवेगसे] बोरिस अलैक्सीविच, मैने अब ठान लिया है पोसा फेका गया था। अब मै रंगमचको अपना

हो रही हूँ. ....कल मैं यहाँसे चली जाऊँगी... मैं अपने पिताजीका भी साथ छोड रही हूँ . सब कुछ छोडे जा रही हूँ। एकदम नयी जिन्दगी शुरू कर रही हूँ। मैं भी मास्को ही आ रही हूँ। हमलोग वहीं मिलेंगे।

त्रिगोरिन—[इधर-उधर देखकर] स्लाव्यास्की बाजारमें ठहरना, फौरन ही मुझे खबर देना. मोल्चोनोका, ग्रोखोलोव्स्की-भवन मैं बहुत जल्दीमें हूँ।

[चुप्पी]

नीना—सिर्फ एक मिनट और . ...

त्रिगोरिन—[बडे दबे स्वरमें] तुम कितनी सुन्दर हो ओह, हमलोग जल्दी ही फिर मिलेंगे यह सोचकर कैसा आनन्द हो रहा है [उसकी छाती पर सिर रखकर नीना रो पडती है] इन जादूभरी अद्भुत रतनारी आँखोंको मैं फिर देखूँगा.. .. यह मन्द-मन्द मोहक मधुर मुस्कान . यह प्यारा-प्यारा मुखडा, यह स्वर्गीय पवित्रताकी छाप. मेरी प्राण

[एक गहरा व्यस्त-चुम्बन]

पर्दा गिरता है।



चौथा अङ्क

[सोरिनके घरकी बैठकको अब त्रेपलेवके अध्ययन-कक्षके रूपमें बदल दिया गया है। दायीं और बायी ओरके दरवाज़े अन्दर कमरोंमे गये हैं। सामने बीचमें शीशोका जंगला बरामदेमें खुलता है। बैठकके साधारण फर्नीचरके अलावा बायी ओरके दरवाजेके पास एक कोनेमें लिखनेकी मेज़, एक सोफा, किताबोंकी आलमारी, खिड़की तथा कुर्सियोंपर किताबें। सन्ध्याका समय। सिर्फ एक ही शेड वाला लैम्प जल रहा है। कमरेकी रोशनी बड़ी धुँधली है। ऊपरकी चिमनियोंसे पेड़ोंके सरसराने और तेज़ आँधीकी गरजन सुनाई देती है। चोरोंको डरानेके लिए एक चौकीदार ज़ोर-जोरसे कनस्टर पीटता सुनाई दे रहा है]

[मेद्वीद्वेंको और माशाका प्रवेश]

माशा—[पुकारती है] कान्स्तान्तिन् ग्राविलिच ! कान्स्तान्तिम ग्राव्रिलिच [इधर-उधर देखकर] नहीं . यहाँ तो कोई भी नही है। बुड्ढा हर मिनट बस यही रट लगाये रहता है, कोस्त्या कहाँ है, कोस्त्या कहाँ है। बिना उनके उससे रहा ही नही जाता।

मेद्वीद्वेंको—अकेलेपनसे वह डरता है [आवाज़ सुनकर] कैसा खराब मौसम है। पूरे दो दिन होने आ रहे हैं इसे . . .

माशा—[लैम्प घुमाती हुई] झीलमें लहरें उठ रही हैं—बड़ी-बड़ी लहरें।

मेद्वीद्वेंको—बगीचेमें कैसा अन्धकार है। हमें उन लोगोंसे कह देना था कि बगीचेके स्टेजको अब तोड़-ताड़ दें। हड्डियोंके ढाँचेकी तरह

नङ्गा और मनहूस-सा खड़ा है—पर्दे हवामें फड़फड़ा रहे हैं। कल शामको जब मैं वहाँसे गुजर रहा था तो मुझे ऐसा लगा जैसे उसमें बैठा कोई सिसक-सिसक कर रो रहा हो.

माशा—अच्छा, अब और क्या करना है हमें ?

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—चलो, घर चलें, माशा।

माशा—[सिर हिलाकर] मैं तो आज रातभर यहीं रहूँगी।

मैद्वीद्वैंको—[खुशामदके स्वरमें] चली चलो न माशा! मुन्ना भूखा होगा।

माशा—न कहीं। मियोना सब उसे खिला-पिला देगी।

[चुप्पी]

मैद्वीद्वैंको—मुझे तो उसपर बड़ी दया आ रही है। बेचारेको बिना माँके तीन दिन हो गये।

माशा—तुम तो एक आफत हो। पहले तुम कम-से-कम और चीजोंपर भी तो बोलते थे—अब तो बस, वही बच्चा, घर, बच्चा—कोई तुमसे यही-यही सुने जाय।

मैद्वीद्वैंको—मानो माशा, चलो चलो।

माशा—तुम चले जाओ न।

मैद्वीद्वैंको—तुम्हारे बापू मुझे जानेको घोड़ा नहीं देंगे।

माशा—नहीं, वे दे देंगे। तुम पूछ लेना बस, वे जरूर दे देंगे।

मैद्वीद्वैंको—अच्छी बात है—पूछ ही लूँगा। तो तुम कल आ रही हो न।

माशा—हाँ-हाँ कल [चुटकी भरकर सुँघनी चढ़ाती है] तुम तो मेरी नाकमें दम ही किये रहते हो।

[त्रेपलेव और पोलिना आन्द्रोयेव्नाका प्रवेश । त्रेपलेव रजाई और तकिये लिये हैं, पोलिना चादर और गिलाफ । वे उन्हे सोफेपर रख देते हैं । फिर त्रेपलेव मेजके पास जाकर बैठ जाता है]

माशा—अम्मा, यह किस लिए है ?

पोलिना—प्योत्र निकोलायेविचने कहा है कि उनका बिस्तर भी कोस्त्याके कमरेमें ही बिछेगा ।

माशा—मै बिछाती हूँ [बिस्तर बिछाती है] ।

पोलिना—[आह भरकर] ये बुड्ढे भी बिल्कुल बच्चो जैसे हो जाते है । [लिखनेकी मेजके पास जाकर उसपर कुहनियाँ टिकाकर झुकते हुए एक-पाण्डु लिपिको देखती रहती है]

[चुप्पी]

मैद्वीद्वेंको—अच्छा, तो फिर मै चलता हूँ । अच्छा माशा, नमस्कार [अपनी पत्नीका हाथ चूमता है] नमस्कार माताजी । [अपनी सासका हाथ चूमना चाहता है]

पोलिना—[खीझसे] टीक है, ठीक है । जाना ही है तो अब देर मत करो ।

मैद्वीद्वेंको—नमस्कार कोन्स्तान्तिन गाब्रिलिच ।

[त्रेपलेव बिना कुछ बोले हाथ उठा देता है । मैद्वीद्वेंको चला जाता है]

पोलिना—[पाण्डु-लिपिको देखते हुए] कोस्त्या, कोई सोच सकता था कि एक दिन तुम सच-मुच लेखक बन जाओगे ? अब तो भगवान्‌की कृपासे तुम्हें पत्रिकाओंसे रुपये भी मिलने लगे है [उसके बालोपर हाथ फेरकर] और अब तो तुम भी बडे अच्छे लगने लगे हो अच्छे कोस्त्या, बेटा, बस, मेरी बेटी माशापर जरा मेहरबानी रखना

माशा—[बिस्तर बिछाते हुए ही] अम्मा उनके पाससे चली आओ न।

पोलिना—[त्रेपलेव] यह बिचारी बडी भोली है [चुप रहकर] तुम तो खुद समझते ही हो कोस्त्या, आदमीकी कृपा-दृष्टि रहे तो औरत कुछ भी नहीं चाहती। मै तो खुद भोगे बैठी हूँ।

[त्रेपलेव मेज़से उठकर बिना कुछ बोले बाहर चला जाता है]

माशा—लो, उन्हे नाराज कर दिया न। तुम्हे उन्हे तङ्ग करनेकी क्या पडी थी?

पोलिना—माशेका, तेरे ऊपर मुझे बडा तरस आता है।

माशा—बस-बस बडी अच्छी बात है।

पोलिना—मेरे दिलमे तेरे लिए बडी कलक है बेटी। तू तो जानती ही है, मै सब देखती हूँ—सब समझती हूँ ....

माशा—यह सब बेवकूफीकी बाते है। बिना किसी उम्मीदके प्यार करते जाओ—ये सब बाते उपन्यासोमे ही होती है। इसमे आता जाता क्या है? आदमीको चाहिए कि हाथपर हाथ रखकर न बैठ जाय। कुछ होगा, कुछ होगा इसी आशामे न रहे ज्वार उतर जानेकी राह देखता रहे और जब प्यारकी जड हृदयमे बहुत ही गहरी पैठ जायँ तो उन्हे उखाड फेंके। अधिकारियोने मेरे पतिका दूसरे जिलेमे तबादला करनेका वचन दे दिया है ..तुम देखना वहाँ जाते ही मै सब भूल-भाल जाऊँगी . सबको अपने दिलमे नोचकर फेंक दूँगी।

[दो कमरोंके पार एक बडा उदास-सा सङ्गीत बजता है]

पोलिना—कोस्त्या ही बजा रहा है . जरूर उसके मनमे भी बडा दर्द है।

माशा—[चुपचाप सङ्गीतपर दो-एक क़दम नाचती है] अम्मा, यह हमेशा मेरी आँखोंके सामने न रहें, इतना ही मेरे लिए काफी है

विश्वास मानो, अगर वे मेरे सिमियनका तबादला भर कर दे तो एक महीनेमे मै अपनेको बिल्कुल सॅभाल लूॅगी। ये सब प्रेम-प्यार, बेकारकी बाते है।

[बायी ओरका दरवाज़ा खुलता है। दोर्न और मेद्वीद्वेंको, सोरिनको उसकी कुर्सीपर धकेलते लाते है]

मेद्वीद्वेंको—वे छहो अब मेरे पास है। और आटा आज कल दो कोपेक, पाउण्ड है।

दोर्न—आमके आम और गुठलियोके दाम बनानेके लिए काफी चलता-पुर्जा होनेकी जरूरत है।

मेद्वीद्वेंको—आप तो इसपर हॅसेगे ही। आपके पास तो पैसा भरा पडा है। आपको यही नही पता कि पैसेका क्या करे. . . .

दोर्न—पैसा ? भाई मेरे, तीस साल रगडनेके बाद ! उन दिनो मैने रात को रात और दिनको दिन नहीं जाना। अपनी जानको अपना नही समझा—और तब जाकर कही मैने हजार रूबल बचाये थे सो अभी जब बाहर गया तो फूॅक आया। अब मेरे पास क्या रखा है ?

माशा—[अपने पतिसे] तुम गये नही ?

मेद्वीद्वेंको—[अपराधीके स्वरमें] तुम्ही बताओ, जब कोई मुझे घोडा ही नही देगा तो कैसे जाऊॅगा ?

माशा—[दबी जबानमें, बुरी तरह झल्लाकर] मै तुम्हारी सूरत नही देखना चाहती।

[पहियोवाली कुर्सी कमरेके बायी ओर बीचमें रहती है। पोलिना, माशा और दोर्न उसके आसपास बैठ जाते हैं। मेद्वीद्वेंको उदास-दुखी-सा उनसे ज़रा हटकर खडा है]

दोर्न—यहा कितना बदल गया है। बैठक, पढ़नेका कमरा बन गई है।

माशा—यहाँ कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचको काम करनेमें काफी सुविधा रहती है। जब भी मन करता है बागमें टहलने चले जाते हैं—वहाँ चिन्तन कर सकते हैं।

[चौकीदार कनस्टर बजाता है।]

सोरिन—बहन कहाँ है ?

दोर्न—वे स्टेशनपर त्रिगोरिनसे मिलने गई हैं। अभी सीधी वापस आ जायेंगी।

सोरिन—जब तुमने मेरी बहनको बुला लेना जरूरी समझा है तो निश्चय ही मेरी बीमारी खतरनाक है। [कुछ देर चुप रहकर] कैसी अनोखी बात है। मेरी बीमारी खतरनाक है और देखो, कोई मुझे दवा ही खानेको नहीं दे रहा है।

दोर्न—अच्छा, कौन-सी दवा लेंगे ? अर्कधतूरा ? सोडा ? कुनैन ?

सोरिन—डाक्टर, तुमने फिर वही अपनी-अपनी लगाई ? मुसीबत कर डाली मेरी तो। [सोफेपर बिछे बिस्तरकी ओर इशारा करके] मेरे लिए यही बिस्तर है क्या ?

पोलिना—जी हाँ, यह आपका ही है प्योत्र निकोलायेविच।

सोरिन—शुक्रिया।

दोर्न—[गुनगुनाता है] "रात आधी है कि चन्दा तैरता आकाशमें।"

सोरिन—मैं कोस्त्याको एक कहानीका विषय देना चाहता हूँ। उसका नाम होना चाहिए "महत्त्वाकांक्षी मनुष्य।" जवानीके दिनोंमें मैं एक साहित्यिक होना चाहता था—लेकिन हो नहीं पाया। मैं अच्छा भाषणकर्त्ता बनना चाहता था, लेकिन बोलता था तो ऐसा कि रोना आये [अपना मजाक उड़ाते हुए] "और भी इसी प्रकारकी बातें वगैरा—वगैरा," बोलते-बोलते मैं

पसीनेसे लथ-पथ हो जाता था, अपनी बातोको जैसे-तैसे समेट पाता था और पसीने-पसीने हो जाता था। मै शादी करना चाहता था, लेकिन कर नही सका। मैने हमेशा शहरोमे रहना चाहा, लेकिन अब अपनी जिन्दगीको यहाँ झोंके दे रहा हूँ . वगैरा... वगैरा.. ...

दोर्न—यह भी तो जोडिये न कि मै सरपञ्च होना चाहता था और सर-पञ्च हो गया।

सोरिन—[हँसता है] इसके पीछे तो मै कभी नहीं पडा। यह तो अपने आप ही हो गया।

दोर्न—आप जानते है, साठ साल पर पहुँच कर हर वक्त जीवनसे असन्तोष दिखाते रहना आपको कोई शोभा नहीं देता।

सोरिन—अजब जिद्दी आदमी हो जी। अरे, तुम यह भी तो सोचो कि हरेक आदमी जिन्दा रहना चाहता है।

दोर्न—अरे साहब, बेवकूफी तो यही है। यह तो कुदरती नियम है कि हर प्राणीका अन्त होता है।

सोरिन—तुम ऐसे आदमीकी तरह बहस करते हो जिसे जीवनमे कोई कमी नही रही। तुम सन्तुष्ट हो, इसलिए जीवनकी ओरसे लापर-वाह हो। तुम्हारे लिए किसीकी अहमियत ही नही है। मै कहता हूँ, इतने पर भी तुम मरनेको आसानीसे तैयार नही होओगे।

दोर्न—मौतका भय तो एक पशु-प्रवृत्ति है। आदमीको इस पर विजय पानी चाहिए। मृत्युका सच्चा और युक्ति-सगत भय तो धार्मिक लोगों को हो सकता है जो परलोक और पुनर्जन्ममे विश्वास रखते हो, क्योकि अपने पापोका उन्हें दण्ड मिलेगा। और आप? पहली बात तो यह कि परलोक-वरलोकमे आप विश्वास ही नही करते,

बात यह कि ऐसी परेशानीका कौन-सा पाप आपने किया होगा ? न्याय-विभागमे आपने पच्चीस साल नौकरी की है—यही तो।

सोरिन—[हँसकर] अट्ठाईस !

[त्रेपलेव आकर सोरिनके पैरोंके पास एक चौकी पर बैठ जाता है। माशा अपनी आँखें एकटक उसी पर जमाये रहती है]

दोर्न—हमलोग कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचको काम नहीं करने दे रहे।

त्रेपलेव—नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

मेद्वीद्वेंको—आपसे एक बात पूछूँ डाक्टर साहब, आपको कौन-सा शहर सबसे अधिक अच्छा लगा ?

दोर्न—जनेवा !

त्रेपलेव—जनेवा क्यों ?

दोर्न—वहाँकी सडकों पर क्या गजबकी जिन्दगी है। सन्ध्याको जरा आप होटलसे निकलकर सडकों पर जाइये—सारी सडकें भीडसे ठसाठस मिलेंगी। आप भीडमे, निर्लक्ष्य टेढे-सीधे, आडे-तिरछे चारों तरफ भटकते फिरेंगे. .. भीडके साथ जिन्दा रहेंगे—मानसिक रूपमे एक होकर इस बात पर विश्वास कर उठेंगे कि 'विश्वात्मा'की बात सम्भव है—जैसे नीना जरेश्न्याने तुम्हारे खेलमे अभिनय किया था न.. .. अरे हाँ, बात पर बात याद आई—आजकल वह कहाँ है ? कैसी है आजकल ?

त्रेपलेव—उम्मीद तो है, कि बिलकुल ठीक है।

दोर्न— मुझे किसीने बताया था कि उसकी जिन्दगी कुछ अजब हो गयी है। क्या बात हो गई ?

त्रेपलेव— डाक्टर साहब, वह एक लम्बी कहानी है।

दोर्न—तो भी संक्षेपमे ही बता दो।

[चुप्पी]

त्रेपलेव— वह घरसे भाग गयी थी और त्रिगोरिनके साथ उसका कुछ किस्सा चलता रहा। इतना तो जानते है न?

दोर्न—हॉ, यह तो पता है।

त्रेपलेव—फिर वह मॉ बनी। बच्चा मर गया। और जैसी कि उम्मीद थी, त्रिगोरिन उससे ऊब चुका था, इसलिए वह अपने पुराने सम्पर्कोमे वापिस आ गया। सच पूछा जाय तो उसने उन्हे कभी छोडा ही नहीं था, बल्कि अपने उसी ढुल-मुल 'हॉ-नहीं' के ढगपर दोनो नावों पर सवार रहता था। सुन-सुनाकर जो कुछ मै समझ पाया हूँ वह यह कि अब नीना का व्यक्तिगत जीवन तो बिल्कुल चौपट ही समझिये।

दोर्न—और रगमचके जीवनका क्या हुआ?

त्रेपलेव—मेरा विचार है उसकी हालत उससे भी बुरी है। मॉस्कोके पास, किसी ऐसे रद्दीसे थियेटरमे जहॉ लोग छुट्टियॉ बिताने पहुँचते है, आप पहली बार जनताके सामने तशरीफ लायी... और फिर गॉव-गॉव भटकती फिरी . इस पूरे समय मैने उसे कभी भी ऑखोसे ओझल नहीं होने दिया। जहॉ-जहॉ वह गयी मै भी पहुँचा। पार्ट वह हमेशा बडे-बडे ही लेती थी, लेकिन अभिनय बडा भोंडा, बिल्कुल नीरस, चीख-चीखकर और बुरी तरह मुँह बनाकर करती थी। कुछ क्षण ऐसे भी होते थे जब उसकी प्रतिभा खिलकर आती थी जैसे मच पर रोने और मरनेके दृश्योमे लेकिन गनीमत बस वहीं तक थी।

दोर्न—तो क्या सचमुच उसमे 'प्रतिभा' थी?

त्रेपलेव—यह कहना तो बडा मुश्किल है। मेरा तो खयाल है कि थी। मै उसे देखता था लेकिन वह जानबूझकर ऑखे फेर लेती थी, नौकर लोग मुझे उसके होटलमे जाने नहीं देते थे। मै उसकी मानसिक अवस्थाको समझता था और कभी मिलनेका हठ नहीं करता था

[रुक कर] इससे ज्यादा और क्या बताऊँ ? बादमें, जब मैं घर लौट आया तो उसके कुछ पत्र मिले. बड़े प्यार, समझदारीसे भरे दिलचस्प पत्र ! वह खुद कभी इस बातको मुँह पर नहीं लायी लेकिन महसूस उसे भी होता रहा कि वह भीतर दिलकी गहराईमें कहीं व्यथित है . उसकी हर लाइनमें उसकी दुखती और चटखती रगें जैसे बोलती थीं, जैसे उसकी कल्पनाकी धुरी खो गयी हो। अपने हस्ताक्षरोंकी जगह हंसिनी बना देती है, पुश्किनकी "मत्स्य-कन्या"में पन-चक्कीवाला हमेशा कहता है 'मैं कौआ हूँ, मैं कौआ हूँ' इसी तरह वह अपने पत्रोंमें हमेशा लिखती रहती है कि मैं 'हंसिनी हूँ'. . . ..अब वह फिर लौट आयी है।

दोर्न—यहाँ ? तुम्हें कैसे मालूम ?

त्रेपलेव—इसी गाँवमें एक सरायमें ठहरी है। पिछले पाँच दिनसे यहीं है। मैं उससे मिलने गया था। मार्या इलियनिश्ना भी गयी थी, लेकिन वह तो किसीसे भी नहीं मिलना चाहती . . । सिमियन सिमोनोविच कहते थे कि उन्होंने एक दिन दोपहर बाद उसे कस्बे से डेढ मील दूर एक खेतमें देखा था।

मेद्वीदैंको—जी हाँ--मैंने देखा था। वह कस्बेकी तरफ जा रही थी। मैंने झुककर नमस्कार भी किया, पूछा हमलोगोंसे मिलने क्यों नहीं आ रहीं। बोली, 'आऊँगी कभी'।

त्रेपलेव—वह नहीं आयेगी [चुप रहकर] उसके बाप और सौतेली माँने उसे अपना कुछ भी मानने से इन्कार कर दिया है। उन्होंने चौकीदार बैठा दिया है कि वह घरके पास तक न फटकने पाये [डाक्टरके साथ-साथ लिखने की मेज़ तक जाता है] डाक्टर साहब, कागज पर फिलासफी बघारना कितना आसान है, लेकिन जीवन कितना कठोर है !

सोरिन—लडकी बडी ही सुन्दर थी।
दोर्न—क्या कहा?
सोरिन—मैंने कहा, लडकी बडी सुन्दर थी। खुद सरपच सोरिन साहब भी एक बार उसे प्यार करते थे।
दोर्न—वही पुराना पचडा।

[सोरिनकी हँसी सुनाई देती है]

पोलिना—मुझे लगता है, वे लोग स्टेशनसे लौट आये।
त्रेपलेव—हाँ, बाहर अम्माकी आवाज लगती है।

[आर्कदीना, त्रिगोरिन और उनके साथ-शामंयेवका प्रवेश]

शामंयेव—[प्रवेश करते हुए] आँधी-पानीमे मुरझाते पेडकी तरह हम लोग तो दिन-दिन बुड्ढे होते जा रहे है लेकिन [आर्कदीनासे] आप बिल्कुल वैसी ही है .. वही सोफियाने रगीन कपडेका ब्लाउज, वही उल्लास, वही रौब-शान . .
आर्कदीना—मुझे फिरसे नजर लगाना चाहते हो क्या? दुष्ट कहीके।
त्रिगोरिन—प्योत्र निकोलायेविच, कैसे है आप? वैसे ही बीमार चले जा रहे है। यह तो अच्छी बात नही है [उमँग कर माशाको देखते हुए] और मार्या इलियिनिश्ना आप?
माशा—मेरी अभी तक याद है आपको? [हाथ मिलाती है]
त्रिगोरिन—शादी हो गयी?
माशा—बहुत पहले ही।
त्रिगोरिन—खुश तो हो? [दोर्न और मेद्वीदेंकोका जरा झुककर अभिवादन करता है फिर हिचकिचाता-सा त्रेपलेवके पास जाता है] दरीना निकोलायब्ना बता रही थी कि तुमने सारी पुरानी बाते भुला दी है—और अब मुझसे नाराज़ नही हो।

[त्रेपलेव उसका हाथ पकड़े रहता है]

आर्कादीना—[बेटे से] बोरिस अलेक्सीविच वह पत्रिका लाये हैं जिसमें तुम्हारी नई कहानी छपी है।

त्रेपलेव—[पत्रिका लेकर, त्रिगोरिन से] शुक्रिया। आपने बड़ा कष्ट किया।

[बैठते हैं]

त्रिगोरिन—तुम्हारे प्रशंसकोंने तुम्हें बधाइयाँ भेजी हैं। मॉस्को और पीटर्सबर्गमें तुम्हारी चीज़ोंके लिए बड़ा उत्साह है। मुझसे लोग लगातार तुम्हारे बारेमें पूछते रहते हैं। लोग पूछते हैं, तुम कैसे लगते हो, कितने बड़े हो, काले हो या गोरे। तुम हमेशा नकली नामसे लिखते हो न, इसलिए कोई तुम्हारा असली नाम ही नहीं जानता। तुम लोहेकी दीवारकी तरह रहस्यमय हो।

त्रेपलेव—कुछ दिनों ठहरेंगे न ?

त्रिगोरिन—नहीं, मैं सोचता हूँ कि कल मुझे मॉस्को लौट जाना चाहिए। हाँ, मुझे लौटना ही है। जल्दी ही अपना उपन्यास खतम कर देना है। इसके अलावा कहानियोंके एक संग्रह प्रकाशनका भी मैंने वचन दे दिया है। सच पूछो तो सब वही पुरानी रफ्तार है।

[जब ये लोग बातें करते हैं तो, आर्कादीना और पोलिना कमरेके बीचमें ताश खेलनेकी मेज़ ला रखती हैं। शामरायेव मोमबत्ती जलाकर कुर्सियाँ ठीक करता है। आलमारीमें से एक 'लोटो' (जुएका चक्कर) निकाल लिया जाता है]

त्रिगोरिन—मौसम मेरे आनेमें खास खुश नहीं लगता। बड़ी भयानक आँधी है। कल सुबह तक अगर ठीक हो जाय तो मैं झील पर मछली पकड़ने जाऊँगा। मेरे मनमें बाग और उस जगहको भी

जरूर देखनेकी इच्छा है जहाँ तुम्हारे नाटकका अभिनय हुआ था—तुम्हें याद है न! दिमागमे एक कहानीका प्लॉट है—और जहाँ यह कहानी घटित होती है उस दृश्यकी सारी स्मृतियोको मै फिरसे दुहरा लेना चाहता हूँ।

माशा—[पिता से] बापू, मास्टर साहबको एक घोडा दे दीजिए न। उन्हे अब घर चला जाना चाहिए।

शामंयेव—[मजाक उडाकर] घर जाना चाहिए—घोडा! [तैशसे] तुम खुद ही देखो न, अभी तो घोडे स्टेशनसे लौटकर आये है। इस समय तो उन्हे मै कही भी नहीं भेजूँगा।

माशा—और भी तो घोडे है। [अपने बापको कुछ न बोलता देखकर, हाथ झटक देती है] तुमसे तो किसी भी काम की उम्मीद नही।

मेद्वेदेंको—माशा, मै पैदल जा सकता हूँ, वाकई . .

पोलिना—[गहरी साँस लेकर] ऐसे मौसममे पैदल! [ताश खेलनेकी मेजके सहारे बैठती है] अच्छा बन्धुओ, आइए।

मेद्वेदेंको—चार मील ही तो है। अच्छा नमस्कार! [अपनी पत्नीके हाथको चूमता है] माताजी नमस्कार! [उसकी सास बडे बेमनसे चुम्बनके लिए अपना हाथ उधर बढा देती है] अगर बच्चेकी बात न होती तो मै किसीको तङ्ग न करता [सब लोगोंको झुककर प्रणाम करता है] अच्छा विदा.. . [बडे हिचकिचातेसे कदमोसे चला जाता है]

शामंयेव—सीधा चला जायेगा अपने आप। आखिर कोई लाट साहब तो है ही नही।

पोलिना—[मेजपर हाथ थपथपाकर] आओ भाइयो, क्यों बेकार वक्त बरबाद किया जाय। फिर अभी हमें खाना खानेका बुलावा आ जायेगा।

[शामंयेव, माशा और दोर्न मेजके चारों ओर बैठ जाते हैं]

आर्कदीना—[त्रिगोरिनसे] जब जाड़ेकी लम्बी-लम्बी सन्ध्याएँ आ जाती है—तो सब लोग यहाँ 'लोटो' खेलते है। देखो, जिस 'लोटो' से माँ बचपनमें, हमारे साथ खेला करती थी यह वही 'लोटो' है। खानेसे पहले एक बाजी खेलोगे? [त्रिगोरिनके साथ मेज़ पर बैठती है] देखनेमें यह खेल बड़ा नीरस-सा है, लेकिन थोड़ा-सा सीख लेनेपर इतना रूखा नहीं लगता। [हरेकको तीन-तीन पत्ते बाँटती है]

त्रेपलेव—[पत्रिकाके पन्ने पलटते हुए] इन्होंने खुद तो अपनी कहानी पढ़ली है लेकिन मेरी कहानीके पन्ने भी नहीं चीरे है [पत्रिका को पढ़नेकी मेज़पर रख देता है, फिर बाँयी ओर दरवाजेकी ओर जाता है। जैसे ही माँके पाससे गुजरता है, माँके सिरका चुम्बन लेता है]

आर्कदीना—कोस्त्या, तुम नहीं खेलोगे?

त्रेपलेव—माफ करना माँ, मेरा मन नहीं कर रहा .. मै बाहर घूमने जा रहा हूँ . [जाता है]

आर्कदीना—चाल दस कॉपककी है। डाक्टर साहब, जरा मेरी ओरसे भी चल दीजिए।

दोर्न—अच्छी बात है।

माशा—सब कोई अपनी-अपनी चाल चल चुके? अब मै शुरू करती हूँ: बाईस।

आर्कदीना—ठीक।

माशा—तीन।

दोर्न—ठीक।

माशा—तीन आपने चला? आठ! इक्यासी! दस।

शार्मयेव—ऐसे मत घबराओ।

आर्कदीना—हार्कोवमें मेरा ऐसा शानदार स्वागत हुआ कि मजा आ गया। अब भी आनन्दसे मेरा सिर चकरा रहा है!

माशा—चोंतीस।

[नेपथ्यमें व्यथापूर्ण 'वाल्ज' की धुनें बजती सुनाई देती है]

आर्कदीना—विद्यार्थियोंने बाकायदा मेरा सत्कार किया ... तीन डलिया भरकर फूल दो मालाएँ और साथमें यह .... [गलेमें लगी जड़ाऊ पिन खोलकर मेजपर रखती है]

शार्मयेव—हाँ, यह है एक चीज!

माशा—पचास।

दोर्न—पूरे पचास?

आर्कदीना—उस दिन मैंने बड़े शानदार कपड़े पहने थे। और कुछ चाहे मैं न जानती होऊँ, कम-से-कम कपड़े पहननेका सलीका जानती हूँ।

पोलिना—कोस्त्या पयानो बजा रहा है—बेचारा बड़ा दुखी और व्यथित है।

शार्मयेव—अखबारोंमें भी उन्हें भला बुरा कहा गया है।

माशा—सतहत्तर।

आर्कदीना—अरे, यह भी कोई बात हुई। इस बातपर उसे इतना ध्यान नहीं देना चाहिए।

त्रिगोरिन—असलमें अभी तक वह जम नहीं पाया है। अपनी लाइनपर अभी उसने ठीकसे अधिकार नहीं प्राप्त किया। हमेशा उसके लिखे में कुछ अद्भुत, कुछ अस्पष्ट, और कभी-कभी तो पागलपन-सा रहता है। किसी भी पात्रमें जिन्दगी नहीं. . .

माशा—ग्यारह।

आर्कदीना—[सोरिनको इधर-उधर देखकर] पेत्रूशा, आप तो बहुत उकता रहे होंगे? [चुप रहकर] यह तो सो गये।

दोर्न—असली सरपञ्च हमेशा सोता रहता है।

माशा—सात! नब्बे?

त्रिगोरिन—मैं भी अगर किसी ऐसी जगह, झीलके किनारे रहता होता तो आप समझते हैं कुछ लिख पाता? मैं तो वहाँके प्रभावसे ही ऐसा सम्मोहित हो जाता कि मछली मारनेके सिवा शायद दिनभर कुछ भी न करता।

माशा—अट्ठाईस?

त्रिगोरिन—झींगा मछलीको पकड़कर कैसा मजा आता है।

दोर्न—आप चाहे जो कहें, मैं तो कान्स्तान्तिन गाव्रिलिचकी दाद देता हूँ। उसमें कुछ है, जरूर कुछ है उसमें। वह कल्पना चित्रोंके माध्यममें सोचता है . . . उसकी कहानियाँ बड़ी ही सजीव, जानदार होती हैं—मैं तो उनसे बुरी तरह प्रभावित हूँ। उसमें सबसे बुरी बात सिर्फ यही है कि उसका अपना कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है। वह पाठकके हृदयमें प्रभाव पैदा तो कर देता है, मगर खाली प्रभावको लेकर ही तो आप आगे नहीं जा सकते। अच्छा, इरीना निकोलायेव्ना,—तुम्हारा बेटा एक लेखक है? उससे तुम्हें खुशी है?

आर्कादीना—कभी कल्पना कर सकते हैं आप कि मैंने उसकी लिखी एक भी चीज नहीं पढ़ी होगी ? मुझे कभी फुर्सत ही नहीं मिली।

माशा—छत्तीस !

[त्रेपलेव चुपचाप प्रवेश करके मेज़ पर बैठ जाता है]

शामरायेव—ओ हाँ, बोरिस अलैक्सीविच, आपकी एक चीज अभी भी हमारे पास रखी है।

त्रिगोरिन—क्या चीज ?

शामरायेव—कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचने एक हंसिनीका शिकार किया था और आपने मुझे देकर कहा था कि मैं उसमें आपके लिए मसाला लगवा दूँ।

त्रिगोरिन—मुझे तो याद नहीं है [सोचते हुए] नहीं, मुझे बिल्कुल याद नहीं है।

माशा—छयासठ। एक !

त्रेपलेव—[झटकेसे खिड़की खोलकर बाहर सुनता है] कैसा घना अँधेरा है। मालूम नहीं, क्यों आज मेरा मन बड़ा उद्विग्न हो रहा है।

आर्कादीना—कोस्त्या, खिड़की बन्द कर दो न, हवा बड़ी तेज है।

[त्रेपलेव खिड़की बन्द कर देता है]

माशा—अट्ठासी।

त्रिगोरिन—बाजी मेरी रही।

आर्कादीना—[उल्लाससे] शाबाश। शाबाश।

शामरायेव—बहुत खूब।

आर्कादीना—इनकी तो हर बातमें किस्मत साथ देती है। [उठते हुए] आइए अब चलकर कुछ खा-पी लिया जाय। हमारे अतिथि

'महान् पुरुष ने अभी कुछ खाया नहीं है। खाना खानेके बाद हम लोग फिर जमेंगे। [त्रेपलेवसे] कोस्त्या, लिखना छोड़ो और चलकर खाना खा लो।

त्रेपलेव—मेरा मन नहीं कर रहा, माँ। मुझे भूख नहीं है।

आर्कदीना—जैसी तुम्हारी इच्छा। [सोरिनको जगाती है] पेत्रूशा, खाना... [शामेचेवकी बाँह पकड़कर] हाँ, तो मैं तुम्हें अपने हार्कोवके स्वागतके बारेमें बता रही थी।

[पोलिना, मेजपर रखी मोमबत्तियाँ बुझा देती है। फिर या और दोर्न कुर्सी धकेलते ले जाते हैं। सब बायीं ओरके दरवाजेसे चले जाते हैं। मञ्चपर केवल मेज़पर बैठकर लिखता त्रेपलेव रह जाता है]

त्रेपलेव—[लिखनेकी तैयारीमें जो कुछ पहले लिखा है उसे एक बार पढ़ता है] मैंने नये कला-रूपोंके बारेमें बहुत कुछ कहा है लेकिन मुझे धीरे-धीरे ऐसा लगता है जैसे मैं स्वयं एक रूढ़िमें फँसता जा रहा हूँ। [पढ़ता है] 'दीवारका बड़ा-सा पोस्टर चीख-चीख कर बोल रहा था' "अपने काले बालोंकी टोपीमें मुरझाया चेहरा। —'चीख-चीखकर बोल रहा था', 'टोपी'—[illegible] तो काफी है। [लिखे को काट देता है] यहाँ मैं यों शुरू करूँगा कि 'नायक पानी बरसनेकी आवाजसे जागकर उठ पड़ा"—शेष फिर आ जायगा। दिन छिपेकी चाँदनीका वर्णन बड़ा लम्बा और जरूरतसे ज्यादा विवरणात्मक हो गया है. ट्रिगोरिनने अपना अलग ही ढंग निकाल लिया है। अब उसे लिखनेमें मुश्किल नहीं पड़ती ... वह तो सिर्फ़ [illegible] पड़ी हुई [illegible] गर्दनके चमकने और पनचक्कीके पहियेकी काली परछाईं

वर्णन करेगा और लीजिये साहब, चाँदनी रात साकार हो उठेगी। और मैं हूँ कि दुनिया भरकी काँपती रोशनियाँ, तारोंका मन्द-मन्द टिमटिमाना, खुशबूमें महकती हवाओंपर कहीं दूरसे आते डूबते पयानोकी स्वर-लहरियाँ, सबका वर्णन कर डालूँगा.. यह सब बड़ा रूखा हो जाता है . .. [चुप रहकर] मुझे तो धीरे-धीरे यह विश्वास होता जा रहा है कि मूल सवाल नये और पुराने कला-रूपोंका है ही नहीं। आदमीको बिना किसी भी कला-रूपका ध्यान किये, जो मनमें आये लिख डालना चाहिए। क्योंकि वही तो सीधा उन्मुक्त रूपसे उसकी आत्मासे उभरकर आता है [उसकी मेजके सबसे पासवाली खिड़कीपर थपथपाहट होती है] कौन है ? [खिड़कीसे बाहर झाँकता है] कहीं कुछ भी नहीं दिखाई देता [काँचके दरवाजे खोल देता है और बगीचेमें देखता है] किसीके भागते पैरोंकी आवाज है [पुकारता है] कौन है ? [बाहर जाता है और बरामदेमें उसके तेजीसे चलनेकी आवाज सुनाई देती है। आधे मिनट बाद ही नीना जरेच्न्याके साथ वापिस आता है] नीना, नीना।

[नीना उसकी छातीपर सिर रखकर घुटी-घुटी सिसकियोंमें बिलख पड़ती है]

त्रेपलेव—[व्यथित उद्विग्न होकर] नीना ! नीना । तुम आ गई तुम जैसे इस बातको मेरा मन पहलेसे ही जानता हो . सारे दिन मेरा हृदय व्यथासे कराहता रहा है व्याकुल रहा है [उसका चेहरा और हैट उतारता है] आह, मेरी प्राण, मेरी निधि . आखिर तुम आ गयी । रोओ नहीं मत रोओ. .

नीना—कोई है यहाँ ?

त्रेपलेव—कोई भी नहीं है ।

नीना—दरवाजा बन्द कर लो । कोई आ जायेगा ।

त्रेपलेव—कोई नहीं आयेगा ।

नीना—मुझे पता है इरीना निकोलायेव्ना भी तो यहीं है । दरवाजे लगा लो ।

त्रेपलेव—[दायीं ओरका दरवाजा बन्द करके बायीं ओरके दरवाजेकी ओर जाता है] इस तरफवाले दरवाजेमें चटखनी ही नहीं है । मैं यहाँ कुर्सी अड़ाये देता हूँ । [दरवाजेके आगे कुर्सी लगा देता है] घबराओ मत, कोई नहीं आयेगा

नीना—[ध्यानसे उसका चेहरा देखते हुए] मुझे जरा अपना चेहरा देख लेने दो .. [चारों ओर देखकर] यहाँ बाहरकी अपेक्षा गरम है ... भला लगता है । यहाँ तो पहले बैठक थी न । मैं क्या बहुत बदल गयी हूँ ?

त्रेपलेव—हाँ नीना, तुम काफी दुबली हो गई हो—आँखें बड़ी-बड़ी निकल आई हैं ... नीना, कैसा आश्चर्य है, मैं तुम्हें फिर अपने पास देख रहा हूँ—मुझे अपना चेहरा क्यों नहीं देखने देतीं ? इतने दिनोंसे क्यों नहीं आईं ? मुझे मालूम है, तुम्हें यहाँ एक हफ्ता होने आ रहा है ... मैं तो रोज कई कई बार तुम्हारे पास जाता रहा—खिड़कीके नीचे भिखारीकी तरह खड़ा ताकता रहा

नीना—मैं डरती थी कि तुम मुझसे नफरत करोगे—मैं रोज सपना देखती जैसे तुम मुझे ऐसी निगाहोंसे देखते हो मानो पहचानते ही न हो। काश, मैं तुम्हें समझ पाती ... जबसे मैं आई हूँ यहीं ... झीलके किनारे भटकती रही हूँ । तुम्हारे घरके पास कई बार आई, लेकिन भीतर घुसनेकी हिम्मत नहीं पड़ी । आओ, बैठ

जाये [दोनों बैठ जाते है] आओ, बैठकर बातें करें,—खूब बातें करें। यहाँ कैसा अच्छा लग रहा है, गरम और बड़ा सुहावना है हवाकी साँय-साँय सुन रहे हो न......तुर्गनेवकी लाइनें है: वह आदमी कैसा सौभाग्यशाली है, जिसके पास ऐसी रातमें एक मकानका सहारा है—जिसके पास अपना एक गर्म कोना है? मै तो हंसिनी हूँ. .ना, यह पक्तियाँ नही है [माथ खुजलाती है] हाँ याद आया . तुर्गनेवने कहा है" "हे भगवन्, बेठिकाना भटकने वालो पर दया करना". कुछ भी तो नहीं हो पाया. [रोती है]

त्रेपलेव—नीना, अरे तुम फिर रोने लगी.. .. नीना।

नीना—मेरे रोनेपर ध्यान मत दो। मेरे लिए यही अच्छा है . दो सालमें मै बिल्कुल भी तो नही रो पाई हूँ। कल दिन छिपनेके बाद मै बागमे देखने आई थी कि हमारा वह स्टेज क्या अभी भी बना है? वह बना था। तब दो सालमे पहली बार मैं बैठकर वहाँ रोई, खूब रोई। इससे जैसे मेरे दिलपर जमा हुआ बोझा उतर गया—मन हल्का होगया, देखो न, अब कहाँ रो रही हूँ! [उसका हाथ पकड़ लेती है] तो अब तुम लेखक बन ही गये—तुम लेखक हो, मैं अभिनेत्री हूँ—हम दोनो ही भँवरोंमे भटकते रहे है। पहले कैसी बच्चोंकी तरह खुशी-खुशी मै सोया करती थी—सुबह गाती हुई उठा करती थी, तुम्हे प्यार करती थी और यश पानेके सपने देखा करती थी। और अब? कल तड़के ही मुझे थर्ड क्लासमें येलेत्स पहुँच जाना है. साधारण किसानोंके साथ बैठकर। येलेत्समें नया-नया रुपया कमा लेनेवाले व्यापारी अपने-अपने सत्कारसे मेरी नाकमें दम कर देंगे। सच. जिन्दगीका ढर्रा बड़ा रसहीन हो गया है त्रेपलेव।

त्रेपलेव—येलेत्स क्यों जाओगी ?

नीना—मैंने जाड़े भरके लिए एक जगह वायदा कर लिया है। अच्छा, अब चलनेका समय हो गया।

त्रेपलेव—नीना, मैंने तुम्हें गालियाँ दीं, नफरत की, मैंने तुम्हारे पत्र और चित्र फाड़ फेंके, फिर भी पता नहीं क्यों हर क्षण मैं जानता था कि मेरी आत्मा तुम्हारी आत्मासे अनन्त कालके लिए बँधकर एकाकार हो गई है। तुम्हारे प्यारको निकाल फेंकना मेरी ताकतसे बाहर है। नीना, जबसे मैंने तुम्हें खोया और अपनी रचनाएँ छपाने लगा हूँ—जिन्दगी असहनीय हो गई है, मैं बहुत व्यथित हूँ जैसे किसीने मेरी जवानीको नोच फेंका हो और मैं नब्बे लम्बे सालोंमें इस दुनियामें रहता चला आ रहा होऊँ। बार बार तुम्हारा नाम लेता हूँ और उस धरतीको चूम लेता हूँ, जहाँ तुम चला करती थीं. जिधर देखता हूँ तुम्हारा चेहरा दिखाई देता है.. वही मधुर-मधुर मुसकान जिसने मेरे जीवनके सर्वश्रेष्ठ दिनोंको आलोकित किये रखा।

नीना—[भ्रान्त स्वरमें] ऐसा क्या बोलते हो . . .मुझसे क्यों कह रहे हो यह सब ?

त्रेपलेव—दुनियामें मैं अकेला हूँ . . किसीके प्यारकी गरमाहट मुझे नहीं मिली . . मेरे लिए जैसे वह है ही नहीं। मैं ठिठुरा चढ़ और जम गया हूँ जैसे तहखानेमें दबा रहा होऊँ,—मैं जो भी लिखता हूँ सब बड़ा रूखा-रूखा नीरस और अवसाद भरा होता है। नीना, मैं प्रार्थना करता हूँ रुक जाओ, या मुझे भी अपने साथ ले चलो यहाँ से दूर.

[नीना जल्दीसे अपना टोप और चादरा ओढ़ लेती है]

त्रेपलेव—यह क्या है नीना ? भगवान्‌के नामपर नीना .[जब वह अपनी चीजे पहनती है तो देखता रहता है]

[चुप्पी]

नीना—मेरे घोडे फाटकपर खडे होगे । मुझे छोडने मत चलो—मै अकेली ही चली जाऊँगी .. [आँसू भरी आँखोसे] मुझे जरा-सा पानी दो।

त्रेपलेव—[पानी देता है] इस वक्त कहाँ जाओगी ?

नीना—शहर ? [चुप रहकर] इरीना निकोलायेव्ना यही है क्या ?

त्रेपलेव—हाँ, बृहस्पतिको मामाकी तबियत बहुत खराब हो गई थी। तभी हमने तार देकर बुला लिया था।

नीना—तुमने मुझसे यह क्यो कहा कि जहाँ हमलोग घूमा करते थे उस धरतीको तुमने चूम लिया ? काश, कोई मुझे मार देता। [मेज पर झुककर] आह, कितनी चूर-चूर हो गई हूँ मै। मन होता है कभी सुस्ता पाती, काश जरा-सा आराम कर पाती। [सिर उठाकर] मै हंसिनी हूँ नही झूठ है...मै सिर्फ एक अभिनेत्री हूँ हाय, खैर [आर्कदीना और त्रिगोरिनकी हँसी सुनती है, सुनती रहती है, फिर दरवाजेके पास जाकर तालीके छेदसे देखती है] अच्छा, तो वह भी यही है [त्रेपलेवकी ओर घूमकर] आह, ठीक है. .कुछ नही . नही. .रङ्गमञ्चमे उसकी कोई आस्था नही है—वह मेरे सपनोकी खिल्ली उडाया करता था और धीरे-धीरे रङ्गमञ्चसे मेरा विश्वास खुद भी उठ गया . मेरा दिल बुझ गया और फिर मै प्यार और ईर्ष्यामे ही परेशान रहने लगी . हमेशा अपने बच्चेकी ही बात सोचती—मै बडी क्षुद्र और ओछी हो गई थी...जब भी अभिनय करती तो गलत-सलत . मेरी समझमे ही न आता कि बॉहोको कैसे

चलाऊँ। मञ्चपर आती तो जान ही न पाती कि कैसे गाती हूँ। आवाज वशमें नहीं रहती। जब आदमी खुद जानता हो कि उसका अभिनय बड़ा भद्दा हो रहा है तब उसे कैसा लगता है—तुम नहीं समझ सकते त्रेपलेव, मैं तो हंसिनी थी नहीं कुछ याद है तुम्हें तुमने एक बार एक हंसिनीका शिकार किया था? अचानक एक आदमी आया—उसने उसे देखा और यों ही मन बहलानेको खेल-खेलमें उसका शिकार कर डाला कहानीका एक विषय। नहीं यो नहीं [माथा सुलझाती है] क्या कह रही थी मैं?.. मैं रङ्गमञ्चकी बात कर रही थी। नहीं, अब मैं पहले जैसी थोड़े ही रह गई हूँ.. अब सचमुच में ऐक्ट्रेस हूँ, जोश और उल्लाससे अभिनय करती हूँ—जब मञ्चपर उतरती हूँ और यह सोचती हूँ कि कैसी सुन्दर लग रही होऊँगी—उस समय मानो एक नशेसे झूम उठती हूँ, पर अब जबसे यहाँ हूँ, रोज खूब घूमने जाती हूँ। सोचती रहती हूँ, विचार करती रहती हूँ और मुझे लगता है जैसे मेरी आत्मा में हररोज अधिक-अधिक शक्ति आती जा रही है कोस्त्या, अब तो मुझे पता चल गया है... कि चाहे लिखना हो या अभिनय करना—हमारे काममें, यश, प्रशंसा और उन सबका महत्व नहीं है जिसके सपने हम रात दिन देखा करते हैं—महत्व है धीरज रखनेका, धैर्यका। गलेमें क्रॉस लटकाकर अपनी आस्था उसपर केन्द्रित कर देनेका। अब मेरे मनमें आस्था है और मुझे सबमें इतनी तकलीफ भी नहीं होती। अपने पेशेके बारेमें सोचती हूँ तो जिन्दगीसे डर नहीं लगता

त्रेपलेव—[व्यथासे] तुमने तो अपना रास्ता खोज लिया है। तुम जानती हो, तुम किधर जा रही हो—उसे तुम जानती हो। मैं

म तो अभी भी सपनों और कल्पनाके सूने अवकाशमे ही इधरसे उधर भटक रहा हूँ, समझमे नही आता इस सबका क्या करूँ ? मेरी कही आस्था नही है, मुझे यह भी नही पता कि मेरा पेशा क्या है ?

नीना—[बाहर कुछ सुनकर] चु प मै जा रही हूँ . .विदा दो, जब कभी बहुत बडी ऐक्ट्रैस हो जाऊँ तो आना और देखना। वचन देते हो न ? लेकिन अब . [उसका हाथ दबाती है] बहुत देर हो चुकी है, मुझसे अपने पाँवोपर खडा नही रहा जा रहा मै चूर-चूर हो गई हूँ—मै भूखी हूँ।

त्रेपलेव—रुको, मे कुछ खाना ले आऊँ तुम्हारे लिए ?

नीना—ना.. ना, मुझे छोडने मत आना। मै अकेली खुद चली जाऊँगी. पास ही तो मेरे घोडे है . तो तुम्हारी माँ त्रिगोरिनको अपने साथ ले आई. ? ठीक है कोई बात नही। त्रिगोरिनसे मिलो तो उन्हे कुछ बताना मत . मै उन्हे प्यार करती हूँ . पहलेसे भी ज्यादा प्यार करती हूँ.. . कहानीका एक विषय मै उन्हे चाहती हूँ बुरी तरह चाहती हूँ—जी जानसे चाहती हूँ। कैसे अच्छे थे वे पहले दिन, कोत्स्या—तुम्हे याद है न ? कैसी, निर्मल प्यार और आनन्दसे भरी निष्कलुष जिन्दगी थी हम लोगोके दिलोमे कैसी भावनाएँ लहराया करती थीं फूलो जैसी कोमल और सलोनी याद है न ? [दुहराती है] आदमी शेर, चीले और तीतर—बारहसिंघे, बतखे, मकडे, पानीमे चुप-चुप तरने वाली मछलिया दिखाई न देनेवाले छोटे-छोटे कीटे-नवोरे सारे प्राणी, सारे जीव, सारे चेतन अपने दुखोका चक्र पूरा करके समाप्त हो चुके है हजारो सालोसे धरतीने किसी

जीवित प्राणीको अपनी गोदमें जन्म नहीं दिया है ... और यह बेचारा चाँद अपने प्रकाश दीपको जलाये रखनेका उद्देश्य भूल चुका है ... घासके मैदानोंमें अब बगुले चीखकर चौंक नहीं पडते. . और नीबूके पेडोंपर भौंरोंकी भनभनाहट नहीं गूंजती

[आवेशमें त्रेपलेवका आलिंगन कर लेती है और शीशेवाले दरवाजेमें भाग जाती है]

त्रेपलेव—[कुछ देर चुप रहकर] अगर किसीने बागमें इसे देख लिया और माँ को बता दिया तो बुरा होगा. माँ को बहुत तकलीफ होगी

[दो मिनट तक वह अपनी पाण्डु-लिपियोंको फाड़-फाड़कर मेज़के नीचे फेंकता रहता है। फिर दायीं ओरके दरवाजेकी चटखनी खोलकर बाहर चला जाता है]

दोर्न—[बायीं ओरका दरवाज़ा खोलनेकी कोशिश करते हुए] अजीब बात है। दरवाज़ेकी चटखनी बन्द लगती है [भीतर आ जाता है, और कुर्सीको उसकी जगह रख देता है] अच्छी, खासी टिपटियाँ कुदानेवाली घुड़-दौड़ हो गई .

[आर्कादीना, पोलिनाका प्रवेश। पीछे पीछे बोतलोंको लिये हुए याकोव, माशा, फिर त्रिगोरिन और शामरायेव आते हैं]

आर्कादीना—बोरिस अलेक्सीविचके लिए अंगूरी शराब और बियर इस मेज़पर रखो। खेलते हुए हमलोग उसे पीते भी जायेंगे। बैठिये, साथियो।

पोलिना—[याकोवसे] साथ ही चाय भी ले आओ।

[मोमबत्तियाँ जलाकर ताशकी मेज़पर बैठती है]

शामरायेव—[त्रिगोरिनको आलमारीके पास ले जाता है] यह रही वह चीज़ जिसके बारेमें मैं अभी आपसे कह रहा था। [मसाला

लगी हमिर्नीको बाहर निकाल लेता है] इसीके लिए तो आपने कहा था न .

त्रिगोरिन—[हसिर्नीको देखते हुए] मुझे तो याद ही नही आ रहा [सोचते हुए] कुछ भी याद नही आता ।

[मञ्चके दाहिनी ओरसे धमाकेकी आवाज। सब चौक पडते है]

आर्काडीना—[घबराकर] क्या हुआ ?

दोर्न—कुछ नही, कुछ नही । मेरे दवाके बक्समे कोई चीज फूट गई होगी. .चिन्ताकी बात नही है [दाहिनी ओरके दरवाजेसे बाहर जाकर आधे मिनटमें ही वापिस आता है] हॉ, वही तो बात थी। ईथरकी एक बोतल फट गई [गुनगुनाता है] "मै खडा हूँ मुग्ध तेरे सामने फिर .

आर्काडीना—उफ, मै कैसी घबरा गई थी. मुझे उस दिनकी याद आ गई जब. [अपने हाथोमे चेहरा छिपा लेती है] इस धमाकेसे मेरा सिर बुरी तरह चकरा उठा है ।

दोर्न—[पत्रिका के पन्ने पलटते हुए त्रिगोरिनसे] दो महीने पहले इसमे एक लेख छपा था 'अमेरिकासे एक पत्र'.. अच्छा, और बातोके साथ मे आपसे एक बात पूछना चाहता था कि.. [त्रिगोरिनकी कमरमे हाथ डालकर फुट लाइटोकी तरफ लाता है] क्योकि मुझे यह जाननेका बहुत ही शौक है [गला दबाकर धीमेसे] इरीना निकोलायेव्नाको यहांसे किसी तरह फौरन हटा ले जाइए बात यह है कि कोन्स्तान्तिन गाव्रिलिचने अपने गोली मार ली ।

[परदा गिरता है]

— समाप्त —



चॅरीका बगीचा

●

पात्र

श्रीमती रैनिव्स्काया —(ल्युबोव आन्द्रेयव्ना) चेरी के बगीचे की मालकिन

आन्या —रैनिव्स्काया की १७ वर्षीया पुत्री

वार्या —रैनिव्स्काया की २० वर्षीया दत्तक पुत्री

गायेव —(लियोनिद आन्द्रीएविच) रैनिव्स्काया का भाई

लोपाखिन —(यार्मोलाय अलेक्सीएविच) एक व्यापारी

त्रोफिमोव —(प्योत्र सर्जीएविच) एक विद्यार्थी

सिम्योनोव पिश्चिक —एक जमींदार

शार्लोटा इवानोव्ना —गवर्नेस

एपिखोदोव —(सिम्यन पन्तालियेविच) क्लर्क

दुन्याशा —नौकरानी

फीर्स —नौकर उम्र ८७ साल

याशा —नौजवान नौकर

एक मुसाफिर, स्टेशन मास्टर, पोस्ट आफिस का अफसर, अतिथि लोग और नौकर,

घटना-स्थल श्रीमती रैनिव्स्काया का बगीचा।

पहला अंक

[एक कमरा जिसे अब भी बच्चोंका कमरा कहते हैं। इसका एक दरवाजा आन्याके कमरेमें जाता है। झुटपुटेका समय है और घटना-क्रमके बीचमें ही सूरज उगता है। मईका महीना लग चुका है। चैरीके पेड़ोंमें फूल आये हुए है, लेकिन बगीचेमें सुबह की ओस और ठिरन है। खिड़कियाँ बन्द हैं।]

[दुन्याशाका मोमबत्ती और लोपाखिन का एक किताब लिये हुए प्रवेश]

लोपाखिन—शुक्र है, गाड़ी आ तो गई। बजा क्या है?

दुन्याशा—करीब दो बजे होंगे [मोमबत्ती बुझा देती है] दिन तो निकल ही आया अब।

लोपाखिन—कितनी लेट है गाड़ी? कम-से-कम दो घण्टे तो होगी ही। [जँभाई लेकर अगड़ाई लेता है] मैं भी क्या कमालका आदमी हूँ। यहाँ स्टेशनपर उन लोगोंसे मिलनेके लिए आया, और पड़कर सो गया ... कुर्सीपर बैठते ही आँखें लग गईं, सच-सच, बड़ा बुरा हुआ ... मुझे जगाया क्यों नहीं तुमने?

दुन्याशा—मैं तो समझी कि आप चले गये होंगे। [कुछ सुनकर] लो जरूर, वे लोग ही आ रहे हैं गाड़ीपर।

लोपाखिन—[सुनता है] नहीं ... उनका सामान, इधर-उधरका काम-काज भी तो होना होगा [रुककर] श्रीमती रेनेव्स्काया, पाँच साल विदेशोंमें रही है—पता नहीं अब कैसी हो गई होंगी [illegible] कितना अच्छा स्वभाव कितनी सरल-हृदया! [illegible] पन्द्रह सालका लड़का था [illegible] मुझे याद है [illegible]

मेरे स्वर्गीय पिताजी यहीं गाँवमें छोटी-सी दूकान किया करते थे। उन्होंने एक बार जोरका मुक्का मारकर मेरी नाकको लोहू-लुहान कर दिया। यहीं आँगनमें तो थे ही हम लोग। पता नहीं वे क्यों आये थे। वे नशा पिये हुए थे। मुझे सब ऐसे याद है जैसे कलकी ही बात हो। श्रीमती रानेव्स्काया तब लड़की ही थी, बड़ी पतली-दुबली! ये मुझे मुँह धुलाने ले गई फिर इसी कमरे में—इस बच्चोंके कमरेमें ले आई—'मुजिक (किसान) रोओ मत।' आप कहती हैं "अपनी शादीके दिन रोना, तब अच्छा लगेगा" [रुककर] मुजिक बेटा! ठीक है, मेरे पिता काश्तकार थे, लेकिन अब मुझे देखो: सफेद झकझकाती वास्कट—बादामी जूते जैसे धूलमें हीरा निकल आये। मैं पैसेमें हूँ, लेकिन सोचो तो, मेरे अपने रंगढंगमें मैं किसान था और किसान ही अब भी हूँ। [किताबके पन्ने पलटता है] इस किताबको पढ़ रहा था और कुछ सिर पैर ही समझमें नहीं आ रहा [illegible] पढ़ते पढ़ते नींद आने लगी।

[कुछ देर चुप्पी]

दुन्याशा—सारी रात जागे हैं कुत्ते भी। उन्हें भी तो लगता है कि मालकिन आ रही हैं।

लोपाखिन—अरे, यह तुम्हें क्या हो गया दुन्याशा?

दुन्याशा—पता नहीं क्या मेरे हाथ काँपने लगे हैं। अरे, मैं तो बेहोश हुई जा रही हूँ।

लोपाखिन—दुन्याशा! तुम्हारा स्वभाव [illegible] लिबास [illegible]। [illegible] —अपना [illegible]।

सब अच्छी बातें नहीं हैं। आदमीको अपनी हैसियत खुद समझनी चाहिए।

[गुलदस्ता लेकर एपिखोदोवका प्रवेश। उसने एक जाकेट और बुरी तरह चरमराने वाले चमकदार जूते पहन रखे हैं। प्रवेश करते हुए गुलदस्ता गिरा देता है]

एपिखोदोव—[गुलदस्ता उठाते हुए] यह मालीने भेजा है। कहता है यह खानेके कमरेमें लगेगा [दुन्याशाको गुलदस्ता देता है]

लोपाखिन—और मुझे जरा 'क्वास' (जौकी शराब) भी दे जाना!

दुन्याशा—जी, अच्छा।

[जाती है]

एपिखोदोव—आज सुबह बड़ी ठंड है। तीन डिग्री कोहरा है, फिर भी चॅरीके फूलों पर बहार है। यह अपने यहाँकी आब-हवा मुझे बहुत अच्छी नहीं लगती [गहरी साँस लेता है] नहीं बिलकुल नहीं यहाँकी आबहवा तो जैसे समयके हिसाबसे चलना जानती ही नहीं यार्मोलाय अलेक्सीएविच, मैं जरा आपसे अपने जूतोंके बारेमें कुछ पूछना चाहता हूँ। परसों मैंने खुद इन्हें खरीदा था और ये कम्बख्त ऐसी बुरी तरह चरमराते हैं कि खुदाकी पनाह! इनमें कौन-सा तेल लगाऊँ?

लोपाखिन—अच्छा यहाँसे भाग जाओ। मैं तो परेशान आ गया तुमसे।

एपिखोदोव—मेरे ऊपर रोज एक न एक मुसीबत ही रहती है। मगर मैं तो कभी नहीं रोता, मुझे इनकी आदत पड़ गई है। हमेशा मुस्कुराता रहता हूँ।

[दुन्याशाका प्रवेश। लोपाखिनको 'क्वास' देती है]

एपिखोदोव—तो मैं चलता हूँ [एक कुर्सीसे जा टकराता है। कुर्सी उलट जाती है] यह! [जैसे कोई बड़ी भारी विजयका काम

मेरे स्वर्गीय पिताजी यहीं गाँवमें छोटी-सी दूकान किया करते थे। उन्होंने एक बार जोरका मुक्का मारकर मेरी नाकको लोहू-लुहान कर दिया। यहीं आँगनमें तो थे ही हम लोग। पता नहीं वे क्यों आये थे। वे खूब पिये हुए थे। मुझे सब ऐसे याद है जैसे कलकी ही बात हो। श्रीमती रैनिव्स्काया तब लडकी ही थीं बडी पतली-दुबली! ये मुझे मुँह धुलाने ले गईं फिर इसी कमरेमें—इस बच्चोंके कमरेमें ले आईं—'मूजिक (किसान) बेटे, रोओ मत।' आप कहती है.. "अपनी शादीके दिन रोना, तब अच्छा लगेगा" [रुककर] मूजिक बेटा! ठीक है, मेरे पिता काश्तकार थे, लेकिन अब मुझे देखो : सफेद झकझकाती वास्कट—बादामी जूते. जैसे धूलमें हीरा निकल आये। हाँ मैं रईस हूँ, लेकिन सोचो तो, सारे अपने धनके बावजूद मैं किसान था और किसान ही अब भी मैं हूँ. [किताबके पन्ने पलटता है] इस किताबको पढे चला जा रहा हूँ और कि कुछ सिर-पूँछ ही समझमें नहीं आ रहा पढते-पढते ही नींद आने लगी।

[कुछ देर चुप्पी]

दुन्याशा—सारी रात जागे हैं कुत्ते भी। उन्हें भी तो लगता है कि मालकिन आ रही है।

लोपाखिन—अरे, यह तुम्हें क्या हो गया दुन्याशा?.

दुन्याशा—पता नहीं क्यों मेरे हाथ काँपने लगे हैं। अरे, मैं तो बेहोश हुई जा रही हूँ।

लोपाखिन—दुन्याशा! तुम्हारे साथ मुसीबत यह है कि तुम बडी नाजुक मिजाज बनती हो। कपडे भी तुमने बड़े घरकी लडकियों जैसे पहन रखे हैं—और अपना बाल बनाने का ढंग तो देखो। यह

सब अच्छी बाते नही है। आदमीको अपनी हैसियत खुद समझनी चाहिए।

[गुलदस्ता लेकर एपिखोदोवका प्रवेश। उसने एक जाकेट और बुरी तरह चरमराने वाले चमकदार जूते पहन रखे है। प्रवेश करते हुए गुलदस्ता गिरा देता है]

एपिखोदोव—[गुलदस्ता उठाते हुए] यह मालीने भेजा है। कहता है यह खानेके कमरेमे लगेगा [दुन्याशाको गुलदस्ता देता है]

लोपाखिन—और मुझे जरा 'क्वास' (जौकी शराब) भी दे जाना।

दुन्याशा—जी, अच्छा।

[जाती है]

एपिखोदोव—आज सुबह बडी ठंड है। तीन डिग्री कोहरा है, फिर भी चॅरीके फूलो पर बहार है। यह अपने यहाँकी आब-हवा मुझे बहुत अच्छी नही लगती [गहरी साँस लेता है] नही बिलकुल नही यहाँकी आबहवा तो जैसे समयके हिसाबसे चलना जानती ही नही यार्मोलाय अलैक्सीएविच, मै जरा आपसे अपने जूतोके बारेमे कुछ पूछना चाहता हूँ। परसो मैने खुद इन्हे खरीदा था और ये कम्बख्त ऐसी बुरी तरह चरमराते है कि खुदाकी पनाह! इनमे कौन-सा तेल लगाऊँ?

लोपाखिन—अच्छा यहाँसे भाग जाओ। मै तो परेशान आ गया तुमसे।

एपिखोदोव—मेरे ऊपर रोज एक न एक मुसीबत ही रहती है। मगर मै फिर भी नही रोता, मुझे इनकी आदत पड गई है। हमेशा मुसकुराता रहता हूँ।

[दुन्याशाका प्रवेश। लोपाखिनको 'क्वास' देती है]

एपिखोदोव—तो मै चलता हूँ [एक कुर्सीसे जा टकराता है। कुर्सी उलट जाती है] लो! [जैसे कोई बडी भारी विजयका काम

कर दिया हो] देखा। माफ कीजिये, उन्हीं मुसीबतो आग द... टनाओंमें से एक यह भी है ! सचमुच, कैसी मुसीबत है।

[चला जाता है]

दुन्याशा—यामोलाय अलेक्सीएविच, आपको एक बात बताऊँ। एपिखो दोवने मुझसे शादीका प्रस्ताव किया था।

लोपाखिन—हाँ !

दुन्याशा—मेरी समझमें नहीं आता क्या करूँ। आदमी तो बडा सज्जन, बडा अच्छा है। पर पता नहीं कभी-कभी वह क्या बोलता है कि उसकी बात ही समझमें नहीं आती। बात बडे अच्छे ढगसे करता है, मनको अच्छी भी लगती है, लेकिन मतलब समझमें नहीं आता। मुझे भी एक तरहसे यह पसन्द ही है और ये तो मेरे पीछे पागल ही है। बेचारा बडा अभागा है . इसके साथ रोज कुछ न कुछ होता ही रहता है...इसीको लेकर ये लोग इसे तग करते है। उसका नाम उन्होंने 'बाईस-मुसीबतें' रख दिया है।

लोपाखिन—[आवाज़ सुनकर] लो, आखिर वे ही आ रहे है।

दुन्याशा—वे ही लोग आ रहे है। हाय, यह मुझे क्या हो गया ? सारा बदन ठण्डा पडा जा रहा है।

लोपाखिन—हाँ-हाँ वही लोग तो आ रहे है। आओ, बाहर उनसे चलकर मिल ले। पता नहीं वे मुझे पहचान लेगी या नहीं ? उन्हें देखे हुए पाँच साल हो गये।

दुन्याशा—[काँपते हुए] मै तो बिलकुल बेहोश हुई जा रही हूँ—अरे मै गिरी

[घरके पास तक दो गाड़ियोंके आनेकी आवाज़। लोपाखिन और दुन्याशा तेज़ीसे बाहर चले जाते है। रंगमंच खाली है। बगलके कमरोंमें शोरगुल सुनाई देता है। अपनी बेंत पर झुका

हुआ फर्स तेजीसे मंच पार करके चला जाता है। यह श्रीमती रैनिव्स्कायासे मिलने स्टेशन गया हुआ था। पुराने ढंगकी वर्दी और ऊँचा-सा टोप पहने हुए है। आप ही आप बोल रहा है]

एक आवाज--आओ, इधर भीतर चलें।

[श्रीमती रैनिव्स्काया, आन्या, और छोटे से कुत्तेकी जंजीर पकड़े चार्लोटा आइवानोव्नाका प्रवेश। सभी सफरी कपड़ोंमें हैं। वार्या कोट पहने और सिर पर रूमाल बाँधे है। गायेव सिम्योनोव पिश्चिक, लोपाखिन, दुन्याशा—छाता और एक थैला लिये हुए है। नौकर दूसरे सामान लिये हुए हैं। सब स्टेज पार करते हुए चले जाते हैं]

आन्या—आओ इधरसे चलें। अम्मा तुम्हें याद है यह कौन-सा कमरा है ?

रैनिव्स्काया—[आनन्दविह्वल गद्गद कण्ठसे] 'बच्चोंका कमरा'।

वार्या—कैसी ठण्ड है। मेरे हाथ तो सुन्न हो गये [श्रीमती रैनिव्स्काया से] अम्मा, तुम्हारे सफेद और बैगनी वाले कमरे बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे तुमने छोड़े थे।

रैनिव्स्काया—बच्चोंका कमरा! मेरा प्यारा, सुन्दर कमरा! जब मैं छोटी थी तो यहीं सोया करती थी [रो पड़ती है] अब मुझे लगता है जैसे फिरसे बच्ची हो गई होऊँ [अपने भाई और फिर वार्याका चुम्बन लेती है—भाईको दुबारा चूमती है] वार्या तो बिल्कुल भी नहीं बदली। वही हमेशाकी 'नन' (साध्वी) जैसी है। और दुन्याशाको भी मैंने देखते ही पहचान लिया [दुन्याशाका चुम्बन लेती है]

[illegible]

चार्लोटा—[पिश्चिक से] मेरा कुत्ता मेवा भी खा लेता है।

पिश्चिक—[आश्चर्य से] वाह, कमाल है !

[आन्या और दुन्याशाको छोड़कर सब चले जाते हैं]

दुन्याशा—आखिर अब आई हो तुम [आन्याका टोप और कोट लेती है]

आन्या—सफरमें चार रातसे मैं बिलकुल ही नहीं सोई। यहाँ बड़ी ठण्ड लग रही है मुझे।

दुन्याशा—जब तुम यहाँसे गई थी तब 'लेण्ट' (ईस्टरसे पहले चालीस दिनोंका रोजेका समय) का ही तो समय था न ?—तब तो कोहरा और बरफ गिर रही थी—और अब देखो, आन्या बहन [हँसकर उसका चुम्बन ले लेती है] मुझे तो तुम्हारी बड़ी याद आई। मेरी मुन्नी, अब तो मुझसे एक मिनट भी नहीं रहा जा रहा. तुम्हें एक जरूरी बात बतानी है।

आन्या—[उदासीन स्वरमें] इस बार क्या है ?

दुन्याशा—क्लर्क एपीखोदोव है न, ईस्टरके बाद ही उन्होंने मुझसे शादी को पूछा था।

आन्या—वही पुराना रोना। [अपने बाल सँवारते हुए] मेरी सारी हेयर-पिनें खो गईं [थकावट से जैसे लड़खड़ा रही है]

दुन्याशा—सचमुच, समझमें नहीं आता क्या करूँ ? कितना प्यार करते हैं वे मुझे।

आन्या—[अपने दरवाजेकी ओर देखते हुए प्यार से] मेरा कमरा, मेरी खिड़कियाँ, बिलकुल ऐसा लगता है जैसे मैं कभी बाहर ही नहीं गई। अब मैं अपने घरमें हूँ। कल सुबह उठते ही बगीचेमें दौड़ कर देखूँगी। हाय, मुझे एक गहरी नींद आ जाती बस। मैं बेचैन और परेशान रही कि सारी यात्राभर सो नहीं पाई।

दुन्याशा—परसों प्योत्र सर्जीएविच भी आ गये।

आन्या—[उल्लास से] पेत्याऽऽ!

दुन्याशा—गुसलखानेमें सो रहे हैं। वहीं ठहरे हैं वे। कहते थे : 'मैं उन लोगोंको मुसीबत पैदा नहीं करना चाहता' [घड़ी पर निगाह डालकर] मैं तो अब तक इन्हें जाकर जगा देती, लेकिन वरवरा मिखायेलोव्नाने मना कर दिया। उन्होंने कहा, मत जगाओ।

[कमरमें चाबियोंका गुच्छा लटकाये वार्याका प्रवेश]

वार्या—दुन्याशा, कॉफी! बहुत जल्दी!—अम्माने कॉफी माँगी है!

दुन्याशा—फौरन लीजिये!

[चली जाती है]

वार्या—शुक्र है, तुम आ तो गई। फिर अपने घर आ गई [उसकी पीठ थपथपाकर] मेरी नन्ही-मुन्नी लौट आई! मेरी सुन्दर-सी चिड़िया लौट आई।

आन्या—हाय, कैसे-कैसे मैं आ पाई हूँ।

वार्या—अरे, मैं क्या जानती नहीं हूँ।

आन्या—पर्वके हफ्तेमें हम चले—उस वक्त ऐसी ठण्ड थी कि बस। रास्ते भर शार्लोटा गप्पें सुनाती और अपने खेल दिखाती आई है। आपने इस शार्लोटाको मेरे गले क्यों मढ़ दिया था?

वार्या—हाय, मगर सालकी उम्रमें तुम बिलकुल अकेली सफर कैसे करती मुन्नी?

आन्या—जब हमलोग पेरिस आये तो वहाँ भी बड़ी ठण्ड थी, बर्फ गिर रही थी। मैं बड़ी गलत-सलत फ्रेंच बोलती हूँ। अम्मा पाँचवीं मंजिल पर रहती थीं। वहाँ पहुँची तो देखा उनके साथ कुछ फ्रान्सीसी आदमी औरतें, किताब लिये एक बुड्ढा पादरी। कमरेमें तम्बाकूकी गन्ध, आराम [illegible] थी। मुझे

बड़ा तरस आया हाय एकदम अम्माके लिए, बड़ी दया आ[illegible] मनमें! मैं उनसे चिपक गई, अपनी बाँहें उनके गलेमें डाल दीं और काफी देर अलग ही नहीं हुई। अम्मा मुझे पुचकारती रहीं रोती रहीं

वार्या—[रूँधे गलेसे] यह सब मत कहो, मुझसे नहीं सुनी जाती।

आन्या—अपना मेन्तोनका मकान तो उन्होंने बेच ही दिया था, अब उनके पास कुछ-भी नहीं बचा। मेरे पास खुद एक कौड़ी नहीं थी। बस, यहाँ तक आने भरका किसी तरह इन्तजाम किया। लेकिन अम्मा कहो सोचे यह सब, स्टेशनों पर जब हमलोग खाना खाते तो यह सबसे कीमती चीजें मँगाती और बैरेको एक-एक रूबल बख्शीश दे देतीं। शार्लोटाका भी यही रवैया। और याशाको भी यही मिलता जो हमलोग लेते। पूरी आफत थी। आपको पता है, याशा अब अम्माका अर्दली हो गया है। हमलोग उसे साथ साथ ले आये हैं।

वार्या—हाँ हाँ, मैंने उस बदमाशको देखा है।

आन्या—अच्छा हाँ, अब मुझे यहाँकी सब बात बताइये। आपने ब्याज सूद चुका दिया क्या?

वार्या—नहीं हम पैसा कहाँसे लाते?

आन्या—हे भगवान!

वार्या—अगस्तमें जमीन बिक जायेगी।

आन्या—हाय राम!

लोपाखिन—[दरवाजेसे झाँकता है और गायकी तरह रँभाता है] नहींऽऽऽ? [भाग जाता है]

वार्या—[मेरे पास उसे लक्ष्य करके घूँसा दिखाती है] [illegible] [illegible]

आन्या—[वार्याको बाँहोंमें बाँधकर कोमल स्वरमें] वार्या दीदी, क्या उसने आपसे शादीके लिए पूछा था? [वार्या सिर हिलाती है] तो वह आपको प्यार करते हैं न? आप लोग कुछ तय क्यों नहीं कर डालते? आखिर इन्तजार आपको किस बातका है?

वार्या—मुझे तो लगता है कि हमलोगोंमें कुछ नहीं होगा। उन्हें हजारों काम हैं, मेरे लिए भी फुरसत कहाँ रखी है. मेरा तो उन्हें ख्याल ही नहीं है। मैंने तो बाबा, उनसे हाथ जोड़े— देखनेको भी मन नहीं करता मेरा। जिसे देखो हमारी शादीकी बातें करता है, हमें बधाइयाँ देता है और मजा यह कि बातमें तथ्य जरा भी नहीं है। सब कुछ तो जैसे बिल्कुल हवाई है। [बदले हुए स्वरमें] तुम्हारी साड़ीकी पिन तो एकदम मधुमक्खी जैसी है।

आन्या—[दुःखी स्वरमें] अम्माने खरीदी थी [अपने कमरेमें जाते हुए बच्चोंकी तरह उल्लासपूर्वक] अच्छा हाँ, आपको पता है, पेरिसमें मैं गुब्बारेमें उड़ी थी?

वार्या—मेरी मुन्नी घर लौट आई, मेरी बिटिया घर लौट आई!

[दुन्याशा कॉफीका बर्तन लेकर लौटती है और कॉफी बनाती है]

वार्या—[दरवाज़े पर खड़े होकर] सारे दिन घरकी देखभाल करते-करते दुनियाभरकी बातें मनमें आती रहती हैं मुन्नी, कि तेरी शादी किसी धनी मानीसे हो जाती तो मुझे कैसा आनंद होता। मैं तब तीर्थयात्रा पर कीव या मास्को निकल पड़ती। इसी तरह एक पवित्र स्थानसे दूसरेमें घूम-घूमकर ही अपना शेष जीवन बिता देती। चलती चली जाती, चलती चली जाती! कैसा आनंद रहता!

आन्या—बागमें चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। क्या बजा होगा?

वार्या—दो तो जरूर ही बज चुके होंगे। इस वक्त तक तो तुम सोती रहती थीं [आन्याके कमरेमें जाते हुए] सचमुच कैसा आनन्द है।

[याशा एक कम्बल और सफरी थैला लिये हुए आता है]

याशा—[बड़ी बनावटी नम्रताका भाव दिखाकर आ मंचको पार करता है] अरे भाई, क्या यहाँसे मैं जा सकता हूँ?

दुन्याशा—अब तो तू पहचाना भी नहीं जाता याशा, बाहर रहकर कितना बदल गया है तू।

याशा—हुँ: तुम कौन हो?

दुन्याशा—जब तू गया था तो मैं इतनी बड़ी थी [धरती से ऊँचाई बताती है] दुन्याशा हूँ—फ्योदोरकी लड़की। तुझे मेरी याद कैसे होगी?

याशा—तुम बड़ी भूठी हो [इधर-उधर देखकर उसका आलिङ्गन करता है। वह चीख पड़ती है और एक तश्तरी गिरा देती है। याशा फुर्तीसे चला जाता है]

वार्या—[दरवाज़े से भुँभलाहटके स्वरमें] यह सब क्या हो रहा है?

दुन्याशा—[रोते हुए] मुझसे एक प्लेट टूट गई।

वार्या—बहुत अच्छा हुआ।

आन्या—[कमरेसे बाहर आते हुए] चलो, अम्माको भी जता दें कि पेत्या यहीं है।

वार्या—मैंने मना कर दिया है कि उन्हें कोई जगाये नहीं।

आन्या—[स्वप्नाविष्ट-सी] पिताजीको मरे हुए ठीक छ: साल हो गये उनके छ: महीने बाद ही छोटा भाई ग्रीशा नदीमें डूबकर मर गया—सात सालका ही तो था और कैसा खूबसूरत था कि क्या बताऊँ। अम्मासे उस दुःखको सहा नहीं गया, वे बिना पीछे मुड़कर देखे भागती रहीं भागती रहीं [काँपकर] ओह, काश

उन्हें पता होता। मैं उनके मनकी बात कैसी अच्छी तरह जानती हूँ [कुछ देर रुककर] ये पेत्या त्रोफिमोव, ग्रीशाके ट्यूटर थे—इन्हें देखकर अम्माको ग्रीशाकी याद आ जायेगी . ।

[फीर्सका प्रवेश। वह जाकेट और सफेद लम्बा कोट पहने है]

फीर्स—[उत्सुकतापूर्वक कॉफीके बर्तन तक जाता है] मालिकिन कॉफी यहीं पियेगी [सफेद दस्ताने चढाता है] कॉफी तैयार है क्या? [दुन्याशासे तेज स्वरमें] क्रीम कहाँ है री छोकरी?

दुन्याशा—हाय-राम!. [तेजी से जाती है]

फीर्स—[कॉफीके बर्तनके आस-पास जल्दी-जल्दी उलट-पलट करते हुए] अरी ओ निकम्मी! [खुद ही बडबडाते हुए] आ गई वापिस पेरिससे मालिक भी परिस ही जाया करते थे पूरे रास्ते घोडाकी बग्घीपर. .[हँसता है]

वार्या—क्या बात है फीर्स?

फीर्स—[illegible]? [आह्लाद भरे स्वरमें] मेरी तो मालकिन घर आई है। उन्हें देखनेको तो बचा रह गया अब मर जाऊँ तो भी कोई दुख नहीं [आनन्दसे रो पडता है]

[ऐनिचकाया, गायेव और सिम्योनोव पिश्चिकका प्रवेश। पिश्चिक छाती पर कसा हुआ बढिया कपडेका कोट और पतलून पहने है। आते ही गायेव हाथ और शरीरसे ऐसा इशारा करता है जैसे बिलियर्ड खेल रहा हो।]

[illegible]—[illegible] सही कैसे जाती है?—पीली गेंद कोने में [illegible] [illegible] पीछेसे

गायेव—[illegible] सीधे हाथकी तरफ तालको मारो। अच्छा तुम्हें [illegible] इन लोग [illegible] साथ [illegible]

सोया करते थे। अब मैं पचपनका हो गया हूँ। [illegible] आज कैसी अजीब लगती है

लोपाखिन—हाँ, समय तो उडता है!

गायेव—क्या कहा तुमने?

लोपाखिन—मैंने कहा, समय उडता है?

गायेव—केवडेकी कैसी बढिया खुशबू है!

आन्या—मैं तो अब सोने जाती हूँ। अच्छा, नमस्कार अम्मा [उसका हाथ चूमती है]

रैनिव्स्काया—मेरी बिटिया! [उसका हाथ चूमकर] तुम्हें घर [illegible] खुशी हुई न?—मुझे तो अभी बडा अजीब अजीब [illegible] रहा है।

आन्या—अच्छा मामा, नमस्कार!

गायेव—[उसका मुँह और हाथ चूमते हुए] भगवान् भला करे! तुम अपनी माँसे कितनी मिलती हो! [अपनी बहनसे] [illegible] उम्रमें तुम बिलकुल इसी जैसी थीं [आन्या लोपाखिन और पिश्चिकसे हाथ मिलाकर जाते हुए दरवाजा बन्द कर जाती है]

रैनिव्स्काया—बेचारी बहुत थक गई है।

पिश्चिक—हाँ सचमुच! सफर भी तो बहुत लम्बा है।

वार्या—[लोपाखिन और पिश्चिकसे] अच्छा भाइयो, तीन [illegible] अब आप लोग जाइये

रैनिव्स्काया—[हँसकर] तुम तो बिलकुल भी नहीं [illegible] [अपने पास खींचकर उसे चूम लेती है] मैं अपनी कॉफी पीकर [illegible] तब [illegible] आराम [illegible]। [फीर्स उसके पैरोंके नीचे [illegible] चौकी रख देता है] शुक्रिया भाई, मुझे कॉफी [illegible]

लगती है कि दिन-रात पीती रहती हूँ। शुक्रिया भैया [फीर्सका चुम्बन लेती है]

वार्या—मैं जरा देख तो लूँ कि सब सामान ठीकसे तो भीतर रख दिया गया है न।

[चली जाती है]

रानेव्स्काया—मैं क्या सचमुच ही यहाँ बैठी हूँ [हँसती है] मेरा मन करता है कि ताली बजा-बजाकर खूब नाचूँ [अपने हाथोंमें चेहरा ढँक लेती है] और अगर यह सब सपना ही हो तो भगवान् ही जानता है, मुझे अपना देश कितना प्यारा है—कैसा पसन्द है! रास्ते भर इतनी रोती रही हूँ कि मुझसे खिड़कीसे बाहर तक झाँककर नहीं देखा गया [आँसू भरी आँखोंसे] खैर, कॉफी तो पी लूँ। शुक्रिया फीर्स, शुक्रिया भाई। तुम अभी तक हो, देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

फीर्स—परसोंकी बात है

गायेव—यह बहुत ऊँचा सुनने लगा है।

लोपाखिन—यहाँसे मुझे चार बजते ही सीधे हार्कोव जाना है। बड़ी मुसीबत है। जरा आपके पास बैठना चाहता था, बातें करना चाहता था.. आप हमेशा जैसी ही सुन्दर हैं ...

पिश्चिक—[गहरी साँस लेकर] इन फारसी ढंगके कपड़ोंमें तो पहलेसे भी ज्यादा खूबसूरत। मैं तो लुट गया ..।

लोपाखिन—ल्युबोव आन्द्रीएव्ना, आपका भाई हमेशा बकता फिरता है कि [illegible] नीची जातिमें पैदा गँवार हूँ, मैं रुपयेका लोभी हूँ, [illegible] इसकी तिनके [illegible] परवा नहीं करता [illegible] [illegible] नहीं चाहता हूँ कि आपका विश्वास मेरे ऊपर [illegible] [illegible]। आपकी आँखोंमें मेरे लिये जो [illegible]

रहा है—वही रहा आये, बस मेरी यही इच्छा है। [illegible],
मेरा बाप आपके बाप-दादाओंका गुलाम था लेकिन [illegible]
आपने मेरे लिये कितना किया है वह सब तो मुझे याद भी
नहीं रहा. लेकिन आपको मैं अपने सगेकी तरह प्यार करता हूँ।
बल्कि सगेसे भी ज्यादा.....

रैनिवस्काया—भाई, मुझसे तो अब बैठा नहीं जा रहा [उछल कर खड़ी हो जाती है और तीव्र आवेश में घूमती है] यह आनन्द मेरे लिये असह्य है। तुम लोग हँसोगे, मैं जानती हूँ, मैं पागल हूँ [illegible], मेरी किताबोंकी आलमारी [आलमारीको चूमती है] मेरी नन्ही मेज

गायेव—तुम्हारे पीछे दाई मर गई।

रैनिवस्काया—[बैठकर कॉफी पीती है] हाँ, तुमने उसकी मौतकी खबर लिखा था। भगवान, उसे स्वर्ग दे।

गायेव—अनास्तासी भी मर गई। वह भेंगा प्योत्राम मुझे छोड़कर चला गया। अब उसने कोतवालके यहाँ नौकरी कर ली है [जेबसे मिठाईका डिब्बा निकालता है और फलोंकी लाइमचूस मुँहमें रखकर चूसता है]

पिश्चिक—मेरी लड़की दाशेन्काने आपको नमस्कार कहा है।

लोपाखिन—एक बड़ी दिलचस्प मजेदार बात बताऊँ? [घड़ी पर निगाह डालकर] वैसे मुझे अभी एक दम चले जाना है [illegible] ज्यादा बात करनेका वक्त नहीं है [illegible] खैर, [illegible] [illegible] आप जानते ही हैं कि आपका चेरी बगीचा [illegible] कर्जेमें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। लेकिन [illegible] [illegible] अपनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

एक तरीका है. मेरी बातको जरा ध्यानसे सुनिये आपकी जमींदारी-कस्बेसे पन्द्रह मील पर तो है ही, रेल भी बिल्कुल पास से जाती है। अगर चॅरीके बगीचेमें से नदीके किनारे काट-काटकर मकानोंके लिये प्लॉट बना दिये जायँ तो वे गर्मियोंके लिये बंगलोंकी तरह किराये पर उठ सकते हैं। उससे कमसे कम आपको २५ हजार रूबल सालना आमदनी हो जायेगी।

गायव—माफ करना, यह सब बेवकूफीकी बातें हैं।

रैनिवस्काया—यर्मोलाय अलेक्सीविच, तुम्हारी बात मैं समझ नहीं आई।

लोपाखिन—हाँ तो, गर्मियाँ बिताने आनेवालोंसे आपको हर तीन एकड़के एक प्लॉट पर ५ रूबल सालाना मिलेंगे। और अगर आप कहीं इसका विज्ञापन कर दें, तो मैं कहता हूँ कि सारे प्लॉट आपके इस तरह उठ जायेंगे कि जाड़ोंके लिए आपके पास एक वर्गफुट जगह नहीं रह जायगी। सच पूछो तो आप साफ बच गईं, मैं बधाई देता हूँ आपको। गहरी नदीके किनारे जगह बड़ी शानदार है। हाँ, परन्तु उसकी सफाई करानी होगी, पुरानी सारी इमारतें बिल्कुल ढहा देनी पड़ेंगी—जैसे इसी पुराने मकानको लीजिये—अब यहाँ यह किस मतलबका रह गया है। चॅरीका बगीचा भी काट डालना होगा

रैनिवस्काया—काट डालना होगा? अरे भैया, मुझे माफ करो। यह क्या कह रहे हो! कुछ पता है? इस पूरे प्रदेशमें अगर सचमुच कोई एक दिलचस्प चीज है, तो वही चॅरीका बगीचा ही तो है।

लोपाखिन—[illegible] बगीचेमें अगर कुछ है नहीं, खासियत है तो यही कि [illegible] । [illegible] दो साल बाद [illegible] एक फसल होती है। [illegible] कोई खरीदता तक नहीं।

गायव—[illegible] बगीचेका [illegible] लिखा है।

लोपाखिन—[घडी देखकर] अगर हम लोग जल्दी ही कुछ तय करके २२ अगस्तसे पहले ही कोई कदम नहीं उठाते तो यह चेरीका बगीचा, सारी जमींदारी नीलाम पर चढ़ जायेगी। आपलोग कुछ सोचिये इस पर। मैं तो कसम खाकर कह सकता हूँ इसके सिवा इसे बचानेका कोई और तरीका है ही नहीं बिल्कुल भी नहीं।

फीर्स—चालीस-पचास साल पहले पुराने जमानेमें लोग चेरियोंको सुखाते थे, भिगाते थे, सिरका और मुरब्बा तक बनाते थे और न जाने,

गायेव—फीर्स चुप रहो।

फीर्स—और लोग गाडियोंमें भर-भरकर बनाई हुई चेरियाँ मास्को और हार्कोवको भेजा करते थे। उसीसे पैसा आता था। ये बनी हुई चेरियाँ बड़ी मुलायम, मीठी, रसीली, खुशबूदार होती थीं। तब लोगोंको बनाने के ढंग मालूम थे।

रैनिव्स्काया—अब वे सब ढंग कहाँ गये?

फीर्स—भूल गये। अब किसीको भी याद नहीं है।

पिश्चिक—[रैनिव्स्कायासे] पेरिस कैसा है आजकल? आपने वहाँ मेढक खाये थे?

रैनिव्स्काया—हाँ, मगर खाया था।

पिश्चिक—क्या कहना!

लोपाखिन—पहले तो गाँवमें सीधे सादे लोग और किसान ही रहा करते थे, लेकिन अब गर्मियाँ बिताने वालोंकी भरमार है। छोटे छोटे कस्बे तक तो इन गर्मियोंके बंगलोंसे घिरे हुए हैं। आजकलके साथ कहा जा सकता है कि ये लोग सालभरमें ही गर्मियाँ बितानेवाले लोग बहुत बढ़ जायेंगे—और सभी जगह ऐसा। आज तो गर्मियाँ बितानेवाला सिर्फ बरामदेमें बैठा बैठा चाय पीता है लेकिन हो सकता है आगे जाकर वही अपनी हिस्से

लिए थोड़ी बहुत जमीन भी ले ले.. तब आपका यह चॅरीका बगीचा कैसे आनन्दकी, हरी-भरी शानदार जगह बन जायेगी..

गायेव—[गुस्से से] बकवास !

[याशा और वार्याका प्रवेश]

वार्या—अम्मा, ये आपके दो तार आये हैं [चाबी निकाल कर पुरानी-सी किताबोंकी आलमारी खोलती है। [आलमारी चरमराती है] ये रहे।

रानेवस्काया—पेरिसके हैं [तार फाड़ती है। बिना पढ़े ही] मेरा तो पेरिससे मन भर गया।

गायेव—तुम्हें पता है ल्युबा, यह किताबोंकी आलमारी कितनी पुरानी है ? पिछले हफ्ते मैंने इसकी सबसे नीचेकी दराज खोली थी। वहाँ इसके बनने की तारीख पड़ी है। यह आलमारी ठीक सौ साल पहले बनी थी। क्या खयाल है, इसका शताब्दि-समारोह मना डाला जाय ? हालाँकि यह चीज बेजान है तब भी आलमारी तो किताबोंकी है

पिश्चिक—[आश्चर्यसे] एक सौ साल ! वाह, बहुत खूब !

गायेव—जी हाँ। एक चीज है यह [आलमारी पर हाथ फेरता है] प्यारी आलमारी, तुमने सौ सालसे भी ज्यादा सत्य और कल्याणकारी आदर्शोंकी सेवाकी है, तुम्हारी जय हो ! तुम्हारे इन उपयोगी परिश्रम और सेवाकी मौन-पुकार इन सौ सालोंमें कभी धीमी नहीं पड़ी। [आँख में आँसू भरकर] पीढ़ी दर-पीढ़ी, तुम हमारे [illegible] नेकीके प्रति आस्था, [illegible] आई [illegible] और सामाजिक चेतना हमने तुमसे [illegible]।

[कुछ देर चुप्पी]

लोपाखिन—तुम !

रैनिवस्काया—लियोनिद तुम तो बिल्कुल भी नहीं बदले।

गायेव—[कुछ परेशानीसे] वह डाली दाहिनी लाल गेंद पॉकेटमें

लोपाखिन—[घड़ी देखकर] अच्छा अब मैं चलूँ।

याशा—[रैनिवस्कायाको दवाओंका बक्स देते हुए] इस समय गोलियाँ लेंगी न ?

पिश्चिक—आपको दवायें नहीं खानी चाहिए। इनसे लाभकी जगह नुकसान ही होता है [जल्दीमें] अच्छा सुनो जरा, इधर तो देना [गोलियोंका डिब्बा लेकर हथेली पर सारी गोलियाँ पलट लेता है, फूँक मारता है और मुँह में डालकर जो की शराबके घूँटके साथ गटक जाता है] अब कहिये

गायेव—[घबराकर] तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है ?

पिश्चिक—मैं तो सारी गोलियाँ खा गया !

लोपाखिन—बड़े खाऊ हो [सब हँसते हैं]

फीर्स—ईस्टर [illegible] हमारे सरकार [illegible] खीरा खा गये थे। [धीरे धीरे हँसता है]

रैनिवस्काया—क्या कह रहा है यह ?

वार्या—पिछले तीन सालसे यह यों ही बड़बड़ाता रहता है। हमें आदत पड़ गई है।

याशा—अब इसके [illegible] दिन आ गये।

[पतली दुबली शार्लोटा इवानोवना सफेद फ्रॉक [illegible] लॉर्नेट (लम्बे हैंडिलमें लगा चश्मा) [illegible] कमरेमें [illegible] गुजरती है]

लोपाखिन—शार्लोटा इवानोवना माफ करना, [illegible] [उसके हाथका चुम्बन लेना चाहता है]

चार्लोटा—[हाथ पीछे खींचकर] अगर कोई औरत एक बार तुम्हे अपना हाथ चूम लेने दे तो कल तुम उसकी कुहनी, फिर उसके कन्धे तक धावा मारो. .

लोपाखिन—आज तो साहब किस्मत खराब है [सब हँसते है] अच्छा चालोटा आइवानोव्ना, हमे कोई हाथकी सफाई दिखाओ न !

रनिवस्काया—हाँ, चालोंटा दिखाओ कुछ खेल ।

चालोटा—इस वक्त नही । मुझे नींद आ रही है [चली जाती है]

लोपाखिन—तीन हफ्ते बाद फिर मिलेगे [रैनिव्स्कायाका हाथ चूमता है] तब तकके लिए बिदा दे अब मै चलता हूँ । [अपना हाथ पहले वार्या, फिर फीर्स और याशाकी ओर बढाता है] जाना इस समय बडा बुरा लग रहा है । [रैनिवस्कायासे] अगर बंगले बनानेकी मेरी योजनापर फिर विचार करके कुछ निश्चय कर ले तो मुझे खबर दे । पचास हजार रूबल उधार मै दे दूँगा आपको ।

वार्या—[नाराजीसे] भगवानके लिए अब यहाँसे टलो तो सही ।

लोपाखिन—जा रहा हूँ—जा रहा हूँ । [चला जाता है]

गायेव—कमीना ! आप लोग मुझे उसके प्रति ऐसे शब्दोंको क्षमा करे । हमारी वार्या तो उससे शादी करने जा रही है । यह वार्याका [illegible] ।

वार्या—मामा बथा बेकारकी बाते कर रहे है आप ।

रनिवस्काया—हाँ वार्या, मुझे तो बडी खुशी होगी । आदमी बहुत [illegible] ।

पिश्चिक—[illegible] मानना ही पडेगा कि आदमी लायक है । मेरी दाशेन्का [illegible] [खर्राटे लेने लगता है । फिर एकदम जागकर] अच्छा [illegible] मुझे

कृपा करके २४० रुबल उधार दे सकेगी? मुझे कल [illegible] सूद जमा करना है।

वार्या—[घबराकर] नहीं! नहीं! हम नहीं दे सकते।

रैनिवस्काया—सच मानो, मेरे पास रुपया है ही नहीं।

पिश्चिक—अच्छा फिर ले लूँगा। [हँसता है] मैं कभी उम्मीद नहीं छोड़ा करता। पिछली बार जब मैं सोचे बैठा था कि [illegible] कोई रास्ता ही नहीं बचा, अब तो जो होना होगा हो चुका होगा तभी भगवान की माया देखिये—मेरी जमीनपर होकर [illegible] पटरी निकली। और रेल वालोंने पैसा दिया। सो इस बार भी कुछ न कुछ होकर ही रहेगा, आज नहीं कल सही। हो सकता है दाशेंकाके नाम ही [illegible] ही आ जाय? उसने लॉटरी [illegible] खरीदा है न।

रैनिवस्काया—अच्छा, अब हम लोग काफी पी चुके। चलो, [illegible] सो लें।

फ़ीर्स—[झिड़कते हुए, गायेवके कपड़े झाड़ता है] आपने फिर गलत वाला पतलून पहन लिया न? आह, बताइये आपके लिए मैं [illegible] क्या करूँ?

वार्या—[धीरेसे] आन्या सो रही है [बिना आवाज किये, धीरेसे खिड़की खोल देती है] सूरज निकल आया है। अब तो जरा भी ठंडक नहीं है, अम्मा देखो, पेड़ कैसे सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। [illegible], अहा! क्या हवा चल रही है, चिड़ियाँ [illegible] रही हैं।

गायेव—[दूसरी खिड़की खोलता है] [illegible]

तीरकी तरह सीधा-सीधा चला जाता रास्ता चाँदनीमें कैसा जादू भरा-सा लगता था, याद है न? क्यों याद है न?

रनिवस्काया—[खिड़कीसे बाहर बगीचेको देखती है] हाय, वह मेरा बचपन.. वह बचपनका भोलापन। इसी बच्चोंवाले कमरेमें ही तो सोया करती थी—यहींसे बगीचेमें झाँकती रहती थी. नई-नई खुशियाँ रोज मेरे साथ जागा करती थीं। उन दिनों भी बगीचा बिलकुल ऐसा ही था। जरा भी नहीं बदला है। [उल्लासमें हँस पड़ती है] चारों तरफ सफेद ही सफेद मेरे प्यारे बगीचे जाड़ेकी बर्फीली ठण्ड और पावसकी वर्षा आँधियोंमें घिरे काले-काले दिनोंके बाद तुम पर फिर बहार आ गई है—तुम फिर आनन्दसे किलक उठे हो। स्वर्गके दूतोंने तुम्हें त्यागा नहीं है हाय, काश यह मेरी छातीपर रखा बोझ कहीं चला जाता! काश मैं अतीतको भूल पाती।

गायेव—हूँ! और यही बगीचा कर्जा चुकानेके लिए बेच देना पड़ेगा। अजीब बात है न?

रनिवस्काया—देखो अम्मा वे चल रही हैं वो उस छायादार पेड़ोंवाली सड़कपर ऊपरसे नीचे तक सफेद कपड़ोंमें [उल्लासमें] बिलकुल वही हैं।

गायेव—किधर?

वार्या—अम्मा, सुनो तो!

रनिवस्काया—नहीं कोई भी तो नहीं है। मेरी कल्पनाकी देन। उधर दाहिने हाथकी तरफ, उस कुंजकी ओर जानेवाली सड़कपर जो [illegible] पेड़ है, वह ऐसा झुका है जैसे सचमुच कोई औरत हो।

[त्रोफिमोवका प्रवेश। आँखोंपर चश्मा और अत्यन्त ही साधारण सा विद्यार्थी पोशाक पहने है।]

रेनिवस्काया—बगीचा आज कैसा अजब-अजब लग रहा [illegible] । [illegible] सफेद-सफेद बादल [illegible] नीला खुला आसमान ।

त्रोफिमोव—ल्युबोव आन्द्रेवना [रेनिवस्काया मुड़कर उसकी ओर देखती है] मैं सिर्फ आपकी कुशल मंगल जानने आया हूँ । [illegible] जाऊँगा । [आवेगसे हाथका चुम्बन लेता है] [illegible] मुझे कह गया था कि आप सुबह ही मिलेंगी लेकिन मुझे इतना सब्र नहीं था

[रेनिवस्काया उसे किंकर्तव्य-विमूढ़ सी देखती है]

वार्या—[भरे गलेसे] ये प्यारे त्रोफिमोव हैं ।

त्रोफिमोव—जी हाँ, प्योत्र त्रोफिमोव [illegible] मैं आपके ग्रीशाका ट्यूटर था न । क्या मैं सचमुच में इतना बदल गया हूँ कि [illegible] ?

[रेनिवस्काया उसे बाँहोंमें भरकर सिसक पड़ती है]

गायेव—[परेशानीसे] बस करो [illegible] बस करो ल्युबा ।

वार्या—[रोते हुए] पेत्या, मैंने तो तुमसे सुबह तक ठहर जानेको कहा था न ।

रेनिवस्काया—मेरा ग्रीशा [illegible] मेरा बेटा [illegible] मेरा मुन्ना ग्रीशा ।

वार्या—अम्मा, इसमें किसीका क्या बस है, भगवानकी मरजी है ।

त्रोफिमोव—[रोते हुए धीरे गलेसे] बस कीजिए [illegible], बस कीजिए ।

रेनिवस्काया—[सिसकते हुए] मेरा बेटा [illegible] डूब गया । [illegible] क्यों ? [illegible], मुझे [illegible] ? [जरा सम्हलकर] [illegible] और अन्या [illegible] [illegible] लेकिन पेत्या [illegible] [illegible] [illegible] ?

त्रोफिमोव—[illegible] दिखाई देता हूँ ।

रेनिवस्काया—तब तो तुम बिल्कुल लड़के ही थे—बड़े सुन्दर विद्यार्थी लगते थे। अब तो तुम्हारे बाल भी पक गये हैं चश्मा लगाते हो। अभी भी सचमुच क्या विद्यार्थी हो? [दरवाजेकी तरफ जाती है]

त्रोफिमोव—मुझे तो लगता है जैसे मैं एक चिरन्तन विद्यार्थी ही हूँ!

रेनिवस्काया—[पहले अपने भाईको फिर वार्याको चूमती है] अच्छा अब सोने चलें। लियोनिद, तुम भी तो अब पहलेसे बुड्ढे हो गये हो।

पिश्चिक—[रेनिवस्कायाके पीछे-पीछे जाता है] मेरा भी यही खयाल है कि हमें अब चलकर सो जाना चाहिए .. उफ!...यह मेरी गठिया... मैं तो आज रात यहीं ठहर रहा हूँ. मेरी अच्छी ल्युबोव आन्द्रेयना, अगर आप कर सकें... कल सुबह तक २४० रूबल।

गायेव—इसकी बस हमेशा एक ही धुन!

पिश्चिक—२४० रूबल मुझे अपनी रेहनका सूद देना है।

रेनिवस्काया—भले आदमी, मेरे पास पैसा नहीं है।

पिश्चिक—मैं लौटा दूँगा... है ही कितना?

रेनिवस्काया—अच्छा ठीक है। लियोनिद तुम्हें दे देंगे। लियोनिद, तुम इसे रुपया दे देना।

गायेव—मैं दूँगा इसे रुपया? तब तो इसे जरा लम्बी राह देखनी होगी!

रेनिवस्काया—कोई और चारा भी तो नहीं है। इसे जरूरत है। वापिस कर देगा।

[रेनिवस्काया, त्रोफिमोव, पिश्चिक और फीर्स जाते हैं। गायेव, वार्या और याशा मंच पर ही रहते हैं]

गायेव—[illegible] खानेकी आदत अभी तक छोड़ी नहीं है।
[याशासे] भले आदमी, यहाँसे भाग जा, तेरे कपड़ोंसे मुर्गीख़ाने दड़बेकी बदबू आ रही है।

याशा—[खीसें निपोरकर] लियोनिद आन्द्रेयविच, आप भी वैसे ही हैं।

गायेव—क्या मतलब? [वार्यासे] इसने अभी क्या कहा?

वार्या—[याशासे] तेरी माँ गाँवसे आई है। वहाँ नौकरोंके कमरेमें कलसे बैठी तेरी राह देख रही है। तुझसे मिलना चाहती है।

याशा—बैठी रहने दो उसे! मैं खुद फ़िक्र कर लूँगा।

वार्या—बेशर्म!

याशा—जल्दी क्या है? उससे कल तक राह नहीं देखी जा सकती थी?

[चला जाता है]

वार्या—अम्मा बिलकुल वैसी ही हैं। ज़रा भी नहीं बदलीं। अगर [illegible] अपने ही मनकी [illegible] चलती रहीं तो [illegible]।

गायेव—[illegible] [कुछ देर रुककर] अगर एक ही बीमारीके [illegible] इलाज [illegible] समझ लो [illegible] है। [illegible]

[illegible]

वार्या—[रो पड़ती है] काश, भगवान् हमारी भी सुनते !

गायेव—यों आँसू बहानेसे क्या होता है ? मौसी धनी जरूर हैं लेकिन हमलोगोंकी उन्हें कोई फिक्र नहीं है। पहला कारण तो यह है कि बहनने किसी कुलीन आदमीके बजाय एक वकीलसे शादी की।

[आन्या दरवाजेपर दीखती है]

गायेव—तो उसने ऐसे आदमीसे शादी की जो कुलीन नहीं था। फिर उनका खुद आचरण। हर आदमी तो उसे आदर्श नहीं कह सकता। वह बड़ी अच्छी है, दयालु है, सहृदय है, सब है और मैं उसे बहुत चाहता हूँ—लेकिन बातको चाहे जितना छोटा करके देखिये—इस बातसे तो इन्कार किया ही नहीं जा सकता है कि वह चरित्रहीन औरत है। यह तो उसकी सूरत देखकर ही पता चल जाता है।

वार्या—[फुसफुसाकर] आन्या दरवाजेपर ही खड़ी है।

गायेव—क्या कहा ? [कुछ रुककर] अजब बात है। लगता है मेरी दाहिनी आँखमें कुछ गिर गया है। अब मुझे पहलेकी तरह साफ नहीं दिखाई देता। और जब बृहस्पतिको मैं जिला अदालत में था

[आन्याका प्रवेश]

वार्या—आन्या तुम सोई नहीं अब तक ?

आन्या—नींद नहीं आ रही। कोशिश करना बेकार है।

गायेव—मेरी मुन्नी ! [आन्याके हाथ और मुँहका चुम्बन लेता है] मेरी बच्ची ! [रोने लगता है।] तू मेरी भांजी नहीं, मेरी बेटी है... मेरी रानी बच्ची हो। सच मानो मेरा विश्वास करो .

आन्या—[illegible] विश्वास करती हूँ। [illegible] आपको प्यार और [illegible] करती है। पर मामा, आप बहुत न बोला करें। सिर्फ

चुप ही रहा करें। अब देखिये, अभी अभी आप [illegible] [illegible] मेरी अम्माको लेकर क्या [illegible] [illegible] ऐसा [illegible] है आप?

गायेव—हाँ.. हाँ.. [उसके हाथोंसे चेहरा ढँक लेता है] [illegible] हो गई। हे भगवान्, मुझपर दया करो! [illegible] नहीं तो आज मैं किवाड़ोंकी अलमारीको भी भाषण देने लगा, कैसा बेवकूफ हूँ मैं! जब पूरा भाषण दे चुका तो लगा कि यह तो सरासर बेवकूफी है।

वार्या—मामा, यह बात तो ठीक है। आपको जरा चुप ही रहना चाहिए। बोलो ही मत, बस।

आन्या—अगर आप बोलना ही बन्द कर दें, तो उससे खुद आपको भी तो बड़ा आराम हो जायेगा।

गायेव—अब नहीं बोलूँगा! [आन्या और वार्याके हाथोंको चूमता है] [illegible] बिलकुल चुप रहूँगा। लेकिन सिर्फ यह एक बात [illegible] [illegible] मैं जिला अदालत गया था। [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], उसकी उसकी बात होने लगी। [illegible], [illegible] मुझे लगा कि हुण्डीके जरिये रुपया उधार [illegible] लिया जा सकता है।

वार्या—[illegible] भगवान हमारी भी सुन लेता!

काम बना बनाया रखा है। मुझे पक्का भरोसा है—सारी बकाया चुक जायेगी..... [एक लाइमजूस मुँहमे रख लेता है] मैं अपनी कसम खाकर कहता हूँ, तुम कहो उसीकी कसम खा जाऊँ—जमींदारी नहीं बिकेगी, नहीं बिकेगी. [आवेगसे] मैं अपनी ही ओरसे कसम खा रहा हूँ कि अगर मेरे रहते यह नीलाम पर चढ जाय तो, यह मेरा हाथ रहा, तुम मुझे कमीना, नीच कह देना मैं अपने प्राणोंकी सौगन्ध खाता हूँ।

आन्या—[पुनः शान्त होकर प्रसन्नतासे] मामा, तुम कैसे अच्छे और चतुर हो [उसे बाँहोंमें भरकर] अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। अब मैं खूब शान्त और सुखी हूँ।

[फीर्सका प्रवेश]

फीर्स—[झिड़कते हुए] लियोनिद आन्द्रीएविच, आपको क्या भगवानका बिल्कुल भी डर नहीं है? कब सोने जायेंगे?

गायेव—अभी जाता हूँ, सीधा जाता हूँ। फीर्स, तुम चले जाओ। मैं खुद चला जाऊँगा। हाँ हाँ, मैं खुद अपने कपड़े उतार लूँगा। अच्छा बेटी, अब मैं चलता हूँ। सुबह इसके बारेमें और बातें [illegible]। अब चलकर सोऊँ [वार्या और आन्याका चुम्बन लेता है] अब तो मैं अस्सीके आस-पास हो गया हूँ। लोग अस्सी सुनकर [illegible] नाक भौं सिकोड़ते हैं लेकिन अपनी जवानीमें भी मुझे अपने विचारोंकी वजहसे कम [illegible] नहीं सहना पड़ा है। किसान [illegible] प्यार करते हैं? किसानोंको समझने की [illegible]। जरूरत है कि कैसे [illegible]

[illegible]—[illegible] शुरू कर दिया न [illegible]

[illegible]—[illegible]।

[illegible] [[illegible]] [illegible]।

गायेव—अच्छा, अच्छा, चुप हो गया। तुमलोग सोने जाओ एक ही निशानेमें पॉकेट कर लिया न.. एक तुम्हारे नामका वो मारा, वाह, क्या कमालका निशाना.. ।

[चला जाता है। फीर्स उसे पीछेसे पकड़े है।]

आन्या—अब जरा दिमागको चैन मिला है। यारोस्लाव्ल जानेको मेरा तो मन नही करता। दादी—मौसी मुझे जरा भी पसन्द नहीं है। खैर तब भी अब ज़रा धैर्य बँधा है...मामाको बहुत-बहुत धन्यवाद।

[नीचे बैठ जाती है]

वार्या—सोनेका वक्त होगया। मैं चल रही हूँ। जब तुम यहाँ नही थीं तो कुछ गड़बड़ हो गई थी। पुराने नौकरोंकी कोठरियोंमें सिर्फ पुराने नौकर ही रहते हे—तुम तो जानती ही हो—येफीम, पोल्या, येव-तिग्नी और कार्प। उन लोगोंने दुनियाँ भरके लफङ्गोंको रात बितानेको वहाँ टिकाना शुरू कर दिया—मै कुछ नही बोली। लेकिन अचानक एक दिन मैंने सुना—उन्होंने इधर-उधर बकना शुरू कर दिया है कि मैं लोभके मारे उन्हें खानेको मटरके दलिये के सिवा कुछ नही देती। अच्छा, और जानती हो यह सब उसी यैवस्तिग्नीका किया-धरा था। मैंने भी मन-ही-मन कहा, अच्छी बात है—'अगर यो है, तो यो ही सही ..अब तमाशा देखो।' मैंने यैवस्तिग्नीको बुलवाया [जँभाई लेती है] आया वह। मैंने पूछा, 'यैवस्तिग्नी, यह सब क्या है?' फिर मैंने कहा—'तुम ऐसी बेवकूफीकी बातें बकते फिरते हो'. [कुछ देर चुप रहकर] अरे, यह तो सो गई [आन्याको बाँहोंमें भर लेती है] आओ बिस्तरपर चले.. आओ चलो [उसे ले चलती है] मेरी मुन्नी रानी सो गई...आओ।

[जाती है]

[कहीं दूर बगीचेके दूसरे सिरेपर एक गड़रिया बाँसुरी बजाता है, त्रोफिमोव मञ्चको पार करता है। लेकिन वार्या और आन्याको देखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है]

वार्या—चुप ... चुप आन्या सो रही है. ... आओ, मुन्नी चलो...

आन्या—[तन्द्रिल स्वरमें धीरेसे] मैं बहुत ही थक गई हूँ. ... ये घण्टियाँ अब भी. मामा ... प्यारी अम्मा, और मामा ...

वार्या—आ बिटिया ... मेरी रानी बिटिया चल

[आन्याके कमरेमें जाती है]

त्रोफिमोव—मेरी ज्योति ! मेरी बहार !

[पर्दा गिरता है।]

दूसरा अङ्क

[चरागाहका खुला दृश्य एक पुराना-सा टूटा फूटा, परित्यक्त दोनों ओर ढालू छतवाला गिरजा। उसके पास ही एक कुँआ। बड़े-बड़े पत्थरोंके टुकड़े जो स्पष्ट ही कब्रोंके हैं। एक ओर बेंच। गायेवके घर जानेवाली सड़क दूर दिखाई देती है। एक तरफ काले काले चिनारके पेड़। यहींसे चॅरीका बगीचा शुरू होता है। दूर पर टेलीग्राफके खम्भोंकी चली जाती लाइन, और बहुत दूर क्षितिजपर धुँधले दीखते कस्बेकी रूपरेखा। यह कस्बा बहुत ही साफ मौसममें भले ही स्पष्ट दीखता हो।

सन्ध्या होनेको है। चार्लोटा, याशा और दुन्याशा बेंचपर बैठे हैं। पास खड़ा एपिखोदोव गिटारपर कोई दर्दीली धुन बजा रहा है। सभी विचारोंमें डूबे बैठे हैं। चार्लोटा एक पुरानी चोटीदार टोपी पहने है। उसने अपने कन्धेपर लटकी बन्दूक उतार ली है और उसका बकसुआ कस रही है]

चार्लोटा—[विचार-मग्न स्वरमें] चूँकि मेरे पास कोई पास-पोर्ट नहीं है इसलिए मुझे अपनी असली उम्रका ही पता नहीं। मुझे तो हमेशा ऐसा लगता है जैसे बच्ची ही होऊँ। जब मैं बच्ची थी तो मेरे माँ-बाप यहाँसे वहाँ मेलोंमें घूमा करते थे और अच्छे-अच्छे तमाशे दिखाया करते थे—मैं साल्टो मार्टलका नाच और तरह-तरहकी कलाबाजी दिखाया करती थी। जब माँ-बाप मर गये तो एक जर्मन बूढ़ीने मुझे रख लिया, पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया। इस तरह मैं बड़ी होकर आज गवर्नेस बनी। लेकिन मैं कहाँसे

[illegible] बात है—मुझे कुछ नहीं मालूम मेरे माँ-बाप कौन थे? बहुत सम्भव है उन लोगोंने आपसमें शादी बादी भी नहीं की थी [अपनी जेबसे एक खीरा निकालकर कचर-कचर खाती है] मुझे बिलकुल कुछ नहीं मालूम [कुछ देर चुप रहकर] मेरे मनमें बातें करनेकी बड़ी ललक होती है लेकिन कोई भी तो ऐसा नहीं है जिससे बातें करूँ, न कोई दोस्त, न सम्बन्धी

एपिखोदव—[गिटार बजाते हुए गाता है]

नहीं चिन्ता मुझे इस शोरगुलमें भरी दुनियाकी
दोस्तो दुश्मनकी मुझे फिर फिक्र क्याकर हो।

आह, मंडोलिनपर गीत गानेमें भी कैसा आनन्द आता है।

दुन्याशा—यह मंडोलिन नहीं, गिटार है। [जेबी शीशेमें चेहरा देखकर पाउडर लगाती है]

एपिखोदव—जो प्यारमें पागल हो उसके लिए तो यही मंडोलिन है। [गाता है] "काश कि मेरे दिलको जलती प्यार भरी [illegible] जाती!" [याशा भी गाने लगता है]

[illegible]

दुन्याशा—[illegible] [illegible]

[illegible] लेता है। फिर वह सिगार जला लेता है]

[illegible]

एपिखोदोव—मैं एक सभ्य-सस्कृत आदमी हूँ। दुनियाँ भरकी अच्छीसे अच्छी किताबें पढे बैठा हूँ, लेकिन साफ और सच कहूँ तो कौन-सी दिशा मुझे अपनानी चाहिये, या वास्तवमें मैं क्या चाहता हूँ-यही मेरी समझमें नही आता। अपने आपको गोली मार लूँ या जिन्दा रहूँ खैर पिस्तौल तो मैं हमेशा अपने साथ रखता हूँ। यह देखिये...

[पिस्तौल दिखाता है]

चार्लोटा—ऊब गई मैं तो। अब चलती हूँ [कन्धे पर बन्दूक रख लेती है] एपिखोदोव—तुम आदमी काफी तेज हो—कुछ खतरनाक भी हो। औरतें तुम्हारे पीछे जरूर पागल रहती होगी, बर्र र र [जाते हुए] ये अपनेको तेज लगाने वाले आदमी भी कैसे बेवकूफ होते हैं! हाय, कोई भी तो ऐसा प्राणी नही है जिससे मैं बातें करूँ...हमेशा अकेली-अकेली...मेरा अपना कोई भी तो नही है मैं हूँ कौन? और आखिर धरती पर किसलिये जिन्दा हूँ—मुझे कुछ नही पता! [धीरे धीरे चली जाती है]

एपिखोदोव—बिना, लाग-लपेट या इधर-उधर बहके-भटके अगर सच कहूँ तो मुझे मानना पडेगा कि किस्मतने हमेशा मेरे साथ बडी बेरहमी का व्यवहार किया है—जैसे तूफान छोटी नावके साथ करता है। अच्छा माना, मेरे दिमागमें एक गलत-फहमी घुस बैठी है। मगर फिर यही मिसाल लीजिए, आज सुबह जब मैं उठा तो क्या देखता हूँ कि मेरी छाती पर एक लम्बा-चौडा मकडा.. ऐसा [दोनों हाथोंसे उसका आकार बताता है] जमा बैठा है। अच्छा फिर, जैसे ही प्यास बुझानेको मैं "क्वास" [जो की शराब] की सुराही उठाता हूँ तो उसमें हदसे ज्यादा गलीज़ चीज—कुछ नहीं

तो एक तिलचट्टा ही पड़ा है [कुछ देर फिर चुप रहकर] दुन्याशा, मैं जरा अपनी बात सुनानेके लिये दो मिनटकी तकलीफ देना चाहूँगा ।

दुन्याशा—तो, हाँ, कहो ।

एपिखोदोव—मैं एकान्तमें कुछ बातचीत करना चाहता था ।

[गहरी साँस लेता है]

दुन्याशा—[झल्लाकर] अच्छा ठीक है, पहले मेरा दुपट्टा उधरसे उठाकर दे दो । आलमारीके पास रक्खा है । वहाँ बड़ी सीलन भी है ।

एपिखोदोव—जरूर-जरूर । अभी लाता हूँ । अब मेरी समझमें अपनी पिस्तौलका काम आया है [गिटार लेकर बजाता हुआ चला जाता है]

याशा—[illegible] बाईस आफत, किसीसे बनता नहीं [illegible] यह एकदम [illegible] है । [जँभाई लेता है]

दुन्याशा—हाय राम ! यह कहीं अपने ही गोली न मार ले [कुछ देर चुप रहकर] मेरे तो एकदम हाथ पाँव फूल गये हैं । मैं हमेशा घबरा जाती हूँ । जब मैं मालकिनके यहाँ लाई गई थी तो निरी बच्ची थी । अब तो मुझमें किसाना जैसी कोई बात ही नहीं रह गई [illegible] मालकिनकी तरह मेरे हाथ भी अब गोरे-गोरे हो गये हैं । [illegible] नाजुक और कोमल हूँ कि मुझे तो सबसे डर लगता है । [illegible] डर [illegible] जाती हूँ । सुनो याशा, अगर तुमने मुझे [illegible] तो [illegible] पता नहीं मेरे दिलका क्या [illegible] होगा ।

याशा—[दुन्याशाका चुम्बन लेता है] अरे मेरी लीची ! सही बात है, लडकीको कभी भी अपने आपको नही भूलना चाहिये। मुझे तो लडकियोंका अपने आचार-विचारको भूल जाना बिल्कुल भी पसन्द नहीं है।

दुन्याशा—याशा, तुम्हारे प्यारमे मे पागल हो गई हूँ। कितने पढे-लिखे आदमी हो तुम। हर चीज पर अपने विचार प्रगट कर लेते हो।

[कुछ देर चुप्पी]

याशा—[जँभाई लेता है] हाँ, सो तो ठीक है। मेरी तो राय यह है कि अगर कोई लडकी किसीको प्यार करती है, तो उसका मतलब उसमे चरित्रकी कमी है। [कुछ देर रुककर] खुली हवा मे सिगार पीनेमे भी कैसा मजा है। [कोई आवाज सुनकर] लगता है इधर कोई आ रहा है. मालकिन और उनके साथी लोग है . . [दुन्याशा आवेशसे उसका आलिंगन कर लेती है] अच्छा, अब घर जाओ—मानो तुम नदीमे नहाने को गई थी . इधरके रास्तेसे जाओ, नही तो वे लोग मिल जाएँगे और सोचेगे, मैने ही तुमसे यहाँ मिलनेको कहा होगा। मुझे यह अच्छा नहीं लगेगा।

दुन्याशा—[धीरेसे खाँसते हुए] तुम्हारे सिगारने तो मेरे सिरमे दर्द कर दिया। [चली जाती है]

[याशा गिरजेके पास ही बैठा रहता है। रैनिवस्काया, गायेव और लोपाखिनका प्रवेश]

लोपाख़िन—आप एक बार अन्तिम रूपसे निश्चय कर डालिये। वक्त किसीकी राह नही देखता। अरे, बिल्कुल सीधी-सी तो बात ही है—

कि बगले बनाने के लिये जमीन उठानेको आप राजी हैं या नहीं ?
बस एक ही शब्दमें तो फैसला है—सिर्फ एक शब्द !

रनिवस्काया—यह ऐसे भयकर रूपसे यहाँ सिगार कौन फूँक रहा है ?

[बैठ जाती है]

गायेव—अब तो रेलकी लाइन भी बहुत पास आ गई है। इससे और भी आसानी हो गयी [बैठ जाता है] अब तो शहर जाओ, खाना खा आओ। वह मारी सफेद गेंद पॉकिटमें ! मेरा तो घर जाकर एक बाजी खेलनेको मन कर रहा है।

रनिवस्काया—जल्दी क्या है !

लोपाखिन—सिर्फ एक ही तो शब्दकी बात है [अनुरोधसे] मुझे उत्तर तो दे दीजिये।

गायव—[जँभाई लेकर] क्या कहा तुमने ?

रनिवस्काया—[अपने पर्समें देखती है] कल इसमें ढेर सा रुपया था और अब कुछ भी नहीं बचा। बिटिया बार्या हमें सिर्फ दूध या सूप पिला पिलाकर ही जैसे तैसे काम चलाती है। रसोईमें बूढ़ोंको मटरकी सब्जीके सिवा कुछ खानेको नहीं मिलता और मैं हूँ कि अपना रुपया पानीकी तरह बहाती हूँ [पर्स गिरा देती है—सोनेके सिक्के बिखर जाते हैं] लो ये भी सब गये !
[झुँझला उठती है]

[illegible]—[illegible] देता हूँ [सिक्कोंको जमा करता है]

रनिवस्काया—[illegible] जैसा [illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सत्रहवीं शताब्दीके बारेमें पतनशीलोंके विषयमें दुनियाभरकी बेकार की बक-बक करते रहे...और वह भी किससे ? बैरा और 'बेरा' से 'पतनशीलों' के बारेमें बातें . ...? हुँह

लोपाख़िन—आप ठीक कहती हैं।

गायेव—[हाथ झटक कर] भाई, साफ बात है कि मेरा तो अब सुधार हो नहीं सकता [याशासे झुँझलाकर] मेरे सामने यहाँ खड़ा-खड़ा क्यों नाच रहा है ?

याशा—[हँसता है] आपकी बात सुनकर मुझसे हँसे बिना नहीं रहा जाता।

गायेव—[रैनिवस्कायासे] या तो इसे या मुझे..

रैनिवस्काया—भाग, रे—याशा, चल भाग !

याशा—[रैनिवस्कायाको उसका पर्स देकर] जी, अभी जा रहा हूँ। [मुश्किलसे अपनी हँसी दबाकर] बस, इसी मिनट !

[जाता है]

लोपाखिन—वह लखपति देरिगानोव है न, वह आपकी जायदादको खरीदना चाहता है। सुनते हैं, नीलाममें वह खुद आयेगा।

रैनिवस्काया—यह तुमने कहाँ सुना ?

लोपाखिन—शहरमें सब यही कह रहे हैं।

गायेव—यारोस्लाव्लवाली मौसीने कुछ सहायता करनेका वचन तो दे दिया है, लेकिन कब और कितना वह देगी, सो नहीं पता।

लोपाख़िन—कितना भेज देगी वह ? एक लाख ?—दो लाख ?

रैनिवस्काया—यही ज्यादा-से ज्यादा दस-पन्द्रह हजार ! और उसीके लिए हम उनके बड़े अहसानमन्द होंगे।

लोपाखिन—माफ कीजिए, आप जैसे अस्थिर चित्तवाले अव्यावहारिक और विलक्षण लोगोंसे पूरी जिन्दगीमें अभी तक मेरा पाला नहीं पड़ा था। मैं आपसे सीधी-सादी भाषा में साफ बता रहा हूँ कि आपकी जायदाद नीलाम होने जा रही है, और लगता है आप लोग समझना ही नहीं चाहते।

रानेव्स्काया—अच्छा, तो हमलोग क्या करें? बताओ न, क्या करें?

लोपाखिन—रोज ही क्या आपको नहीं बताता? एक ही बात है जो रोज-रोज कह देता हूँ। आपको चेरीका बगीचा और जमीनको बँगले बनानेके लिए किरायेपर उठा देना चाहिए। और यह आप फौरन कर डालिए, जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी। नीलाम सिरपर आ गया है। जरा समझनेकी कोशिश कीजिए! सिर्फ एक बार बँगले बनानेका मनमें निश्चय कर डालिए, और फिर जितना रुपया चाहो मिल जायगा। सोचिए साहब, आप बचे-बचाये रहेंगे ही।

रानेव्स्काया—[illegible] बंगलोंमें बसने आनेवाले लोग—माफ करो, [illegible] सब अच्छा नहीं लगता है।

गायेव—[illegible] ठीक [illegible] बात मानता हूँ।

लोपाखिन—[illegible] हो गई! [illegible] लूँगा [illegible] जायगा। [illegible] बोले नहीं [illegible] जाता। [illegible] पागल [illegible] [गायेव से] आप [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लोपाखिन—सोचनेको उसमें रक्खा ही क्या है ?

रैनिवस्काया—मैं प्रार्थना करती हूँ मत जाओ। तुम यहाँ रहते हो तो मेरा मन लगा रहता है। [कुछ देर रुककर] मुझे ऐसा लगता रहता है, जैसे कुछ होनेवाला है। जैसे यह घर अभी-अभी हमारे देखते-देखते गिर पड़ेगा और हमारे कानोंके पर्दे फट जायेंगे।

गायेव—[बड़ी अन्यमनस्कतासे] सफेद गेंद पॉकेटमें।—ऊँह, बाल-बाल बच गई।

रैनिवस्काया—हम लोग बड़े पापी हैं।

लोपाखिन—तुम ? आखिर क्या पाप आपने कर डाला ?

गायेव—[मुँहमें एक मिठाई डाल लेता है] लोग कहते हैं मैंने अपनी सारी जायदाद शक्करकी गोलियोंमें खा डाली। [हँसता है]

रैनिवस्काया—हाय, मेरे पापोंका क्या पूछना ! मैंने हमेशा बिना जरा भी सोचे-समझे, पागलोंकी तरह रुपया बहाया है। ऐसे आदमी से शादीकर बैठी, जिसे कर्ज करनेके सिवा कोई और काम ही नहीं था। ऐसी बुरी तरह उसने शराब पी कि शैम्पेन पीते-पीते ही उसके प्राण निकल गये। दुर्भाग्य मेरा यह कि फिर मैंने दूसरे आदमीको प्यार किया—और फौरन ही मुझे सबसे पहला दण्ड भी मिला—मेरे ऊपर वज्र टूट पड़ा. यहीं, इसी नदीमें मेरा बेटा डूब मरा ! फिर मैं विदेश चली गई ताकि यहाँ कभी न लौटूँ. .इस नदीको कभी न देखूँ हमेशा बाहर ही घूमती रहूँ . मैं आँखें बन्द करके भाग खड़ी हुई दिग्भ्रान्तकी तरह। लेकिन वह मेरा दूसरा पति क्रूरता और निर्दयतासे मेरे पीछे लगा रहा—मैंने मैन्तॉनमें एक बँगला खरीदा—क्योंकि यह साहब वहाँ जाकर बीमार हो गये। तीन साल तक रात और दिन एक पल आराम नहीं मिला। इनकी उस बीमारी और

बीमारी दोनोंने मुझे चूर-चूर कर डाला। मेरी आत्माका जैसे सारा रस निचुड़ गया। आखिरी साल जब कर्जेके लिए मेरा बँगला बिक गया तो मैं पेरिस चली आई। यहाँ इन साहब ने दूसरी औरतके लिए मेरा सारा माल मता छीनकर मुझे छोड़ दिया। तब मैंने जहर खाकर मरनेकी ठान ली।.. हाय, कैसा शर्मनाक! फिर अचानक मेरे दिलमें रूसके लिए, अपने देशके लिए, अपनी छोटी बच्चीके लिए हूक-सी उठने लगी। [अपने आँसू पोंछती है] हे भगवान्, हे प्रभो मेरे पापोंको क्षमा कर, मेरे ऊपर दया कर! अब मुझे और दण्ड मत दे! [अपनी जेबसे एक तारका कागज निकालती है] पेरिस से मिला। आज ही यह तार मिला है। वह मुझसे क्षमा माँगते हुए लौट आनेकी खुशामद करता है। [तारको फाड़ देती है] कहीं संगीत हो रहा लगता है। [सुनती है]

गायेव—यह हमारी प्रसिद्ध पुरानी यहूदी संगीत-मण्डली है। [illegible]

रानेव्स्काया—[illegible]

लोपाखिन—[सुनते हुए] मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं देता। [illegible] [हँसता है] [illegible]

[illegible]—[illegible]

लोपाखिन—सोचनेको उसमें रक्खा ही क्या है ?

रैनिवस्काया—मैं प्रार्थना करती हूँ मत जाओ। तुम यहाँ रहते [illegible] मन लगा रहता है। [कुछ देर रुककर] मुझे ऐसा लगता [illegible] है, जैसे कुछ होनेवाला है। जैसे यह घर अभी हमारे [illegible] देखते गिर पड़ेगा और हमारे कानोंके पर्दे फट जायगे।

गायेव—[बड़ी अन्यमनस्कतामें] सफेद गेंद पॉकेटमें।—[illegible] बच गई।

रैनिवस्काया—हम लोग बड़े पापी हैं।

लोपाखिन—तुम ? आखिर क्या पाप आपने कर डाला ?

गायेव—[मुंहमें एक मिठाई डाल लेता है] लोग कहते हैं [illegible] सारी जायदाद शक्करकी गोलियोंमें खा डाली। [हँसता है]

रैनिवस्काया—हाय, मेरे पापोंका क्या पूछना। मैंने हमेशा [illegible] भी सोचे-समझे, पागलोंकी तरह रुपया [illegible] है। [illegible] मे शादीकर बैठी, जिसे कर्ज करनेके सिवा कोई [illegible] नहीं था। ऐसी बुरी तरह उसने शराब पी कि [illegible] ही उसके प्राण निकल गये। दुर्भाग्य मेरा यह कि फिर [illegible] आदमीको प्यार किया—और फौरन ही मुझे [illegible] भी मिला—मेरे ऊपर वज्र टूट पड़ा.. यहीं, इसी [illegible] मेरा बेटा डूब मरा। फिर मैं विदेश चली गई [illegible] न लौटूँ इस नदीको कभी न देखूँ [illegible] रहूँ .मैं आँखें बन्द करके भाग खड़ी हुई [illegible] लेकिन वह मेरा दुश्मन पति [illegible] लगा रहा—मैंने मेन्तोनमें एक बंगला [illegible] साहब वहाँ जाकर बीमार हो गये। तीन साल [illegible] दिन एक पल आराम नहीं मिला। [illegible]

बीमार दोनोने मुझे चूर-चूरकर डाला। मेरी आत्माका जैसे सारा रस निचुड गया। आखिरी साल जब कर्जेके लिए मेरा बॅगला बिक गया तो मै पैरिस चली आई। यहाँ इन साहब ने दूसरी औरतके लिए मेरा सारा माल मता छीनकर मुझे छोड दिया। तब मैने जहर खाकर मरनेकी ठान ली।.. हाय, कैसी शर्मनाक! फिर अचानक मेरे दिलमे रूसके लिए, अपने देशके लिए, अपनी छोटी बच्चीके लिए हूक-सी उठने लगी. [अपने आँसू पोछती है] हे भगवान्, हे प्रभो, मेरे पापोको क्षमाकर, मेरे ऊपर दयाकर! अब मुझे और दण्ड मत दे। [अपनी जेबसे एक तारका कागज निकालती है] पैरिस से मुझे आज ही यह तार मिला है। वह मुझसे क्षमा माँगते है, लौट आनेकी खुशामद करते है। [तारको फाड देती है] कही सङ्गीत हो रहा लगता है। [सुनती है]

गायेव—वही हमारी प्रसिद्ध पुरानी यहूदी सगीत-मडली है। चार वायलिन, एक बाँसुरी, और दो बास है।

रॅनिवस्काया—अच्छा, अभी तक चली आ रही है वह मण्डली? किसी दिन सन्ध्याको इन्हे बुलाना चाहिए, फिर डटकर नाच-गाना हो!

लोपाखिन—[सुनते हुए] मुझे तो कुछ भी सुनाई नही देता [गुनगुनाता है] "पैसेके लिए जर्मन, रूसीको बना देगा फ्रान्सीसी!" [हँसता है] कल थियेटरमे मैने ऐसी चीज देखी कि बस! बुरी तरह मजाकिया।

रॅनिवस्काया—हो सकता है उसमे मजाकिया किस्मकी कोई बात ही न हो। खेलको देखनेकी बजाय तुम कभी-कभी खुद अपनेको ही देख लिया करो। क्या नीरस रूखी तुम लोगोकी जिन्दगी है। और तुम हो कि दिनभर बक-बक ही करते रहते हो।

लोपाखिन—सोचनेको उसमें रक्खा ही क्या है ?

रैनिवस्काया—मैं प्रार्थना करती हूँ मत जाओ। तुम यहाँ रहते हो तो मेरा मन लगा रहता है। [कुछ देर रुककर] मुझे ऐसा लगता रहता है, जैसे कुछ होनेवाला है। जैसे यह घर अभी-अभी हमारे देखते-देखते गिर पड़ेगा और हमारे कानोंके पर्दे फट जायेंगे।

गायेव—[बड़ी अन्यमनस्कतामें] सफेद गेंद पॉकेटमें।—ऊँह, बाल-बाल बच गई !

रैनिवस्काया—हम लोग बड़े पापी हैं।

लोपाखिन—तुम ? आखिर क्या पाप आपने कर डाला ?

गायेव—[मुँहमें एक मिठाई डाल लेता है] लोग कहते हैं मैंने अपनी सारी जायदाद शक्करकी गोलियोंमें खा डाली। [हँसता है]

रैनिवस्काया—हाय, मेरे पापोंका क्या पूछना ! मैंने हमेशा बिना जरा भी सोचे-समझे, पागलोंकी तरह रुपया बहाया है। ऐसे आदमीसे शादीकर बैठी, जिसे कर्ज करनेके सिवा कोई और काम ही नहीं था। ऐसी बुरी तरह उसने शराब पी कि शैम्पेन पीते-पीते ही उसके प्राण निकल गये। दुर्भाग्य मेरा यह कि फिर मैंने दूसरे आदमीको प्यार किया—और फौरन ही मुझे सबसे पहला दण्ड भी मिला—मेरे ऊपर वज्र टूट पड़ा. . यहीं, इसी नदीमें मेरा बेटा डूब मरा ! फिर मैं विदेश चली गई ताकि यहाँ कभी न लौटूँ .इस नदीको कभी न देखूँ हमेशा बाहर ही घूमती रहूँ. .मैं आँखें बन्द करके भाग खड़ी हुई ..दिग्भ्रान्तकी तरह। लेकिन वह मेरा दूसरा पति क्रूरता और निर्दयतासे मेरे पीछे लगा रहा—मैंने मैन्तोंनमें एक बँगला खरीदा—क्योंकि यह साहब वहाँ जाकर बीमार हो गये। तीन साल तक रात और दिन एक पल आराम नहीं मिला। इनकी उस बीमारी और

बीमार दोनोंने मुझे चूर-चूरकर डाला। मेरी आत्माका जैसे सारा रस निचुड गया। आखिरी साल जब कर्जेके लिए मेरा बॅगला बिक गया तो मै पैरिस चली आई। यहाँ इन साहब ने दूसरी औरतके लिए मेरा सारा माल मता छीनकर मुझे छोड दिया। तब मैने जहर खाकर मरनेकी ठान ली।.. हाय, कैसी शर्मनाक!. फिर अचानक मेरे दिलमे रूसके लिए, अपने देशके लिए, अपनी छोटी बच्चीके लिए हूक-सी उठने लगी [अपने आँसू पोछती है] हे भगवान्, हे प्रभो, मेरे पापोको क्षमाकर, मेरे ऊपर दयाकर! अब मुझे और दण्ड मत दे! [अपनी जेबसे एक तारका कागज निकालती है] पैरिस से मुझे आज ही यह तार मिला है! वह मुझसे क्षमा माँगते है, लौट आनेकी खुशामद करते है। [तारको फाड देती है] कही सङ्गीत हो रहा लगता है। [सुनती है]

गायेव—वही हमारी प्रसिद्ध पुरानी यहूदी सगीत-मडली है। चार वायलिन, एक बाँसुरी, और दो बास है।

रॅनिवस्काया—अच्छा, अभी तक चली आ रही है वह मण्डली? किसी दिन सन्ध्याको इन्हे बुलाना चाहिए, फिर डटकर नाच-गाना हो!

लोपाखिन—[सुनते हुए] मुझे तो कुछ भी सुनाई नही देता [गुनगुनाता है] "पैसेके लिए जर्मन, रूसीको बना देगा फ्रान्सीसी!" [हँसता है] कल थियेटरमे मैने ऐसी चीज देखी कि बस! बुरी तरह मजाकिया।

रॅनिवस्काया—हो सकता है उसमे मजाकिया किस्मकी कोई बात ही न हो। खेलको देखनेकी बजाय तुम कभी-कभी खुद अपनेको ही देख लिया करो। क्या नीरस रूखी तुम लोगोकी जिन्दगी है! और तुम हो कि दिनभर बक-बक ही करते रहते हो!

लोपाखिन—सो तो सही है। ईमानदारीसे अगर कहो तो हमलोग बिल्कुल बेवकूफों की-सी जिन्दगी जीते हैं [कुछ देर रुककर] मेरा बाप बिल्कुल बुद्धू—किसान था। न तो वह खुद कुछ जानता था, न मुझे ही उसने कुछ सिखाया। बस, नशेमें धुत होना तो छड़ीसे मुझे ख़ूब पीटता। मैं भी ठीक वैसा ही गोबर-गनेश हूँ। ढंगसे मैंने कुछ भी तो नहीं पढ़ा तभी। लिखाई मेरी ऐसी भद्दी, कि बस, सूअरकी तरह लिखता हूँ। लोगोंके सामने लिखनेमें भी शर्म लगती है... [

रैनिवस्काया—अच्छा भैया, अब तो तुम्हें शादी कर डालनी चाहिए।

लोपाखिन—हाँ-हाँ.. सो तो ठीक कहती हैं आप।

रैनिवस्काया—हमारी वार्यासे ही शादी कर डालो न, बड़ी अच्छी लड़की है।

लोपाखिन—जी हाँ, ठीक है।

रैनिवस्काया—शील-स्वभावकी भी अच्छी है। दिनभर कुछ न कुछ करती ही रहती है। सबसे बड़ी बात, इससे ज्यादा और क्या चाहिए कि वह तुम्हें चाहती है...तुम भी तो हमेशासे उसे पसन्द करते हो।

लोपाखिन—अरे, मुझे इसमें आपत्ति ही कहाँ है? वह तो बड़ी ही अच्छी लड़की है।

[थोड़ी देर चुप्पी]

गायेव—छः हजार रूबल सालानाकी मुझे बैंकमें एक जगह मिल रही है। तुम्हें पता है?

रैनिवस्काया—तुम और बैंक में? जैसे हो, अपने घर बैठो।

[ओवरकोट लेकर फ़ीर्सका प्रवेश]

फीर्स—सरकार जाडा है। इसे पहन ले।

गायेव—तुम भी फीर्स एक मुसीबत हो।

फीर्स—इस तरह सरकार, आप थोडे ही रह सकते है। सुबह बिना कुछ कहे-सुने चले गये—[उसके कपडे ध्यान से देखता है]

रैनिवस्काया—फीर्स, तुम तो बहुत बूढे दिखाई देते हो।

फीर्स—क्या कहा बीबीजी ?

लोपाखिन—उन्होने कहा, तुम ज्यादा बूढे दिखाई देते हो।

फीर्स—बडी लम्बी जिन्दगी काटी है मैने सरकार। जब आपके पिताजीका जन्म भी नही हुआ था तब लोगोने मेरी शादी तय कर डाली थी...[हँसता है] गुलामोकी स्वतन्त्रतासे* पहले ही मै उनका खास अर्दली था। मै तो 'स्वतन्त्र' होनेको राजी नही हुआ। अपने पुराने मालिकके साथ ही रहता रहा। . [कुछ देर चुप रहकर] मुझे याद है, उन लोगोंने कैसी-कैसी खुशियाँ मनाई थी ..और कम्बख्त यह तक जानते नही थे कि किस बातपर यह खुशियाँ मना रहे है ?

लोपाखिन—वे पुराने दिन भी कैसे अच्छे थे। कमसे कम कोडेबाजी तो होती थी।

फीर्स—[कुछ न सुनकर] जरूर! किसान अपनी हैसियत समझते थे, मालिक अपनी। लेकिन अब तो सभी मनके राजा है—कोई सिर पूँछ ही समझमे नही आता।

गायेव—फीर्स अब चुप रहो। कल मुझे शहर जाना है। एक जनरलसे मेरा परिचय करानेकी बातचीत है। शायद वह हमे कर्ज दे देगा।

---

* १८६१ का किसानोका दासता-उन्मूलन-आन्दोलन।

लोपाखिन—उससे क्या होगा ? आप विश्वास रखिये उससे आप अपना सूद भी नहीं चुका पायेंगे।

निवस्काया—यह तो सब इनकी बकवास है। ऐसा कोई जनरल-वनरल नहीं है।

[त्रोफिमोव, आन्या और वार्याका प्रवेश]

गायेव—हमारी लड़कियाँ आ रही हैं।

आन्या—देखो बेंच पर, अम्मा वो बैठी।

रैनिवस्काया—[प्यारसे] यहाँ आओ, आओ। यहाँ आ जाओ बिटिया [आन्या और वार्याको बाहोंमें कसती है] काश, कि तुम जानतीं मैं तुम दोनोंको कितना प्यार करती हूँ! यहाँ मेरे पास बैठ जाओ। हाँ, ऐसे!

[सब बैठ जाती हैं]

लोपाखिन—यह हमारे चिरन्तन-विद्यार्थी साहब हमेशा छोकरियोंके साथ लगे रहते हैं।

त्रोफिमोव—अरे, आप अपना काम देखिये।

लोपाखिन—अभी आप पचासके हो जायेंगे और फिर भी आप विद्यार्थी ही हैं।

त्रोफिमोव—अपने यह बेवकूफीके मजाक बन्द करो!

लोपाखिन—अरे बुद्धूमल, इतना, आप चिढ किस बात पर रहे हैं?

त्रोफिमोव—उफ! कह तो दिया मेरा पीछा छोड दो।

लोपाखिन—अच्छा, ज़रा यह तो बताओ, तुम्हारा मेरे बारेमें क्या ख्याल है?

त्रोफिमोव—तो जनाब, यैर्मोलाय अलैक्सीविच साहब, सुनो अपने बारेमें मेरी राय। आदमी तुम धनी हो ही, जल्दी ही लखपति हो

जाओगे। जैसे प्रकृतिकी व्यवस्था ठीक रखनेके लिये ऐसा जगली जानवर, जो रास्तेमे आनेवाले हर शिकारको निगल जाए उपयोगी है—ठीक वही हाल तुम्हारा है।

[सब हँसते है]

वार्या—पेत्या, अच्छा हो तुम हमे ग्रहोके बारेमे कुछ बताओ।

रैनिवस्काया—नहीं, कल हमलोग जो बात कर रहे थे उसे ही पूरी करे।

त्रोफिमोव—किसके बारेमे ?

गायेव—शेखीके।

त्रोफिमोव—हॉ, कल हम काफी देर तक लम्बी-चोडी बहस करते रहे थे, मगर किसी नतीजे पर नहीं पहुँचे। शेखीका हम जिस अर्थमे प्रयोग करते है उसमे कुछ न कुछ रहस्यका तत्त्व रहता है। यो अपनी जगह आप ठीक हो सकते है। लेकिन बिना अधिक उलझन और गहराईमे जाये, अगर जरा भी सामान्य तर्कसे देखे तो शेखीकी जरूरत क्या है ? अगर मानसिक रूपसे आदमी बिल्कुल दीवालिया ही है, या जैसा कि लोग होते है, गॅवार, बुद्धू या भीतरसे दुखी है तब उसके लिये शेखीकी उपयोगिता क्या है ? अब अपने-आपको सबसे अच्छा या ऊँचा सिद्ध करनेका प्रयत्न हमे बन्द कर देना चाहिए। जो अपना काम हो सो किये जाइए—यही बहुत काफी है।

गायेव—यानी मर जाइए।

त्रोफिमोव—कौन जानता है ? और इस मरनेका भी आखिर मतलब क्या है ? शायद आदमीमे हजारो प्रकारके ज्ञान भरे पडे है, लेकिन हम तो इतना ही जानते है कि मृत्युके समय उसकी केवल पॉच ज्ञानेन्द्रियॉ समाप्त हो जाती है। हो सकता है,—उस समय उसकी शेष पिचानवे जीवित ही रहती हो।

रैनिवस्काया—पेत्या, तुम तो बड़े होशियार हो गये हो।

लोपाखिन—[व्यंग्यसे] खतरनाक रूपसे होशियार।

त्रोफिमोव—मानवता अपनी शक्तियोंका विकास करती हुई बढ़ती है। आज जो चीज़ आदमीकी पहुँचसे बाहर है—एक न एक दिन उसकी पकड़में आ जायेगी, उसके लिए सरल हो जायेगी। हमें तो सिर्फ काम किये जानेकी ज़रूरत है—अपनी पूरी शक्तियोंसे सत्यके खोजियोंको बढ़ावा देते जानेकी ज़रूरत है। जहाँ तक मैं जानता हूँ आज हमारे रूसमें काम करनेवाले बहुत ही थोड़े हैं। मुझे पता है, बुद्धिजीवियोंमें अधिकांश न तो कुछ पाना चाहते हैं, न करते हैं—वे अभी तक तो किसी भी कामके हैं नहीं। कहते वे अपनेको बुद्धिजीवी हैं, लेकिन नौकरोंसे कुत्तोंकी तरह व्यवहार करते हैं—किसानोंसे ऐसे पेश आते हैं जैसे वे जानवर हों। कुछ भी सीखते नहीं हैं। गम्भीरतासे कुछ पढ़ना-लिखना तो बहुत दूर की बात है—सच पूछा जाय तो कुछ भी नहीं करते। सिर्फ विज्ञानकी बातें करते हैं—कलाके बारेमें बिल्कुल कोरे होते हैं। वे सब गम्भीर किस्मके लोग हैं—हमेशा मनहूस सूरतें बनाये रहते हैं—हर चीजमें दार्शनिकता छोंकते हैं और भारी-भारी मसलों और सिद्धान्तोंपर बातें करते हैं। लेकिन उनमें निन्नानबे प्रतिशत जङ्गलियोंकी तरह रहते हैं। घूँसों और गालियोंसे कम तो बातें ही नहीं करते। ठूँस-ठूँसकर खाते हैं, गन्दगी और घुटनमें पड़े रहते हैं—उनके चारों तरफ बदबू, खटमल और नैतिक-गन्दगी ही दिखाई देती है। इसका मतलब साफ है कि हमारी यह सारी अच्छी-अच्छी बातें सिर्फ अपने और दूसरोंको बहकानेके लिए हैं। हम लोग बातें इतनी करते हैं, आप मुझे एक भी तो बच्चोंके पालन-पोषणकी नर्सरी बता-

इए—रीडिंग-रूम बताइए ? सिर्फ उपन्यासोमे ही उनका अस्तित्व है। वास्तविक जीवनमे उनका कही अता पता नही है। गन्दगी गॅवारूपन और एशियाई-ईर्ष्या उसके सिवा यहाॅ और कुछ भी तो नही है। मुझे तो भाई, इन गम्भीर-चेहरोसे डर लगता है, घृणा होती है। इन गम्भीर बातोसे मै तो कतराता हूॅ। चुप रहकर ही हम लोग कमसे कम इससे तो अच्छे ही है।

लोपाखिन—आपको पता है, मै सुबह चारके बाद उठता हूॅ और सुबहसे लेकर सन्ध्या तक काममे ही फॅसा रहता हूॅ। मेरे पास अपना रुपया है—दूसरोका रुपया है। वह सब मेरे ही हाथो इधरसे-उधर होता रहता है। इसलिए मुझे पता है कि मेरे आप-पासके ये सब लोग कैसे है। लोग कितने बुरे या गैर ईमानदार है, इस बातको देखनेके लिए आपको अपनी ओरसे कुछ भी करनेकी जरूरत नही। कभी-कभी जब मै सुबह जागा हुआ लेटा रहता हूॅ तो सोचता हूॅ—'हे भगवान्, तू ने हमे ये लम्बे-चौड़े जङ्गल दिये है—असीम मैदान दिये है—दूर-दूर तक फैले क्षितिज दिये है—इस ऐसी दुनियाॅमे रहकर तो हमे दैत्य होना चाहिए था।'

रॅनिवस्काया—तो तुम दैत्य होना चाहते हो ? ये दैत्य कहानी-किस्सोंकी किताबोमे ही अच्छे लगते है। वास्तविक जिन्दगीमे तो वे हमारे प्राण खा लेगे।

[पृष्ठभूमिमें गिटार बजाता हुआ एपिखोदोव जाता है]

रॅनिवस्काया—[स्वप्नाविष्ट-सी] ऐपिखोदोव जा रहा है।

आन्या—[खोई-खोई-सी] हाॅ, ऐपिखोदोव जा रहा है।

गायेव—भाइयो, दिन छिप गया है।

अग्निमोव—हाॅ।

गायेव—[धीरे-धीरे लेकिन बड़ी आलङ्कारिक भाषामें] हे प्रकृति, ओ दिव्य प्रकृति, अपने अनन्त तेजसे तू प्रकाशित है...निरपेक्ष और सुन्दर. ...तू—जिसे हम 'माँ' कहते हैं, तू हमारे जीवन और मरणके किनारोंको मिलाती है.. तू ही हमें जीवन देती है और तू ही उसका नाश कर देती है।

लोपाखिन—"ऑफोलिया, देवी, अपनी प्रार्थनाओंमें मेरे पापोंको भी याद कर लेना।"

रैनिवस्काया—चलें, खानेका समय हुआ जा रहा है।

वार्या—हाय, उसने मुझे कैसा डरा दिया। मेरा तो दिल अभीतक धक-धक कर रहा है।

लोपाखिन—भाइयो और बहनो, एक बार आपको फिर याद दिला दूँ, बाईस अगस्तको चेरीका बगीचा नीलाम हो जायेगा। कुछ सोचिए, उसके बारेमें कुछ सोचिए।

[त्रोफिमोव और आन्याके सिवा सब जाते हैं]

आन्या—[हँसकर] मैं तो उस गुण्डे मुसाफिरकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। उसने वार्याको डरा दिया और हम लोग अकेले रह गये।

त्रोफिमोव—वार्याको डर है कि कहीं हम एक-दूसरेके प्यारमें न पड़ जायँ। इसलिए पूरे-पूरे दिन वह हमें अकेला नहीं छोड़ती। उसकी सङ्कीर्ण बुद्धिमें यह बात कभी आ ही नहीं सकती कि हम लोग प्यारसे ऊपर हैं। हमारी जिन्दगीका सम्पूर्ण अर्थ और लक्ष्य है कि—उस हर क्षणभङ्गुर छलना और तुच्छताको अपने रास्तेसे हटा दें जो हमारी प्रसन्नता और स्वतन्त्रताका रास्ता रोके खड़ी है। बढ़ो, सुदूर क्षितिजमें चमकते हुए उस झिलमिलाते सितारे तक हमें आगे बढ़ते जाना है। आगे बढ़ो, दोस्तो पीछे मत घिसटो।

आन्या—[अपने हाथ एक दूसरेमे फँसाकर] सच, तुम कैसा अच्छा बोलते हो ! [कुछ देर चुप रहकर] यहाँ बडा अच्छा लग रहा है ।

त्रोफिमोव—हाँ, मौसम बडा सुहावना है ।

आन्या—पेत्या, पता नही तुमने मुझे क्या कर दिया है कि मै अब चैरीके बगीचेको पहलेकी तरह प्यार नही करती । पहले तो मै इसे प्राणोंकी तरह चाहती थी । मै सोचा करती थी, हमारे बगीचेकी तरहकी धरतीपर कोई चीज नही है ।

त्रोफिमोव—सारा रूस ही तो हमारा बगीचा है । आन्या, धरती बहुत सुन्दर है, बहुत बडी है । और इसमे एकसे एक सुन्दर चीजे है [कुछ क्षण चुप रहकर]—जरा सोचकर तो देखो आन्या । तुम्हारे दादा-परदादा और सारे पुरखे गुलामोंको पालनेवाले थे. . जीते-जागते प्राणियोंके मालिक थे—इस बगीचेकी हर चॅरीसे, हर पत्तीसे, हर तनेसे ऐसा नही लगता जैसे एक जीवित-आत्मा हमारी ओर आँखे फाड-फाड़कर देख रही हो ? क्या तुम्हें उनकी आवाजे नही सुनाई देती ? अरे मालिक लोगो, इन सबने तुम्हें बदल डाला है—तुम्हारे पुरखों और तुम्हें दोनोंको बदल डाला है । इसी लिए तो तुम या तुम्हारी माँ , कोई भी महसूस नही करते कि तुम लोग उन्हीके बलपर रङ्गरेलियाँ उडा रहे हो जिन्हें तुम्हारे घरमें घुसने तककी इजाजत नही है । उफ ! कैसा भयङ्कर है ! यह तुम्हारा बगीचा भी बडी डरावनी जगह है । सन्ध्या या रातको यहाँ जब कोई घूमता है तो झुटपुटेमे पेडोंकी मनहूस छाले झिलमिलाती है । पुराने-पुराने चॅरीके पेड भयङ्कर स्वप्नोंसे त्रस्त सदियों पहलेके युगमें डूबे लगते है । हाँ, हाँ ! हम लोग अभी भी कमसे कम दो-सौ साल पिछडे

हुए हैं। अभी तक हमने पाया ही क्या है ? अपने अतीतके लिए हमारे पास कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है। हम तो सिर्फ सूक्तियाँ बघारते हैं, आजके पतन और ह्रासपर रोते हैं और वोद्का पीते हैं। साफ बात है कि वर्तमानमें जीनेके लिए हमें अतीतसे पीछा छुड़ाना होगा—हमें उसे तोड़ फेंकना होगा। और अतीतको तिलांजलि हम तभी दे सकते हैं जब इसके लिए काफी कष्ट उठायें ... अन्धाधुन्ध और अनथक परिश्रम करें। यह समझ लेना, आन्या !

आन्या—जिस मकानमें हमलोग रहते हैं, अब वह हमारा नहीं रहा। मैं तुमसे सच कहती हूँ मैं अब इसे छोड़कर चली जाऊँगी।

त्रोफिमोव—अगर अब भी यहाँकी चाबियाँ तुम्हारे पास हों, तो फेंको उन्हें कुएँमें, और भाग जाओ। हवाकी तरह उन्मुक्त, स्वतन्त्र बनो !

आन्या—[आनन्दोवेगसे] आह, तुमने कितने सुन्दर ढङ्गसे यह बात कही है।

त्रोफिमोव—आन्या, मेरा विश्वास करो ! मैं अभी तीसका भी नहीं हूँ—मैं नवयुवक हूँ। हालाँकि अभी भी मैं विद्यार्थी ही हूँ, लेकिन कितना जमाना देख चुका हूँ। जाड़ा आते ही मैं भूखा रहूँगा, बीमार रहूँगा—परेशान रहूँगा और भिखारीकी तरह दाने-दानेको मोहताज हो जाऊँगा। भाग्यके कितने ऊँच-नीच मैंने नहीं जाने ? कहाँ-कहाँ मैंने ठोकरें नहीं खाईं ? पर हर क्षण, दिन और रात, मेरी आत्मामें न जाने कैसी-कैसी बातें झिलमिलाया करती हैं आज मुझे प्रसन्नताका आभास हो रहा है। आन्या, मैं उसे अपनी ओर आते हुए साफ देख रहा हूँ।

आन्या—[उदास होकर] चाँद निकल आया है।

[एपीखोदोव गिटारपर वही विषादभरी धुन बजाता सुनाई देता है। चाँद निकल आया है। चिनारके पेडोंके पास कहीं वार्या आन्याको खोजती पुकार रही है—"आन्या तुम कहाँ हो!"]

त्रोफिमोव—हाँ, चाँद निकल आया है। [कुछ क्षण मौन] देखो, वह खुशी कैसी चली आ रही है।.. .. वह आ रही . मेरे पास और पास चली आ रही है। मुझे उसके कदमोंकी आवाजें सुनाई देने लगी हैं.. .. अगर हम उसे कभी देख न सकें, जान न सकें, उसकी ओरसे मुँह फेर लें, तो क्या उसका कुछ बिगडता है? दूसरे देखेंगे—हमारे बादवाले देखेंगे उसे।

वार्या—[नेपथ्यसे] आन्या, तुम कहाँ हो?

त्रोफिमोव—लो, यह वार्या फिर आ मरी। [गुस्सेसे] मुसीबत है।

आन्या—खैर, चलो नीचे नदीपर चलें। वहाँ बडा सुहावना है।

त्रोफिमोव—हाँ, वहीं चलें।

[जाते हैं]

वार्याकी आवाज—"आन्या! ओ आन्या!"

[पर्दा गिरता है]



हुए हैं। अभी तक हमने पाया ही क्या है? अपने अतीतके लिए हमारे पास कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है। हम तो सिर्फ सूक्तियाँ बघारते हैं, आजके पतन और हासपर रोते हैं और वोद्का पीते हैं। साफ बात है कि वर्तमानमें जीनेके लिए हमें अतीतसे पीछा छुडाना होगा—हमें उसे तोड फेंकना होगा। और अतीतको तिलांजलि हम तभी दे सकते हैं जब इसके लिए काफी कष्ट उठायें.. ..अन्धाधुन्ध और अनथक परिश्रम करें। यह समझ लेना, आन्या!

आन्या—जिस मकानमें हमलोग रहते हैं, अब वह हमारा नहीं रहा। मैं तुमसे सच कहती हूँ मैं अब इसे छोडकर चली जाऊँगी।

त्रोफिमोव—अगर अब भी यहाँकी चाबियाँ तुम्हारे पास हों, तो फेंको उन्हें कुएँमें, और भाग जाओ। हवाकी तरह उन्मुक्त, स्वतन्त्र बनो!

आन्या—[आनन्दोवेगसे] आह, तुमने कितने सुन्दर ढङ्गसे यह बात कही है।

त्रोफिमोव—आन्या, मेरा विश्वास करो! मैं अभी तीसका भी नहीं हूँ—मैं नवयुवक हूँ। हालाँकि अभी भी मैं विद्यार्थी ही हूँ, लेकिन कितना जमाना देख चुका हूँ। जाडा आते ही मैं भूखा रहूँगा, बीमार रहूँगा—परेशान रहूँगा और भिखारीकी तरह दाने-दानेको मोहताज हो जाऊँगा। भाग्यके कितने ऊँच-नीच मैंने नहीं जाने? कहाँ-कहाँ मैंने ठोकरें नहीं खाईं? पर हर क्षण, दिन और रात, मेरी आत्मामें न जाने कैसी-कैसी बातें झिलमिलाया करती हैं. आज मुझे प्रसन्नताका आभास हो रहा है। आन्या, मैं उसे अपनी ओर आते हुए साफ देख रहा हूँ।

आन्या—[उदास होकर] चॉद निकल आया है ।

[एपीखोदोव गिटारपर वही विषादभरी धुन बजाता सुनाई देता है । चॉद निकल आया है । चिनारके पेडोके पास कही वार्या आन्याको खोजती पुकार रही है—"आन्या तुम कहाँ हो !"]

त्रोफ़िमोव—हॉ, चॉद निकल आया है । [कुछ क्षण मौन] देखो, वह खुशी कैसी चली आ रही है । . .. वह आ रही . मेरे पास और पास चली आ रही है । मुझे उसके कदमोकी आवाजे सुनाई देने लगी है. . अगर हम उसे कभी देख न सके, जान न सके, उसकी ओरसे मुँह फेर ले, तो क्या उसका कुछ बिगडता है ? दूसरे देखेगे—हमारे बादवाले देखेगे उसे ।

वार्या—[नेपथ्यसे] आन्या, तुम कहॉ हो ?

त्रोफिमोव—लो, यह वार्या फिर आ मरी । [गुस्सेसे] मुसीबत है ।

आन्या—खैर, चलो नीचे नदीपर चलें । वहॉ बडा सुहावना है ।

त्रोफिमोव—हॉ, वहीं चले ।

[जाते है]

वार्याकी आवाज—"आन्या ! ओ आन्या !"

[पर्दा गिरता है]



तीसरा अंक

[एक बडी बैठक । इसे एक बडे ड्राइंगरूममें महराबदार हिस्से द्वारा बाँटकर बनाया गया है । सन्ध्याका समय । एक झाड जल रहा है । भीतरके कमरेमें वही यहूदी-आर्केस्ट्रा बजता सुनाई दे रहा है जिसका ज़िक्र दूसरे अंकमें आया है । बडेवाले ड्राइंगरूममें सब लोग 'महाराम' नाच रहे हैं । सिम्योनोव पिश्चिक चिल्लाता हुआ सुनाई दे रहा है "जोडे-जोडेमें आइये ।"

इस ड्राइंगरूममें लोग जोडे-जोडेमें प्रवेश करते हैं । पहले चार्लोटा और पिश्चिक, फिर त्रोफिमोव और रैनिवस्काया, फिर पोस्टमास्टर क्लर्कके साथ आन्या, और फिर स्टेशनमास्टरके साथ वार्या । वार्या नाचते हुए ही चुप-चुप सिसकती अपने आँसू पोछती जा रही है । आखिरी जोडेमें दुन्याशा है । ये लोग नाचते हुए ही ड्राइंगरूम पार कर जाते हैं]

पिश्चिक—[जोर-जोरसे फ्रेंचमें बोलता है] बडे घेरेमें—बडे घेरेमें । रासकी गतिसे । भाइयो, नाचते जाइये और अपनी-अपनी साथिनका शुक्रिया अदा करते जाइये ।

[फीर्स शामके कपडे पहने हुए ट्रे में सोडावाटर लाता है । पिश्चिक और त्रोफिमोव बैठकमें प्रवेश करते हैं]

पिश्चिक—मेरा दिल कुछ कमजोर है । दो बार मुझे दौरे भी पड चुके हैं । नाचनेमें मेरे लिए काफी मेहनत पडती है, लेकिन कहावत है कि दलमें रहो तो औरोंकी तरह भोंको चाहे न भोंको, लेकिन दुम

तो हिलाओ ही। वैसे तो मेरा कहना है कि मै घोडेकी तरह मजबूत हूँ। मेरे स्वर्गीय पिताजी, भगवान उनकी आत्माको शान्ति दे, अकसर मज़ाकमे हमारी मूल-उत्पत्तिके बारेमे कहा करते थे कि सिम्योनेव-पिश्चिक लोग उसी घोडेके वंशज है जिसे कालीगुलाने अपनी सीनेटका मेम्बर बनाया था। [बैठ जाता है] लेकिन सारी मुसीबत यह है कि मेरे पास पैसा नही है। भूखे कुत्तेका विश्वास गोश्तके सिवा किसीमे नही होता [खर्राटे लेने लगता है, लेकिन फौरन ही जग पडता है] यही हाल मेरा है.. पैसेके सिवा मेरे दिमागमे कुछ और आता ही नहीं।

त्रोफिमोव—सचमुच, तुम्हारे सूरतसे टपकता तो कुछ-कुछ घोडापन ही है।

पिश्चिक—जनाब, घोडा बडा अच्छा जानवर होता है उसे बेचा जा सकता है।

[बगलवाले कमरेमे बिलियर्ड खेले जानेकी आवाज। बडे ड्राइग-रूममे जानेवाली महराबमे वार्या दिखाई देती है]

त्रोफिमोव—[चिढाते हुए] श्रीमती लोपाखिन, ऐऽ श्रीमती लोपाखिन।

वार्या—[गुस्से से] चुचके मुँहके।

त्रोफिमोव—हाँ, मै चुचके मुँहका हूँ। मुझे इस बातका गर्व है।

वार्या—[सोचते हुए रुकावट से] गानेवालोको तो हमने किराये पर बुला तो लिया, मगर उन्हे देनेको क्या रखा है हमारे पास?

[चली जाती है]

त्रोफिमोव—[पिश्चिक से] अपना सूद चुकानेके लिए पैसोका प्रबन्ध करनेमे तुमने जिन्दगीमें जितनी शक्ति खर्चकी है—अगर वही

किसी और काममें लगाई होती तो तुम दुनिया पलट कर रख देते।

पिश्चिक—प्रचण्ड मेधावी विख्यात महापुरुष दार्शनिक नीत्शेने अपनी रचनाओंमें बताया है कि बैंकके जाली नोट बना लेनेमें कोई पाप नहीं है।

त्रोफिमोव—तुमने नीत्शेको पढ़ा है?

पिश्चिक—इससे क्या? मुझे तो दाशेंका बता रही थी। अब तो अपनी यह हालत हो गई है कि शायद मैं भी बैंकके जाली नोट बनाने लगूँ। परसों मुझे ३१० रूबल दे ही देने हैं। [चौंककर जेबें देखता है] ऐ, रुपये कहाँ गये? हाय-हाय! मेरा तो रुपया खो गया। [आँखोंमें आँसू भरकर] कहाँ गया मेरा रुपया? [एकदम प्रसन्न होकर] अरे, यह है तो सही, सीवनमें चला गया था। इसने तो मेरे प्राण खींच लिए।

[रैनिवस्काया और चार्लोटा का प्रवेश]

रैनिवस्काया—['लेज़्गिंका', कज्ज़ाकी नाचका, गाना गुनगुनाती है] लियोनिद अभी तक लौटे क्यों नहीं? शहरमें क्या कर रहे हैं अब तक? [दुन्याशा से] गानेवालोंको कुछ चाय-वाय दे दो न।

त्रोफिमोव—हो सकता है अभी तक नीलाम न हुआ हो।

रैनिवस्काया—गाने-बजानेके और नाचने खेलनेके लिए तो यह वक्त वैसे ठीक नहीं है। पर खैर अब किया भी क्या जा सकता है?

[बैठकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

चार्लोटा—[पिश्चिकको ताशोंकी एक गड्डी देकर] यह ताशोंकी गड्डी है। कोई भी एक ताश मनमें सोच लो।

पिश्चिक—सोच लिया।

चार्लोटा—अब ताशोंको फेंट दो। ठीक। पिश्चिक महाशय, अब इन्हे इधर दो। एक—दो—तीन! अब जरा अपनी सामनेवाली जेबमें देखो।

पिश्चिक—[अपनी सामनेकी जेबसे एक ताश निकाल लेता है] हुकुमका अट्ठा! बिल्कुल ठीक! [आश्चर्यसे] भई, बहुत खूब!

चार्लोटा—[ताशकी गड्डी अपने हथेलीपर रखकर त्रोफिमोवकी ओर बढाते हुए] फुर्तीसे बताइए तो सबसे ऊपरका ताश क्या है?

त्रोफिमोव—अच्छा देखूँ। हुकुमकी बेगम।

चार्लोटा—ठीक! [पिश्चिकसे] अब सबसे ऊपरका ताश क्या है?

पिश्चिक—पानका टक्का।

चार्लोटा—ठीक [ताली बजाती है और ताशोंकी गड्डी गायब हो जाती है] आजका मौसम कैसा लुभावना है!

[जैसे धरतीमेंसे आ रही हो, ऐसी एक रहस्यमय जनानी आवाज़ उसकी बातका जवाब देती है—'हाँ देवी जी, सचमुच आजका मौसम बहुत अच्छा है']

चार्लोटा—तुम मेरी सुन्दरताकी देवी हो।

आवाज—और देवी, तुम भी काफी सुन्दर हो!

स्टेशनमास्टर—[ताली बजाते हुए] शाबास! अपनी आवाजको तुमने खूब साधा है।

पिश्चिक—बहुत खूब, चार्लोटा आइवानोव्ना, मैं तो हजार जानसे तुम पर लट्टू हो गया।

चार्लोटा—प्रेम? [कन्धे झटककर] यह मुँह और मसूरकी दाल? तुम प्यारके लायक हो? [जर्मन कहावत दुहराता है] "आदमी अच्छे हो सकते हो, लेकिन गायक बुरे हो।"

त्रोफिमोव—[पिश्चिकके कन्धेपर हाथ मारकर] वाह बूढे घोडे!

चार्लोटा—सावधान भाइयो ! एक और खेल ! [एक कुर्सीमे शॉल उठाकर] यह एक बहुत बढिया शाल है। मुझे इसे बेचना है ! [उसे हिलाते हुए] है कोई खरीदार ? कोई खरीदेगा ?

पिश्चिक—वाह !

चार्लोटा—एक-दो-तीन [शॉलको फुर्तीसे उठा लेती है ! शॉलके पीछेसे आन्या निकल पडती है। आन्या झुककर सबका अभिवादन करती है और अपनी माँकी ओर झपटती है। माँका आलिङ्गन करके वह बडेवाले ड्राइङ्गरूमके शोरगुल हँसी मजाक मे चली जाती है]

रैनिवस्काया—शाबास ! शाबास ! [तालियाँ बजाती है]

चार्लोटा—अच्छा फिर ! एक-दो-तीन . . . [फिर कम्बल उठा लेती है। कम्बलके पीछे वार्या अभिवादन करती झुकी खडी है]

पिश्चिक—[अथाह आश्चर्यसे] वाह कमाल है। क्या कहना !

चार्लोटा—खेल खत्म। [कम्बलको पिश्चिकके ऊपर फेंक देती है। सबका अभिवादन करती है और बडेवाले ड्राइङ्गरूममे भाग जाती है]

पिश्चिक—[उसके पीछे भागते हुए] अरे चुडैल। अजब लडकी है।
[चला जाता है]

रैनिवस्काया—लियोनिदका अभी तक कोई अता-पता नहीं है। समझमें नहीं आता कि शहरमें अब तक वह कर क्या रहे हैं ? अरे, अब तक तो सब कुछ खत्म हो गया होगा। जायदाद बिक गई, या आज नीलाम ही नहीं हुआ—हमें इतनी देर दुविधामें रखने की क्या जरूरत थी उन्हें ?

वार्या—[उसे ढाँढस बँधाती हुई] मामाने उसे खरीद लिया होगा। मुझे पक्का विश्वास है।

त्रोफिमोव—[व्यग्यसे] हॉ-हॉ, जरूर खरीद लिया होगा !

वार्या—बडी मौसीने मामाको अधिकारपत्र भेजा था कि वे जायदाद उनके नामसे खरीद ले और कर्जेको उनके नाम कर दे। यह सब वे आन्याके लिये कर रही है। मुझे विश्वास है भगवान जरूर हमारी सहायता करेगे। मामा उसे जरूर खरीद लेगे।

रेनिवस्काया—यारोस्लाव्ल वाली तुम्हारी मौसीने पन्द्रह-हजार रूबल भेजे है कि जायदाद उनके नामसे खरीद ली जाय। उन्हे हमारा विश्वास नही है। लेकिन यह तो पिछला बकाया सूद चुकाने लायक भी नही है। [दोनो हाथोसे मुँह ढँक लेती है] आज मेरी किस्मतका फैसला हो रहा है..... मेरी किस्मत.. ...

त्रोफिमोव—[वार्याको चिढाता है] श्रीमती लोपाखिन।

वार्या—[नाराज़ होकर] अरे चिरन्तन-विद्यार्थी। दो बार आप यूनिवर्सिटीसे निकाले जा चुके है।

रेनिवस्काया—वार्या, चिढती क्यो हो? वह लोपाखिनको लेकर ही तो तुम्हे चिढा रहे है। अरे, उसमे हुआ क्या? अगर मन हो तो लोपाखिनसे शादी कर डालो न। आदमी अच्छा है, दिलचस्प है। न मन हो, मत करो। बेटी, कौन तुम्हारे ऊपर जोर डाल रहा है।

वार्या—तुम्हे साफ-साफ बता दूँ—अम्मा? मै इस बातको जरा गम्भीरतासे लेती हूँ। वे आदमी अच्छे है, मुझे भी पसन्द है।

त्युबोव—ठीक है, तो शादी कर डालो। मेरी समझमे नहीं आता। फिर क्यो देरी कर रही हो?

वार्या—अम्मा, मैं अपनी तरफ़से तो उनसे नहीं कह सकती न। पिछले दो सालसे सब आदमी मुझसे उन्हीके बारेमे बाते करते है—सबके सब लेकिन वह या तो कुछ जवाब ही नहीं देते या

मजाकमे टाल देते है। मै जानती हूँ इसका क्या मतलब है? वह धनी होते जा रहे है। अपने व्यापारमे ही मस्त है। मेरे लिए समय उनके पास कहाँ है? काश, मेरे पास रुपया होता चाहे कितना ही थोडा क्यो न होता—सौ रूबल ही होता—तो मै सारे झंझटोको चूल्हेमे फेककर कही दूर भाग जाती! कही सन्यास-आश्रममे चली जाती!

त्रोफिमोव—[व्यग्यसे] बडा मजा रहता।

वार्या—[त्रोफ़िमोवसे] विद्यार्थियोमे बात करनेकी तमीज होनी चाहिए। [आँखोमे आँसू भरकर बडी घुटी आवाज़मे] पेत्या, तुम कितने कुरूप हो गये हो? बिल्कुल बूढे दिखाई देते हो। [रोना बन्द करके रैनिव्स्कायासे] मगर अम्मा, बिना काम किये मुझसे रहा नही जा सकता! हर क्षण मुझे कुछ न कुछ करनेको होना चाहिए।

[याशाका प्रवेश]

याशा—[बडी मुश्किलसे अपनी हँसी दबाकर] ऐपिखोदोवने बिलियर्ड खेलनेका एक डण्डा तोड दिया।

[चला जाता है]

वार्या—ऐपिखोदोव यहाँ क्यो आया? उससे बिलियर्ड छूनेको किसने कहा था? मेरी समझमे इन लोगोका रवैया नही आता।

[चली जाती है]

रैनिव्स्काया—पेत्या, इसे चिढाया मत करो। वैसे ही उस बिचारीको क्या कम दुःख है!

त्रोफिमोव—लाट साहबी कितनी छाँटती है! चाहे इसका काम हो या न हो, सबमे टाँग अडाना। पूरी गर्मी भर इसने मुझे और आन्या को चैन नही लेने दिया। इसे डर है कि हम लोग मुहब्बत न

करने लगे। लेकिन उससे इसे मतलब ? फिर इसके अलावा मैंने कोई ऐसी बात भी तो नही की। यह तुच्छ बाते मेरे लिए नही है—हमलोग मुहब्बत जैसी बातोसे ऊपर है।

रेनिवस्काया—तब तो मेरा खयाल है कि मै प्यारसे बहुत नीची हूँ। [बडी बेचैनीसे] लियोनिद अभी तक क्यो नही लौटे ? मुझे बस इतना मालूम हो जाता कि जायदाद बिकी या नही। यह मुसीबत तो ऐसी अचानक टूटी है कि विश्वास नही होता ! मेरे तो हाथ-पॉव फूल गये है . दिमाग खराब हो गया ! हाय, मै चीख-चीखकर रोने लगूँगी हाय, कुछ ऐसी ही बेवकूफी कर डालूँगी .. पेत्या, मुझे बचाओ.. मुझे कुछ बताओ... मुझसे बातचीत करो न !

त्रोफिमोव—आज जायदाद बिके या न बिके इससे क्या ? जो होना था वह तो बहुत पहले ही हो चुका। लौटा तो जा नही सकता—और कोई रास्ता भी बाकी नही बचा। रेनिव्स्काया जी, जरा दिल को धीरज दीजिए । क्यों अपनेको धोखा देती है ? जिन्दगी मे एक बार तो सत्यका सामना कीजिए।

रेनिवस्काया—कौन-सा सत्य ? क्या सच है, क्या झूठ है, यह तुम देख सकते हो। मगर मै तो अन्धी हो गई हूँ मुझे कुछ नही दिखाई देता.. तुम तो, हिम्मतसे बडी-बडी समस्याओको हल कर डालते हो, लेकिन भैया, बोलो, क्या इसका कारण यह नही है कि तुम अभी जवान हो ? क्योकि अभी तक तुम्हे कष्टो और दुःखोके बीचसे अपनी एक भी समस्या नही सुलझानी पडी है ? तुम हर बातका हिम्मतसे सामना करनेको तैयार हो जाते हो। पर क्या इसकी यही वजह नहीं है कि जीवनका विस्तार अभी तुम्हारी अनुभवहीन ऑखोके सामने नही आया है, इसलिए

तुम्हे वहाँ कोई भी खतरा नहीं दिखाई देता ? तुम हम लोगोंमे साहसी, ज्यादा ईमानदार, ज्यादा गम्भीर हो, लेकिन मेरे ऊपर जरा तो दया करो—जरा तो उदार हृदय बनकर देखो। तुम्हे पता है, मेरा जन्म यहीं हुआ ? मेरे माँ-बाप यहीं रहते थे, दादा यहीं रहते थे—इसलिए मुझे इस घरसे लगाव है। बिना चॅरीके बगीचेके जिन्दा रहनेकी बात मेरे दिमागमे ही नहीं आती। अब सचमुच अगर यह बिक ही रहा है तो मुझे भी भगवानके लिए बगीचेके साथ बेच दो। [त्रोफिमोवको बाँहोंमें भर उसका माथा चूमती है] मेरा बेटा यहीं डूबा था। [रोती है] मेरे पेत्या, मेरे ऊपर दया करो..... ।

त्रोफिमोव—मेरे हृदयमे आपके लिए क्या भावनाएँ है, आप जानती है।

रैनिवस्काया—हाँ, सो तो ठीक है, लेकिन तुम्हे वह दूसरी तरह कहना चाहिए था। [अपना रूमाल निकालती है। एक तार फर्शपर गिर पड़ता है] आज मेरा दिल कैसा भारी-भारी है, तुम नहीं सोच सकते। उफ, यहाँ कितना शोर है। हर आवाजसे मेरे प्राण थर्रा उठते है। देखो, मै काँप रही हूँ लेकिन मै अकेली भी तो नहीं रह सकती। एकान्त और सन्नाटेसे मुझे डर लगता है। ...पेत्या, ऐसे क्रूर मत बनो. मै तुम्हे बिल्कुल बेटेकी तरह प्यार करती हूँ। मै खुशी-खुशी तुम्हारी शादी आन्या से कर दूँगी। . कसमसे कहती हूँ। लेकिन भैया, जैसे भी हो तुम्हे अपनी डिग्री ले लेनी चाहिए। आजकल तो तुम कुछ नहीं करते। बस इधरसे उधर भटकते फिरते हो। यह कितना अजब-अजब लगता है,—अच्छा, नहीं लगता ? अपनी इस दाढीको भी सुन्दर ढङ्गसे किसी न किसी तरह बढाने

का कुछ इन्तजाम करो .. [हँसती है] बडे उजबकसे दिखाई देते हो।

त्रोफिमोव--[तारको धरतीसे उठा लेता है] मुझे ऐडोनिस जैसा सुन्दर बननेको कोई शौक नही है।

रैनिवस्काया—यह पैरिसका तार है। रोज एक तार आता है। एक कल आया था, एक आज। वह जङ्गली फिर बीमार हो गया, फिर उसपर मुसीबत टूट पडी। वह क्षमा प्रार्थना करता है, बुलाने की खुशामद करता है। सच, मुझे उसे देखने पेरिस हो-आना चाहिए। तुम मुझे घूर-घूरकर देख रहे हो, लेकिन बताओ बेटा मै क्या करूँ? वह बीमार है, अकेला है और बेचारा दुखी है—कौन उसकी देखभाल करता होगा? कौन उसे उलटा-सीधा करनेसे रोकता होगा? कौन उसे ठीक वक्तपर दवा देता होगा? छिपाने और मुँह बन्द करके रहनेमे क्या रखा है? सब जानते है कि मै उसे प्यार करती हूँ। वह मेरे गले पडा पत्थर है—मुझे नीचे तले मे पहुँचा देगा,—लेकिन मै उस पत्थरको प्यार करती हूँ . उसके बिना रह नही सकती [त्रोफिमोवका हाथ दबाती है] मेरे बारेमे बुरा मत सोचना। पेत्या मुझसे कुछ मत कहो . अब कुछ मत बोलो।

त्रोफिमोव—[रुंधे गलेसे] भगवानके लिये, मेरी बदतमीजी माफ कीजिए। अरे, उसीने तो आपको लूट लिया है।

[कान बन्द कर लेती है]

रैनिवस्काया—नही—नही—नही—तुम यह सब मत बोलो।

त्रोफिमोव—वह पक्का गुण्डा है। मुझे तो आप ही ऐसी लगती है जो उसके बारेमे नहीं जानती। वह एकदम निकम्मा, नीच, जलील, क्षुद्र है।

रैनिवस्काया—[क्रुद्ध हो जाती है। लेकिन वाणीको सयत करके बोलती है] तुम छब्बीस सत्ताइस सालके होने आये, मगर अभी भी स्कूली लडको जैसी बाते करते हो !

त्रोफिमोव—हो सकता है !

रैनिवस्काया—अरे अब तो आदमी बनो। प्यारकी पीडा समझो ! तुम्हे तो खुद किसीके प्यारमे होना चाहिए था। [गुस्सेसे] हॉ-हॉ-यह सब हृदयकी पवित्रता नही है—यह सब शेखी है ! तुम बिल्कुल काठके उल्लू हो ! नीच !

त्रोफिमोव—[घबराकर] कोई इनकी बाते सुन !

रैनिवस्काया—मै तो प्यारसे ऊपर हूँ ! तुम प्यार-व्यारसे ऊपर नही, बल्कि जैसा हमारा फीर्स कहता है—तुम किसी लायक नही हो। वर्ना तुम्हारी उम्रमे भी किसीकी कोई प्रेमिका न हो।

त्रोफ़िमोव—[भीत स्वर में] उफ, हद हो गई ! सब क्या कहे जा रही रही है आप यह ? [अपना सिर थामकर बडे ड्राइगरूममे चला जाता है]—हद हो गई। मै यह सब नही सह सकता ! जा रहा हूँ। [चला जाता है मगर फिर पलट पडता है और भीतरकी ओर चला जाता है]

रैनिवस्काया—[उसके पीछे-पीछे पुकारती है] पेत्या, एक मिनट सुनो तो। बेवकूफी मत करो। मै तो मजाक कर रही थी, पेत्या ! [किसीके सीढीसे उतरते हुए तेज़ीसे दौडनेकी आवाज़—अचानक जैसे लडखडाकर कोई गिर पडता है। आन्या और वार्या चीख पडती है। लेकिन फौरन ही हँसनेकी आवाजे]

रैनिवस्काया—क्या हो गया ?

[आन्या दौडकर आती है]

आन्या—[हँसते हुए] पेत्या सीढ़ियोंसे लुढ़क पड़े।
[फिर भाग जाती है]

रैनिवस्काया—यह पेत्या भी कैसा अजीब आदमी है?

[बड़े कमरेके बीचो-बीच खड़े होकर स्टेशन मास्टर अलैक्सी टॉल्सटायकी कविता—"पापी" पढ़ रहा है। सब लोग सुन रहे हैं। लेकिन कुछ लाइनें ही पढ़ पाता है कि गलियारेसे वॉल्जकी धुन आती है और पढ़ना रुक जाता है। सब नाचने लगते हैं। त्रोफिमोव, आन्या, वार्या और रैनिवस्काया भीतरके कमरेसे निकल-निकल कर बाहर आ जाते हैं।]

रैनिवस्काया—आओ, पेत्या, आओ। तुम बड़े भोले हो। मैं तुमसे माफी माँगती हूँ। आओ नाचें [पेत्याके साथ नाचती है]

[आन्या और वार्या नाचती हैं। फीर्सका प्रवेश। अपनी बेंत बगलके दरवाजेके पास धरतीपर रख देता है। याशा भी बैठकमें आकर नाच देखने लगता है]

याशा—क्या बात है बाबा?

फीर्स—मुझे तो यह सब अच्छा नहीं लग रहा। पुराने जमानेमें हमलोगोंके बॉल-डान्समें जनरल, एडमिरल और नवाब लोग होते थे और आज हमलोग पोस्ट-ऑफिसके क्लर्कों और स्टेशन मास्टरोंको बुलाते हैं—सो उन्हें भी आनेमें बीस नखरे होते हैं। मुझे तो कॅप-कॅपी छूट रही है। इनके दादा, बड़े मालिक हर तरहकी तकलीफ और दर्दमें मुहर लगानेकी लाख दिया करते थे। सो बीस साल या इससे भी ज्यादा दिनोंसे मैं यही लाख लगा रहा हूँ। शायद इसीने मुझे अभीतक बचाये रखा हो।

याशा—नाना तुम भी एक मुसीबत हो [जँभाई लेकर] अब तो अपना डेरा डण्डा उठा लो।

याशा—अरे, नालायक भाग !

[बड़बड़ाता है]

[त्रोफिमाव और रैनिवस्काया बड़े कमरेमें नाचते हुए स्टेजपर सामने की ओर आ जाते हैं]

रैनिवस्काया—बस करो, मैं अब ज़रा बैठूँगी [बैठ जाती है] थक गई।

[आन्याका प्रवेश]

आन्या—[आवेशमें] रसोईमें कोई आया था वह कहता था। कि चॅरीका बगीचा आज बिक गया।

रैनिवस्काया—बिक गया ? किसको ?

आन्या—यह उसने नहीं बताया कि किसे। वह तो चला भी गया।

[वह त्रोफिमोवके साथ नाचती है। ये लोग बड़े कमरेमें चले जाते हैं]

याशा—आज कोई बुड्ढा बैठा कुछ बक तो रहा था। कोई नया ही आदमी था।

फीर्स—लियोनिद एन्द्रीविच अभी तक नहीं लौटे। उन्होंने सिर्फ हल्का-वाला ओवरकोट पहन रखा है। आज जरूर उन्हें जुकाम होगा। हाय, कैसे बुद्धू बच्चे हैं !

रैनिवस्काया—मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे आज मैं मर जाऊँगी। याशा, जरा जल्दी जाकर पता तो लगा, बगीचा किसको बिक गया ?

याशा—लेकिन वह बुड्ढा तो बहुत पहले ही चला गया।

[हँसता है]

रैनिवस्काया—[झुँझलाकर] तुझे हँसी किस बातपर आ रही है ? बता, किस बातपर तू इतना खुश है ?

याशा—एपिखोदोव भी गजब करते हैं। "बाइस आफत" बिलकुल काठका उल्लू है।

रैनिवस्काया—अगर जायदाद बिक गई फीर्स बाबा, तो तुम कहाँ जाओगे ?

फीर्स—जहाँ तुम कहोगी।

रैनिवस्काया—तुम ऐसे क्यो लग रहे हो ? बीमार हो क्या ? जाकर आराम करो न।

फीर्स—अरे, हाँ-हाँ [व्यगसे] ठीक है, मै तो जाकर आराम करूँ और यहाँ बैठकर लियोनिदकी राह कौन देखे ? मेरे बिना सारे कामोको कौन देखेगा ? घर भरमे मै ही तो एक ऐसा आदमी हूँ।

याशा—[रैनिवस्कायासे] ल्युबोल आन्द्रिएव्ना, आप अगर आज्ञा दे तो आपसे एक प्रार्थना है। इस बार आप पेरिस जॉय तो मुझे भी साथ लेती चलिए। सच कहता हूँ मुझसे यहाँ रहा नहीं जायेगा। [चारो तरफ देखकर धीमें स्वरसे] अब ज्यादा कहनेसे ही क्या फ़ायदा आप तो खुद ही जानती है, यह गॅवारो का देश है। लोगोमे जरा भी नैतिकता नही है। चारो तरफ बस जहालत भरी है। रसोईमे खाना तक तो ऐसा है कि उब-काई आये। और फिर दुनियाँ भरकी गन्दी बाते बकता हुआ यह फीर्स का बच्चा सबकी जानके पीछे लगा रहता है। मुझे अपने साथ ले चलिए, जरूर लेती चलिए।

[पिश्चिकका प्रवेश]

पिश्चिक—"वाल्या' (नाच) मे चलेगी क्या ? [रैनिव्स्काया उसके साथ जाती हैं] रैनिव्स्काया जी, १८० रूबल तो मुझे आपसे उधार चाहिए ही [नाचते हुए] जी हाँ बस १८० रूबल।

[वे लोग बड़े कमरेमे चले जाते हैं]

याशा—[धीरे-धीरे गुनगुनाता है] 'कभी होगी तुझे मालूम, मेरे दिल की हालत भी ?'

[बड़े ड्राइङ्गरूममें चारखानेकी पैण्ट और टोप पहने कोई खूब उछलता-कूदता है। फिर चिल्लाने लगता है—शाबाश, चार्लोटा आइवानेव्ना, शाबाश !]

दुन्याशा—[पाउडर लगानेके लिए रुक जाती है] मालकिनने मुझसे नाचनेको कहा है। यहाँ पुरुष तो काफी हैं लेकिन महिलाएँ कम हैं। मगर नाचनेसे मेरे सिरमें चक्कर आने और दिल धड़कने लगता है। फीर्स बाबा, अभी-अभी पोस्ट ऑफिस क्लर्कने मुझसे ऐसी बात कही कि मेरे तो प्राण ही निकल गये।

[सङ्गीत धीरे-धीरे डूबता जाता है]

फीर्स—क्या कहा उसने ?

दुन्याशा—बोला— तुम फूल जैसी हो।

याशा—[जँभाई लेता है] ऊँह, कैसा मूर्ख है।

[चला जाता है]

दुन्याशा—फूल जैसी ! मैं मालिकिनो जैसी नाजुक भावनाओंवाली लड़की हूँ। ये मधुर-मधुर बातें मुझे बड़ी अच्छी लगती हैं।

फीर्स—अब तेरे भी दिन आ गये।

[ऐपिखोदोवका प्रवेश]

ऐपिखोदोव—दुन्याशा, तुम्हें मुझसे मिलकर खुशी नहीं होती न ? मैं क्या साँप बिच्छू हूँ ? [गहरी साँस लेकर] हाय री, जिन्दगी

दुन्याशा—क्या चाहते हो ?

ऐपिखोदोव—बेशक ! तुम्हारी ही बात शायद ठीक है [गहरी साँस लेकर] अगर मैं साफ-साफ कहूँ तो इस बातको सचमुच जरा दूसरी

तरफसे देखो। साफ बात कहनेके लिए माफ करना—तुम्हीने मेरे दिमागकी यह हालत कर दी है। मैं अपनी किस्मतको खूब समझता हूँ। रोज मेरे ऊपर कोई-न-कोई मुसीबत टूटती है। मैं तो बहुत पहलेसे इसका अभ्यस्त हो चुका हूँ। अब तो हँस-हँसकर किस्मतका सामना करता हूँ। तुम्हींने मुझे विश्वास दिलाया था . . हालाँकि मैं.. ..

दुन्याशा—तुम्हारे हाथ जोडती हूँ, इस बारेमे हमलोग फिर बातें करेंगे। तुम बस मेरा पीछा छोड दो। इस वक्त मैं सपनोंमे डूबी हूँ...

[अपने पखेसे खेलती है]

ऐपिखोदोव—रोज कुछ-न-कुछ मुसीबत मुझपर आती ही रहती है—और शायद मैं कह सकता हूँ—मैं उनपर मुसकराता हूँ। कभी-कभी हँसता हूँ।

[बडेवाले ड्रॉइङ्गरूमसे वार्या प्रवेश करती है]

वार्या—ऐपिखोदोव, तुम अभी तक नहीं गये ? सचमुच, तुमसे कुछ भी कहते रहो, कोई असर नही होता [दुन्याशासे] दुन्याशा तुम भी भागो यहाँसे। [ऐपिखोदोवसे] पहले तुमने बिलियर्ड खेला तो उसका डण्डा तोड दिया और अब मेहमानकी तरह ड्रॉइङ्गरूममे इधरसे उधर घूम रहे हो।

ऐपिखोदोव—मैं कहता हूँ—तुम मुझसे यह सब सफाई नहीं माँग सकतीं।

वार्या—मैं तुमसे सफाई नहीं माँग रही—सिर्फ एक बात कह रही हूँ। तुम अपना काम-धाम तो कुछ देखते नहीं, इधरसे उधर मटरगश्ती करते हो। हमने तुम्हें मुनीम बनाकर रखा लेकिन भगवान् जाने तुम्हारा फायदा क्या है।

ऐपिखोदोव—[बुरा मान जाता है] मैं काम करूँ या घूमूँ, बिलियर्ड खेलूँ या खाऊँ—यह सब मुझसे बड़े और समझदार लोगोंके जाननेकी बातें हैं।

वार्या—तू मुझे जवाब देता है। [क्रोधसे भड़क उठती है] तेरी यह हिम्मत! तेरा मतलब कि मैं समझदार ही नहीं हूँ। चल भाग यहाँसे! अभी इसी मिनट भाग!

ऐपिखोदोव—[डाँटकर] मैं कहता हूँ, जरा जबान सम्हालकर बोलो।

वार्या—[आपेसे बाहर होकर गुस्सेसे] अभी चले जाओ! भागो!

[वह दरवाज़ेकी ओर जाता है। वार्या पीछे-पीछे जाती है] बाईस आफत! सम्भाल अपना बोरिया-बिस्तर! अब कभी मेरी आँखोंके आगे मत आना [ऐपिखोदोव चला जाता है। नेपथ्यमें उसकी आवाज आती है—'मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा']—क्या? फिर लौट आया। [दरवाजेके पास फीर्सने जो छड़ी रखी थी उसे झपटकर उठा लेती है] आ! आ!—तुझे बताती हूँ। फिर लौटा? तो ले . .[वह जोरसे छड़ी घुमाती है। उसी क्षण लोपाखिन प्रवेश करता है]

लोपाखिन—आपका बहुत-बहुत शुक्रगुजार हुआ।

वार्या—[क्रोध और व्यंग्यसे] मैं माफी चाहती हूँ।

लोपाखिन—कोई जरूरत नहीं। आपके इस हार्दिक स्वागतके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

वार्या—इसमें कृतज्ञताकी तो कोई बात नहीं है [चलते हुए चारों ओर देखकर मृदुल स्वरमें] आपको चोट तो नहीं लग गई?

लोपाखिन—अरे नहीं—नहीं कोई खास नहीं। बस, बत्तखके अण्डे जैसा यह गोला उभर आया है।

[वालरूमसे आवाजे आती है—'लोपाखिन है क्या? यार्मोलाय अलैक्सीएविच।'

पिश्चिक—जरा इन्हे देखूँ तो सही, जरा सुनूँ तो सही। [लोपाखिनका चुम्बन लेता है] आज तुम्हारे ऊपरसे फ्रैंच ब्राण्डीकी खुशबू उड रही है। यहाँ हम भी जरा मनोरञ्जन कर रहे है।

[रैनिवस्कायाका प्रवेश]

रैनिवस्काया—अरे लोपाखिन, तुम हो क्या? इतना समय क्यो लगाया तुमने? लियोनिद कहाँ है?

लोपाखिन—लियोनिद एन्द्रियेविच आये तो मेरे साथ ही है। अभी आते होगे।

रैनिवस्काया—[उद्वेगसे] अच्छा, अच्छा! वगीचा बिक गया क्या? बोलो?

लोपाखिन—[पशोपेशमे पड जाता है कि कही आन्तरिक आह्लाद प्रकट न हो जाय] चार बजे बिक्री खत्म हो गई थी। हमारी गाडी ही छूट गई, सो साढे-नौ बजे तक राह देखनी पडी [गहरी साँस लेकर] उफ! मुझे तो कुछ-कुछ चक्कर-सा आ रहा है।

[गायेवका प्रवेश। दाहिने हाथमें खरीदी हुई चीज़े हैं, और बाये हाथसे आँसू पोछता जाता है।]

रैनिवस्काया—क्यो लियोनिद?—क्या खबर है? [रोते हुए अधीरतासे] भगवान्‌के लिए जल्दी बोलो।

गायेव—[कोई जवाब नही देता। सिर्फ हाथ झटकारकर रह जाता है। रोते हुए फीसमे] लो, इन्हे ले लो। ऐंचोवी और कर्च-मछलियाँ है। आज मैने सारे दिन कुछ नही खाया। उफ, आजका दिन भी कैसा मनहूस बीता है।

[बिलियर्ड खेलनेके कमरेका दरवाजा खुला है। वहाँसे गेंदोंके खटकनेकी और याशाके बोलनेकी आवाज आ रही है। याशा कह रहा है—'सत्तासी' गायेवके चेहरेके भाव बदल जाते हैं और वह रोना भूल जाता है] मैं तो थककर चूर-चूर हो गया हूँ। फीर्स जरा आकर मेरे कपड़े बदलवाना, भैया। [बड़े ड्राइङ्गरूम को पार करके अपने कमरेमें चला जाता है।]

पिश्चिक—बिकनेका क्या हुआ? बोलो, बताओ न।

रैनिवस्काया—चॅरीका बगीचा बिक गया?

लोपाखिन—जी हाँ, बिक गया।

रैनिवस्काया—किसने खरीदा?

लोपाखिन—मैंने। [कुछ देर चुप्पी। रैनिवस्कायाके जैसे प्राण निकल जाते हैं। कुर्सी और मेजके सहारे न खड़ी होती तो शायद गिर पड़ती]

[वार्या अपनी पेटीमेंसे चाबियोंका गुच्छा निकालकर नीचे फर्शपर फेंक देती है और चली जाती है]

लोपाखिन—मैंने उसे खरीद लिया। भाइयो और बहनो, हाथ जोड़ता हूँ एक मिनट आप लोग ठहरें। मेरा सिर चकरा रहा है। मुझसे बोला नहीं जा रहा [हँस पड़ता] हम लोग नीलाममें पहुँचे। देरिगानोव वहाँ पहलेसे ही डेरा डाले था। लियोनिद एन्द्रियेविच के पास तो कुल १५ हजार थे और देरिगानोवने बकायाके अलावा सीधी बोली दी ३० हजार की। खैर, मैं उनकी मददको आगे बढ़ा। मैंने उसके खिलाफ बोली दी। मैं चालीस हजार बोला तो, वह पैंतालिस हजार बोल दिया। मैंने पचपन बोले तो वह भी पाँच

हजार बढकर बोला—मैने भी दस हजार बढाये. खैर. .बात खत्म हुई। मैने रेहनके ऊपर ९० हज़ार बोले। बोली मेरे नाम रही। अब चॅरीका बगीचा मेरा है—मेरा। [हँसता है] हे भगवान्, चॅरीके बगीचेका मालिक मै हूँ। अरे, कोई मुझसे कहो कि मै नशेमे हूँ, मै पागल हो गया हूँ—यह सब सपना है? [ज़मीनपर पॉव पटकता है] मेरी बातपर हँसो मत। काश, मेरे बाप और दादा कब्रोसे उठ-उठकर आज देखते कि क्या हो गया है। कैसे यार्मोलायने, उसी बुद्धू और पिटनेवाले यार्मोलायने जो भरे जाडोमे नङ्गे पॉव भागा-भागा फिरता था—उसी यार्मोलायने दुनियॉके सबसे अच्छे बगीचेको खरीद लिया है। आज मैने उस सारी जायदादको खरीद लिया है—जहॉ मेरे बाप-दादे गुलाम थे और उन्हे रसोईघर तकमे घुसनेकी इजाजत नहीं थी। मै नींदमे हूँ.. यह सब सपना है। यह सब कल्पना है? अज्ञानके अन्धकारमे डूबी बुद्धिका शेखचिल्लीपना है [आनन्दसे मुस्कराते हुए चाबियॉ उठा लेता है] वार्या चाबियॉ फेक गई है। वह दिखाना चाहती है कि अब वह घरकी मालकिन नहीं है। [चाबियॉ बजाता है] खैर, कोई बात नही। [राग साधता हुआ आर्केस्ट्रा सुनाई देता है] अरे बाजेवालो, बजाओ-बजाओ। मै तुम्हारा गाना सुनना चाहता हूँ। तुम सबलोग आकर देखना, कैसे यार्मोलाय लोपाखिन कुल्हाडी लेकर चॅरीके वगीचेमे जाता है, कैसे पेड धरतीपर गिरते है। हम यहॉ घर बनायेगे। हमारे पोते-परपोते वहॉ एक नई जिन्दगी उभरती पायेगे। बाजेवालो. बजाओ-बजाओ।

[सङ्गीत शुरू हो जाता है। रॅनिवस्काया कुर्सीपर सिर झुकाये बैठी फूट-फूटकर रो रही है]

लोपाखिन—[झिझकते हुए] क्यों, तब क्यों मेरी बात नहीं मानी थी? रैनिवस्कायाजी, अब तो आप इसे वापिस पा नहीं सकतीं। [रोते हुए] उफ, काश यह सब खतम हो पाता! हमारी यह उलझी-बिगडी हुई जिन्दगी किसी तरह पलक मारते ही बदल जाती।

पिश्चिक—[उसकी बाँह पकडकर एक ओर ले जाते हुए धीरेसे] यह तो रो रही है। आओ, हमलोग ड्राइङ्गरूममे चलें। इन्हे इसी जगह अकेला छोड दें .आओ [बाँह पकडकर उसे बडे ड्राइङ्गरूममे ले जाता है]

लोपाखिन—क्या हुआ? बाजे वालो, बजाओ-बजाओ। मैं जो कहूँ—वही होगा [व्यङ्गसे] नया मालिक, चॅरीके बगीचेका नया स्वामी आ रहा है [अचानक एक छोटी-सी मेजसे जा टकराता है। झाड गिरते गिरते बचता है] मैं सब चीजोंकी कीमत चुका दूँगा।

[पिश्चिकके साथ चला जाता है। रैनिवस्कायाके सिवा बडे ड्राइङ्गरूममे कोई नहीं है। वह मरी-सी बैठी फूट-फूटकर रो रही है। सङ्गीत धीरे-धीरे बज रहा है। तेज़ीसे आन्या और त्रोफिमोवका प्रवेश। आन्या माँके पास जाकर उसके घुटनोंपर गिर पडती है। त्रोफिमोव बडे ड्राइङ्गरूमके दरवाजेपर खडा है]

आन्या—अम्मा! अम्मा तुम रो रही हो—? अम्मा, मेरी अच्छी अम्मा! अम्मा तुम मेरी हो मैं तुम्हारे हाथ जोडती हूँ चॅरीका बगीचा बिक गया—चला गया.. सच है.. सच है, पर अम्मा रोओ मत! अभी तो तुम्हारे सामने बहुत जिन्दगी है. तुम्हारे पास निश्छल सुन्दर हृदय है... ..आओ चलें, यहाँसे कहीं बहुत

दूर चल चले अम्मा। चलकर हमलोग कही एक नया बगीचा बनायेंगे.. ...इससे अच्छा .. इससे शानदार . तुम खुद देख लेना. तुम्हारी समझमे अपने-आप आ जायेगा साँझके डूबते सूरजकी तरह एक आह्लाद—शान्ति. एक गहरी प्रसन्नता तुम्हारी आत्मामे समा जायेगी.. और अम्मा, तब तुम आनन्दसे हँस पडोगी...आओ अम्मा, चलो चले.. ..

[पर्दा गिरता है]



चौथा अंक

[पहले अंकका ही दृश्य। मगर न तो जंगलों पर परदे हैं न दीवारों पर तस्वीरें। सिर्फ एक कोनेमें थोड़ा-सा फर्नीचर एक दूसरेके ऊपर ढेर बना रखा है—जैसे बिकने के लिए रखा हो। चारों तरफ एक खाली-खालीपनका भाव सा व्याप्त है। बाहरके दरवाजे और पृष्ठभूमिके दृश्यमें यात्राके लिए बँधे हुए बिस्तर, बक्से इत्यादि रखे हैं। बायीं तरफ दरवाजा खुला है, और वहां से आन्या और वार्याकी आवाजें सुनाई दे रही हैं। लोपाखिन प्रतीक्षा करता खड़ा है। याशा शैम्पेनके गिलासोंसे भरी ट्रे लिये हुए है। बगलवाले कमरेमें एपिखोदोव एक बक्स बाँध रहा है। नेपथ्यमें विदा करने आये हुए किसानोंसे बातचीत करने की भनभनाहटें आ रही हैं—गायेवका स्वर सुनाई देता है—"शुक्रिया, भाइयो शुक्रिया!"]

याशा—किसान लोग विदा करने आये हैं। यामालाय अलेक्सीएविच, मैं समझता हूँ यह किसान लोग बहुत अच्छे स्वभावके होते हैं। मगर बेचारे बड़े भोले होते हैं।

[नेपथ्यकी आवाजें समाप्त हो जाती हैं। बगलके कमरेसे रेनिव्स्काया और गायेवका प्रवेश। रेनिव्स्काया रो तो नहीं रही, लेकिन बहुत ही मुर्दा और कमज़ोर है। उसके गाल काँप रहे हैं, बोल नहीं पाती]

गायेव—ल्यूबा, तुमने उन्हें अपना पर्स ही दे दिया! ऐसे काम नहीं चलेगा .

रैनिवस्काया—भाई, इसमे मै कुछ नही कर सकती थी। मुझसे रहा नही गया ..!

[दोनो चले जाते है]

लोपाखिन—[दरवाजेमे उनके पीछेसे पुकारता है] चलते वक्त आपलोग विदाईका एक-एक गिलास पियेगे? पी लीजिये न? शहरसे मँगा लेनेका मुझे ध्यान ही नही रहा और स्टेशन पर सिर्फ एक ही बोतल मिली। बस, एक-एक गिलास ले लीजिये। [कुछ देर चुप रहकर] क्या कहा? आपको किसी गिलास-विलासकी जरूरत नही है? [दरवाजेसे सामने की ओर आता है] अगर यह पहले पता होता तो मै इसे खरीदता ही क्यो? अच्छी बात है। तो मै भी उसे नही पियूँगा। [याशा सावधानी से एक कुर्सी पर ट्रे रख देता है] याशा, एक गिलास तू ही ले ले।

याशा—[पीता है] तो यह हमारी विदाईका है। पीछे ठहरनेवालोका भगवान् भला करे. . मै दावेसे कहता हूँ, यह असली शैम्पेन नही है।

लोपाखिन—अबे, एक बोतल १८ रूबलकी पडी है। [कुछ देर चुप रहकर] यहाँ तो बडी भयङ्कर सर्दी है।

याशा—इन लोगोने आज अँगीठी ही नही जलाई। खैर—हमारे लिए तो जली-न-जली बराबर है। हम तो जा ही रहे है।

[हँसता है]

लोपाखिन—तू क्यो हँसता है?

याशा—खुशीके मारे।

लोपाखिन—अक्टूबर आ चुका है। फिर भी मौसम कैसा घुटा-घुटा-सा है। धूप तो ऐसी है, जैसे गर्मी हो। बँगले बनवानेका एकदम

ठीक समय यही है। [अपनी घड़ी देखते हुए दरवाजेकी ओर मुँह करके कहता है] भाइयो और बहनो, सुन लीजिए, सैंतालीस मिनट बाद गाड़ी छूट जायेगी। इसलिए आप लोगोंको बीस मिनटमें ही स्टेशनको चल देना चाहिए।

[एक ग्रेटकोट पहने हुए त्रोफिमोव दरवाजेसे निकलकर बाहर आता है]

त्रोफिमोव—मैं समझता हूँ, चल देनेका समय हो गया। घोड़े तैयार हैं। मेरे बरसाती जूतोंको कौन खा गया ? कहीं खो गये। [दरवाजेकी ओर मुँह करके] आन्या, यहाँ तो मेरे बरसाती जूते नहीं हैं। मुझे तो मिल नहीं रहे।

लोपाखिन—मुझे भी खार्कोव जाना है। आपके साथ वाली गाड़ीमें ही तो जा रहा हूँ। जाड़े भर मैं खार्कोवमें ही रहूँगा। आपलोगों के साथ गप्पोंमें मैं यहाँ समय बरबाद करता रहा। करनेको कुछ था नहीं इसलिए जी ऊब गया था। बिना काम किये मुझसे रहा नहीं जाता। कोई काम न हो तो मुझे ऐसा लगता है कि अपने इन हाथोंका क्या करूँ ? बेकार वे इस तरह झूलते-लटके रहते हैं जैसे मेरे न होकर किसी दूसरेके हों।

त्रोफिमोव—तो ठीक है, हम तो अभी चले ही जा रहे हैं। तुम अपना यह मुनाफेवाला काम फिर शुरू कर दो।

लोपाखिन—एक गिलास पी लो न।

त्रोफिमोव—नहीं धन्यवाद।

लोपाखिन—तो अब तुम मास्को ही जाओगे ?

त्रोफिमोव—हाँ—शहर तक तो मैं इनलोगोंको ही छोड़ने जाऊँगा। फिर कल मॉस्को चला जाऊँगा।

लोपाखिन—हाँ, सो ही तो मैने कहा। वहाँ प्रोफेसर लोग बैठे तुम्हारी राह देख रहे है। तुम्हारी राहमे अभी तक उन्होंने लैक्चर भी शुरू नही किया।

त्रोफिमोव—यह सब तुम्हारे मतलबकी बाते नही है।

लोपाखिन—कितने साल हो गये तुम्हें यूनिवर्सिटीमे?

त्रोफिमोव—अरे, इसके अलावा भी अब कोई नई बात सोचो। यह सब मजाक बहुत घिस-पिटकर बासी हो गया। [बरसाती जूतोको खोजता है] देखो, शायद हमलोग अब एक दूसरेसे कभी नही मिलेगे। इसलिए बिदा होते समय मेरी एक सलाह मान लो। यह अपने हाथ इधर-उधर फेंकना बन्द करो। इस लतसे पीछा छुडाओ। और दूसरी बात—बॅगले बनाना, और फिर यह हिसाब लगाना कि गर्मियोमे घूमनेवाले लोग कुछ समय बाद खुदकाश्त करने लगेगे—यह शेखचिल्लीपना भी हाथ फटकारनेकी तरह ही बुरी आदत है। खैर, इतना होते हुए भी तुम मुझे बहुत पसन्द हो कलाकारो जैसी नाजुक-नाजुक उॅगलियाँ है, बडी सरल कोमल तुम्हारी आत्मा है।

लोपाखिन—[उसको बाँहोंमें भर लेता है] नमस्कार दोस्त, नमस्कार। इन बातोके लिए शुक्रिया। अगर जरूरत हो तो सफरके लिए कुछ रुपया दे दूँ।

त्रोफिमोव—किस लिए? मुझे कोई जरूरत नही है।

लोपाखिन—अरे, तुम्हारे पास एक कौडी भी तो है नही।

त्रोफिमोव—धन्यवाद। मेरे पास पैसा है। अनुवाद करनेसे कुछ पैसा मिल गया था। यह रहा मेरी जेबमे। [आतुरतासे] लेकिन मेरे बरसाती जूते कहाँ गये?

वार्या—[दूसरे कमरे में] ये कमरबन्द यहाँ रक्खे हैं। [मंचपर बरसाती जूतोंका जोड़ा फेंक देती है]

त्रोफिमोव—वार्या, ऐसी क्यों झुँझला रही हो? एँ? मगर यह जूते मेरे तो नहीं हैं।

लोपाखिन—वसन्त पर मैंने तीन हजार एकड़ जमीनमें पोस्ता बोया था और अब चालीस हजारका मुनाफा कमा लिया। जब मेरे पोस्तोंमें फूल लगे थे—तब क्या कम सुन्दर दृश्य था? तो मेरा कहना था कि अभी-अभी मैंने चालीस हजारका मुनाफा कमाया है, इसीलिए तुम्हें कुछ उधार देनेकी बात कही थी। क्योंकि अब मैं दे सकता हूँ। इसमें नाक भौं सिकोड़ने की क्या बात है? भाई, किसान आदमी हूँ—सीधी बात कह देता हूँ।

त्रोफिमोव—तुम्हारे बाप किसान थे या मेरे डाक्टर—इससे कोई मतलब नहीं। [लोपाखिन अपनी डायरी निकालता है] यह सब छोड़ो। मुझे अगर तुम दो लाख भी देनेकी बात करो, तब भी मैं नहीं लूँगा। मैं स्वतन्त्र प्रकृतिका आदमी हूँ। और जो चीज तुम सब गरीब-अमीर लोगोंको बड़ी कीमती या प्यारी लगती है मेरे ऊपर उसका जरा भी असर नहीं होता। मेरे लिए सब हवामें उड़ते बुलबुले हैं। तुम्हारे बिना भी मैं काम चला ही सकता हूँ; मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। मैं बहुत दृढ़ और आत्म-सम्मान वाला व्यक्ति हूँ। मानवता निरन्तर उस सबसे महान, उस सर्व-श्रेष्ठ प्रसन्नताकी ओर बढ़ रही है, जो इसी धरतीपर सम्भव है। और उसी मानवताकी प्रगतिकी हरावली लड़नेवालोंमें मैं भी हूँ।

लोपाखिन—तुम्हें यह सब वहाँ मिलेगा?

त्रोफिमोव—हाँ, मुझे मिलेगा [कुछ क्षण रुककर] या तो मुझे ही मिलेगा या मै पानेके लिए आनेवालोका रास्ता साफकर दूँगा।

[कही दूर पेडपर कुल्हाडी पडनेकी आवाज सुनाई देती है]

लोपाखिन—अच्छा दोस्त, नमस्कार! अब चलनेका वक्त हो गया। हम भले ही एक दूसरेको देखकर नाक-भौ सिकोडते रहे, लेकिन जिन्दगी चलती चली जायेगी। जब मै बिना रुके जी-तोड परिश्रम करता हूँ तब मेरा मस्तिष्क बडा शान्त रहता है—मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे अपने जीवनका लक्ष्य मिल गया हो। लेकिन दोस्त, इसी रूसमे कितने आदमी है जिन्हे पता नही कि वे क्यो जिन्दा है? खैर, फिक्र क्या है? सारी दुनियाँ उन्हींके बल थोडे ही चलती है! सुनते है, लियोनिद एन्द्रीएविचने नौकरी कर ली है। एक बैंकमे छः हजार रूबल सालानापर उनकी नौकरी लग गई है। खैर, उनसे यह सब चलेगा नही। वे आरामतलब आदमी है।

आन्या—[दरवाजेमें आकर] अम्मा आपसे प्रार्थना करती है कि उनके जाने तक चैरीके बगीचेपर कुल्हाडी चलवाना रोके रहें।

त्रोफिमोव—हाँ, ठीक ही तो बात है। इतने ढङ्गसे तो काम लिया होता ...

[मञ्चको पार करता हुआ चला जाता है]

लोपाखिन—अभी देखता हूँ... अभी रुकवाता हूँ। बडे बेवकूफ है।

[त्रोफिमोवके पीछे-पीछे चला जाता है]

आन्या—फीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया?

याशा—कह तो दिया था मैने सुबह। जरूर ले गये होगे।

आन्या—[ड्रॉइङ्गरूमको पार करके जाते ऐपिखोदोवसे] ऐपिखोदोव, जरा पता लगाना, फीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया या नहीं ?

याशा—[झुँझलाहट भरे स्वरमें] मैंने सुबह ही येगोरसे कह तो दिया है। बीस बार क्यों पूछती है ?

एपिखोदोव—फीर्सकी भी तो उम्र बहुत हो गई है। मेरा तो पक्का विश्वास है अब उसे किसी दवासे कुछ नहीं होगा। उसको तो अब अपने बाप दादाओंके पास पहुँचानेका वक्त आ गया है। मुझे तो उससे जलन होती है। [गत्तेके टोपके बक्स के ऊपर एक ट्रङ्क रखकर उसे कुचल देता है] टूट गया न ! मैं तो पहले ही जानता था......

[बाहर चला जाता है]

याशा—[मज़ाक उडाते हुए] अरे बाईस-आफत !

वार्या—[नेपथ्यमें ही] फीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया क्या ?

आन्या—हाँ।

वार्या—डाक्टरके लिये पत्र भी क्यों नहीं ले लिया ?

आन्या—अरे ! अच्छा अब बादमें भेज देते हैं।

वार्या—[बगलवाले कमरेमें] याशा कहाँ है ? उससे कहो जाते वक्त उसकी माँ उससे मिलने आई है।

याशा—[हाथ झटककर] ये लोग तो मुझे मार डालेंगे।

[दुन्याशा इस सारे समयमें सामान बाँधने में व्यस्त रही है। अब जब याशा बिल्कुल अकेला रह जाता है तो उसके पास आती है]

दुन्याशा—एक बार मेरी ओर तो देख लो, याशा। अब तुम जा रहे हो। मुझे छोडकर जा रहे हो। [उसकी गर्दनसे लिपटकर रोने लगती है]

याशा—रोती क्यो है ? [शैम्पेन पीता है] छः दिन बाद मै फिर पेरिस आ जाऊँगा ! कल सुबह हम लोग ऐक्सप्रेस गाडीमे सवार होकर दनदनाते चले जायेगे. ....मुझे तो एकदम विश्वास नही आता। फ्रास जिन्दाबाद ! यहॉ मुझे अच्छा नही लगता। मेरे लिये यहॉ न कोई जिन्दगी है, न काम ! यहॉकी काफी बेवकूफियॉ मैने देख लीं। मेरे लिये यही बहुत है। [फिर शैम्पेन पीता है] तू रोती क्यों है री ! जरा अपने जीको सॅभाल तो नही रोयेगी...

दुन्याशा—[जेबी शीशेमें मुंह देखते हुए पाउडर लगाती है] पेरिससे मुझे जरूर लिखना। याशा, तुम्हे पता है मैने तुमसे कितना प्यार किया, कितना प्यार किया है ! याशा मेरा दिल बडा नाजुक है।

याशा—अच्छा, कोई आ रहा है !

[धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए अपने को ट्रकोमें व्यस्त दिखाता है। रैनिव्स्काया, गायेव, आन्या और चार्लोटाका प्रवेश]

गायेव—तो अब चले ? ज्यादा समय नही रह गया [याशाको देखकर] यह मछलियोंकी गन्ध जैसी क्या है ?

रैनिव्स्काया—दस मिनट बाद हमलोग गाडियोमे बैठे होगे। [कमरेमें एक निगाह फेरती है] प्यारे घर, हमारे पुरखोंके पुराने मकान अब विदा दो...जाडा आयेगा और चला जायेगा—फिर वसन्त आयेगा लेकिन तब तक तुम नहीं रहोगे..... ये लोग तुम्हे गिरा देगे. . . हाय, इन दीवालोंने कितना.. कुछ देखा है...[आवेग-से अपनी पुत्रीको चूम लेती है] मेरी बेटी—कितनी खुश लग रही है.. .. तेरी ऑखे हीरोकी जैसी चमक रही है......बहुत ही खुश है क्या ? बहुत खुश है न ?

आन्या—हॉ-हॉ—अम्मा, एक नई जिन्दगीका प्रारम्भ जो हो रहा है !

आन्या—[ड्रॉइङ्गरूमको पार करके जाते ऐपिखोदोवसे] ऐपिखोदोव, जरा पता लगाना, फीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया या नहीं ?

याशा—[झुँझलाहट भरे स्वरमें] मैंने सुबह ही येगोरसे कह तो दिया है। बीस बार क्यों पूछती है ?

एपिखोदोव—फीर्सकी भी तो उम्र बहुत हो गई है। मेरा तो पक्का विश्वास है अब उसे किसी दवासे कुछ नहीं होगा। उसको तो अब अपने बाप-दादाओंके पास पहुँचानेका वक्त आ गया है। मुझे तो उससे जलन होती है। [गत्तेके टोपके बक्स के ऊपर एक ट्रङ्क रखकर उसे कुचल देता है] टूट गया न ! मैं तो पहले ही जानता था......

[बाहर चला जाता है]

याशा—[मजाक उड़ाते हुए] अरे बाईस-आफत !

वार्या—[नेपथ्यसे ही] फीर्सको अस्पताल पहुँचा दिया क्या ?

आन्या—हाँ।

वार्या—डाक्टरके लिये पत्र भी क्यों नहीं ले लिया ?

आन्या—अरे ! अच्छा अब बादमें भेजे देते हैं।

वार्या—[बगलवाले कमरेसे] याशा कहाँ है ? उससे कहो जाते वक्त उसकी माँ उससे मिलने आई है।

याशा—[हाथ झटककर] ये लोग तो मुझे मार डालेंगे।

[दुन्याशा इस सारे समयमें सामान बाँधने में व्यस्त रही है। अब जब याशा बिल्कुल अकेला रह जाता है तो उसके पास आती है]

दुन्याशा—एक बार मेरी ओर तो देख लो, याशा। अब तुम जा रहे हो। मुझे छोडकर जा रहे हो। [उसकी गर्दनसे लिपटकर रोने लगती है]

याशा—रोती क्यों है ? [शैम्पेन पीता है] छः दिन बाद मै फिर पेरिस आ जाऊँगा। कल सुबह हम लोग ऐक्सप्रेस गाडीमे सवार होकर दनदनाते चले जायेगे..... मुझे तो एकदम विश्वास नही आता। फ्रास जिन्दाबाद ! यहाँ मुझे अच्छा नही लगता। मेरे लिये यहाँ न कोई जिन्दगी है, न काम ! यहाँकी काफी बेवकूफियाँ मैने देख लीं। मेरे लिये यही बहुत है। [फिर शैम्पेन पीता है] तू रोती क्यों है री ! जरा अपने जीको सॅभाल तो नही रोयेगी...

दुन्याशा—[जेबी शीशेमें मुँह देखते हुए पाउडर लगाती है] पेरिससे मुझे जरूर लिखना। याशा, तुम्हें पता है मैने तुमसे कितना प्यार किया, कितना प्यार किया है ! याशा मेरा दिल बडा नाजुक है।

याशा—अच्छा, कोई आ रहा है !

[धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए अपने को ट्रंकोंमें व्यस्त दिखाता है। रॆनिव्स्काया, गायेव, आन्या और चार्लोटाका प्रवेश]

गायेव—तो अब चले ? ज्यादा समय नहीं रह गया [याशाको देखकर] यह मछलियोंकी गन्ध जैसी क्या है ?

रॆनिव्स्काया—दस मिनट बाद हमलोग गाडियोमे बैठे होगे। [कमरेमें एक निगाह फेरती है] प्यारे घर, हमारे पुरखोंके पुराने मकान अब विदा दो.. जाडा आयेगा और चला जायेगा—फिर वसन्त आयेगा लेकिन तब तक तुम नही रहोगे. ... ये लोग तुम्हे गिरा देंगे. . . हाय, इन दीवालोने कितना.. कुछ देखा है...[आवेग-से अपनी पुत्रीको चूम लेती है] मेरी बेटी—कितनी खुश लग रही है . .. तेरी आँखे हीरोकी जैसी चमक रही है . ...बहुत ही खुश है क्या ? बहुत खुश है न ?

आन्या—हाँ-हाँ—अम्मा, एक नई जिन्दगीका प्रारम्भ जो हो रहा है !

गायेव—ठीक तो है। सचमुच अब सब ठीक हो गया। चेरीका बगीचा जब तक बिका नहीं था, हमलोग बडे दुःखी-परेशान थे, लेकिन जब सारा मामला आखिरी रूपसे तय हो गया तो हमलोगोंको शान्ति मिल गई। यही नहीं, खुशी भी हुई। मैं अब बैंकका क्लर्क हूँ, महाजन हूँ—यह मारा लाल गेंदको! और तुम ल्यूबा? इसमें कोई शक नहीं तुम भी पहलेसे अच्छी दीख रही हो।

रैनिव्स्काया—हाँ, यह बात तो है। मेरा मन भी पहलेसे हल्का है। [उसका टोप और कोट उसे पकडा दिया जाता है] खूब डटकर सोई हूँ। याशा, मेरी चीजे ले चलो। वक्त हो चुका है। [आन्यासे] बेटी, हमलोग जल्दी ही फिर मिलेंगे। मैं पेरिस जा रही हूँ। तुम्हारी यारोस्लाव्लवाली मौसीने जायदाद खरीदने को जो रुपया भेजा था, उसीसे वहाँ रहूँगी। भगवान् मौसीका भला करे! लेकिन वह पैसा ज्यादा नहीं चलेगा।

आन्या—अम्मा, तुम जल्दी आओगी न? मैं अपने हाई-स्कूलके इम्तहानके लिए खूब मेहनत करूँगी..... जब पास हो जाऊँगी तो तुम्हारी सहायता करनेके लिए कहीं लग जाऊँगी। अम्मा, हमलोग तरह-तरहकी चीजे पढ़ा करेंगे—है न? [अपनी माँका हाथ चूमती है] जाडोंमें सन्ध्याके समय देरतक हमलोग पढा करेंगे। खूब ढेरकी ढेर किताबे पढेंगे। तब हमारे सामने एक नई आश्चर्यजनक दुनियाँके द्वार खुल जायेंगे [स्वप्नाविष्टसी] अम्मा, जल्दी आना।

रैनिव्स्काया—जरूर आऊँगी मेरी बिटिया [उसे बाँहोंमें भरती है]

[लोपाखिनका प्रवेश। चार्लोटा धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

गायेव—चार्लोटा बडी खुश है। गा रही है।

चालोंटा—[एक बण्डलको छोटे बच्चेकी तरह झुकाकर] बाई ! बाई ! मेरे मुन्ना।.. ..[बच्चेके रोनेकी आवाज़ "हुओं-हुओं"] चुप-चुप मेरे चन्दा, ["हुओं-हुओं"] राजा बेटा ! [बण्डल फेंक देती है] आप लोग कृपा करके मेरे लिए कोई काम जरूर खोज दीजिए. . यो मेरा काम कब तक चलेगा ?

लोपाखिन—हमलोग जरूर काम खोज देंगे। चालोंटा आइवानोव्ना, तुम कतई फिक्र मत करो ?

गायेव—सभी हमको छोड़े जा रहे हैं। वार्या भी जा रही है.. .. अचानक जैसे हम अब किसी मसरफके ही नहीं रह गये हों।

चालोंटा—शहरमें मुझे कहीं ठहरनेकी जगह नहीं है। इसलिए मुझे जाना पड़ेगा [गुनगुनाती है] मुझे क्या फिक्र......

[पिश्चिकका प्रवेश]

लोपाखिन—लीजिये, अब कुदरतका एक कमाल हाजिर होता है।

पिश्चिक—[मुँह फाड़कर साँस लेता है] हाय, मुझे जरा साँस ले लेने दो. . मैं तो मर गया. महरबान दोस्तो, थोड़ा पानी पीने को दो. .. . . .

गायेव—मैंने तो सोचा रुपयेकी जरूरत आ पड़ी।.. शुक्रिया. लो, मैं परे हटा जाता हूँ ताकि कुछ कर न बैठूँ......

[बाहर चला जाता है]

पिश्चिक—आपको देखने आये हुए बहुत दिन हो गये.. रैनिव्स्काया बहन. [लोपाखिनसे] आप भी यहीं हैं। बड़ी खुशी हुई मिलकर। आपने भी गजबकी बुद्धि पाई है। लीजिए . यह लीजिए . [लोपाखिनको रुपये देता है] ये ४०० रूबल हैं। अब तुम्हारे सिर्फ ८४० रूबल रह गये।

लोपाखिन—[आश्चर्यसे कन्धे झटकारता है] अरे, यह तो बिल्कुल सपने जैसी बात है। तुम्हें यह रुपया कहाँसे मिल गया ?

पिश्चिक—जरा रुक तो जाओ. ....मैं हाँफ रहा हूँ.. एक बडी अकल्पनीय घटना हो गई.. कुछ अंग्रेज कहींसे चले आये, और मेरी जमीनमें उन्होंने कोई सफेद मिट्टी खोज निकाली...[रैनिव्स्काया से] और यह ४०० रूबल आपके लिये . बहुत प्यारी लग रही हैं आप तो। बडी सुन्दर... [रुपया देता है] बाकी बादमें [पानीकी घूँट भरता है] रेलमें एक नौजवान मुझे बता रहा था कि कोई बहुत बडा दार्शनिक, लोगोंको मकानकी छतसे कूद पडनेकी सलाह देता है। वह कहता है—"कूदो। समस्याकी सारी मूल-जड इसीमें है।"—[आश्चर्य करता हुआ] क्या कमालकी बात है ?......भाई, जरा पानी.....

लोपाखिन—वो अंग्रेज कौन थे ?

पिश्चिक—सफेद मिट्टी खोदनेका मैंने उन्हें चौबीस सालका पट्टा दे दिया है। अब मुझे माफ कीजिए.. .. मैं रुकूँगा नहीं. . मुझे सरपट भागते हुए जाना है..... मैं ज्नायकोवो जा रहा हूँ—फिर कादामानोवो जाऊँगा। सभीका तो मुझपर कर्जा है [पानीकी घूँट भरता है] अच्छा, सबसे अलविदा.. ...मैं बृहस्पतिको आऊँगा।

रैनिव्स्काया—हमलोग अभी-अभी शहर जा रहे हैं. कल मैं विदेशको रवाना हो जाऊँगी।

पिश्चिक—क्या ? [घबराकर] शहर क्यों ?...अच्छा, अब समझा .. यह फर्नीचर..... यह बक्से। इसमें किसीका क्या बस है ? [रुँधे गलेसे] कोई बात नहीं.. ...भाई, यह अंग्रेज भी... गजबकी अक्लवाले होते हैं......अच्छी बात है ? खुश

रहिए......भगवान हमेशा आपकी मदद करे ! चिन्ताकी कोई बात नहीं..... दुनियाँमे हर चीजका अन्त होना है. ....[रैनिव्स्कायाका हाथ चूमता है]......कभी आपके कानो तक खबर पहुँचे कि मेरा भी अन्त आ गया तो इस बुड्ढे . .. घोडेको भी यादकर लेना.. ...कहना "कभी दुनियाँमे कोई सिम्योनोव पिश्चिक नामका भी आदमी था। भगवान उसकी आत्माको शान्ति दे. .. !" आज बडे गजबका मौसम है... [तीव्र उत्तेजनामे बाहर चला जाता है, लेकिन फौरन ही उल्टे पाँव लौटकर दरवाजेसे ही कहता है] मेरी बेटी माशेङ्काने आपको प्रणाम कहा है।

रैनिव्स्काया—अब हमे चल देना चाहिए। दो बडी चिन्ताएँ अपने दिलके साथ लिए जा रही हूँ...पहली तो यह कि फीर्स बीमार है. . [घडी देखकर] अभी तो पाँच मिनट और रुक सकते हैं।

आन्या—अम्मा, फीर्सको अस्पताल पहुँचवा दिया है। सुबह याशा खुद पहुँचा आया... ..

रैनिव्स्काया—मेरी दूसरी चिन्ता वार्या है। उसे सुबह जल्दी उठकर काममे लग जानेकी आदत है। लेकिन अब काम नहीं रहेगा तो वह बिना पानीकी मछली जैसा कष्ट पायेगी। वह बडी दुबली और बीमार-सी हो गई है। बेचारी रोती रहती है। [कुछ देर रुककर] यार्मोलाय, तुम तो अच्छी तरह जानते हो, मैंने हमेशा तुम्हारे साथ उसके विवाहके सपने देखे थे—तुम्हारी भी सभी बातोसे ऐसा लगता था जैसे तुम उससे शादी कर लोगे [आन्याके कानमें कुछ कहती है और चार्लोटाको इशारा करती है। दोनो बाहर चली जाती है] वह तुमसे प्यार करती है—तुम भी उसे पसन्द करते हो और अब... अब पता नहीं, क्यो

ऐसा लगता है जैसे एक दूसरेसे मुँह चुरा रहे हो.. .. मेरी समझमें नहीं आता।

लोपाखिन—सच बात तो यह है कि खुद मेरी समझमें नहीं आता। खैर बात बडी अजीब-सी है। अगर अब भी वक्त हाथसे न गयाहो तो मैं तैयार हूँ.. हमलोग झटपट तय कर लें और शादी फर-फराके खत्म करें.. लेकिन बिना आपके सामने रहे, मुझसे खुद प्रस्ताव नहीं रखा जायेगा।

• रैनिव्स्काया—यह तो बडा अच्छा है। अरे, इस कार्यके लिए कुल एक ही मिनट की तो जरूरत है। मैं उसे अभी बुलाये लेती हूँ।

लोपाखिन—शैम्पेन यहाँ पहलेसे है ही. [गिलासोंमें झाँककर देखता है] अरे ये तो खाली हैं . किसीने पहले ही खाली कर डाले। [याशा खाँसता हैं]—घोर चटोरापन है यह।

रैनिवस्काया—[आतुरता से] यह बडा सुन्दर हुआ। हमलोग तुम्हे यहीं छोडकर चले जायेंगे अरे ओ याशा। अच्छा, मैं उसे अभी बुलाती हूँ [दरवाजेकी ओर] वार्या—सब काम छोड दो. यहाँ आओ.. जल्दी आ जाओ.. . [याशाके साथ चली जाती है]

लोपाखिन—[अपनी घडी देखकर] हुम्।

[कुछ क्षण चुप्पी। दरवाजेके पीछेसे हँसने और फुसफुसानेकी आवाजें तब आखिरकार वार्याका प्रवेश]

वार्या—[सामानको ऊपरसे देर तक देखते रहकर] अजब बात है। मुझे तो यहाँ कहीं नहीं दिखाई देता।

लोपाखिन—क्या खोज रही हो?

वार्या—मैंने ही तो बाँधा था और अब मुझे खुद ध्यान नहीं रहा. ...

[कुछ क्षण मौन]

लोपाखिन—वार्या मिखायलोव्ना—अब जा कहाँ रही हो ?

वार्या—मैं ? मैं तो रैगुलिनके यहाँ जा रही हूँ। मैंने उनके यहाँ घरकी पूरी देखभाल करनेकी नौकरीके लिए प्रबन्ध कर लिया है न।

लोपाखिन—वह तो याश्नेवोमें है न ?—वह जगह यहाँसे पचास मील दूर पड़ेगी। [कुछ क्षण रुककर] तो इसका मतलब, इस घरसे तो दाना-पानी उठ ही गया।

वार्या—[सामानमें देखती हुई] गया कहाँ ? शायद मैंने उसे सन्दूकमें रख दिया। हाँ, इस घरसे तो दाना-पानी खत्म हो ही गया समझो, अब इस घरमें अपना कुछ नहीं है।

लोपाखिन—और मुझे, अभी इसी दूसरी गाड़ीसे खार्कोव चले जाना है। वहाँ मुझे कई काम करने हैं. ऐपिखोदोवको यहाँ छोड़े जा रहा हूँ—उसे मैंने फिर से लगा लिया है।

वार्या—सचमुच ?

लोपाखिन—अगर तुम्हें याद हो, पिछले साल इन दिनों तो खूब बर्फ पड़ने लगी थी . लेकिन इस बार तो कैसी धूप निकलती है ! कैसा अच्छा मौसम रहता है. .. यों सर्दी तो बेशक काफी है ही हिम-बिन्दुसे तीन डिग्री नीचे है. ..

वार्या—अच्छा ? मैंने देखा नहीं है [कुछ देर चुप रहकर] और फिर हमारा थर्मामीटर भी टूट गया है। [फिर कुछ देर चुप्पी]

[दरवाजेपर आँगनसे आवाज आती है "यार्मोलाय अलैक्सीएविच"]

लोपाखिन—[जैसे इस आवाजकी वह बहुत देरसे प्रतीक्षा कर रहा हो] अभी एक मिनटमें आया।

[लोपाखिन फुर्तीसे चला जाता है। वार्या धरती पर पर बैठकर कपड़े भरे हुए थैलेपर एक हाथ रखकर धीरे-धीरे सिसकियाँ भरती है। दरवाजा खुलता है और रैनिव्स्काया सावधानीसे प्रवेश करती है]

रैनिवस्काया—अच्छा तो ? [कुछ देर चुप रहकर] अब हमे चल देना चाहिए।

वार्या—[जिसने आँखे पोछ ली हैं और अब बिल्कुल नही रो रही] हाँ अम्मा, चल देनेका वक्त हो चुका.. . .अगर आज ही गाडी मिल जाय तो मै भी आज ही रैगुलीनके यहाँ चली जाऊँगी।...

रैनिवस्काया—[दरवाज़े मे] आन्या, कपडे-अपडे पहन लो.. . .

[आन्या आती है, फिर गायेव और चार्लोटा आते हैं। गायेव कन्टोपेव वाला गर्म कोट पहने है। नौकर और गाडीवाले भी आ जाते है। ऐपिखोदोव सामानके आस-पास उठा-धराई करता है]

रैनिवस्काया—चलो, अब हम लोग चले !

आन्या—हाँ चलिये।

गायेव—मेरे बन्धुओ. .. मेरे प्रिय प्राणप्रिय मित्रो, हमेशाके लिये इस मकानको छोडते हुए मै चुप रह जाऊँगा ?.. ...अपने प्राणोंमे प्यारकी तरह उमडते हुए विदाके क्षणोंमे आवेगोंको वाणी दिये बिना क्या मुझसे रहा जायेगा ?

आन्या—[विनतीसे] मामा !

वार्या—मामा, तुम चुप रहो।

गायेव—[हताश स्वरमें] एक ही झटकेमे......वह. ....लिया गेटको पॉकिटमे,......अच्छा, चुप हुआ जाता हूँ . [त्रोफिमोव और फिर लोपाखिनका प्रवेश]

त्रोफिमोव—अच्छा भाइयो और बहनो, अब हमलोग चले।

लोपाखिन—अरे ऐपिखोदोव—मेरा कोट !

रैनिवस्काया—मै बस एक मिनट और रुकूँगी ..लगता है जैसे मैने आज तक देखा ही नहीं कि इस घरकी छत कैसी है, इस घरकी दीवारे कैसी

है,...अब कैसी ममतासे और कैसे उत्कृष्ट आकर्षणसे इन्हे देखनेकी मनमे इच्छा होती है।

गायेव—मुझे याद है, जब मै छः सालका था तो कैसे ट्रिनिटी-दिवसपर इस खिडकीमें बैठा बैठा पिताजीको गिरिजाघर जाते देख रहा था।

रॅनिवस्काया—सब चीजे ले ली है न ?

लोपाखिन—खयाल तो यही है [ओवरकोट पहनते हुए, ऐपिखोदोवसे] ऐपिखोदोव, तुम ध्यानसे देख लो, सब चीजे ठीक-ठीक है न।

ऐपिखोदोव—[फँसे गले से] यामोलाय अलैक्सीएविच आप कोई फिक्र मत कीजिये।

लोपाखिन—अरे, तुम्हारी आवाजको क्या हो गया ?

ऐपिखोदोव—मैने अभी एक गिलास पानी पिया था। गले मे कोई चीज फॅस गई है।

याशा—[घृणा से] बेवकूफी !

रॅनिवस्काया—हमलोग जा रहे है। अब यहाँ एक भी प्राणी नही रहेगा।

लोपाखिन—वसन्त तक तो नही ही रहेगा।

वार्या—[बण्डल में से एक छाता खींच लेती है—जैसे उससे किसीको मारना है।] [लोपाखिन ऐसा भाव दिखाता है जैसे डर गया हो] यह क्या ?—नही भाई, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।

त्रोफ़िमोव—भाइयो और बहनो—आइये गाडियो पर सवार हो। वक्त हो चुका है। अभी गाडी आ जायेगी।

वार्या—पेत्या, तुम्हारे बरसाती जूते यह रक्खे। इस बक्सेकी बगल मे। [आँखो मे आँसू भरकर] कैसे गन्दे पुराने हो गये है ये भी !

त्रोफिमोव [अपने बरसाती जूते पहनकर] बन्धुओ अब चले।

गायेव—[अत्यधिक-सा उद्विग्न होकर डरते हुए कि कही रो न पडे]

गाडी स्टेशन . बगलवाली पॉकेटके तीन कुशनमें, मैं इस बार उस सीधे कोने वाली गेंदमें मारूँगा .

रैनिवस्काया—आओ-आओ, चलें हमलोग।

लोपाख़िन—सब लोग आ गये न? [बाँईं तरफ दरवाजेमें ताला लगाता है] सब चीजें तो यहीं हैं न, यहाँ भी ताला लगा चलें। आइये, अब चलें।

आन्या—अच्छा घर, अलविदा अलविदा। पुरानी जिन्दगी ..

त्रोफ़िमोव—नये जीवनका स्वागत हो।

[आन्याके साथ त्रोफिमोव चला जाता है। वार्या कमरेको चारों ओर देखती है और धीरे-धीरे चली जाती है। याशा और अपने कुत्तेके साथ चार्लोटा भी चली जाती है]

लोपाख़िन—तो भाई वन्सत तकके लिये विदा.. अच्छा बन्धुओ, अगली मुलाकात तकके लिये विदा... .

[चला जाता है]

[रैनिवस्काया और गायेव अकेले रह जाते हैं। जैसे इसी क्षणकी राह देख रहे हों, इस तरह एक दूसरेकी गर्दनसे लिपट जाते हैं। और दबी घुटी-घुटी सिसकियोंमें फफक पडते है। डर है कोई सुन न ले।]

गायेव—[हताश स्वरसे] बहन......मेरी बहन,

रैनिवस्काया—हाय, मेरा बगीचा.. मेरा प्यारा बगीचा... . मेरी जिन्दगी, मेरी खुशी ... मेरी जवानी. .. अब विदा दो..... अलविदा

. आन्याकी आवाज—[प्रसन्नतासे पुकारती है] अम्मा!

त्रोफिमोवकी आवाज़—[आवेग और प्रसन्नतासे] आ. ओ!

रैनिवस्काया—हाय, इन दीवारों इन खिडकियोंको आखिरी बार तो

देख लूँ... मेरी माँ को इस कमरेमे घूमना बड़ा अच्छा लगा करता था. . .

गायेव—बहन..... बहन . .

आन्याकी आवाज़—अम्मा !

त्रोफिमोवकी आवाज—आऽ.. ...ओ !

रॅनिवस्काया—आ रहे है।

[सब चले जाते हैं]

[मञ्च खाली है। दरवाजोमे ताले लगने और फिर गाडियोंके जानेकी आवाजें। शान्ति। पूर्ण निस्तब्धतामें किसी पेडपर कुल्हाडी चलनेकी ऐसी आवाज जो बडी दुखित, उदास, एकान्त मे झनझनाकर चुप हो जाती है। किसीकी पदचाप सुनाई देती है। दाहिनी ओर दरवाज़ेमे फीर्स खडा दिखाई देता है। कपडे उसके हमेशा जैसे ही हैं। एक जाकेट और कोट, पैरोंमें स्लीपर। बीमार है।]

फीर्स—[दरवाजोंके पास जाता है और हैण्डिल हिलाकर देखता है] ताले बन्द है। सब लोग चले गये......[एक सोफेपर बैठ जाता है] मेरा किसीको भी ध्यान नही रहा .... कोई बात नहीं है.... मै जरा यहाँ बैठ लूँ.... शर्तिया कहता हूँ लियोनिद एन्द्रीएविचने अपना फरवाला कोट नही पहना होगा। अपने उसी पतलेवाले कोटमे चले गये है .. [चिन्तासे दीर्घ साँस लेता है] हाय, वे लोग मुझसे मिलकर भी नहीं गये। . .. अरे नया-नया खून है . .[मुँह ही मुँहमें कुछ बडबडाता है जो समझमे नही आता] सारा जीवन इस तरह खिसक गया जैसे कभी जिया ही न हो ..... [लेट जाता है] जरा लेट

लूँ..... अब तो जैसे दम ही निकल रहा हो..... अब शेष क्या रह गया.. . .सभी कुछ तो चला गया। उफ! मेरा जीवन अब बेकार है......

[बिना हिले-डुले लेटा रहता है]

वीणाके टूटे तारकी तरह एक आवाज़ सुनाई देती है, जैसे कहीं आसमानसे आई हो और उदास-विषण्ण-सी धीरे-धीरे डूब जाती है। फिर सब कुछ शान्त हो जाता है। बगीचेमें गूँजती कुल्हाड़ी की आवाज़के सिवा सब कुछ निस्तब्ध है।]

[पर्दा गिरता है]

समाप्त



तीन बहनें

पात्र

आन्द्रे सर्जीएविच् प्रोजोरोव	
नाताल्या आइवानोव्ना	—(नाताशा) (आन्द्रेकी प्रेमिका और बाद में पत्नी)
ओल्गा, माशा, इरीना	—आन्द्रेकी बहनें
फयोदोर इल्यिच कुलिगिन	—(हाई-स्कूलका मास्टर, माशा का पति)
लैफ्टिनैण्ट कर्नल इग्नात्येविच वैर्शिनिन	—(सेना-नायक)
बैरोन निकोलाय ल्वोविच तुजेनबाख	—(लैफ्टिनैण्ट)
वैसिली वैसिलेविच सोल्योनी	—(कैप्टेन)
ईवान रोमानिच शैबुतिकिन	—(फौजी डाक्टर)
अलैक्सी पैत्रोविच फैदोतिक	—सैकिण्ड लैफ्टिनैण्ट
व्लादिमीर कार्लोविच रोदे	—सैकिण्ड लैफ्टिनैण्ट
फैरापोण्ट	—ग्राम-पञ्चायतका बूढ़ा चपरासी
अनफीसा	—अस्सी सालकी बुढ़िया—दाई माँ।

घटना-स्थल : देहाती-कस्बा

पहला अङ्क

[प्रोजोरोव-परिवारका मकान। खम्भोंवाला एक ड्रॉइङ्गरूम, जिसके पीछे एक बड़ा कमरा दिखाई पड़ता है। दोपहरका समय। धूप साफ और तेज है। पीछेके कमरेमें भोजनके लिए एक मेज ठीककी जा रही है]

हाईस्कूल-टीचरके गहरे-नीले रङ्गके कपड़े पहने ओल्गा अभ्यास की कॉपियाँ जाँच रही है। कभी चुपचाप खड़ी होकर जाँचती है, कभी इधरसे उधर घूमते हुए। काले कपड़े पहने माशा बैठी एक किताब पढ़ रही है—उसने अपना टोप घुटनेपर रख लिया है। सफेद कपड़े पहने इरीना विचारोंमें खोई खड़ी है]

ओल्गा—इरीना, आजसे ठीक एक साल पहले, पाँच मईको, तुम्हारे जन्म-दिनपर ही तो पिताजीका स्वर्गवास हुआ था। भयानक ठण्ड थी। बर्फ पड़ रही थी। मुझे तो ऐसा लगता था जैसे इस दुख से मैं बच नहीं पाऊँगी। तुम ऐसी बेहोश पड़ी थी मानो मर गई हो। लेकिन अब एक साल बीत गया। हमलोग अब कुछ स्थिरचित्तसे विचार कर सकते हैं। तुमने सफेद कपड़े पहन ही लिये हैं—चेहरे पर भी कान्ति है। [घड़ी बारह बजाती है] उस समय भी तो घड़ी घण्टे ही बजा रही थी [कुछ क्षण चुप्पी] जब लोग उन्हें कब्रिस्तान ले जा रहे थे उस समय बजता बैण्ड, बन्दूकोंका छूटना मुझे अब तक याद है। थे तो पिताजी ब्रिगेडियर कमाण्डर जनरल, पर फिर भी लोग ज्यादा नहीं आये थे। खैर, उस वक्त पानी भी तो पड़ रहा था—मूसलाधार पानी और बरफ दोनों।

इरीना—क्यों याद करती हो ये सब बातें ?

[खम्भोंके पीछे मेज़के पास बैरन तुजेनबाख, शेबुतिकिन और सोल्योनी दिखाई देते हैं]

ओल्गा—आज तो काफी गर्म है—खिड़कियाँ खोली जा सकती हैं। लेकिन भोजके पेड़ोंमें अभी तक कोंपलें ही नहीं आईं। ग्यारह साल पहले पिताजीको ब्रिगेड मिला था, तभी वे हमारे साथ मॉस्कोसे यहाँ आये थे—और मुझे खूब याद है, अबतक यानी मईके शुरू होते-होते हर तरफ बहार छा गई थी।—बड़ी सुहानी गर्मी थी और सारा संसार सुनहली धूपमें नहाया हुआ था। ग्यारह साल पहलेकी बात है। फिर भी मुझे सारीकी सारी बातें यों याद हैं जैसे कलकी हो। सच बहन, आज सुबह जब मैं उठी तो देखा धूपका एक ज्वार-सा उमड़ा पड़ रहा है। तब मैंने देखा, अरे, वसन्त आगया। मेरा हृदय आनन्दसे झूम उठा। उस समय मनमें वापस घर पहुँच जानेकी बड़ी ही उत्कट इच्छा हुई।

शेबुतिकिन—[व्यंग्यसे सोल्योनीसे] वही पुराना रोना !

तुजेनबाख—[सोल्योनीसे ही] सच यार, यह सरासर बकवास है।

[माशा किताबमें ही डूबी हुई हल्के-हल्के सीटीसे गुनगुनाती है]

ओल्गा—सीटी मत बजाओ, माशा ! कैसे मन हो पाता है तुम्हारा ! [चुप्पी] सारे दिन स्कूल, फिर रात-रात तक अपने पाठोंकी तैयारीसे सिरमें ऐसा दर्द होता है, दिमागमें ऐसी मुर्दनी और उदासी भरी रहती है जैसे मैं बुड्ढी हो गई हूँ। सचमुच, इन पिछले चार सालोंमें जबसे मैं इस हाईस्कूलमें हूँ, मुझे ऐसा लगता जैसे बूँद-बूँद करके धीरे-धीरे मेरी सारी शक्ति, सारी जवानी मुझे छोड़कर चली गई हो। बस, एक ही झक रोज-रोज बढ़ती जाती है.... ....

ईरीना—मॉस्को लौट चलो।..घर-बार सबको बेच-बाचकर, यहाँकी सारी चीजोंको ठिकाने लगाकर मॉस्को भाग चलो।...

ओल्गा—हाँ, मॉस्को—जितनी जल्दी हो सके.. .. ..

[शेबुतिकिन और तुजेनबाख हँसते हैं]

ईरीना—आन्द्रे भैया शायद प्रोफेसर हो जाये। तब तो फिर वे यहाँ कभी भी नहीं रहेंगे। बस, बिचारी माशाका ही जरा सोच होता है।

ओल्गा—माशा हर साल गर्मियाँ मॉस्कोमें आकर बिता लिया करेगी।

[माशा हल्की सीटीमें गुनगुनाती रहती है]

ईरीना—भगवान करे, किसी तरह यह हो जाय। [खिड़कीसे बाहर देखकर] आजका दिन कैसा सुहावना है। पता नहीं क्यों—आज मेरा मन बड़ा पुलक रहा है। जब आज सुबह-सुबह मुझे ध्यान आया कि अरे, आज तो मेरी वर्षगाँठ है, तो अचानक मनमें बड़ी खुशी हुई। बचपनकी याद आने लगी, जब अम्मा जिन्दा थीं। उन सब बातोंने मुझे विभोर और रोमांचित कर डाला—हाय, वे उन दिनोंकी बातें

ओल्गा—आज तुम बड़ी खिल रही हो। और दिनोंकी अपेक्षा आज बड़ी प्यारी-प्यारी लग रही हो। माशा भी बड़ी सुन्दर लग रही है। आन्द्रे भैया भी बड़े अच्छे लगने लगेंगे—लेकिन वे जरा फूल गये हैं। मुटापा उन्हें फबता नहीं है। और मैं तो बड़ी-बूढ़ी होती जाती हूँ—काफी दुबली भी तो हो गई हूँ। इसका कारण शायद यह हो कि स्कूलमें लड़कियोंसे बड़ी झल्लाई-सी रहती हूँ। आज मैं बिल्कुल स्वतन्त्र हूँ अपने घर बैठी हूँ। न सिरमें दर्द है न कुछ—इसलिये ऐसा लगता है जैसे कल बूढ़ी थी आज फिरसे लड़की हो गई हूँ। अभी मेरी उम्र कुल २८ की तो है

ही। खैर यो तो सब ठीक है। जो कुछ करता है भगवान् ही करता है.. फिर भी कभी-कभी मन होता है कि शादी कर लेती. दिन भर घर बैठी रहती। कैसा अच्छा होता.. [कुछ देर चुप रहकर] मैं अपने 'उनको' खूब प्यार करती...

तुज़ेनबाख़—[सोल्योनीसे] तुम इतनी बक-बक करते हो कि सुनते-सुनते मैं तो ऊब उठा हूँ.. [ड्राँइगरूममें आते हुए] मैं आपको एक बात बताना भूल गया.. आज हमारी फौजके नये कमाण्डर वेर्शिनिन आपके यहाँ आनेवाले हैं [पयानोके पास बैठ जाता है]

ओल्गा—अच्छा ?—मुझे बडी खुशी होगी।

ईरीना—बूढे हैं क्या ?

तुज़ेनबाख़—नहीं, ऐसे तो नहीं है। चालीस या ज्यादासे ज्यादा पैंतालीस के होंगे.. [धीरे-धीरे पयानो बजाता है] आदमी तो शानदार लगता है। बस, बक्की बहुत है।

इरीना—दिलचस्प हैं न ?

तुज़ेनबाख़—हाँ हाँ, ठीक ही है। उसके एक पत्नी है, एक सास है, और दो छोटी-छोटी लडकियाँ है बस, सो यह भी उसकी दूसरी पत्नी है। अब वह सबके यहाँ जा-जाकर कहते फिर रहे हैं कि उनकी एक पत्नी है, दो बच्चियाँ है। आपको भी बताएँगे। पत्नी उसकी कुछ झक्की-सी लगती है—लडकियोंकी तरह बालो की लम्बी-सी चोटी किये रहती है। हमेशा बडे भावुकता भरे लहजे मे बाते करती है। बात-बातमे दार्शनिकताका छोंक लगाती जाती है और अपने पतिदेवको जलानेके लिये ही अक्सर आत्महत्याकी कोशिशे करती रहती है। मै होता तो वर्षों पहले ऐसी पत्नीको

नमस्कार कर चुका होता, लेकिन ये है कि सिर्फ उसकी शिकायतें करते जाते हैं और उसीके साथ चिपके हैं।

सोल्योनी—[शेबुतिकिनके साथ ड्राइंगरूममें आते हुए]—एक हाथसे मैं आधा मन वजन ही उठा पाता हूँ, जबकि दोनों हाथोंसे डेढ़ मन—कभी-कभी तो पौने दो मन तक उठा लेता हूँ। इससे यह नतीजा निकाला कि दो आदमी मिलकर एक आदमीके अपेक्षा दुगुने ही नहीं, बल्कि तिगुने या और भी ज्यादा होते हैं. एक और एक ग्यारह।

शेबुतिकिन—[आते हुए अखबार पढ़ता जाता है] बाल झड़नेके लिये ... आधी बोतल स्पिरिटमें दो तोले नेफथलीन डालिये... खूब घुलमिल जाने दीजिये ... अब इसे रोज इस्तैमाल कीजिये अच्छा, इसे लिख लें [अपनी नोट-बुकमें लिखता है] नहीं .. नहीं मुझे इसकी जरूरत क्या है ? [काट देता है] इससे क्या होता जाता है ?

इरीना—शेबुतिकिन, डाक्टर शेबुतिकिन।

शेबुतिकिन—क्या हुआ बेटी, मुन्नी ?

इरीना—मुझे बताओ न, मैं आज इतनी खुश क्यों हूँ ? जैसे मेरे ऊपर अनन्त नीला आकाश फैला चला गया हो और सफेद बगुलोंकी पाँत उसमें उड़ती चली जा रही हो . क्या बात है ? क्यों है ?

शेबुतिकिन—[बड़ी कोमलतासे उसके दोनों हाथोंको चूमता है] मेरी चिड़ी।

इरीना—आज जब सुबह-सुबह मैं उठी, मैंने हाथ धोया तो लगा मानो दुनियाकी सारी बातें मेरी समझमें आ गईं—मेरे सामने साफ हो गई हों। जैसे मैं जान गई होऊँ कि जिन्दगी कैसे रहना चाहिये ... डाक्टर साहब, अब मेरी समझमें सब कुछ आ गया है. .

चाहे कोई भी क्यो न हो, उसे काम करना चाहिये। एडी-चोटीका पसीना बहाकर परिश्रम करना चाहिये। जीवनकी सारी सार्थकता, सारा उद्देश्य, सारे आनन्द, सारे उल्लास इसीमे है। कैसा आनन्द है मजदूर बननेमे। सुबह पौ फटनेसे पहले उठ पडे.. सडकपर पत्थर तोडते रहे.. या फिर चरवाहा बने स्कूल-मास्टर, बच्चोको पढा रहे है.. या फिर इंजन ड्राइवर. आह, डाक्टर साहब, मनुष्योकी तो बात ही छोड दो, अच्छा हो आदमी बैल घोडा कुछ बन जाय—काम तो करता रहे! ऐसी लडकी बननेसे क्या फायदा कि बारह बजे उठे, बिस्तरपर कॉफी पीली और फिर दो घण्टे साज-सिंगार मे लगाये. सचमुच बडा बेहूदा है यह सब!—जैसे गर्मीके दिनोमे किसीको पानीकी झक होती है—मुझे काम करनेकी झक है। जिस दिनमै सुबह उठते ही काम न करूँ—तुम मुझसे बाते मत करना...कुट्टीकर लेना।

शैबुतिकिन—जरूर.. जरूर।

ओलगा—पिताजीने हमे सुबह सात बजे ही उठनेका अभ्यास कराया है। अब एक ये इरीना है कि उठ तो सुबह सात पर ही पडती है लेकिन नौ बजे तक पडी-पडी सोचती रहती है। और दिखाई कैसी गम्भीर देती है—[हँस पडती है]

इरीना—तुम्हे तो मुझे हमेशा बच्चा समझनेकी आदत हो गई है—मै जरा भी गम्भीर हुई, कि तुम्हे अजब-अजब लगता है। बीसकी तो हो गई मै!

तुज़ेनबाख—यह काम करनेकी दुर्निवार लालसा—आह दोस्त, इसे मै कैसी अच्छी तरह पहचानता हूँ। अपने जीवनमे मैने कभी काम नहीं किया! सुस्त, आलसी, ठण्डसे जमे पीटर्सबर्गके ऐसे परिवारमे जन्म लिया जहाँ न तो काम करनेसे कोई मतलब था—न

चिन्ता। मुझे याद है जब मै फौजी विद्यार्थियोके स्कूलसे घर जाया करता था, तो एक वर्दी डाटे चपरासी मेरे बूट उतारा करता था। मै बडा उपद्रवी था, लेकिन मेरी माँ हमेशा मुझे एक आदर-मिश्रित भयसे देखा करती थी। जब और लोग मेरी ओर इस तरह नही देखते, तो उन्हे आश्चर्य होता। काम करनेसे तो मुझे हमेशा बचाया गया—दूर रखा गया। लेकिन मुझे विश्वास नही है कि वे लोग कामसे मुझे कभी पूरी तरह दूर रख पाये हों।—मुझे तो शक है। अब वह वक्त आ गया है कि बर्फ की भारी पहाडी-चट्टान दनदनाती हमारे ऊपर चली आ रही है, गरजता हुआ शक्तिशाली भीषण तूफान अब हमारे सिरोपर आ पहुँचा है—यह सारे आलस्य, सारी उदासी, सारी काम करनेसे घृणा और हमारे समाजकी सडी-गली मान्यताओंको चकना-चूर कर डालेगा—उखाड फेकेगा ! मै काम करूँगा, और देख लेना, आनेवाले पच्चीस-तीस सालमे एक-एकको काम करना पडेगा—हर एकको।

चेबुतिकिन—मै काम-वाम कुछ नही करूँगा।

तुजेनबाख—तो तुम्हें गिनता ही कौन है ?

सोल्योनी—खुदाका शुक्र है, कि अगले पच्चीस सालमें यहाँ तुम्हारी हवा भी नही होगी। दो-तीन सालमे ही या तो तुम्ही अपना बोरिया-बधना उठाकर जहन्नुमकी तरफ कूच करते दिखाई दोगे या फिर किसी दिन गुस्सेमे आकर मै ही अपनी गोलीसे तुम्हारी खोपडी फोड दूँगा—समझे देवता !—[जेबसे इत्रकी शीशी निकालकर उसके हाथो और छातीपर छिडकता है]

चेबुतिकिन—[हँसता है] मैने तो सचमुच कभी कोई काम नही किया। यूनिवर्सिटी छोडनेके बादसे मैने तिनका तक नही हिलाया !—

कभी कोई किताब तक नहीं पढ़ी, बस अखबार पढ लेता हूँ [जेवसे दूसरा अखबार निकाल लेता है] अच्छा...अब जैसे उदाहरणके लिए लीजिए, अखबारोंसे मुझे यह तो पता है कि दोब्रोल्युबोव नामके कोई साहब कभी हुए हैं—लेकिन उन्होंने लिखा क्या है ?—मैं नहीं कह सकता ! खुदा जाने क्या लिखा है.. [नीचेकी मंजिलसे फर्शपर खटखटानेकी आवाज आती है] लीजिए, नीचे बुलावा आ गया ! कोई मुझसे मिलने आया है। मैं अभी सीधा आता हूँ। एक मिनट रुको . ।

[अँगुलियोंसे दाढी सुलझाता हुआ तेजीसे निकल जाता है]

इरीना—कोई काम ही आ पडा होगा।

तुज़ेनबाख—हाँ, गया तो बडा गम्भीर चेहरा बनाकर है। जरूर आपके लिए कोई भेट लेकर अभी आ रहा है।

इरीना—अच्छी बकवास है।

ओल्गा—हाँ-हाँ, बडी बुरी बात है। जब देखो, तब यह कुछ न कुछ वेवकूफी ही करते रहते है।

माशा—[अपने आप ही पढती है] समुद्रके एक ढालू किनारे पर हरा-हरा शाह-बलूत का पेड खडा है, बलूतके उस पेडपर सोनेकी जञ्जीर है . उस बलूतपर सोनेकी जञ्जीर है [धीरे-धीरे गुन-गुनाती हुई उठ खडी होती है]

ओल्गा—माशा, तुम आज नहीं चहक रही ।

[माशा गुनगुनाती हुई टोप पहनती है]

ओल्गा—किधर चल दी ?

माशा—घर।

इरीना—अनोखी बात है.

तुज़ेनबाख—...कि कोई जन्म-दिनके प्रीतिभोजसे उठकर यो चल दे, है न।

माशा—कोई बात नहीं, सन्ध्याको आ जाऊँगी.. अच्छा बहन नमस्कार [ईरीनाका चुम्बन लेती है] एक बार फिर कामना करती हूँ कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न रहो। पहले जब पिताजी जिन्दा थे तो जन्म दिनके प्रीतिभोजोंमे तीस-चालीस अफसर हमारे यहाँ इकट्ठे हो जाया करते थे। बडा शोर-शराबा रहता था। लेकिन आज तो कुल डेढ आदमी है और निर्जन जैसा सन्नाटा है। मै चलती हूँ। आज मैने नीले कपडे पहन रखे है। जी बडा उखडा-उखडा हो रहा है, इसलिये जो भी कहूँ उसका बुरा मत मानना [आँखोंमें आँसू भरकर गाती है] हमलोग फिर कभी बाते करेंगे अच्छा तो अब नमस्कार बहन, मै चलती हूँ

ईरीना—झल्लाकर अरे भई, तुम भी एक मुसीबत हो।

ओल्गा—[रुँधे गलेसे] माशा, मै तुम्हारी बात समझती हूँ।

सोल्योनी—अगर पुरुष दार्शनिकता बघारता है तो उसमे थोडा बहुत दर्शन या कमसे कम दर्शनाभास जरूर होता है, लेकिन जब एक या दो औरते, दार्शनिकता छौंके तब तो भगवान ही मालिक है।

माशा—जनाब भूतनाथ साहब, क्या मतलब है आपके इस कहनेका ?

सोल्योनी—कुछ नहीं, कुछ नहीं [किसीकी पंक्ति उद्धृत करता है] "कुछ भी कहनेका समय नहीं, जब चढा पीठ पर हो भालू" [एक क्षण चुप्पी]

माशा—[ओल्गासे नाराज होकर] अब यह सिसकना बन्द करो।

[अनफीसा और फेरापोण्टका एक केक लेकर प्रवेश]

अनफीसा—मेरा इस तरफ भीतर चले आओ जूते तो तुम्हारे साफ है [ईरीनासे] नगर पंचायतसे, मिखाइल इवानिच पेत्रिनी की ओरसे यह एक केक आपके जन्म-दिवस पर।

इरीना—धन्यवाद. .उन्हे धन्यवाद...[केक ले लेती है]

फ़ैरापोण्ट—क्या कहा ?

इरीना—[ऊँची आवाजमें] मेरी तरफसे उन्हे धन्यवाद दे देना।

ओल्गा—दाई माँ, इसे कुछ समोसे (पाई) दे दो। इनके साथ चले जाओ, ये तुम्हे समोसे दे देगी।

फ़ैरापोण्ट—एं ?

अनफीसा—फ़ैरापोण्ट स्पिरिदोनिच, मेरे साथ आ जाओ भैया, चले आओ।

[फ़ैरापोण्टके साथ चली जाती है।]

माशा—मुझे यह प्रोतोपोपोव—क्या नाम है इस कम्बख्तका ? मिखायल पोतापिच या इवानिच—पसन्द नही है। उसे बिल्कुल निमन्त्रित नही किया जाना चाहिये था।

इरीना—मैने तो निमन्त्रित नही किया उसे।

माशा—बडा अच्छा किया।

[शेबुतिकिनका प्रवेश। चाँदीका समोवार (अँगीठी) लिये हुए उसके पीछे पीछे एक अर्दली आता है। आश्चर्य और झुँझलाहट का मिश्रित कोलाहल]

ओल्गा—[हाथोसे चेहरा ढाँपते हुए] समोवार ! हाय राम !

[भोजनके कमरेमे मेज़के पास चली जाती है]

इरीना—किस चक्करमे पड गये आप ?

तुज़ेनबाख़—[हँसकर] मैने तो तुमसे पहले ही कहा था।

माशा—सचमुच, शेबुतिकिन दादा, तुम्हारे पास दिल नही है।

शेबुतिकिन—प्यारी बच्चियो, मेरी बेटियो तुम्ही तो मेरी सब कुछ हो। अब मेरे लिए इस धरतीपर सबसे कीमती खजाना तुम्ही तो हो। जल्दी ही मै साठका हो जाऊँगा। बुड्ढा आदमी हूँ.. दुनियामे

बिल्कुल अकेला, निकम्मा बूढा। तुम्हारे लिए प्यारके सिवा मेरे पास कोई भी तो अच्छी चीज नहीं है। अगर तुम्हारे लिए यह प्यार भी न होता तो शायद मैं बहुत पहले मर गया होता... [इरीनासे] मेरी बच्ची। बेटी, बिल्कुल बच्ची थी तबसे मैं तुझे जानता हूँ। मैंने तुझे अपनी गोदमें खिलाया है। मुझे तुम्हारी प्यारी मातासे भी बड़ा स्नेह था।

इरीना——लेकिन यह इतनी कीमती भेंट क्यों ले आये ?

चेबुतिकिन—[रुँधे गलेसे नाराजीसे]. कीमती भेंट। अच्छा, भागो यहाँसे। [अर्दलीको मेज़की तरफ इशारा करके] समोवारको वहाँ ले जाकर रख दो [नक़ल उतारते हुए] कीमती भेंट।

[अर्दली समोवारको खानेके कमरेमें ले जाता है]

अनफीसा—[कमरा पार करके] बेटियो, एक कर्नल साहब आये हैं। वोई बिल्कुल नयेसे आदमी लगते हैं ग्रेटकोट उतार चुके हैं। बेटियो, व अभी यहाँ आये जाते हैं। इरीनुश्का बेटी, जरा तमीज और नम्रतासे पेश आना [बाहर जाते-जाते] और खानेका भी वक्त हो चुका है। हे भगवान हमारी भी सुनो।

तुजेनबाख—मेरा खयाल है वेर्शिनिन होंगे।

[वेर्शिनिनका प्रवेश]

तुजेनबाख—कर्नल वेर्शिनिन।

वेर्शिनिन—[माशा और इरीनासे] यह मेरा सौभाग्य है कि आज मुझे आपका परिचय देनेका अवसर मिल रहा है। मेरा नाम वेर्शिनिन है। मुझे बहुत ही खुशी है कि आज आपके यहाँ आ ही गया। अरे ये [illegible] तुम हो गई कितनी बड़ी हो, नहीं हो?

इरीना—मेहरबानी करके तशरीफ रखिये। आपके दर्शन करके हमे बडी ही खुशी हुई।

वैर्शिनिन—[उमँग कर उत्साहसे] खुद मुझे कितनी खुशी है। आह, सचमुचमे कितना खुश हूँ आज! तुमलोग कुल तीन ही तो बहने हो न?. तीन छोटी-छोटी गुडियोंकी तो मुझे खूब याद है। चेहरे तो याद नहीं रहे, लेकिन मुझे खूब याद है, तुम्हारे पिता कर्नल प्रोजोरोवके तीन लडकियाँ थीं। तुम्हे मैने खुद अपनी आँखोंसे देखा था। समय कैसा उडता चला जाता है...हाँ-हाँ कैसा उडता ही चला जाता है।

तुजेनबाख़—कर्नल वैर्शिनिन मॉस्कोसे तशरीफ ला रहे है।

इरीना—मॉस्कोसे? क्या आप मॉस्कोसे ही आ रहे है?

वैर्शिनिन—हाँ। तुम्हारे पिताजी वहाँ सेनाके कमाण्डर थे। उन दिनो उसी सेनामे मै भी एक अफसर था [माशासे] तुम्हारा चेहरा. हाँ-हाँ, अब मुझे लगता है, थोडा-थोडा ध्यान आ रहा है।

माशा—लेकिन मुझे तो आपकी याद नहीं है।

इरीना—ओल्गा! ओल्गा! [भोजनके कमरेमें पुकारती है] ओल्गा-जल्दीसे इधर तो आओ।

[ओल्गा भोजनके कमरेसे ड्रॉइगरूममें आती है]

इरीना—पता चला, कर्नल वैर्शिनिन मॉस्कोसे तशरीफ ला रहे है।

वैर्शिनिन—अच्छा तो ओल्गा सर्जीएव्ना तुम्ही हो न?.. सबमे बडी बहन। और तुम मार्या, फिर सबसे छोटी इरीना।

ओल्गा—आप मॉस्कोसे ही आ रहे है न?

वैर्शिनिन—हाँ—मॉस्कोमे ही मै पढा-लिखा। वहीं नौकरी शुरू की। वर्षों वहाँ नौकरी की, फिर आखिरकार मुझे सेनाकी जिम्मेदारी देकर यहाँ भेज दिया गया। देख ही रही हो, अब मै यहाँ हूँ। ठीक-ठीक

तो तुम्हारी मुझे याद नहीं है। बस इतना ही याद है कि तुम तीन बहनें थीं। तुम्हारे पिताजीकी भी याद है! अब भी अगर आँखें बन्द कर लूँ तो उन्हे ऐसे देखने लगूँगा, जैसे वे जिन्दा हों। मॉस्कोमें मैं तुम्हारे घर आया-जाया करता था।

ओल्गा—मेरा खयाल है कि मुझे सभीकी याद है। और अभी-अभी अचानक .

वर्शिनिन—मेरा नाम अलेक्जेन्द्र इग्नात्येविच है।

इरीना—अलेक्जेंद्र इग्नात्येविच। और आप मॉस्कोसे आ रहे हैं। सचमुच कैसी मजेकी बात है।

ओल्गा—आपको पता है, हमलोग खुद वहीं जा रहे हैं?

इरीना—उम्मीद है हमलोग शरदऋतु तक वहाँ पहुँच जायेंगे। मॉस्को हमारा अपना शहर है। वहीं हमारा जन्म हुआ. पुरानी बासमानी स्ट्रीटमें ..[दोनों आनन्दसे हँस पड़ती हैं]

माशा—अपने शहरके किसी आदमीसे अचानक, बिना उम्मीदके यों मिल जाना कैसा अच्छा लगता है। [उत्सुकतासे] अब मुझे याद आया। ओल्गा तुम्हें याद है न, लोग किसी मजनूँ-मेजरके बारेमें बात किया करते थे? आप उस समय लेफ्टिनेण्ट थे और किसीको प्यार करने लगे थे? पता नहीं क्यों, सब आपको चिढ़ाने को 'मेजर' कहा करते थे।

वर्शिनिन—[हँसकर] हो हो, वही वही मजनूँ मेजर ही कहते थे।

माशा—तब तो आपके सिर्फ मूँछें ही मूँछें थीं। ओह अब तो आप बिल्कुल बूढ़े दिखाई देते हैं [रुँधे गलेसे] सच, आप कितने बूढ़े हो गये हैं।

वैर्शिनिन—हाँ, जब मै 'मजनूँ-मेजर'के नामसे बदनाम था। तब जवान था, प्यार करता था। अब तो बहुत फर्क पड गया है।

ओल्गा—लेकिन बाल आपका एक भी नही पका। उम्र आपकी चाहे बढ गई हो पर बूढे जैसे तो नहीं लगते।

वैर्शिनिन—खैर, मै अब तेतालीसवे सालमे चल रहा हूँ। आपको मॉस्को छोडे तो बहुत दिन हो गये?

इरीना—ग्यारह साल! पर अरी, माशा, तू रो क्यो रही है री? अजब लडकी है। [रुँधे गलेसे] मैं भी रोने लगूँगी।

माशा—मै ठीक हूँ. . अच्छा, वहाँ किस सडकपर आप रहते थे?

वैर्शिनिन—पुरानी बासमानी स्ट्रीटपर!

ओल्गा—अरे, वही तो हम भी रहते थे।

वैर्शिनिन—कभी मै निमैत्स्की स्ट्रीटपर रहता था। वहाँसे मै लालबारको तक जाया करता था। रास्तेमे एक बडा मनहूस-उजाड-सा पुल पडता था। वहाँ पानी शोर करता रहता था। बिल्कुल अकेले आदमीका तो वहाँ दिल डूबने-सा लगता था [कुछ देर रुककर] और यहाँका पुल कैसा चौडा है। नदी भी क्या शानदार है। सचमुच बहुत गजबकी नदी है।

ओल्गा—सो तो है, लेकिन यहाँ बडी ठण्ड है। एक तो यहाँ ठण्ड, और ऊपरसे डॉस-मच्छर।

वैर्शिनिन—ऊँह, छोडो भी! यहाँ की आबहवा बडी अच्छी है—ठेठ रूसी, जङ्गल . नदियाँ.. यहाँ भोजके पेड भी तो है गम्भीर शान्त .. मनमोहक भोजके पेड। मुझे भोजका पेड सारे पेडोंसे अच्छा लगता है। वाकई, यहाँ रहनेमे मजा है। बस जरा विचित्र बात यही है कि स्टेशन पन्द्रह मील दूर है ... ऐसा है क्यो? कोई नही बताता।

सोल्योनी—मैं जानता हूँ। इसका कारण [सब उसकी ओर देखते हैं] क्योंकि मान लो अगर स्टेशन पास होता, तो, इतनी दूर नहीं होता और दूर इसीलिए है कि पास नहीं है।

[मनहूस-सी शान्ति छा जाती है]

तुजेनबाख—इन्हें अपने ही मजाक पसन्द हैं।

ओल्गा—अब मुझे आपका भी ध्यान आ रहा है, मुझे याद आ गया।

वर्शिनिन—तुम लोगोंकी माँसे भी मेरा परिचय था।

शेबुतिकिन—बड़ी अच्छी औरत थी बिचारी ! भगवान उन्हें स्वर्ग दे।

इरीना—अम्माका दाह-संस्कार मॉस्कोमें ही हुआ था।

ओल्गा—माता मेरीके नये मन्दिरमें।

माशा—आपलोग विश्वास करेंगे ? मुझे अम्माका चेहरा ही भूलता जा रहा है। इसी तरह शायद लोग हमें भी थोड़े दिनोंमें भूल जायेंगे। हमारे चेहरे उन्हें याद ही नहीं आया करेंगे।

वर्शिनिन—हाँ, लोग हमें भी भूल जायेंगे। यही तो हमारी किस्मत है। लेकिन हमलोगोंका इसमें क्या बस ? आज जो कुछ हमें बहुत गम्भीर लगता है, बहुत महत्वपूर्ण और बहुत ही आवश्यक लगता है—एक दिन उसे कोई याद भी नहीं रखेगा, या वह बिलकुल भी महत्वपूर्ण न लगेगा [एक क्षण चुप्पी] और मजा यह है कि हम यह भी तो दावेसे साफ नहीं कह सकते कि क्या-क्या बहुत महान और महत्वपूर्ण समझा जायेगा और किसे [illegible] और हास्यास्पदका दर्जा मिलेगा। पहले-पहल कापर्नीकस या कोलम्बसकी खोजें क्या हमें व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण नहीं लगती थीं ? और [illegible] जब कि [illegible] लगनेवाले किसी [illegible] की लिखी बकवासमें [illegible] दर्शन होते थे। हो सकता है कि आज जिस जिन्दगीसे हम जिस

तत्परता या स्वाभाविकतासे ग्रहण किये हुए है, वही किसी समय बडी विचित्र, बडी कष्टकर, अर्थहीन, गन्दी और शायद गुनाहोंसे भरी तक लगने लगे।

तुजेनबाख़—कौन जाने? हो सकता है हमारा ही युग महान माना जाय और इसे ही अत्यन्त आदरसे याद किया जाय। देखिये न, आज पहले जैसी यातनाएँ देनेके तहखाने नहीं हैं। आज दलके दल लोगोंको फॉसी पर नहीं लटका दिया जाता, रोज-रोज चढाइयाँ नहीं होतीं। यह सब कुछ है, मगर फिर भी चारो तरफ दुख-दर्द छाया है।

सोल्योनी—[एकदम आवाज़ पचम पर चढाकर जैसे मुर्गोंको दाना खिला रहा हो .] कक् कक् . कक्, हमारे बैरन साहबको तो फिलसफेबाजी ही गोश्त मक्खन है. इसके बाद इन्हे किसी खानेकी जरूरत नहीं रहती।

तुज़ेनबाख़—वैसिली वैसिल्येविच, मैंने तुमसे कहा था कि मेरा पीछा छोड दो। [दूसरी कुर्सी पर जा बैठता है] आखिर हर सबकी भी हद होती है।

सोल्योनी—[वैसी ही ऊँची आवाज़मे]—कक्.. कक्.. कक्।

तुजेनबाख़—[वेर्शिनिनसे] लेकिन बेहद ज्यादा अफसोसकी जो बात आज जिधर देखिये उधर ही दिखाई देती है वह यह कि आज हमारा समाज एक खास नैतिक सतह पर आकर ठहर गया है।

वेर्शिनिन—जी हाँ,. जी हाँ . बेशक।

शेबुतिकिन—बैरन साहब, अभी तुमने कहा कि हमारा युग बहुत बडा माना जायेगा, लेकिन दूसरी ओर देखो। हमारे युगका मनुष्य कितना

छोटा हो गया है। [खड़ा हो जाता है] देखो न, मैं कितना छोटा हूँ?

[नेपथ्यमें वॉयलिन बजता है]

माशा—यह वॉयलिन हमारे आन्द्रे भैया बजा रहे हैं।

इरीना—परिवार भरमें वही सबसे अधिक विद्वान हैं। हमें तो उम्मीद है वे कहीं न कहीं प्रोफेसर हो जायेंगे। पिताजी तो फौजी आदमी थे—मगर उनके बेटेने पढ़ने-लिखनेकी लाइन चुनी है।

माशा—पिताजीकी ही इच्छा तो थी यह।

ओल्गा—आज हम सब उन्हें खूब चिढ़ा रही थीं। हमें लगता है उन्हें मुहब्बतका रोग लग गया है।

इरीना—यहीं एक लड़की रहती है—उसके साथ...। शायद, वह भी आज यहाँ आये।

माशा—उफ़, कैसे कपड़े पहनती है वह। अगर कपड़े बेढंगे या पुराने फैशनके हों—तब भी कोई बात नहीं, लेकिन उन्हें देखकर तो बस दया आती है..... बड़ा अजब अजब चटक पीले रङ्गका लहँगा, बड़ी गँवारू-सी उसमें लगी झालर और लाल ब्लाउज़. . उसके गाल ऐसे रगड़े हुए रहते हैं कि दूरसे चमकते हैं। आन्द्रे भैया उसके प्यार-व्यारके चक्करमें नहीं हैं...... नहीं, न नहीं मान सकती. खैर कुछ-कुछ यों ही सिर्फ मन बहलावके लिए उसका थोड़ा-सा झुकाव जरूर उधर है। वह भी तो हमें चिढ़ाते और छेड़ बनाते हैं। मैंने तो कल यह सुना था—नगर पञ्चायतके सरपञ्च प्रोतोपोपोवसे उसकी शादी होने जा रही है। हो जाय तो बड़ा अच्छा हो. . . .[बगलमें दरवाजेपर जाकर] आन्द्रे भैया, भैया, जरा एक मिनटको यहाँ तो आइये।

[आन्द्रेका प्रवेश]

ओल्गा—यह हमारे भाई आन्द्रे सर्जाएविच् है।

वेर्शिनिन—मेरा नाम वेर्शिनिन है।

आन्द्रे—और मेरा प्रोजोरोव है [मुँहका पसीना पोंछता है] आप ही तो हमारी फौजके नये कमाण्डर हैं न ?

ओल्गा—आन्द्रे भैया, जरा सोचो तो सही, कर्नल साहब, मॉस्कोसे आ रहे हैं।

आन्द्रे—सचमुच ? अच्छा, तब तो मेरी बधाई है! अब मेरी बहनें आपको चैनसे नहीं बैठने देंगी।

वेर्शिनिन—मैं आपकी बहनोंको पहले ही काफी उबा चुका हूँ।

इरीना—देखिए, आन्द्रे भैयाने आज मुझे कैसा सुन्दर चित्रका फ्रेम दिया है [चौखटा दिखाती है] यह इन्होंने खुद ही बनाया है।

वेर्शिनिन—[चोखटेको देखकर जैसे समझमें न आ रहा हो क्या बोले—] हाँ.. ...सचमुच यह एक चीज है।

इरीना—और पयानोके ऊपर जो फ्रेम रखा है, वह भी इन्होंने ही बनाया है।

[आन्द्रे निराशासे हाथ झटकारता है और एक ओर चला जाता है]

ओल्गा—भैया विद्वान् तो हैं ही, वायलिन भी बजाते हैं। महीन तार वाली आरीसे दुनियाभरकी चीजें बना लेते हैं। सचमुच यह हरफन मौला हैं। आन्द्रे भैया, भागो मत। ये हैं इनके ढङ्ग! हमेशा कतरानेकी कोशिश करते हैं। यहाँ आओ न.. ...।

[माशा और इरीना उसकी बाहें पकड़कर हँसती हुई लौटा लाती हैं]

माशा—आओ—आओ।

आन्द्रे—मुझे छोड़ दो—मेहरबानी करके छोड़ दो !

माशा—बड़े अजब हो तुम भी भैया ! कर्नल-साहबको तो कभी लोग 'मजनूँ मेजर' कहते थे, लेकिन इन्हें तो कभी बुरा नहीं लगा.. !

वर्शिनिन—रत्ती भर नहीं।

माशा—मैं तो तुम्हें 'मॅजनूँ-वायलनिस्ट' कहूँगी।

ईरीना—या 'मॅजनूँ प्रोफेसर'।

ओल्गा—हमारे भैया मुहब्बतके चक्करमें हैं हमारे आन्द्रे भैया प्यार करते हैं।

ईरीना—[तालियाँ बजाती हुई] आहा जी. सब लोग मिलकर कहो—हमारे भैया आन्द्रे प्यार करते हैं।

शेबुतिकिन—[आन्द्रेके पीछे आकर उसकी कमरमें बाहें डालकर लिपट जाता है] 'प्रकृतिने हमलोगोंका हृदय—प्यारके लिए किया निर्माण.. '

[हँसता है, फिर जेबसे अखबार निकालकर पढ़ने लगता है]

आन्द्रे—अच्छा बस। बहुत हो गया [मुँह पोंछता है] आज सारी रात मेरी आँख नहीं लगी। आज सुबहसे ही—जिसको कहते हैं मन उखड़ा-उखड़ा होना, वैसा ही कुछ लग रहा है। रातको, सुबह चार बजे तक पढ़ता रहा, फिर बिस्तरपर जा लेटा—मगर कोई फायदा नहीं। कभी इसके बारेमें सोचता, कभी उसके। इतनेमें ही रोशनी फैलने लगी। सूर्यदेवने मेरे सोनेके कमरेमें प्रकाश फैलाना शुरू कर दिया। मैं चाहता हूँ कि गर्मी-गर्मी, जब तक मैं यहाँ हूँ, अंग्रेजीसे एक किताब अनुवाद कर डालूँ।

वर्शिनिन—आप अंग्रेजी पढ़ लेते हैं?

आन्द्रे—जी हाँ। भगवान् भला करे हमारे पिताजीने पढ़ा-लिखाकर हमारा दम निकाल दिया। बात जरा बेढंगी और बेहूदी है लेकिन मैं मानता हूँ उनकी मृत्युके बाद मैं फूलने लगा था। एक ही साल

में मैं तो फूलकर कुप्पा हो गया हूँ। जैसे मेरे ऊपरसे किसीने कोई भारी पत्थर उठा लिया हो। लेकिन आज पिताजीकी ही बदौलत हमलोग फ्रेंच, इंगलिश, जर्मन इत्यादि जानते हैं। इरीना तो इटालियन भी पढ लेती है।—लेकिन कितनी क़ीमत हमें इस पढ़नेकी चुकानी पड़ी है।

माशा—इस शहरमें तो तीन भाषाएँ जानना शान है। शान ही नहीं—छठी उँगलीकी तरह बेकारका बोझ है। यहाँ तो हम अगर बहुत कुछ जानते हैं, तो सब फालतू है।

वैर्शिनिन—वाह! क्या खूब! [हँसता है] अगर हम बहुत कुछ जानते हैं तो फालतू है! भाई, मेरे ध्यानमें तो कोई ऐसा जाहिल और जड़ शहर नहीं आता जिसमें पढे-लिखे और समझदार लोगोंको फालतू समझा जाय। अच्छा, मान लीजिये इस शहरमें एक लाख लोग रहते हैं—ये सबके सब निश्चित रूपसे असभ्य और पिछड़े हुए हैं और आपकी तरहके सिर्फ तीन ही व्यक्ति हैं। कहनेकी जरूरत नहीं है कि अपने चारों ओर फैले भयानक अँधेरेके दलको आप नहीं जीत सकेंगे। धीरे-धीरे जैसे-जैसे दिन बीतते जायेंगे और आपकी जिन्दगी कटती जायेगी, आप भी इसी भीड़में खो जायेंगे, घुलमिल जायेंगे। आपको इनके सामने झुकना पड़ेगा। लेकिन जीवन आपकी अच्छाइयोंको ले लेगा। फिर भी ऐसा नहीं है कि आपका कोई नामो-निशान ही न रहे। नहीं, हो सकता है आपके बाद, आप जैसे छह और हों, फिर बारह हों—और इसी तरह उस समय तक बढते चले जायँ जबतक उन्हींकी संख्या अधिक न हो जाय। दो-तीन सौ सालमें तो धरतीपर जीवन ऐसा मधुर और सुन्दर हो जायेगा कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते.. ऐसी ही ज़िन्दगीकी तो मनुष्यको वास्तवमें

आवश्यकता है। ठीक है, ऐसा जीवन मनुष्यको अभी तक नहीं मिला, लेकिन उसके दिलमें उसका आभास होना चाहिये, आशा होनी चाहिए, सपने होने चाहिए—उस जीवनके लिए उसे तैयारी करनी चाहिये, क्योंकि उसे खुद देखना-समझना चाहिये कि अपने बाप-दादाओंके मुकाबले उसका ज्ञान अधिक है [हंसता है] और एक आप हैं। आपकी शिकायत है कि जो कुछ भी ज्यादा आप जानते हैं सब फालतू है।

माशा—[टोप उतारकर] अब तो मैं खाना खाकर ही जाऊँगी।

इरीना—[ठण्डी सांस भरकर] सचमुच किसीको इन सब बातोंको लिख डालना चाहिए।

[आन्द्रे इस बीच चुपचाप खिसक जाता है]

तुजेनबाख—आपने बताया कि कुछ सालों बाद धरतीपर जीवन बहुत मधुर और सुन्दर हो जायेगा। बात ठीक है। लेकिन वह समय चाहे जितना दूर क्यों न हो, उसमें अपना थोड़ा बहुत हिस्सा लगाने के लिए हरेकको अभीसे तैयारी करनी चाहिये, काम करना चाहिये।

वर्शिनिन—जी हाँ—जी हाँ! आपके यहाँ कितने सारे फूल हैं! [चारों ओर देखते हुए] और कमरे कैसे सुन्दर हैं। इन्हें तो आपने [illegible] है। यहाँ तो एक सोफा, दो कुर्सियाँ और धुआँ देनेवाला स्टोव लिए हुए अब देखो तब जिन्दगी भर एकसे एक [illegible] फिरे हैं। ये फूल तो जिन्दगीमें कभी [illegible] नहीं [हाथ मलते हुए] लेकिन खैर, वह सब [illegible] क्या?

तुजेनबाख—हाँ, [illegible] काम करना चाहिए। मैं [illegible] कहता हूँ [illegible] जर्मन [illegible] हो [illegible]। लेकिन [illegible] कहता हूँ कि मेरा [illegible] है।

जर्मन बोल तक नहीं सकता—मेरे पिताजी परम्परागत चर्चमें विश्वास करते थे।

[कुछ-क्षण चुप्पी]

वेर्शिनिन—[मञ्चपर टहलते हुए] कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि अगर हमें फिरसे अपनी जिन्दगी शुरू करनी होती और खूब सोच-समझकर हम लोग उसे शुरू करते तो कैसा होता? काश, एक बारकी जी हुई जिन्दगी जल्दी-जल्दीमें लिखी गई रफ स्केच मानी जाती और दूसरी बार शुरू की गई जिन्दगी सुथरी-संशोधित [फेयर-कापी] होती!.. मैं कल्पना करता हूँ कि उस समय हमसे हरेककी यही कोशिश होती कि अपने किये को दुहराये नहीं और जैसे भी हो जीवनके लिए एक नया खाका बनाये। तब शायद वह अपने लिए ऐसा ही एक मकान बनवाता जिसमें खूब झकाझक रोशनी होती और ढेरके ढेर फूल होते। मेरे एक पत्नी और दो छोटी-छोटी बच्चियाँ हैं। अब पत्नीकी तबियत कुछ गडबड चल रही है। लेकिन अगर मुझे फिरसे जीवन शुरू करनेको मिले तो मैं एकदम शादी ही न करूँ नहीं—बिल्कुल नहीं।

[स्कूलमास्टरके कपडोंमें कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—[इरीनाके पास जाकर] इरीना, जन्म-दिनके अवसर पर मेरी बधाइयाँ लो। मैं आपके स्वास्थ्यकी कामना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आपकी उम्रकी लडकियोंके जो भी स्वप्न होते हैं—वे सबके सब पूरे हों। लीजिये, आपको भेंट स्वरूप यह छोटी-सी किताब है [उसे किताब देता है] अपने हाई स्कूलका पचास सालका इतिहास है। मैंने ही लिखा है। बडी तुच्छ और साधारण-सी किताब है—लिखी इसलिए गई कि और कुछ करनेको मेरे पास था नहीं। खैर, फिर भी आप उसे पढ

सकती है। भाइयो नमस्कार! [वेर्शिनिनसे] मेरा नाम कुलिगिन है, मैं यहाँ हाई स्कूलमें मास्टर हूँ, [इरीनासे] इस किताबमें आपको उन सब लोगोंके नामोंकी सूची भी मिलेगी जिन्होंने पिछले पचास सालोंमें हमारे यहाँसे हाई-स्कूल किया है।

[माशाका चुम्बन लेता है]

इरीना—अरे, लेकिन अभी ईस्टर पर ही तो तुमने मुझे यह किताब दी है।

कुलिगिन—[हँसकर] कभी नहीं हो सकता। अच्छा, अगर यही बात है तो इसे मुझे लौटा दीजिये या और भी अच्छा हो कर्नल साहबको इसे दे दीजिये। लीजिये कर्नल साहब, मेहरबानी करके इसे ले लीजिये, कभी जब आपका मन न लग रहा हो, तो इसे पढ़ डालिये।

वेर्शिनिन—धन्यवाद! [जानेकी तैयारी करते हुए] मुझे आपसे परिचय प्राप्त करके बड़ी ही खुशी हुई।

ओल्गा—तो आप जा रहे हैं क्या? नहीं नहीं।

इरीना—आपको हमारे साथ खाना खानेके लिए तो रुकना ही पड़ेगा। रुकिये न।

ओल्गा—हाँ हाँ, रुक जाइये न।

वेर्शिनिन—[ज़रा आदरसे झुककर] शायद अचानक मैं आपके जन्म-दिनपर ही आ गया हूँ। क्षमा कीजिये, मुझे यह पता नहीं था। इसीलिये मैंने आपको बधाई नहीं दी।

[ओल्गाके साथ भोजनके कमरेमें चला जाता है]

कुलिगिन—प्यारो, आज इतवारका दिन है—आरामका दिन है। आइये [illegible] अपनी अपनी [illegible] और उसके अनुसार आराम करें [illegible]। इन गलीचोंको गर्मियों भरके लिए उठा देना

चाहिए और जाडे आनेतक इन्हे दूर ही रखना चाहिए। इनमे या तो फारसी-पाउडर छिडक देना चाहिए या नैप्थलीनकी गोलियाँ डाल देनी चाहिए। इसीलिए तो रोमके लोग इतने तन्दुरुस्त और मस्त थे कि वे जानते थे, काम और आराम कैसे होता है—उनके स्वस्थ शरीरमे उनके जीवनकी कुछ जानी-पहचानी रूपरेखाये थीं। उनका जीवन एक खास ढर्रेमे ढला हुआ था। हमारे स्कूलके हेडमास्टर साहब कहते है कि जीवनमे सबसे महत्वपूर्ण चीज है उसका रूप-निर्माण। जिस चीजका कोई रूप नहीं होता वह समाप्त हो जाती है. ... ठीक यही हमारे दैनिक जीवनका हाल है—[हँसते हुए माशाकी कमरमें हाथ डाल देता है] माशा मुझे प्यार करती है। मेरी पत्नी मुझे प्यार करती है। और हाँ, गलीचोंके साथ-साथ यह खिडकियोंके पर्दे भी हट जाने चाहिए। आज मेरा दिल आनन्दसे नाच रहा है। मन बडा खुश है। माशा, आज शामको चार बजे हमे हेडमास्टर साहबके यहाँ जाना है.. मास्टरों और उनके परिवारके लिए सैर-सपाटेका इन्तजाम किया गया है।

माशा—मै तो नहीं जाती।

कुलिगिन—[दु:खी होकर] प्यारी माशा, क्यो नहीं चलोगी?

माशा—अच्छा, इसके बारेमे बादमे बातें करेगे [गुस्सेमे] अच्छी बात है, चली चलूँगी, मगर अब तो मेहरबानी करके मेरी जान छोड दो।

[चली जाती है]

कुलिगिन—और फिर हमलोग हेडमास्टर साहबके यहाँ सन्ध्या बितायेंगे। अपनी नाजुक तन्दुरुस्तीके बावजूद यह आदमी लोगोंसे घुलने-मिलनेके तरीके निकालता रहता है। बहुत ही सज्जन और महान

व्यक्ति है। कमालका आदमी है। कल मीटिङ्गके बाद बोला—'फ्योदोर इल्यिच, मैं तो परेशान हो उठा हूँ—थक गया हूँ।' [पहले दीवार घड़ीको फिर अपनी कलाईको देखता है] आप लोगोंकी घड़ी सात मिनट तेज है। हाँ, तो वह बोला—'हाँ भाई, मैं परेशान हो उठा हूँ।'

[नेपथ्यमें वॉयलिन बजनेका स्वर]

ओल्गा—भाइयो, अब खानेके लिए चलिए. आज पाई [समोसे] बनी है।

कुलिगिन—वाह ओल्गा, वाह। कल मैं सुबह पौ फटनेसे लेकर रातको ग्यारह बजे तक काम करता रहा—थककर चूर-चूर हो गया। आज तो मनमें बड़ा ही उल्लास है। [खानेके कमरेमें मेज़के पास चला जाता है] वाह प्रिये।

चेबुतिकिन—[अखबारको तह करके जेबके हवाले करता है और दाढ़ीको उँगलियोंसे सुलझाते हुए] क्या कहा ? पाई। तब तो मजा आ गया।

माशा—[चेबुतिकिनसे सख्तीसे] लेकिन ध्यान रखिए, आज आप पियेंगे बिल्कुल भी नहीं। सुना आपने ? आपके लिए पीना अच्छा नहीं है।

चेबुतिकिन—अरे यह सब पुराने पचड़े छोड़ो भी! अब तो मुझे पिये हुए दो साल होने आये [बेसब्रीसे] मारो गोली ... इससे क्या होता है ?

माशा—होता हो या न होता हो पर आप एक बूँद नहीं पियेंगे—समझे? एक बूँद भी नहीं। [गुस्सेसे, लेकिन इस तरह कि पति न सुन ले] भाड़में जाय! फिर वही ... सारी शाम उस हेडमास्टरके यहाँ ऊबकर रहो।

तुज़ेनबाख़—आपकी जगह मैं होता तो कभी न जाता, किस्सा खतम हुआ।

शैबुतिकिन—मत जाओ . ...प्यारी।

माशा—ठीक है, ठीक है। आपका इतना ही कहना काफी है कि 'मत जाओ।'. . कैसी कम्बख्त जिन्दगी है......अब तो सहा नहीं जाता!

[खानेके कमरेमें जाती है]

शैबुतिकिन—[उसके पीछे-पीछे चलते हुए] आइए-आइए।

सोल्योनी—[भोजनके कमरेमें पहुँचकर] अहा चुक्.....चुक् . चुक् ..

तुजेनबाख़—[सोल्योनीसे] बहुत हो चुका, मैं कहता हूँ—अब बस करो!

सोल्योनी—अहा, चुक् ..चुक् . .. चुक्

कुलिगिन—[प्रसन्नतासे] कर्नल साहब, यह आपकी तन्दुरुस्तीके लिए। मैं स्कूलमें मास्टर होनेके अलावा इस परिवारका भी एक सदस्य हूँ। मैं माशाका पति... . बड़ी सहृदय है बेचारी। बहुत ही दयालु।

वर्शिनिन—मैं तो थोड़ी-सी यह काले रङ्गकी वोद्का लूँगा [पीता है] आपकी तन्दुरुस्तीके लिए [ओलगासे] सचमुच, आज आप सब लोगोंके साथ मिलकर मुझे बड़ी ही खुशी हुई।

[इरीना और तुजेनबाख़के सिवा ड्राइङ्गरूममें कोई भी नहीं है]

इरीना—आज माशा बड़ी मुरझाई मुरझाई है। अठारह सालकी उम्रमें उसकी शादी हो गई। तब तो वह इस कुलिगिनको ही मनमें विद्वान् व्यक्ति समझती थी। लेकिन अब वह बात नहीं रही . ...दिलका यह अच्छा आदमी हो सकता है, लेकिन है बुद्धू।

ओल्गा—[अधीरतासे] आन्द्रे भैया—आओ न !

आन्द्रे—[नेपथ्यमें] आ रहा हूँ। [प्रवेश करके मेजपर चला जाता है]

तुज़ेनबाख—क्या सोच रही हो ?

इरीना—कुछ नहीं। मुझे तुम्हारा यह सोल्योनी अच्छा नहीं लगता। मुझे इससे डर लगता है। ऐसी-ऐसी बेवकूफीकी बातें कहता रहता है कि .

तुज़ेनबाख—वह विलक्षण आदमी है। मुझे इसपर दया भी आती है और झुँझलाहट भी लेकिन दया ज्यादा आती है। मुझे तो लगता कि यह झेंपू है अकेलेमें तो बड़ी समझदारी और अपनत्व-भरी बातें करेगा, लेकिन जब भी मित्रोंके बीचमें होगा है तो वही जङ्गली और झगड़ालूपनेकी बातें। अभीसे मत जाओ—इन लोगोंको मेजपर बैठ तो लेने दो। सुनो, मुझे अपने पास बैठाना। सोच क्या रही हो तुम ? [कुछ देर चुप रहकर] तुम बीसकी हो और मैं अभी-अभी तीसका हुआ हूँ। कितने साल पड़े हैं अभी हमलोगोंके सामने ? तुम्हारे लिए मेरे हृदयके प्यारसे भरे दिनोंकी लम्बी चली जाती लड़ी सामने पड़ी है।

इरीना—निकोलाय ल्वोविच, मुझसे प्यारकी बातें मत करो।

तुज़ेनबाख—मुझमें जीवनके लिए, संघर्षके लिए, कामके लिए एक दुर्निवार उत्कट लालसा है और यह लालसा तुम्हारे प्यारके साथ मिलकर मेरी आत्माके रेशे-रेशेमें समा गई है। इरीना, अपना सारा जीवन मुझे सिर्फ इसलिए सुन्दर लगता है कि तुम सुन्दर हो। [illegible] क्या सोच रही हो तुम ?

इरीना—[illegible] जीवन सुन्दर है [illegible] ठीक है, लेकिन हमको सुन्दर लगे [illegible] हम तीनों बहनोंके लिए जीवन अब तक तो [illegible] नहीं—जैसे [illegible] [illegible]

तरह हम तो जीवनके हाथो घुटती रही है।... .अरे लो, मै तो रोने भी लगी—मुझे रोना नही चाहिए.. [जल्दीसे आँसू पोछ डालती है और मुस्कुराती है] मुझे काम करना चाहिए, जमकर काम करना चाहिए। हम जो दबे-घुटेसे है और जीवनको ऐसी निराशा उदास आँखोसे देखते है—वह इसीलिए कि हमलोग परिश्रम करना नही जानते। हम तो परिश्रमसे घृणा करनेवाले लोगोके वशज है......

[नताल्या आइवानोव्नाका प्रवेश। कपडे गुलाबी है लेकिन कमरमें पटका हरा बँधा है]

नताल्या—अरे, यहाँ तो लोग खानेके लिए मेजपर बैठ भी गये। मुझे देर हो गई [चुपचाप शीशेमें अपने आपको देखकर कपडे ठीक ठाक करती है] बात तो शायद ठीक है [इरीनाको देखकर] इरीना सजएव्ना बहन, मेरी बधाई लो। [बडे ज़ोरसे लम्बा-सा चुम्बन लेती है] आज तो तुम्हारे यहाँ बडे लोग आये है.. मुझे तो सच बडी झेप लग रही है। बेरन साहब, नमस्कार।

ओल्गा—[ड्राँइग रूममें आते हुए] अरे, नताल्या आइवानोव्ना तो यहाँ है। कहो कैसी हो बहन? [उसे चूमती है]

नताशा—जन्मदिन पर मेरी बधाई। आपके यहाँ तो इतनी बडी पार्टी जमी है.. मुझे तो बडी झेप लग रही है।

ओल्गा—हिश्ट, अरे यह तो सभी अपने ही लोग है [ज़रा चौंककर, धीरेसे] तुमने हरा पटका कमरमे बाँध रखा है। यह अच्छा नहीं लगता बहन।

नताशा—क्यो? अशकुन होता है क्या?

ओल्गा—नहीं-नहीं, यह तुम्हारे कपडोसे मेल नहीं खाता, और कोई बात नहीं है। बडा बेमेल-सा लगता है।

नताशा—[रुँधे स्वरमें] सच? लेकिन वास्तवमें यह हरा कहाँ है? यह तो एक तरहसे फीके रंगका है।

[ओल्गाके पीछे पीछे खानेके कमरेमें जाती है]

[खानेके कमरेमें सबलोग खानेके लिए बैठे हैं। ड्राँइगरूममें कोई भी नहीं है]

इरीना—मेरी कामना है, तुम्हें अच्छा-सा दूल्हा मिले। अब तो तुम शादी के बारेमें सोच डालो।

चेबुतिकिन—नताल्या आइवानोव्ना, हमलोग आशा लगाये हैं कि आपकी सगाईका समाचार भी मिले।

कुलिगिन—नताल्या आइवानोव्नाने पहलेसे ही वर खोज रखा है।

माशा—[अपने कांटेसे प्लेटको बजाती हुई—] भाइयो और बहनो, आज मैं एक भाषण देना चाहती हूँ.. । जैसी भी हो पर जिन्दगी हमें एक ही बार मिलती है

कुलिगिन—अशिष्ट आचरणके लिये तुम्हारे तीन नम्बर कटने चाहिए।

वेर्शीनिन—यह शराब बडी जायकेदार है। किससे बनी है?

सोल्योनी—तिलचट्टे की।

इरीना—[रोते स्वरमें] छीः छीः, कैसी घिनौनी बात बोलते हो?

ओल्गा—आज हमलोग खानेके साथ टर्की बनाएँ और सेबकी पाई खायेंगे। [illegible] कि आज मैं सारे दिन घर ही रही हूँ। [illegible] सज्जनो, [illegible] भी, क्या आप लोग आयेंगे?

वेर्शीनिन—क्या मैं भी आ सकता हूँ?

इरीना—हाँ, जरूर, जरूर।

नताशा—किसीने भी कोई तकल्लुफ नहीं बरता।

शैबुतिकिन—'प्रकृतिने हमलोगोंका हृदय, प्यारके लिए किया निर्माण' [हँसता है]

आन्द्रे—[झुँझलाकर] अब बस बन्द करो! आश्चर्य है आपलोगोंका मन नहीं ऊबा इस सबसे?

[फैडोतिक और रोडेका एक बडी-सी फूलों भरी डलियाके साथ प्रवेश]

फैडोतिक—मैं कहता था न, यहाँ खाना भी शुरू हो चुका है।

रोडे—[ज़ोरसे तुतलाता हुआ बोलता है] खाना शुरू हो गया? अरे हाँ, यहाँ तो सबलोगोंने खाना भी शुरू कर दिया।

फैडोतिक—अच्छा एक मिनट जरा ठहरिये [एक फोटो लेता है] एक अब एक मिनट और जरा ठहरिये—[दूसरा फोटो लेता है] दो। बस, अब मैंने अपना काम कर डाला [डलिया उठाकर दोनों खानेके कमरेमें आते हैं—यहाँ इनका बडे ज़ोर-शोरसे स्वागत होता है]

रोडे—[चीखकर] मेरी बधाइयाँ! भगवान करे आपकी सारी-सारी इच्छायें पूरी हों। अहा, कैसा मजेका शानदार मौसम है! आज मैं हाईस्कूलके लडकोंके साथ सुबहसे ही घूमने निकला हूँ। मैं उन्हें व्यायाम सिखाता हूँ।

फैडोतिक—[इरीनाकी तस्वीर खींचते हुए] इरीना सर्जीएव्ना, अब चाहो तो हिल सकती हो। अब कोई बात नहीं है। आज तो बडी सुन्दर लग रही हो तुम। [जेबमें एक लट्टू निकालते हुये] हाँ, तो यह एक लट्टू है, बडी अद्भुत आवाज है इसकी.. ..

इरीना—बहुत सुन्दर।

माशा—समुद्रके एक झुके हुए किनारेपर शाह बलूतका हरा पेड़ खड़ा है . . .बलूतके उस पेड़पर सोनेकी जञ्जीर झूल रही है [शिकायत भरे स्वरमें] मैं इसे क्यों दुहराये जा रही हूँ ? यही वाक्य सुबहसे मेरे दिमागमें गूँजे जा रहा है.. .

कुलिगिन—मेजपर कुल तेरह जने हैं।

रोदे—[जोरसे] तेरहकी गिनतीको अशुभ माननेके अन्धविश्वासोंको आप निश्चित रूपसे कोई महत्व नहीं देते होंगे ?

[सब हँस पड़ते हैं]

कुलिगिन—जब मेजपर तेरह आदमी हों तो समझ लीजिये कि हाजिर लोगोंमेंसे कोई किसीसे प्यार करता है। शबुतिकिन, वह व्यक्ति तुम तो हो नहीं सकते ? [सब हँस पड़ते हैं]

शेबुतिकिन—मैं तो पुराना पापी हूँ। लेकिन मेरी समझमें यह नहीं आता कि नताल्या आइवानोव्ना क्यों बगलें झाँक रही है ?

[फिर सब हँस पड़ते हैं। पहले नताशा खानेके कमरेसे भागकर ड्राइंगरूममें आ जाती है पीछे-पीछे आन्द्रे आता है।

आन्द्रे—रुको, इन सब बातोंपर ध्यान मत दो। एक मिनट रुको न, रुको। मैं प्रार्थना करता हूँ. . .

सभी बड़े दिलवाले हैं, बड़े हमदर्द हैं। हमें तुम्हें दोनोंको बहुत चाहते हैं.. इधर आ जाओ—खिड़कीकी तरफ यहाँसे वे हमें नहीं देख सकेंगे. . . [चारों ओर देखता है]

नताशा—मुझे सभा-सोसाइटियोंमें बैठनेकी बिल्कुल भी आदत नहीं है।

आन्द्रे—वाह, क्या जवानी है. सलोनी . गदराई जवानी! मेरी जान, मेरी प्रिय, इतना घबराओ मत—मेरी बात मानो, विश्वास करो। मुझे ऐसी खुशी हो रही है, कि मेरी आत्मा आह्लाद और उल्लास से उमँगी आ रही है। अरे, हमें वे लोग नहीं देख सकते जरा भी नहीं देख पायेंगे। अच्छा बताओ, मैं प्यार क्यों करता हूँ तुम्हें इतना? पहले-पहल मैंने तुम्हारे लिए कब प्यार अनुभव किया? आह! मुझे नहीं मालूम! मेरी जान, मेरी स्वप्न, मेरी पावन-तम प्रिय, अब तुम मेरी सहचरी बन जाओ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ..मैं तुमपर जान देता हूँ. ...मैंने जिन्दगीमें किसीको कभी इतना प्यार नहीं किया।

[चुम्बन लेता है]

[दो अफसरोंका प्रवेश, लेकिन यह देखकर कि युगल-जोड़ी चुम्बनमें व्यस्त है, आश्चर्यसे ठिठक जाते हैं]

[पर्दा गिरता है]



दूसरा-अङ्क

[लगभग दो वर्ष बाद]

[पहले अङ्कका ही दृश्य । रातके आठ बजे हैं । नेपथ्यमें, सड़कपर एक हलका-हलका सुनाई देता धोंकनीवाले बाजेका स्वर । मञ्चपर अँधेरा है । सोनेके कपड़े पहने नताल्या आइवानोव्ना मोमबत्ती लेकर प्रवेश करती है । भीतर आकर आन्द्रेके कमरेके दरवाज़ेपर खड़ी हो जाती है]

नताशा—क्या कर रहे हो? पढ़ रहे हो? नहीं, कुछ नहीं, मैंने यों ही पूछा

[जाकर दूसरा दरवाज़ा खोलती है, उसमें झाँककर फिर उसे बन्दकर देती है]

आन्द्रे—[हाथमें किताब लेकर प्रवेश करता है] क्या बात है नताशा?

नताशा—मैं देख रही थी कि क्या यहाँ भी रोशनी जल रही है? आज कल के इन नौकरोंको अपने तन-बदनका होश नहीं है। कहीं कोई गड़बड़ न हो जाय, इसलिए हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है। कल रात आठ बजे मैं खानेके कमरेकी तरफ जा निकली तो देखा कि एक मोमबत्ती यों ही जली हुई रखी थी। पता ही नहीं लग पाया फिर कि इसे यों जलता किसने छोड़ा था। [मोमबत्ती नीचे रख देती है] क्या बजा है?

सभी बडे दिलवाले है, बडे हमदर्द है। हमे तुम्हें दोनोको बहुत चाहते है. इधर आ जाओ—खिडकीकी तरफ यहाँसे वे हमे नही देख सकेंगे..... [चारो ओर देखता है]

नताशा—मुझे सभा-सोसाइटियोमे बैठनेकी बिल्कुल भी आदत नही है।

आन्द्रे—वाह, क्या जवानी है.. सलोनी . गदराई जवानी ! मेरी जान, मेरी प्रिय, इतना घबराओ मत—मेरी बात मानो, विश्वास करो। मुझे ऐसी खुशी हो रही है, कि मेरी आत्मा आह्लाद और उल्लास से उमँगी आ रही है। अरे, हमे वे लोग नही देख सकते जरा भी नही देख पायेंगे। अच्छा बताओ, मै प्यार क्यो करता हूँ तुम्हे इतना ? पहले-पहल मैने तुम्हारे लिए कब प्यार अनुभव किया ? आह ! मुझे नही मालूम ! मेरी जान, मेरी स्वप्न, मेरी पावन-तम प्रिय, अब तुम मेरी सहचरी बन जाओ ! मै तुम्हे प्यार करता हूँ .. मै तुमपर जान देता हूँ.. ...मैने जिन्दगीमे किसीको कभी इतना प्यार नही किया।

[चुम्बन लेता है]

[दो अफसरोका प्रवेश, लेकिन यह देखकर कि युगल-जोडी चुम्बनमे व्यस्त है, आश्चर्यमे ठिठक जाते है]

[पर्दा गिरता है]



दूसरा-अङ्क

[लगभग दो वर्ष बाद]

[पहले अङ्कका ही दृश्य । रातके आठ बजे हैं । नेपथ्यमें, सड़कपर एक हल्का-हल्का सुनाई देता धौंकनीवाले बाजेका स्वर । मञ्चपर अँधेरा है । सोनेके कपड़े पहने नताल्या आइवानोव्ना मोमबत्ती लेकर प्रवेश करती है । भीतर आकर आन्द्रेके कमरेके दरवाज़ेपर खड़ी हो जाती है]

नताशा—क्या कर रहे हो पढ़ रहे हो ? नहीं, कुछ नहीं, मैंने यों ही पूछा...

[जाकर दूसरा दरवाजा खोलती है, उसमें झाँककर फिर उसे बन्दकर देती है]

आन्द्रे—[हाथमें किताब लेकर प्रवेश करता है] क्या बात है नताशा ?

नताशा—मैं देख रही थी कि क्या यहाँ भी रोशनी जल रही है ? आज राम है न नौकरोंको अपने तन-बदनका होश नहीं है । कहीं कोई गड़बड़ न हो जाय, इसलिए हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है । कल रात बारह बजे मैं खानेके कमरेकी तरफ जा निकली तो देखा कि एक मोमबत्ती यों ही जली छूट गई थी । पता ही नहीं लग पाया फिर, कि उसे यों जलता किसने छोड़ दिया [मोमबत्ती नीचे रख देती है] बजा क्या है ?

आन्द्रे—[घड़ी देखकर] सवा आठ ।

नताशा—और ओल्गा इरीना अभी भी नहीं आईं । अभी तक बाहर हैं । बेचारियाँ अभीतक कामपर ही हैं । ओल्गा टीचरोंकी सभामें गई है और इरीना टेलिग्राफ ऑफिसमें है [ठण्डी साँस लेकर]

आज सुबह ही तो मैं तुम्हारी बहनसे कह रही थी—'बहन इरीना, जरा अपनी भी देखभाल रखो, लेकिन वह है कि सुनती ही नहीं। तुमने सवा-आठका ही तो समय बताया न? मुझे लगता है हमारे मुन्ने बॉबिककी तबियत पूरी तरह ठीक नहीं है। उसका बदन आज ऐसा ठण्डा क्यों है? कल तो बुखारमें तप रहा था और आज उसका सारा शरीर ठण्डा है। मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है।

आन्द्रे—सब ठीक है नताशा, बच्चा बिल्कुल ठीक है।

नताशा—खैर, उसके खाने-पीनेके बारेमें हमलोग जरा और सावधान रहें तो अच्छा हो। मुझे तो बड़ी चिन्ता है। सुना है, रासके अवसरपर बहुरूपिये भी यहाँ नौ बजे आनेवाले हैं। आन्द्रूशा, अच्छा हो वे न आयें।

आन्द्रे—सचमुच, मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हें तो पता ही है उन्हें निमन्त्रण देकर बुलाया गया है।

नताशा—मुन्ना सुबह ही जाग पड़ा था। मेरी तरफ देखता रहा—देखता रहा फिर एकदम मुस्कुरा दिया...मुझे पहचानता है। मैंने कहा 'मुन्ना!' 'मुन्ना बाबू नमस्कार!' 'नमस्कार बिटिया' तो वह हँस दिया। बच्चे सब समझते हैं। खूब अच्छी तरह समझ जाते हैं। मैं तो आन्द्रूशा, रासवालोंसे कह दूँगी—बाबा, यहाँ मत आओ।

आन्द्रे—[हिचकिचाकर] यह सब काम तो बहनोंका है। आज्ञा-वाज्ञा देनेका काम तो उन्हींका है।

नताशा—हाँ-हाँ, उनका तो है ही। मैं उनसे कह दूँगी। वे बेचारी तो बड़ी भली हैं। [जाते हुए] मैंने खानेके लिए मट्ठेको कह दिया है। डाक्टर कहता है कि तुम्हें मट्ठेके सिवा कुछ नहीं छूना

चाहिए—वर्ना तुम्हारी चर्चा कभी कम नहीं होगी, [रुककर] मुन्नेका शरीर बडा ठण्डा है। मुझे लगता है, शायद इस कमरेमें बडी सीलन है। जैसे भी हो, गर्मियाँ आने तक हमें उसे किसी दूसरे कमरेमें रखना चाहिए। इरीना वाला कमरा बच्चोंके लिए बिल्कुल ठीक है। सीलन भी नहीं है, और दिनभर उसमें धूप भी बनी रहती है। मैं उससे कहूँगी तो सही। थोड़े समयके लिए वह ओल्गाके कमरेमें हिस्सा बँटा लेगी। खैर, वैसे भी तो रातके सिवा वह कभी घरमें रहती ही कहाँ है? [कुछ देर चुप रहकर] आन्द्रूशा, तुम बोलते क्यों नहीं?

आन्द्रे—कुछ नहीं। मैं सोच रहा था, फिर आखिर कहनेको कुछ हो भी तो.. ...

नताशा—अरे हाँ, मैं तुमसे जाने क्या कहनेवाली थी? हाँ, हाँ...फैरापोण्ट ग्राम-पञ्चायतसे आया है—तुमसे मिलनेको कहता है।

आन्द्रे—[जँभाई लेकर] भेज दो भीतर।

[नताशा बाहर चली जाती है। उसके द्वारा छोड़ी गई मोमबत्तीसे झुककर आन्द्रे किताब पढने लगता है। फैरापोण्टका प्रवेश। फटा-पुराना-सा ओवरकोट पहने है—कॉलर ऊपर उठे हैं और कानोंमें एक अँगोछा बाँध रखा है]

आन्द्रे—नमस्कार भैया। क्या बात है?

फैरापोण्ट—चेयरमैन साहबने एक किताब भेजी है और यह कोई कागज दिया है [किताब और लिफाफा देता है]

आन्द्रे—शुक्रिया। बहुत अच्छा। लेकिन इतनी देरसे क्यों आये? आठ बज चुके हैं।

फैरापोण्ट—ऐ ऽऽ?

आन्द्रे—मैंने कहा, तुम बहुत देरमें आये हो। आठ बज गए।

फेरापोण्ट—सो ही तो। मैं तो अँधेरा होनेसे पहले ही आ गया था लेकिन किसीने भीतर ही नहीं आने दिया। बोले, मालिक काम कर रहे हैं। बिल्कुल ठीक, अगर आप काम कर रहे हैं तो मुझे भी कोई जल्दी नहीं है, [यह सोचकर कि शायद आन्द्रेने कुछ पूछा है] ऐ ऽ ऽ—क्या कहा ?

आन्द्रे—नहीं, कुछ नहीं [किताब उलट-पलटकर देखता है] कल शुक्र है। कोई बैठक तो नहीं है, फिर भी मैं कल आऊँगा। अपना कुछ काम करूँगा.. घर पर बैठे-बैठे मन भी तो ऊब जाता है। [कुछ देर रुककर] बाबा, जिन्दगी कैसी विचित्र गतिसे बदलती जाती है और आदमी कैसा धोखेमें बना रहता है ? आज कुछ करनेको नहीं था, सो बैठे-बैठे मेरा मन नहीं लग रहा था। मैंने यह किताब उठा ली। विश्वविद्यालयके पुराने भाषण हैं। विश्वास करो, मेरी हँसी नहीं रुक पाई। हे भगवान, मैं ग्राम-पंचायतका सेक्रेटरी हूँ—और प्रोतोपोव चेयरमैन है। आज सेक्रेटरी हूँ, और बड़ीसे बड़ी आशा यही कर सकता हूँ कि किसी दिन पंचायतका मेम्बर हो जाऊँगा। सोचो तो सही, मैं और ग्राम पंचायतका मेम्बर! जबकि हर रातमें सपने यह देखता रहता हूँ जैसे मैं मास्को यूनिवर्सिटीका प्रोफेसर हूँ, एक प्रसिद्ध आदमी हूँ—जिस पर सारे रूसको गर्व है।

फेरापोण्ट—मैं तो सरकार, कुछ कह नहीं सकता ..मुझे सुनाई ही नहीं पड़ता।

आन्द्रे—अगर तुम ठीक ठीक सुनते होते तो शायद मैं तुमसे ये बात करता भी नहीं। मुझे तो किसी न किसीसे बात करनी ही है। मेरी पत्नी मुझे नहीं समझती। रही बहनें ?—न जाने क्यों, उनसे मैं डरता हूँ। डरता हूँ कि वे मुझ पर हँसेंगी, मेरा मजाक

उडाकर मुझे भगा देगी। न मुझे पीनेका शौक है...न होटलों-रेस्तारांओंमें घूमना मुझे पसन्द है।.. फिर भी बाबा, मॉस्कोके त्यैस्तोव होटलमें बैठकर मुझे कैसा मजा आया ?

फैरापोण्ट—पचायतमें एक ठेकेदार उस दिन बता रहा था कि मॉस्कोमें कुछ व्यापारी लोग तन्दूरी-नान खा रहे थे। इनमेंसे एकने करीब चालीस खा डाले—और वहीं मर गया। मुझे ठीक याद नहीं है, चालीस थे या पचास.

आन्द्रे—मॉस्कोमें तो यह हाल है कि आप होटलके बड़े भारी कमरेमें बैठ जाइये। न वहाँ कोई आपको जानता है, और न आपही किसीको जानते है, फिर भी ऐसा नहीं लगेगा जैसे अजनबी हो। लेकिन यहाँ आप एक एकको जानते हैं फिर भी ऐसा लगता है जैसे बिल्कुल अपरिचित हो. अजनबी और बिल्कुल अकेले हो

फैरापोण्ट—ऐं ऽऽ ? [कुछ देर चुप रहकर] वही ठेकेदार कहता था, हो सकता गप हो, कि मॉस्कोके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक एक ही तार फैला हुआ है।

आन्द्रे—किसलिये ?

फैरापोण्ट—मुझे तो सरकार, पता नहीं है। ठेकेदार ही यह बात रहा था।

आन्द्रे—सब बकवास है। [पढने लगता है] तुम कभी मॉस्कोमें रहे हो ?

फैरापोण्ट—[कुछ देर चुप रहकर] मैं तो मालिक, कभी नहीं रहा। भगवानकी मर्जी ही नहीं थी कि मैं वहाँ रहता [चुप होकर] अब जाऊँ सरकार ?

आन्द्रे—अच्छा, जाओ। नमस्कार। [फैरापोण्ट चला जाता है] नमस्कार। [पढते हुए] कल सुबह आकर ये कुछ कागज ले जाना. जाओ [चुप रहकर] यह तो चला गया। [दरवाज़ेकी घण्टी

बजती है] हाँ, दुनिया ऐसे ही चलती है। [अँगड़ाई लेकर धीरे-धीरे अपने कमरेमें चला जाता है]

[नेपथ्यमें एक दाई बच्चेको गोदमें झुलाती हुई लोरी गा रही है। माशा और वैर्शिनिनका प्रवेश। वे बातें करते रहते हैं। उसी बीचमें एक नौकरानी खानेके कमरेकी मोमबत्तियाँ और लैम्प जलाती रहती है]

माशा—[चुप रहकर] सचमुच, मुझे नहीं मालूम। बेशक आदतमें भी बहुत कुछ हो जाता है। जैसे, पिताजीके बाद, घरमें बिना अर्दलियोंके काम चलानेकी आदतके लिये हमें बहुत समय लग गया। लेकिन आदतके अलावा, मैं समझती हूँ न्याय और सत्य की भावना भी मुझसे यह सब कहलवा रही है। शायद दूसरी जगह ऐसा न हो, मगर कमसे कम हमारे इस शहरमें तो सारे अच्छे, रईस और इज्जतदार आदमी फौजमें ही नौकरी करते हैं।

वैर्शिनिन—मुझे तो प्यास लगी है। चाय पीनेकी इच्छा है।

माशा—[घड़ी पर निगाह डालकर] बस, वे लोग आ ही रहे होंगे। जब मैं सिर्फ अठारहकी थी तब मेरी शादी हो गई। चूँकि पति मेरे मास्टर थे इसलिये मुझे उनसे बड़ा डर लगता था—मैंने नया नया स्कूल छोड़ा था न। उन दिनों तो मैं उन्हें ही बड़ा पढ़ा लिखा, समझदार और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझती थी, लेकिन दुर्भाग्यसे अब ऐसा नहीं है. .

वैर्शिनिन—हाँ, भी सो तो मैं देख ही रहा हूँ. ।

माशा—मैं अपने पतिके बारेमें कुछ नहीं कह रही। अब तो मैं उनकी अभ्यस्त हो गई हूँ। लेकिन साधारण शहरी लोगोंमें आप देखिये, अक्सर लोग उजड्ड, असभ्य और बदतमीज होते हैं। उदाहरणमें

मैं घबराकर परेशान हो उठती हूं। अगर आदमी सुरुचि-सम्पन्न न हो, विनम्र और शिष्ट न हो, तो मुझे उसे देखकर बड़ा बुरा लगता है। पतिदेवके साथी मास्टरोंके साथ जब भी कभी पड़ जाती हूँ तो मेरी मुसीबत हो जाती है.

वेर्शिनिन—हाँ, सो तो ठीक है...लेकिन मैं तो समझता हूं कि इस शहरके लोग चाहे वे साधारण लोग हों या फोजी सभी एकसे ही ठूँठ है। उनमे आपको कोई दिलचस्प बात ही नहीं दिखाई देगी।.. सब बिल्कुल एक-से है. चाहे साधारण नागरिक हों या फौजी। यहाँ आप किसी भी पढे-लिखे आदमीकी बाते सुनिये—कोई साहब अपनी पत्नीकी चिन्तासे मरे जा रहे हैं—किसीका अपने घरको लेकर नाममे दम आया हुआ है,...किसीकी जमीन्दारी उसकी जानका बवाल है...किसीके घोडे उनके प्राणोंके ग्राहक है। रूसियोको उच्च-विचारोंका ऐसा महान-स्तर परम्परागत रूपसे ही मिला हुआ है लेकिन . जिन्दगीमे ये लोग हमेशा ऐसे ओछेपनकी बाते ही क्यो करते है ?—बताओ ?

माशा—क्यों ?

वेर्शिनिन—हर रूसी अपनी बीवी और बच्चोंको लेकर ही क्यो मरा जाता है, और उसके बीवी-बच्चे क्यों उसे लेकर अपनी जान देने पर तुले रहते है..।

माशा—आजकी शाम आपका मन कुछ ज्यादा दु:खी और उदास है।

वेर्शिनिन—हो सकता है। आज मैने खाना तक नहीं खाया। सुबहसे कुछ भी मुँहमे नहीं गया। मेरी लडकीकी तबियत अच्छी नहीं है। और जब मेरी छोटी-छोटी बच्चियोको कुछ हो जाता है तो मेरे प्राण कण्ठमे अटके रहते है। मेरी आत्मा मुझे हमेशा कोचती रहती है कि मैं उनके लिये कैसी माँ ले आया हूँ.. उफ! आज अगर

कहीं तुम उसे देख लेती । पूरी चुड़ैल है वह भी। सुबह सात बजेसे जो उसने झगडा शुरू किया तो नौ बजे मैं जोरसे दरवाजा बन्द करके इस ओर भाग आया. [कुछ देर चुप रहकर] मैं ये सब बातें कभी किसीसे करता नहीं हूँ। अजीब बात है। जाने क्यों—मैं सिर्फ तुमसे ही यह शिकायतें करता हूँ [उसका हाथ चूमता है] नाराज मत होना, तुम्हारे सिवा मेरा कोई भी अपना सगा नहीं है कोई भी नहीं है।

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—स्टोवमें भी कैसी जोरकी आवाज होती है। पिताजीके मरनेसे पहले धुँआँ निकलनेवाली चिमनीमें भी बिल्कुल ऐसी ही।. धुक-धुक होती थी .

वेर्शिनिन—तुम क्या ऐसी बातोंमें विश्वास करती हो ?

माशा—जी हाँ।

वेर्शिनिन—यह नई बात है [उसका हाथ चूमता है] तुम महान, विलक्षण स्त्री हो। महान ! विचित्र ! हालाँकि चारों तरफ अँधेरा है, लेकिन मुझे तुम्हारी आँखोंमें रोशनीकी किरण दिखाई दे रही है।

माशा—[दूसरी कुर्सी पर आकर बैठ जाती है] यहाँ कुछ खुला है।

वेर्शिनिन—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ. प्यार .प्यार। मैं तुम्हारी आँखों पर मरता हूँ, तुम्हारी हर अदा पर जान देता हूँ। मुझे सपनोंमें भी यही-यह दिखाई देती है महान और विलक्षण स्त्री हो तुम

माशा—[धीरेसे हँसकर] जब आप मुझसे यह सब कहते हैं तो पता नहीं क्यों मुझे हँसी आती है। वैसे मैं घबरा उठती हूँ। कृपा करके आप यह सब मत कीजिये.. [बहुत धीमे स्वरमें] खैर, चाहे तो कहो

रहिये मुझे कुछ नहीं है [अपने हाथोंसे चेहरा ढाँप लेती है] मुझे तो कुछ भी नही है पर कोई आ रहा है। अब कुछ और बात कीजिये

[खानेके कमरेमे होकर इरीना और तुजेनबाख़ आते हैं]

तुजेनबाख़—मेरा नाम भी क्या तिमजिला है। मेरा नाम है बैरन तुजेनबाख कोने आलशुआर। परम्परागत चर्चमे मेरा विश्वास है और जितनी रूसी तुम हो उतनी ही मै भी हूँ। जिस लगन और धैर्यके साथ मै तुम्हें बनाता रहता हूँ, उसे छोडकर मेरे भीतर अब कोई भी जर्मन-तत्व नहीं रह गया है। मै रोज-रोज तुम्हे घर तक छोडने आता हूँ।

इरीना—उफ, मै तो थककर चूर-चूर हो गई।

तुजेनबाख़—रोज मै टेलिग्राफ ऑफिससे तुम्हें छोडने आया करूँगा। दस साल, बीस साल यही करूँगा ..जब तक तुम मुझे फटकार कर भगा नहीं दोगी. [माशा और वैर्शिनिनको देखकर आनन्दसे] अरे, आप लोग भी है! कैसे है आपलोग ?

इरीना—उफ, आखिर मैं घर आ ही पहुँची.. [माशासे] अभी कोई महिला अपने भाईको सारातोवमें तार देनेके लिये आई कि आज उसके पुत्रकी मृत्यु हो गई है। बेचारीको पता ही याद नहीं रहा . इसलिये सिर्फ सारातोव लिखकर उसने बिना किसी पतेके ही तार दे दिया।...वह बेचारी रो रही थी। जाने क्यों, खाँमखाँ ही मै उस पर बरस पडी। कहा, कि मेरे पास बरबाद करने को वक्त नही है। सचमुच बडा बेहूदा लगा... रासवाले लोग क्या आ रहे है आज ?

माशा—हाँ।

इरीना—[आराम कुर्सी पर बैठ जाती है] मैं जरा सुस्ता लूँ—बहुत थक गई हूँ।

तुज़ेनबाख़—[मुस्कुराकर] जब तुम ऑफिससे आती हो तो एकदम बच्चों.. जैसी लगती हो बिल्कुटी-बिल्कुटी-सी।

[कुछ देर कोई कुछ नहीं बोलता]

इरीना—बहुत ही थक गई हूँ । मुझे तो यह टेलिग्राफका काम पसन्द नहीं है—रत्ती भर नहीं जचता।

माशा—दुबली भी तो बहुत हो गई हो तुम [सीटी बजाती है] तुम बड़ी कम उम्र की भी लगती हो। चेहरा देखकर लगता है जैसे लड़का हो ओ...

तुज़ेनबाख़—ये अपने बाल भी लड़कों की तरह बनाती हैं।

इरीना—मैं तो कोई और काम देखूँगी। यह माफिक नहीं आता। जिसकी मुझे धुन है, जिसके मैं सपने देखा करती थी—वही सब यहाँ नहीं है। यह ऐसा काम है जिसमें न तो जरा भी रस है न कोई उद्देश्य . [फर्श पर नीचे खटखटाहट होती है] डाक्टर शेबुतिकिन खटखटा रहे हैं . [तुज़ेनबाख़से] सुनो, अब तुम्हीं जवाब दे दो। मैं बहुत ही थक गई हूँ। मुझसे नहीं उठा जायेगा .

[तुज़ेनबाख़ फर्श पर खटखटाता है]

इरीना—वे नीचे यहाँ आयेंगे। हमें कोई न कोई राह सोचनी पड़ेगी। कल डाक्टर साहब और हमारे आन्द्रेई भैया फिर क्लबमें जा पहुँचे और ताशों पर जम गये। मैंने सुना है आन्द्रेई भैया दो सौ रूबल हार गये।

माशा—[टहलते हुए] खैर-फिलहाल उसका तो कोई इलाज ही नहीं है।

इरीना—अभी पन्द्रह दिन भी तो नहीं हुए, तभी तो वे रुपया हारे थे। पिछले दिसम्बर मे वे रुपया हार गये। मै तो चाहती हूॅ कि जितनी जल्दी हो वे सबको ठिकाने लगा दे, तो हमलोग इस शहरसे तब भी टले। हे भगवान, रोज रात मे मॉस्कोके सपने देखती हूॅ। कैसा भयानक पागलपन सवार है। [हॅसती है] हमलोग जूनमे जायेंगे और अभी बचे है फरवरी, मार्च, अप्रेल, मई...करीब-करीब आधा साल बाकी है।

माशा—कहीं नताशा भाभी इस सारी हारकी बात न सुन ले।

इरीना—मै तो नहीं समझती कि उन्हें इसकी बहुत चिन्ता है।

[खाना खानेके बाद आरामके बाद ही सीधा बिस्तरेसे उठता हुआ शेबुतिकिन दाढी पर हाथ फेरता खानेके कमरेमे आता है। मेज पर बैठकर जेबसे एक अखबार निकाल कर पढने लगता है]

माशा—ये आ पहुॅचे। अपना किराया दे दिया इन्होंने ?

इरीना—[हॅसकर] नहीं। आठ महीनेसे एक पाई नही दी। जरूर भूल जाते होंगे।

माशा—[हॅसती है] कैसे धीर-गम्भीर बने बैठे है आप [सबलोग हॅस पडते हैं फिर कुछ देर चुप्पी रहती है]

इरीना—कर्नल साहब, आप इतने चुप क्यो है ?

वेर्शिनिन—पता नहीं। मुझे तो चायकी हुडक लग रही है। आधे गिलास चायकी राहमे मेरी आधी जिन्दगी तो गुजर गई। सुबहसे एक दाना भी मुॅहमें नहीं गया।

शेबुतिकिन—अरे इरीनी .

इरीना—क्या बात है ?

चेबुतिकिन—यहाँ तो आओ, यहाँ आओ.. [इरीना जाकर मेजके पास बैठ जाती है] तुम्हारे बिना मेरा मन नहीं लगता ।

[इरीना पेशेन्सके खेलके लिए ताश लगाती है]

वेर्शिनिन—अच्छा, अगर ये लोग चाय नहीं ला रहे, तो आइये किसी चीज पर ही बहस करें ।

चेबुतिकिन—जरूर ! बड़ी खुशीसे । अच्छा किस चीज पर ?

वेर्शिनिन—किस पर क्या ? जैसे—आइये यही कल्पना करें कि हमलोगोंके दो तीन सौ साल बादकी जिन्दगीका रूप क्या होगा ?

तुज़ेनबाख—यही सही ! हमारे मर जानेके बाद लोग गुब्बारोंमें बैठकर उड़ा करेंगे । अपने कोटके फैशन बदल डालेंगे, शायद एक छठी ज्ञानेन्द्रियकी खोज निकालेंगे और उसका विकास करेंगे । लेकिन जिन्दगी ज्योंकी त्यों बनी रहेगी, वैसी ही मशक्कतभरी आनन्दों और रहस्योंसे भरी-पूरी एक हजार साल बाद भी लोग यों ही ठण्डी साँसें लिया करेंगे—'हाय, जिन्दगी कैसी मुश्किल है'—और आजकी तरह ही मौतसे डरा करेंगे—उससे मुँह चुराते घूमेंगे ।

वेर्शिनिन—[एक क्षण विचार करके] खैर, मैं तो नहीं मानता । मुझे लगता है इस धरतीकी हर चीजको धीरे धीरे बदलना है और वह हमारी आँखोंके आगे बदल भी रही है । दो तीन सौ साल बाद, शायद एक हजार साल बाद, क्योंकि कालका कोई मूल्य नहीं है—एक नई और सुखी जिन्दगी उभरेगी । सच है कि उस जिन्दगीमें हम कोई हिस्सा नहीं ले पायेंगे—लेकिन हम उसीके लिए तो जी रहे हैं, काम कर रहे हैं । यही क्या ? उसीके लिए सारे कष्ट उठा रहे हैं, उसका निर्माण कर रहे हैं । सिर्फ इसी

यही हमारे अस्तित्वका, जीवनका उद्देश्य है। कह सकते हैं. यही हमारी खुशीका भी कारण है।

[माशा धीरेसे हँसती है]

तुजेनबाख—क्या बात है?

माशा—पता नहीं क्यों, आज सुबहसे ही मुझे हँसी आ रही है।

वेर्शिनिन—जिस स्कूलमें तुम थे—मैं भी उसीमें था। मैं फौजी एकेडमी में नहीं गया। पढा मैंने बहुत कुछ, लेकिन मुझे यही मालूम नहीं था कि किताबें कैसे छाँटी जाती हैं। और शायद मैंने बहुत-सी अंट-सट चीजें पढ डाली—फिर भी जितना-जितना मैं जीता जाता हूँ और-और जाननेकी इच्छा होती जाती है। मेरे बाल पकने लगे हैं—करीब-करीब बूढा हो चला हूँ, मगर मैं कितनी कम बातें जानता हूँ। बहुत ही थोडी-सी। साथ ही ऐसा भी लगता है कि जो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बातें हैं जो अनिवार्य बातें हैं उनको मैं जरूर समझता हूँ और खूब अच्छी तरह जानता हूँ. समझमें नहीं आता मैं आपको कैसे समझाऊँ कि हमलोगोंके भाग्यमें कोई खुशी नहीं है। होनी भी नहीं चाहिये और न होगी। हमें तो बस, अन्धाधुन्ध काम किये जाना है, परिश्रम किये जाना है—प्रसन्नता तो हमारे किन्हीं सुदूर वंशजोंको जाकर कभी मिलेगी [कुछ क्षण रुककर] अगर वह मेरे लिए नहीं तो मेरे वंशजोंको तो कमसे कम मिलेगी ही।

[फेदोतिक और रोदे खानेके कमरेमें आते दिखाई देते हैं। वे चुपचाप आकर धीरे-धीरे गिटार बजाते हुए गाने लगते हैं]

तुजेनबाख—तो आपके खयालसे प्रसन्नताकी कल्पना करना या सपने देखना भी बेकार है? मगर मान लो, मैं खुश हूँ तो इसमें किसीका क्या जाता है?

शेबुतिकिन—यहाँ तो आओ, यहाँ आओ.. [इरीना जाकर मेजके पास बैठ जाती है] तुम्हारे बिना मेरा मन नहीं लगता।

[इरीना पेशेन्सके खेलके लिए ताश लगाती है]

वेर्शिनिन—अच्छा, अगर ये लोग चाय नहीं ला रहे, तो आइये किसी चीज पर ही बहस करें।

शेबुतिकिन—जरूर! बड़ी खुशीसे। अच्छा किस चीज पर?

वेर्शिनिन—किस पर क्या? जैसे—आइये यही कल्पना करें कि हमलोगोंके दो-तीन सौ साल बादकी जिन्दगीका रूप क्या होगा?

तुजेनबाख—यही सही! हमारे मर जानेके बाद लोग गुब्बारोंमें बैठकर उड़ा करेंगे। अपने कोटोंके फैशन बदल डालेंगे, शायद एक छठी ज्ञानेन्द्रियकी खोज निकालेंगे और उसका विकास करेंगे। लेकिन जिन्दगी ज्योंकी त्यों बनी रहेगी, वैसी ही सत्रपमयी आनन्दों और रहस्योंसे भरी-पूरी. एक हजार साल बाद भी लोग यों ही ठण्डी-साँसें लिया करेंगे—'हाय, जिन्दगी कैसी मुश्किल है'—और आजकी तरह ही मौतसे डरा करेंगे—उससे मुँह चुराते घूमेंगे।

वेर्शिनिन—[एक क्षण विचार करके] खैर, मैं तो नहीं मानता। मुझे लगता है इस धरतीकी हर चीजको धीरे-धीरे बदलना है और वह हमारी आँखोंके आगे बदल भी रही है। दो-तीन सौ साल बाद, शायद एक हजार साल बाद, क्योंकि कालका कोई महत्व नहीं है—एक नई और सुखी जिन्दगी उभरेगी। सच है कि उस जिन्दगीमें हम कोई हिस्सा नहीं ले पायें—लेकिन हम उसीके लिए तो जी रहे हैं, काम कर रहे हैं। यही क्यों? उसीके लिए सारे कष्ट उठा रहे हैं, उसका निर्माण कर रहे हैं। सिर्फ इतना

यही हमारे अस्तित्वका, जीवनका उद्देश्य है। कह सकते हैं.. यही हमारी खुशीका भी कारण है।

[माशा धीरेसे हँसती है]

तुजेनबाख—क्या बात है?

माशा—पता नहीं क्यों, आज सुबहसे ही मुझे हँसी आ रही है।

वेर्शिनिन—जिस स्कूलमे तुम थे—मै भी उसीमे था। मैं फौजी एकेडमी मे नही गया। पढा मैंने बहुत कुछ, लेकिन मुझे यही मालूम नही था कि किताबे कैसे छाँटी जाती हैं। और शायद मैंने बहुत-सी अट-सट चीजे पढ डाली—फिर भी जितना-जितना मै जीता जाता हूँ और-और जाननेकी इच्छा होती जाती है। मेरे बाल पकने लगे है—करीब-करीब बूढा हो चला हूँ, मगर मैं कितनी कम बाते जानता हूँ। बहुत ही थोडी-सी। साथ ही ऐसा भी लगता है कि जो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बाते है जो अनिवार्य बाते है उनको मै जरूर समझता हूँ और खूब अच्छी तरह जानता हूँ. .समझमें नही आता मै आपको कैसे समझाऊँ कि हमलोगोंके भाग्यमे कोई खुशी नही है। होनी भी नहीं चाहिये और न होगी। हमें तो बस, अन्धाधुन्ध काम किये जाना है, परिश्रम किये जाना है—प्रसन्नता तो हमारे किन्ही सुदूर वशजोंको जाकर कभी मिलेगी. [कुछ क्षण रुककर] अगर वह मेरे लिए नहीं तो मेरे वशजोंको तो कमसे कम मिलेगी ही।

[फैदोतिक और रोदे खानेके कमरेमे आते दिखाई देते है। वे चुपचाप आकर धीरे-धीरे गिटार बजाते हुए गाने लगते है]

तुजेनबाख—तो आपके खयालसे प्रसन्नताकी कल्पना करना या सपने देखना भी वेकार है? मगर मान लो, मै खुश हूँ तो इसमे किसीका क्या जाता है?

वेर्शिनिन—कुछ नहीं।

तुज़ेनबाख—[अपने हाथ फेंककर हँसता है] साफ है हमलोग एक दूसरेकी बात समझ नहीं रहे हैं। खैर, मैं आपको कैसे मनवाऊँ?

[माशा धीरेसे हँसती है]

तुज़ेनबाख—[उसकी तरफ उँगली तानकर] और हँसो! दो-तीन सौ सालकी तो बात ही क्या, दस लाख साल बाद भी जिन्दगी वैसी ही रहेगी जैसी आज है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। दुनियाकी स्थिति हमेशा ज्यों की त्यों अचल रहेगी—वह अपने नियमोंके अनुसार चलती रहेगी। न हम उन नियमोंमें टाँग अड़ा सकते हैं, न कुछ बना-बिगाड़ सकते हैं उनका, यहाँ तक कि हम उनका पता भी नहीं लगा सकते। ये सुन्दर-सुन्दर पक्षी—जैसे बगुलेको ही ले लो—आगे-पीछे उड़ते रहते हैं महान् और क्षुद्र, क्या-क्या विचार उनके दिमागमें नहीं आते होंगे, लेकिन ये पक्षी क्यों उड़ रहे हैं, कहाँ उड़ रहे हैं? बिना इन सब बातोंको जाने भी उड़ते ही रहेंगे। चाहे जितने दार्शनिक ये हो जायँ, ये उड़ते ही चले जायेंगे, उड़ते चले जायेंगे—और जब तक ये उड़ते रहेंगे, दार्शनिक हो या न हो इससे इनका कुछ बनता-बिगड़ता भी नहीं है।

माशा—लेकिन तब भी कोई न कोई अर्थ तो है ही।

तुज़ेनबाख—अर्थ? लो, सामने यह बर्फ गिर रही है बताओ इसमें क्या अर्थ है?

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—मुझे लगता है कि मनुष्यके पास एक आस्था होनी चाहिए—या उसे कोई विश्वास और आस्था खोज लेनी चाहिए—वर्ना उसकी

जिन्दगी सूनी और खोखली हो जायेगी। जिन्दा रहते हुए भी यह न जानना कि बगुले क्यो उडते है—बच्चे क्यो होते है. आसमानमे तारोका क्या अर्थ है। आदमीको मालूम होना चाहिए कि उसकी जिन्दगीका अर्थ क्या है.. उसकी जिन्दगीका उद्देश्य क्या है—वर्ना तो सब निरर्थक और व्यर्थ ही है।

वेर्शिनिन—और तब भी आदमीको दु ख होता है कि उसकी जवानी यो बीत गई।

माशा—गोगोल कहता है—दोस्तो, इस दुनियामें जिन्दा रहना बडा मनहूस है।

तुजेनबाख—और मैं कहता हूँ, आप लोगोंसे बहस करना बडा मुश्किल है।

शेबुतिकिन—[अख़बार पढ़ते हुए] बालज़ाककी शादी बर्दीचेवमे हुई थी।

[इरीना धीरे-धीरे गुनगुनाती है]

शेबुतिकिन—इसे तो सचमुच मुझे अपनी नोटबुकमे उतार लेना चाहिए। बालजाककी शादी बर्दीचेवमे हुई। [अखबार पढता है]

इरीना—[पेशेन्सके खेलके लिए ताश लगाती हुई स्वप्नाविष्ट सी] बालजाककी शादी बर्दीचेवमें हुई थी।

तुजेनबाख—तीर कमानसे छूट गया। मार्या सर्जीएव्ना, तुम्हें मालूम है मैने अपने कमीशनसे स्तीफा दे दिया।

माशा—अब सुन रही हूँ। मुझे तो इसमें कोई अच्छाई दिखाई नही देती। मुझे साधारण नागरिक लोग पसन्द नही है।

तुज़ेनबाख—कोई बात नहीं [उठ खडा होता है] मैं सिपाही बनने जैसा बाँका जवान भी नहीं हूँ। लेकिन खैर, इससे भी कुछ नहीं आता-जाता। अब मै काम करने जा रहा हूँ. .काश, जीवनमें एक

दिन भी ऐसा जमकर कामकर पाता कि घर आता तो थककर चूर-चूर हुआ रहता और बिस्तरेमें पडते ही सो जाता [खानेके कमरेमें जाते हुए] मेहनतकशोंको खूब डटकर सोना चाहिए।

फेदोतिक—[इरीनासे] दुकानसे गुजरते हुए अभी मैंने ये चॉक आपके लिए खरीद लिए.. और यह कलम बनानेका चाकू।

इरीना—आपको तो मुझे छोटी-सी बच्ची समझनेकी आदत पडगई है... लेकिन देखिये न, मैं तो काफी बडी हो गई हूँ [आनन्दपूर्वक चाक और चाकू ले लेती है] वाह कैसे अच्छे हैं।

फेदोतिक—और एक चाकू मैंने अपने लिए खरीद लिया है। देखो, एक फल, दो फल, तीन फल ..और यह कान कुरेदनी और ये रही कैंची, यह नाखून साफ करनेकी पिन।

रोदे—[जोर से] डाक्टर साहब, आपकी उम्र क्या है ?

शेबुतिकिन—मेरी ?—बत्तीस।

[सब हँस पडते हैं]

फेदोतिक—अब मैं आपको दूसरे ढगका पेशेन्स बताता हूँ [ताश लगाता है]

[अनफीसा एक समोवार, अगीठी, लाती है। कुछ देर बाद ही नताशा भी आकर मेज़पर व्यवस्थामें लग जाती है। सोल्योनी आता है और सबको नमस्कार करके मेज़पर बैठ जाता है]

वेर्शिनिन—हवा कैसी तेज चल रही है।

माशा—हाँ, इस जाडेसे तो मैं तग आ गई। गर्मी कैसी होती है मुझे तो अब बिल्कुल भी ध्यान नहीं रहा...

इरीना—अरे, यह खेल तो मुझे एक ही बारमें आ गया। इसका मतलब यह कि हमलोग मॉस्को जरूर जायेंगे।

फेदोतिक—नहीं, कतई नहीं आया। देखिये, हुकुमकी दुक्कीके ऊपर अट्ठा है, [हँसता है] यानी कि आप मॉस्को नहीं जाएँगी।

चेबुतिकिन—[अखबारसे पढ़ता है] "जी-जी कार यहाँ चेचकका भयानक जोर है।"

अनफीसा—[माशाके पास जाकर] माशा बेटी, चलो चाय पीलो, [वेर्शिनिनसे] सरकार आप भी चलिये। सरकार, माफ कीजिये मैं आपका नाम भूल गई .

माशा—दाई-माँ, यहीं ले आओ चाय। मैं वहाँ नहीं आऊँगी।

इरीना—दाई-माँ!

अनफीसा—आई।

नताशा—[सोल्योनीसे] छोटे बच्चे खूब समझते हैं। मैंने कहा—'मुन्ना बाबू, नमस्कार राजा बेटा, नमस्कार!' तो वह मेरी तरफ टुकुर-टुकुर देखता रहा। आप सोचेंगे। मैं इसलिए ऐसा कहती हूँ कि मैं उसकी माँ हूँ, बिल्कुल नहीं। मैं आपसे सच कहती हूँ—बड़ा असाधारण बच्चा है।

सोल्योनी—अगर वह बच्चा मेरा होता तो कढ़ाईमें तलकर डकार गया होता। [अपना गिलास लेकर ड्राइङ्गरूममें आ जाता है और एक कोनेमें बैठ जाता है।]

नताशा—उजड्ड-गँवार कहींके।

माशा—सुखी आदमियोंको चिन्ता ही नहीं होतीकी जाड़ा है या गर्मी। मेरा खयाल है अगर मैं मॉस्कोमें होती तो मैं भी चिन्ता नहीं करती मौसम कैसा है।

वैर्शिनिन—उस दिन मैं एक फ्रेंच मन्त्रीकी जेलमें लिखी डायरी पढ़ रहा था। पनामाके मामलेमें मन्त्रीको जेल हो गई थी। कैसे जोश-खरोश और आनन्दसे उसने जेलकी खिडकीसे दीखनेवाली चिड़ियोंका वर्णन किया है। पहले जब वह मन्त्री था तब कभी उन चिड़ियों की तरफ उसका ध्यान भी नहीं गया.. अब जब वह छूट आया तो पहलेकी तरह चिड़ियोंकी ओर फिर कोई ध्यान नहीं देता इसी तरह जब तुम मॉस्कोमें जाकर रहने लगोगी तो किसी भी बातकी तरफ कोई ध्यान नहीं दोगी। हमलोग न तो कभी खुश हुए है न होंगे। हमें तो केवल सुखकी धुन है।

तुज़ेनबाख़—[मेज़से एक डिब्बा उठाकर] मिठाइयोंका क्या हुआ ?

इरीना—सोल्योनी साहब उडा गये।

तुज़ेनबाख़—सारी ?

अनफीसा—[चाय देते हुए] सरकार, आपका एक खत है।

वैर्शिनिन—मेरा ? [पत्र लेता है] मेरी बेटीका है। [पढ़ता है] हाँ, अच्छा तो मार्यासर्जीएव्ना, माफ करना, मैं अब चलूँगा—मैं अब चाय नहीं पियूँगा [घबराकर उठ खडा होता है] जब देखो तब ये मुसीबतें।

माशा—क्या हुआ ? कोई राज़की बात तो नहीं है ?

वैर्शिनिन—[धीमी आवाजमें] पत्नीने फिर जहर खा लिया। मुझे जाना ही चाहिये अब...मैं चुपचाप खिसक जाऊँगा। कितनी बुरी बात है यह.. [माशाका हाथ चूमता है] मेरी जान, प्यारी तुम गजबकी स्त्री हो...मैं बिना किसीको दीखे इस रास्तेसे खिसक जाऊँगा। [चला जाता है]

अनफीसा—यह किधर खिसके ? अभी तो मैंने इन्हें चाय दी है। अजब आदमी है।

माशा—[नाराज होकर] अब चुप भी करो। जान मत खाओ। तुम्हारे मारे किसीको चैन नहीं है [अपना प्याला लेकर मेज पर जाती है] दाई-माँ, तुम तो पीछे पड जाती हो।

अनफीसा—बिटिया—इतनी क्यो उबल रही हो ?...

[आन्द्रेके पुकारनेका स्वर—"अनफीसा !"]

अनफीसा—[नकल उतारते हुए] अनफीसा ! वहो वैठे है और.. [चली जाती है]

माशा—[खानेके कमरे की मेज़के पास नाराज़ीसे] मुझे भी बैठने दो [सारे ताश गडबडकरके मिला देती है] तुमलोग अपने ताशोसे सारी मेज घेरकर बैठ जाते हो...अपनी चाय तो पीलो।

इरीना—इतना क्यों चिड़चिडा रही हो माशा ?

माशा—हाँ, मै चिडचिडा रही हूँ तो मुझसे मत बोलो। मेरी बातोमें टाँग मत अडाओ।

तुजेनबाख़—[हँसकर] इसे मत छुओ—भाई, इसे छू मत लेना।

माशा—आप साठके हो गये, लेकिन जबदेखो तब स्कूली। बच्चेकी तरह बकवास करते रहते है।

नताशा—[गहरी साँस लेकर] माशा बहन, बातचीतमे ऐसे शब्दोंका प्रयोग क्यों करती हो ? मैं तुम्हारे मुँह पर कहती हूँ, अगर तुम यह सब न कहा करो तो सभ्य-समाजमें अपनी सुन्दरता और रूपके कारण काफी आकर्षक बन जाओ। माशा, माफ करना तुम जरा बद्तमीज हो..

तुजेनबाख—[अपनी हँसी दबाकर]...जरा मुझे देना...उठाना. . शायद उस बोतलमें थोडी-सी बराण्डी बची है...

नताशा—लगता है हमारे बॉबिक मुन्ना अभी सोये नहीं है। ये मुन्ना

जाग उठा है, आज उसकी तबियत ठीक नहीं है। माफ कीजिये मैं उसके पास जा रही हूँ..।

[चली जाती है]

इरीना—कर्नल साहब कहाँ चले गये ?

माशा—घर। उनकी पत्नी साहिबाने फिर कुछ कर डाला है।

तुजेनबाख़—[हाथमें शीशेकी डाटवाली शराबकी बोतल लेकर सोल्योनीके पास आ जाता है] तुम हमेशा अकेले ही बैठे-बैठे सोचा करते हो—और आखिर सोचते क्या रहते हो, यह पता नहीं चलता। आओ, दोस्ती कर लें। जरा बराण्डी चढ़ायें [दोनों पीते हैं] लगता है, मुझे आज भी शायद रातभर पयानो बजाना पड़ेगा। दुनिया भरकी ऊलजलूल चीजें बजानी होंगी। खैर, होगा सो देखा जायेगा।

सोल्योनी—क्यों कर लें दोस्ती ? मेरा तो तुमसे कोई झगड़ा नहीं हुआ।

तुजेनबाख़—तुम मुझे हमेशा ऐसा महसूस कराते रहते हो जैसे हमलोगोंके बीचमें कोई अनबन हो गई हो। इससे इनकार नहीं कि तुम विलक्षण स्वभावके आदमी हो...

सोल्योनी—[बड़े भावुक आलंकारिक ढंगसे पुश्किनका वाक्य बोलता है] "मैं विलक्षण हूँ लेकिन बताओ, कौन है जो विलक्षण नहीं है। क्रोध न करो अलेको।"

तुजेनबाख़—समझमें नहीं आता, अलेको को यहाँ ला-घसीटनेकी क्या जरूरत है ?

सोल्योनी—जब मैं किसीके साथ अकेला होता हूँ तो हर भले आदमीकी तरह बिल्कुल ठीक रहता हूँ, लेकिन लोगोंके बीचमें बड़ा बुझा-बुझा-सा, बड़ा बेचैन-सा हो उठता हूँ। बेवकूफीकी बातें चाहे कैसी भी क्यों न करता होऊँ, फिर भी बहुत-सोंसे ज्यादा ईमानदार और स्पष्टवादी भी हूँ। इस बातको मैं साबित कर सकता हूँ।

तुज़ेनबाख—अक्सर मुझे तुम पर बड़ी झुँझलाहट आती है। क्योंकि जब भी लोगोंके बीचमें होते हो, तो तुम बस मुझे ही छेड़ते रहते हो—फिर भी मैं तुम्हें चाहता हूँ। अच्छा, छोड़ो यार, आज मैं खूब डटकर चढ़ाऊँगा। आओ पियें।

सोल्योनी—हाँ-हाँ पियें [पीता है] बैरन, तुम्हारे खिलाफ मुझे कभी कोई शिकायत नहीं रही। लेकिन मेरा स्वभाव बिल्कुल लर्मन्तोव् जैसा है [बड़े धीरेसे] लोगोंका ही ऐसा कहना है। सच पूछो तो मैं दीखता भी लर्मन्तोव् जैसा ही हूँ—[इत्रकी शीशी निकाल कर अपने हाथोंपर इत्र छिड़कता है।]

तुज़ेनबाख—मैंने अपने स्तीफेके कागज भेज दिए हैं। काफी भाड़ झोंक लिया मैंने भी। पिछले पाँच सालसे लगातार सोचता आ रहा था, अब आखिर तय ही कर डाला। अब जरा डटकर काम करूँगा।...

सोल्योनी—[आलङ्कारिक भाषामें] "अलेको, मत हो यों नाराज..। सारे सपनोंको जा भूल..'

[इनके बात करतेमें ही आन्द्रे चुपचाप आकर एक मोमबत्तीके पास किताब लेकर बैठ जाता है]

तुज़ेनबाख—मैं काम करने जा रहा हूँ।

चेबुतिकिन—[इरीनाके साथ ड्राइङ्गरूममें आकर] और खाना भी क्या ?—सचमुच कोहकाफका माल था. प्याजका शोरबा. गोश्तकी जगह कबाब। नाम था चेहार्तमा।

सोल्योनी—चेहार्तमा तो गोश्त कतई नहीं होता। हमारी प्याजकी तरहका पौधा होता है .

चेबुतिकिन—नहीं भाई,—यह प्याज-ब्याज नहीं मटन (बकरीके बच्चके मांस) को एक खास तरह भूना जाता है।

सोल्योनी—लेकिन, मैं जो आपसे कहता हूँ कि 'चेहार्त्मा' एक तरहकी प्याज होती है।

शेब्रुतिकिन—मुझे आपसे बहस करनेमें क्या फायदा है? आप न तो कभी कोहकाफ गये, न आपने चैहार्त्मा खाया।

सोल्योनी—मैंने इसलिए नहीं खाया कि मुझसे खाया ही नहीं गया। चैहार्त्मासे लहसुन जैसी बू आती है

आन्द्रे—[प्रार्थनाके स्वरमें] बस भाई, बस, अब मेहरबानी करो।

तुजेनबाख—यह रास-मण्डली कब आ रही है?

इरीना—आनेको तो उन्होंने नौ बजे कहा है। सीधे यहीं आयेंगे।

तुजेनबाख—[नाचते हुए आन्द्रेको गोदीमें भरकर मस्तीसे गाता है—] "अरे मेरी कुटिया...अरे मेरी झोपडी।"

आन्द्रे—[नाचते हुए गाता है] "जिसमें थूनी लगी है सालकी।"

तुजेनबाख—[नाचता है] "जिसमें झॅझरी लगी है कमालकी ।"

[सब खिलखिलाकर हँस पडते हैं]

तुजेनबाख—[आन्द्रेको चूमकर] मारो गोली सबको। आओ बैठकर पियें। आन्द्रूशा, आओ अपनी अनन्त मित्रताके लिए हमलोग पियें। आन्द्रूशा, मैं भी तुम्हारे साथ विश्वविद्यालय चलूँगा।

सोल्योनी—किस विश्वविद्यालयमें? मॉस्कोमें दो ही तो विश्वविद्यालय है?

आन्द्रे—मॉस्कोमें सिर्फ एक विश्वविद्यालय है।

सोल्योनी—मैं कहता हूँ, दो है।

आन्द्रे—अरे, वहाँ तीन हों, मेरा क्या जाता है। और भी अच्छा है।

सोल्योनी—मॉस्कोमें दो विश्वविद्यालय है [नाराजीकी भनभनाहट और सिसकारियाँ] मॉस्कोमें दो विश्वविद्यालय है—एक नया

एक पुराना ..अगर आप मेरी बात नहीं सुनना चाहते, अगर आपको मेरी बात बुरी लगती है तो लीजिए, चुप हुआ जाता हूँ। कहो तो मैं दूसरे कमरेमें उठकर चला जाऊँ।

[एक दरवाजेसे बाहर चला जाता है]

तुजेनबाख—शाबास! शाबास! [हँसता है] भाइयो, शुरू करो। मैं बैठकर पयानो बजाता हूँ। सोल्योनी भी बडा मसखरा आदमी है। [पयानोपर बैठकर वाल्ज़की धुन बजाता है]

माशा—[अकेली वाल्ज गतिपर नाचती है] बैरन पिये है—बैरोन पिये हुए है, बैरन पिये हुए है।

[नताशाका प्रवेश]

नताशा—अरे डाक्टर साहब!—[शैबुतिकिनसे कुछ कहती है, और फिर चुपचाप चली जाती है। शैबुतिकिन तुजेनबाखका कन्धा छूकर उसके कानमें चुपचाप फुसफुसाकर कुछ कहता है]

इरीना—क्या बात है?

शैबुतिकिन—अब हमलोग चलते है। अच्छा नमस्कार।

तुजेनबाख—नमस्कार—अब चलनेका वक्त हो गया।

इरीना—लेकिन मैं पूछती हूँ. .उस रास-मण्डलीका क्या हुआ?

आन्द्रे—[बौखलाये स्वरमें] वे लोग नहीं आयेंगे। देखो बहन, नताशाका कहना है कि मुन्नाकी तबियत अच्छी नहीं है और इसीलिए.. सच कहता हूँ मुझे तो कुछ मालूम है नहीं। और मुझे लेना-देना क्या किसीसे...

इरीना—[कन्धे उचकाकर] हुँह, मुन्नाकी तबियत अच्छी नहीं है।

माशा—देखो न, यह कोई पहली ही बार तो किए-करायेपर पानी फेरा नहीं गया है। अगर हमें निकाल बाहर ही करना है, तो हम

खुद चले जायेंगे. [इरीनासे] मुन्ना बीमार नहीं है. बीमार है नताशाका यह [अपनी उँगलीसे माथा ठोकती है] ओफ़्फ़ो, गँवार कहीं की।

[आन्द्रे दाहिनी ओरके दरवाजेसे अपने कमरेमें जाता है, शैबुतिकिन उसके पीछे-पीछे चला जाता है। खानेके कमरेमें लोग विदाके नमस्कारकर रहे हैं]

फ़ैदोतिक—हाय, बड़ा बुरा हुआ। मैं तो आज सारी शाम यहीं गुजारना चाहता था, लेकिन जब बच्चा ही बीमार है तो.. कल उसके लिए एक खिलौना लाऊँगा।

रोदे—[ज़ोरसे] मैंने तो जान-बूझकर खानेके बाद एक झपकी भी ले ली थी। सोचा, सारी रात नाचना पड़ेगा...अरे, अभी तो कुल नौ ही बजे है।

माशा—आइये, सड़कपर चलें। वहीं हमलोग बातें करेंगे। वहीं तय करेंगे कि क्या करना चाहिए।

[नमस्कार, 'नमस्ते' की आवाजें। तुज़ेनबाखके खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज़ सुनाई देती है। सब बाहर चले जाते हैं। अनफीसा और नोकरानी मेज़ साफ़ करके रोशनी बुझा देती हैं। अपना कोट और टोप पहनकर आन्द्रे और साथमें शैबुतिकिन चुपचाप आते हैं]

शैबुतिकिन—शादी करनेका मौका ही मुझे नहीं मिला। क्योंकि जिन्दगी बिजलीकी तेजीसे गुजरती चली गई। दूसरेमें तुम्हारी माँके प्यार में पागल हो गया था। उसकी शादी दूसरेसे हो गई थी।

आन्द्रे—आदमीको शादी तो करनी ही नहीं चाहिए। कतई नहीं करनी चाहिए बड़ी बेलज्जत चीज है शादी।

शैबुतिकिन—यह तो सब ठीक है, लेकिन अकेलेपनका आदमी क्या करे ? तुम चाहे जो कहो लेकिन भाई, अकेले जिन्दगी काटना बड़ा भयानक है। मगर खैर, कोई बात नहीं।

आन्द्रे—जरा जल्दी जल्दी चल।

शैबुतिकिन—जल्दी क्या है—अपने पास बहुत समय है।

आन्द्रे—डर है, कहीं बेगम साहिबा न रोक लें।

शैबुतिकिन—अरे हाँ।

आन्द्रे—आज मैं बिल्कुल भी नहीं खेलूँगा। बस, बैठा-बैठा देखता रहूँगा। आज चित्त अच्छा नहीं है। डाक्टर साहब, इसके लिए क्या करना चाहिए बड़ी जल्दी मेरी साँस उखड़ने लगती है।

शैबुतिकिन—मुझसे यह सब पूछनेसे कोई फायदा नहीं है। भैया, मुझे इस समय कुछ याद नहीं है—मुझे नहीं मालूम कि ..।

आन्द्रे—आओ, रसोईके रास्तेसे निकल चलें।

[दोनों चले जाते हैं]

[घण्टी बजती है—फिर कुछ देर बाद दुबारा बजती है। बाहर बातचीत और हँसनेकी आवाजें सुनाई देती हैं]

इरीना—[भीतर आकर] क्या बात है ?

अनफीसा—[फुसफुसाकर] वही स्वाँगवाले बहुतरूपिए हैं। खूब सजे हुए हैं।

इरीना—दाई-माँ, उनसे कह दो, यहाँ कोई नहीं है। हमें माफ करें।

[फिर घण्टी बजती है]

[अनफीसा बाहर चली जाती है। इरीना कमरेमें इधरसे उधर टहलती-सी घूमती है। वह बड़ी उद्विग्न है। सोल्योनी का प्रवेश]

सोल्योनी—[घबराकर] यहाँ तो कोई भी नहीं है। कहाँ गये सब ?

इरीना—सब घर चले गये।

सोल्योनी—अजब बात है। तुम क्या यहाँ अकेली हो ?

इरीना—हाँ। [कुछ देर चुप रहकर] अच्छा नमस्कार।

सोल्योनी—अभी मैंने बड़ा बेहूदा और असयत व्यवहार कर दिया। लेकिन तुम तो औरों की तरह नहीं हो। तुम महान् और पवित्र हो—तुम्हें सचाईकी परख है। मुझे सिर्फ तुम्हीं समझ सकती हो। मैं तुम्हे प्यार करता हूँ, मैं तुम्हे जी-जानसे प्यार करता हूँ, इरीना, बेहद प्यार...

इरीना—अच्छा, नमस्कार। अब आप चले जाइए।

सोल्योनी—मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकता। [इरीनाके पीछे-पीछे जाता है] हाय, मेरी खुशी। [आँखोंमें आँसू भरकर] मेरे आनन्द-सुख, तुम्हारी-सी मादक, शरबती नशीली आखें तो मैंने आजतक किसी भी स्त्रीकी नहीं देखी .

इरीना—[रुखाईसे] रहने दो वैसिली वैसिल्यीच, अब बस करो।

सोल्योनी—आज मैं पहली बार तुम्हारे सामने अपना प्यार प्रगटकर रहा हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे आज धरतीपर न होकर किसी और नक्षत्रमें पहुँच गया होऊँ.. [अपना माथा मलकर] लेकिन, खैर जाने दो। सच तो है। किसीकी कृपापर कोई जबर्दस्ती तो है ही नहीं। मगर मेरा कोई प्रतिद्वन्द्वी भी सुखी नहीं रह पायेगा, नहीं रह सकेगा.. मैं सबकी कसम खाकर कहता हूँ कि अपने किसी भी रकीबको मार डालनेमें कोई पाप या बुराई नहीं है. सुनो मेरी अप्सरा।

[मोमबत्ती लेकर नताशा, गुजरती है]

नताशा—[एकके बाद दूसरे दरवाजेमें झाँकती है और अपने पतिके कमरेवाले दरवाजेके पास होकर गुजरते हुए] आन्द्रे भीतर है। उन्हें पढ़ने दूँ। माफ करना सोल्योनी, मुझे पता नहीं था कि आप भी यहीं हैं। मैं अपने सोनेके कपड़े पहनकर ही चली आई।

सोल्योनी—मैं ऐसी बातोंपर ध्यान नहीं देता। अच्छा, नमस्कार।

[चला जाता है]

नताशा—तुम बहुत थक गई हो, मेरी मुन्नी [इरीनाको चूमकर] तुम्हें जल्दी सो जाना चाहिए।

इरीना—मुन्ना सो गया क्या?

नताशा—सो तो गया है, लेकिन अच्छी तरह नहीं सोया है। हाँ बहन, मैं तुमसे एक बात कहना चाहती थी, लेकिन कभी तुम्हें फुर्सत नहीं मिलती थी, कभी मुझे। लगता है कि मुन्नाके कमरेमें बड़ी सीलन और ठण्ड है—तुम्हारा कमरा बच्चोंके लिए बड़ा अच्छा है। मेरी रानी, मेरी मुन्नी, कुछ दिनोंको तुम ओल्याके कमरेमें न चली जाओ?

इरीना—[कुछ न समझकर] किधर?

[तीन घोड़ोंकी बग्घीकी घण्टियोंदार आवाज़ दरवाजे तक जाती है]

नताशा—तुम ओल्याके कमरेमें चली जाना, मुन्ना तुम्हारे कमरेमें आ जायेगा। ऐसा छोटा-सा गुड्डा है कि बस।—आज मैंने उससे कहा—'मुन्ना तू मेरा बेटा है, तू मेरा है।' तो अपनी छोटी-छोटी अजब आँखोंसे मुझे टुकुर-टुकुर ताकता रहा [बाहर घण्टी बजती है] ओल्या होनी चाहिए। कितनी देर लगा लेती है यह।

[नौकरानी नताशाके पास आकर कानमें कुछ फुसफुसाती है]

नताशा—प्रोतोपोव ? वह भी कैसे अजब आदमी ह। प्रोतोपोव आये ह और मुझसे बग्घीमें सैर करनेको पूछते ह [हँसती है] ये पुरुष भी कैसे विचित्र जीव होते ह। [घण्टी बजती है] कोई आया है। मै शायद पन्द्रह-बीस मिनटको चली जाऊँ। [नौकरानीसे] उनसे कह दो मै मीधो आ रही हूँ...[घण्टी बजती है] तुम देखना जरा। जरूर ओल्गा होगी।

[चली जाती है]

[नौकरानी भागकर जाती है। विचारोंमें खोई हुई इरीना बैठ जाती है। कुलिगिन, ओल्गा और वेर्शिनिनका प्रवेश]

कुलिगिन—अरे, निहायत अजब बात है। इनलोगोंने तो कहा था आज शामको यहाँ दावत होगी।

वेर्शिनिन—ताज्जुब है। अभी आध घण्टा पहले जब मै यहाँसे गया था तो सब लोग रामधारियोंकी राह देख रहे थे।

इरीना—सबलोग चले गये।

कुलिगिन—माशा भी चली गई क्या ? कहाँ गई है ? नीचे यह प्रोतोपोव बग्घी लिए किसकी राह देख रहा है ?—किसके लिए खड़ा है ?

इरीना—उफ, मुझसे मत पूछो, म बहुत थक गई हूँ।

कुलिगिन—छि: कैसी बदतमीज लड़की है।

ओल्गा—सभा अब जाकर बरखास्त हुई है। बुरी तरह थक गई हूँ। हमारी हेड-मास्टरनी बीमार पड गई—सो मुझे उसकी जगह काम करना है। हाय, यह मेरा सिर.. मेरे सिरमें दर्द हो रहा है.. आह यह मेरा सिर..। [बैठ जाती है] कल ताशोंमे आन्द्रे भैयाने दो सौ रूबल गँवा दिए। सारे शहरमें इसकी चर्चा है।

कुलिगिन—मैं भी मीटिङ्गमें बहुत बुरी तरह थक गया हूँ [बैठ जाता है]

वैर्शिनिन—मेरी बीबीके दिमागमें जम गया है कि मुझे डराकर मानेगी—कम्बख्तने करीब-करीब जहर ही खा डाला था। अब तो सब ठीक हो गया। खुशी है, चलो पीछा छूटा, छुट्टी मिली। तो अब क्या हमें चलना है न? अच्छी बात है, तो फिर मेरा नमस्कार फ्योदोर इल्यिच। आइए हमलोग कहीं और चलें। मैं घर नहीं रह सकता इस समय। किसी भी कीमतपर नहीं रह सकता। आइए चलें।

कुलिगिन—मैं तो बहुत थक गया हूँ। मैं नहीं चलूँगा। [उठते हुए] सचमुच थककर चूर-चूर हो गया हूँ। मेरी पत्नी घर चली गई क्या?

इरीना—उम्मीद तो यही है।

कुलिगिन—[इरीनाका हाथ चूमता है] नमस्कार। कल और परसोंके सारे दिन मेरे पास आराम करनेको है। अच्छा, नमस्कार! [चलते हुए] मुझे चायकी बड़ी सख्त जरूरत है। मैं तो सोच रहा था कि आजकी शाम किसी मजेदार गोष्ठीमें बीतेगी। लेकिन हर चीजमें एक अन्तर लगा रहता है।

वैर्शिनिन—अच्छा तो फिर मैं अकेला ही चलता हूँ।

[सीटी बजाता हुआ कुलिगिनके साथ चला जाता है]

ओल्गा—उफ, मेरा सिर तो दर्दसे फटा जा रहा है। आन्द्रे भैया ताशोंमें हार गये, सारे शहरमें इसीकी चर्चा हो रही है। मैं चलकर जरा लेटूँगी. [जाते हुए] कल मेरी छुट्टी है। आहा,

कैसे आनन्दकी बात है. कल मेरी छुट्टी है, परसों छुट्टी है। मेरा सिर दर्दकर रहा है। हाय, यह मेरा सिर ..

[चली जाती है]

इरीना—[अपने आप ही] सबलोग चले गये। कोई भी नहीं रहा।

[धोकनीवाला बाजा सड़कपर बजता है, अनफीसा गाती है]

नताशा—[फरकी टोपी और कोट पहने हुए खानेका कमरा पार करके आती है। उसके पीछे-पीछे नौकरानी है] मैं आधे घण्टेमें वापिस आई जाती हूँ। बस, थोड़ी ही दूर जाऊँगी।

[जाती है]

इरीना—[अकेली हताशसे स्वरमें] आह, मॉस्को चलो... मास्को मॉस्को।

[पर्दा गिरता है]

तीसरा अङ्क

[ओल्गा और इरीनाके सोनेका कमरा। एक ओर दो पलग। दोनो पर मसहरीकी तरह पर्दे डले हैं। रातके दो बज चुके हैं। नेपथ्यमें आग लगनेकी घण्टी बजती है, जो काफी देर बजती रहती है। साफ दिखाई देता है कि मकानमें अभी तक कोई भी सोया नही है। एक सोफेपर हर वक्तकी तरह काले कपडामे माशा लेटी है। ओल्गा और अनफीसाका प्रवेश।]

अनफीसा—बेचारे नीचे जीने पर बैठे है। मैंने उनसे कहा—"ऊपर चले चलो, यहीं क्यो नही ठहर जाते ..." वे तो बस रोते रहे—"पिता जी कहॉ है? जाने कहॉ चल गये पिताजी?" "और बोले—"अगर पिताजी आगमें जल गये होंगे तो क्या होगा?" इन जरा-जरा सों के दिमाग़मे भी क्या-क्या बाते आती हैं। खुले ऑगनमें बेचारे असहाय बच्चे.. उनके शरीरपर एक कपडा तक नहीं है।

ओल्गा—[आल्मारीमें से कपडे निकालती है] लो यह भूरे कपड़े लो, यह भी लो, यह ब्लाउज भी यह स्कर्ट और लो. हाय-दाई-मॉ, देखो न कैसा गजब हो गया।...लगता है सारी की सारी किसानोव-स्ट्रीट जलकर राख हो गई है। ये लो . ये भी लो. [अनफीसाकी गोदमें कपडे फेंकती है] वेर्शिनिनके घरके लोग भी बहुत ही डर गए है। बेचारे! उनका घर भी तो करीब-करीब जल-सा ही गया है। आज रातभर उन्हें यहीं रहने दो न। आज हम उन्हें कहीं नहीं जाने देगे.. बेचारे फैदोतिकका घर-बार सब कुछ भस्म हो गया। एक तिनका तक नहीं बचा।

अनफीसा—ओलगा बेटी, अगर फेरापोण्टको बुला लो तो अच्छा है। मैं यह सब लेजा नहीं पाऊँगी।

ओलगा—[घण्टी बजाती है कोई जवाब ही नहीं देता। दरवाज़े पर जाकर] अरे है कोई ? कोई हो तो जरा इधर आओ . [खुले हुए दरवाजेमे आगमे लाल-लाल झलमलाती खिड़की दिखाई पड़ती है, घरके पाससे आग बुझानेकी गाडीकी आवाज सुनाई देती है] मुसीबत है मेरी तो नाक मे दम आ गया . .।

[फेरापोण्टका प्रवेश]

ओल्गा—लो इधर, यह सब नीचे सीढी पर ले जाओ—नीचे कोलोतिन औरते है। उन्हे दे देना और लो यह भी दे देना।

फेरापोण्ट—हाँ बिटिया, १८१२ मे मॉस्को भी जल गया था हे भगवान् दया करो। फ्रासीसियोने गजब कर दिया था।

ओलगा—अच्छा, अब तुम जाओ।

फेरापोण्ट—अच्छा बिटिया।

[चला जाता है]

ओलगा—दाई-माँ, सारे कपड़े उन्हे बाँट दो। हमे कुछ नहीं चाहिये, सब उन्हे ही दे दो। मैं बहुत थक गई हूँ। पैरो पर खडा नहीं रहा जाता। आज हम वेर्शिनिन साहबके बच्चोको घर नहीं जाने देगे। छोटी बच्ची ड्राइङ्गरूममे सो जायेगी। कर्नल साहब नीचे बैरनके कमरेमे ही रह जायेंगे, या हमारे खानेके कमरेमे सो जायेंगे। वह कम्बख्त डाक्टर साहब शराब पिये बुरी तरह बेहोश पडे है सो उनके कमरेमे तो किसीको टिकाया नहीं जा सकता। वेर्शिनिन साहबकी बीबी भी ड्राइगरूममे आ जायेगी।

अनफीसा—[थकी-सी आवाज़मे] ओलगा बेटी, मुझे मत निकालो। बेटी मुझे मत बाहर करो।

ओल्गा—दाई-माँ, यह तुम्हारी क्या बकवास है ? तुम्हें तो निकाल रहा नहीं कोई ।

अनफीसा—[ओल्गाके कन्धेपर हाथ रखकर] मेरी बिटिया, मुन्नी—मैं तो .खूब जी लगाकर काम करती हूँ, जितना हो पाता है सब करती हूँ । पर अब कमजोर होती जा रही हूँ न, सो हर कोई कहता है—"चल भाग ।' कहाँ जाऊँ मैं ? किधर जाऊँ ? अस्सी-इक्यासी सालकी हो गई ।

ओल्गा—दाई-माँ, तुम बैठ जाओ...तुम थक गई हो दाई-माँ [बैठा देती है] सुस्ता लो, दाई माँ । तुम तो बडी कमजोर, पीली पड गई हो ।

[नताशाका प्रवेश]

नताशा—लोग कहते हैं कि जिन लोगोंके घर जल गये हैं उनकी मददके लिए हमें फौरन ही एक कमेटी बना लेनी चाहिये । ठीक है, बहुत अच्छा विचार है । सचमुच गरीबोंकी मददके लिए हर वक्त तैयार रहना चाहिये । यह धनीका धर्म है । मुन्ना बॉबिक और सोफी बेटी तो ऐसे सोये पडे हैं, जैसे कहीं कुछ भी न हुआ हो । जिधर जाओ, लोग ठसाठस भरे हैं—सारे घर भर गये हैं । शहर भरमें इन्फ्लुएन्जा फैला है । मुझे तो डर है, कहीं बच्चोंको न लग जाय ।

ओल्गा—[उसकी बात सुनकर] इस कमरेसे तो आग दिखाई भी नहीं देती । यहाँ तो एकदम शान्ति है ।

नताशा—हाँ, सो तो है ही । मेरे सारे बाल खुल गये होंगे [शीशेके सामने खडी हो जाती है] लोग कहते हैं मैं मोटी होती जा रही हूँ ..झूठ बोलते हैं । कहीं भी तो नहीं हूँ मोटी । माशा सो गई क्या ? बहुत थक गई है बिचारी बच्ची . [अनफीसासे रूखे

स्वरमें] मेरे सामने बैठनेकी बदतमीजी मत करो। उठो, चलो, जाओ, कमरेसे बाहर निकलो। [अनफीसा चली जाती है, थोडी देर चुप्पी] समझमें नहीं आता इस बुढियाको तुमने क्यों डाल रखा है?

ओल्गा—[तपाकसे] माफ करना, मेरी समझमें भी नहीं आया, तुम क्या चाहती हो?

नताशा—यहाँ यह बिल्कुल फालतू है। किसान औरत है। इसे तो गाँवमें जाकर रहना चाहिये। तुम इन लोगोंकी आदते खराब कर देती हो। मुझे घरमें पसन्द है कायदा। किसी भी फालतू नौकरकी जरूरत क्या है? [उसके गाल थपककर] बहन, तुम भी बहुत थक गई हो। हमारी हेड-मास्टरजी थक गईं। जब सोफी बेटी बडी होकर हाई स्कूलमें पहुँचेगी तब तो मुझे तुमसे डरना पडेगा।

ओल्गा—मैं हेड-मास्टरनी थोडे ही रहूँगी तब।

नताशा—तुम्हींको तो चुना जायेगा ओल्गा। यह तो बिल्कुल तय ही हो चुका है।

ओल्गा—मैं साफ मना कर दूँगी। यह सब मुझसे नहीं चलेगा। [पानी पीकर] तुम अभी दाई-माँ से ऐसी उजड्डतासे बाते कर रही थीं। माफ करो, मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरी आँखोंके आगे तो अँधेरा आ गया।

नताशा—माफ करो ओल्गा बहन, माफ करो। मैंने इस नीयतसे नहीं कहा था कि तुम्हारे दिलको चोट लगे।

[माशा उठ पडती है। तकिया चादरा समेटकर गुस्सेमें बाहर चली जाती है]

ओल्गा—यह तो तुम्हें खुद ही सोचना चाहिए बहन। हो सकता है हमलोगों का पालन-पोषण कुछ अनोखे ढगसे हुआ हो, लेकिन मुझसे

तो नहीं सहा गया। इस तरहका व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लगता। मन भारी हो जाता है, दिल डूबने लगता है।

नताशा—अच्छा माफ करो बाबा, माफ कर दो। [उसका चुम्बन लेती है]

ओल्गा—जरा-सी भी उजड्डता, या एक भी बेतरीके बात मेरा मन बिगाड देती है।

नताशा—मैं बकती तो बहुत हूँ, यह बात सच है। लेकिन बहन, यह तो तुम्हें भी मानना पडेगा कि इस वक्त तो इसे अपने गाँवमें ही होना था। इसके लिए यही अच्छा था।

ओल्गा—यह आखिर हमलोगोंके यहाँ तीस सालसे है।

नताशा—लेकिन अब तो इससे काम होता नहीं है न। या तो मेरी ही अक्ल कुछ मोटी है, या तुम्हीं मेरी बात नहीं समझती। वह अब काम करनेके लायक नहीं रह गई। अब भी सिवा पडकर सोने या हाथपर हाथ धरकर बैठे रहनेके यह करती ही क्या है?

ओल्गा—तो ठीक है, उसे हाथपर हाथ धरे ही बैठी रहने दो।

नताशा—[आश्चर्यसे] कैसे?—हाथपर हाथ धरे बैठी रहने दे? अरे, आखिर वह नौकर है। [रुँधे गलेसे] ओल्गा, मेरी समझमें तुम्हारी बात नहीं आती। बच्चेकी देखभालके लिए हमारे पास एक आया है, बच्चीको दूध पिलानेको धाय अलग है। एक घर की नौकरानी है, एक बावर्चिन है,—इस बुढियाकी हमें और क्या जरूरत? इससे हमें फायदा क्या है?

[नेपथ्यमें आग लगनेकी खतरेकी घण्टी बजती है]

ओल्गा—आजकी रातने तो मुझे जैसे दस साल और बूढा कर दिया।

नताशा—ओल्गा, हमलोग आज माफ-साफ बातें कर लें। तुम हाई-स्कूलमें रहती हो, मैं घर रहती हूँ। तुम पढाती हो तो मैं घर

की देखभाल करती हूँ। फिर अगर मैं नौकरोंके बारेमें कुछ कहती हूँ—तो यह अच्छी तरह सोच-समझ लेती हूँ कि उसका क्या मतलब है? मैं ही तो जान सकती हूँ कि किसके बारेमें क्या कह रही हूँ। और वो चोट्टी बुढ़िया खूसट [पाँव पटकती है] उस चुड़ैलको तो कल सुबह घर खाली कर देना होगा। मुझे हर वक्त जान खानेवाले आदमियोंकी कोई जरूरत नहीं है। कतई ज़रूरत नहीं है। [सहसा अपनेको रोककर] सच कहती हूँ जबतक तुम नीचे नहीं चली जाओगी, हमलोग हमेशा झगड़ते रहेंगे। बड़ा बुरा लगता है।

[कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—माशा कहाँ गई?—घर चलनेका वक्त हो गया। लोग कहते हैं, आग खत्म हो गई [अङ्गड़ाई लेकर] पहले शहरके एक हिस्सेमें आग लगी और फिर जो आँधी चलनी शुरू हुई तो लगा जैसे पूरा शहर भस्मीभूत हो जायेगा [बैठ जाता है] मैं तो थककर चूर-चूर हो गया। ओल्गा रानी, कभी-कभी तो मेरे मनमें आता है कि माशाकी जगह मैं तुम्हींसे शादी कर लेता। कितनी अच्छी हो तुम। थककर मैं तो बेदम हो गया। [जैसे ध्यानसे कुछ सुनने लगता है]

ओल्गा—क्या हुआ?

कुलिगिन—कम्बख्त डाक्टरको अभी ही शराब चढ़ानेकी सूझी थी। नशेमें बेहोश पड़ा है। क्या मुसीबत है? [उठ बैठता है] लगता है वे यहीं तशरीफ ला रहे हैं। सुना तुमने? हाँ हाँ, लो इधरसे आये। [हँसकर] सचमुच, डाक्टर भी क्या आदमी है मैं जरा छिप जाऊँ [आल्मारीके पास जाकर कोनेमें खड़ा हो जाता है] है न पक्का गदहा।

ओल्गा—दो साल उसने बोतल छुई तक नही, और अब जाकर चढा आया [नताशाके साथ कमरेके पिछले हिस्सेमे चली जाती है]

[शैबुतिकिनका प्रवेश । बिना लडखडाये इस तरह जैसे बडा गम्भीर हो, पूरा कमरा पार करके आता है। खडा होकर इधर-उधर देखने लगता है । फिर हाथ धोनेके स्टेण्डके पास जाकर हाथ धोने लगता है]

शैबुतिकिन—[झुँझलाकर] सब चूल्हेमे जा पडे, भाडमे जॉय। हर आदमी सोचता है; चूँकि मै डाक्टर हूँ, इसलिए दुनिया भरकी सारी शिकायते दूर कर दूँगा और सच्चाई यह है कि मै कुछ जानता नही। जो जानता था सो भी भूल-भाल गया। याद ही नही रहा। बिल्कुल निकल गया दिमागसे [ओल्गा और नताशा चुपचाप खिसक जाती हैं] आग लगे सबमे। पिछले बुधको मैने जासिपकी एक औरतका इलाज किया था, वह मर गई। मेरा ही तो कसूर था कि वह मर गई। जी हॉ, पचीस साल पहले मै तब भी कुछ जानता था, अब तो दिमागसे जैसे सब उड गया। शायद मै आदमी हूँ ही नहीं। ये हाथ-पॉव सिर तो सिर्फ हैं, केवल दिखावे के है। मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। और फिर भी मजा यह कि मै घूमता हूँ—खाता हूँ—सोता हूँ, [रोने लगता है] हाय, काश मेरा कोई अस्तित्व न होता! [रोना छोड कर झल्लाते हुए] मुझे कोई पर्वाह नहीं। मै रत्ती भर चिन्ता नहीं करता [एक क्षण चुप रहकर] हे भगवान, परसों ही तो क्लबमे कुछ बातचीत हो रही थी। लोग शैक्सपियरके बारमें, वाल्टेयरके बारेमे बाते कर रहे थे। मैने तो कुछ भी नहीं पढा। पढा जरा भी नहीं, लेकिन दिखाता मै ऐसे रहा जैसे सबको चाटे बैठा हूँ। दूसरोंकी हालत भी मेरी

जैसी ही थी। कैसी मक्कारी है! कितना कमीनापन! जिस औरतको मैंने बुधको मार डाला था वह मेरे दिमागमें घुस बैठी और भी न जाने कितनी उल्टी-सीधी दुनिया भरकी बातें मेरे दिमागमें आईं... .मुझे सब कुछ बड़ा गन्दा-अपवित्र, भद्दा-भद्दा लगने लगा और दुनियाँ भरकी ऊल-जलूल चीजें दिलमें आ समाई। . . मैं गया, और डटकर शराब चढ़ा ली।

[इरीना, वेर्शिनिन और तुजेनबाख़का प्रवेश। तुजेनबाख़ने नागरिकोंवाला नया फैशनेबिल सूट डाट रखा है]

इरीना—आइये, यहीं बैठ जायें। यहाँ कोई आयेगा भी नहीं।

वेर्शिनिन—अगर ऐन मौकेपर सिपाही न आ पहुँचते तो सारा शहर जलकर खाक हो जाता। कमालके आदमी होते हैं ये सिपाही। [आनन्दसे हाथ मलने लगता है] गजबके होते हैं ये लोग! वाह!

कुलिगिन—[उनके पास जाकर] क्या वक्त होगा?

तुजेनबाख़—तीन बज गये। चारों तरफ उजाला भी होने लगा।

इरीना—लोग खानेके कमरेमें जमे हैं। जानेका किसीका विचार नहीं लगता। वह आपका सोल्योनी भी वहीं जमा है। [शेबुतिकिन से] डाक्टर साहब, अच्छा हो, आप अब जाकर सोयें।

शेबुतिकिन—अच्छी बात है, धन्यवाद!

[दाढ़ीपर हाथ फेरता है]

कुलिगिन—[हँसता है] डाक्टर साहब, आप जरा आपेमें नहीं हैं। [कन्धेपर हाथ मारकर] शाबाश! पुराने लोगोंका कहना था, आराम बड़ी चीज है मुँह ढँकके सोइये।

तुजेनबाख़—सब लोग मुझसे कहते हैं कि जिन परिवारोंके घर जल गये हैं उनकी मददके लिए मैं एक सङ्गीत-समारोह कर डालूँ।

इरीना—मगर है कौन-कौन इसके लिए ?

तुजेनबाख—अगर हमलोग चाहे तो इसे अपने ऊपर ले सकते हैं। मेरा खयाल है, माशा गजबका पयानो बजा लेती है।

कुलिगिन—हॉ, बहुत शानदार बजाती है।

इरीना—वह तो सब भूल-भाल गई—पिछले तीन-चार सालसे उसने बजाया कहॉ है ?

तुजेनबाख—इस शहर भरमे एक भी तो ऐसा खुदाका बन्दा नही है जो सङ्गीतका नाम तक जानता हो, मगर मै जो भी कुछ सङ्गीत समझता हूँ उसीके बलपर आपको दावेसे विश्वास दिलाता हूँ कि माशा बहुत शानदार पयानो बजा लेती है—बडी प्रतिभा है उसमे।

कुलिगिन—बैरन, तुम बिल्कुल सच कहते हो। मुझे तो वह बहुत ही पसन्द है। मेरा मतलब माशा बडी ही अच्छी लडकी है।

तुजेनबाख—एक तो आदमी इतना शानदार बाजा बजाये और फिर ऊपरसे वह यह भी जानता हो कि कोई उसे समझ नही पा रहा.. ..।

कुलिगिन—[गहरी सॉस लेकर] बिल्कुल ठीक। लेकिन उसका समारोहमे भाग लेना उचित होगा ? [कुछ देर चुप रहकर] और भाइयो, इस बारेमे मेरा ज्ञान बिल्कुल नही है। हो सकता है चार चॉद लग जॉय। इससे तो कोई इन्कार ही नही कि हमारे डायरेक्टर साहब महान और वाकई शानदार आदमी है। बडे प्रतिभाशाली है, लेकिन उनके विचार कुछ ऐसे ही है। हालॉकि इस बातसे उस भले आदमीका कोई लेना-देना नही फिर भी अगर आप कहें तो मै उनके बारेमे कुछ बताऊँ।

[शैबुतिकिन चीनीकी घडी लेकर उसे उलट-पलटकर देखने लगता है]

वेर्शिनिन—इस आगने तो मुझे ऊपरसे नीचे तक भूत बना दिया। देखने लायक हो रहा होऊँगा [रुककर] योंही चलते-चलते कल मैंने सुना कि अफसर हमारी फौजका किसी दूर-दराज देशमें तबादला किये डाल रहे हैं। पोलैण्ड या चीताके आस-पास कहीं।

तुजेनबाख—हाँ, इस बारेमें कुछ मैंने भी सुना है। जो हो सारा शहर बादमें उजाड हो जायेगा।

इरीना—हमलोग भी तो यहाँसे चले जायेंगे।

शैबुतिकिन—[घडी गिराकर तोड देता है] चूर-चूर हो गई।

कुलिगिन—[टुकडे समेटकर] उफ! डाक्टर साहब, तुमने कितनी कीमती चीज तोड डाली! मैं होता तो तुम्हें आचरणके लिए माइनस जीरो देता...

इरीना—अम्माकी घडी थी।

शैबुतिकिन—होगी...खैर, अगर उनकी थी—तो थी ही। हो सकता है मैंने इसे न तोडा हो। सिर्फ ऐसा लगा हो कि मैंने तोड दिया। हो सकता है हमें सिर्फ ऐसा लगता ही हो कि हम हैं—और वस्तुतः हमारा कोई अस्तित्व ही न हो। मैं तो भाई, कुछ समझता नहीं। और कोई भी कुछ नहीं जानता। [दरवाज़ेके पास जाकर] आप लोग घूर-घूरकर क्या देख रहे हैं। नताशाकी प्रोतोपोव साहबके साथ कुछ योंही जरा-सी आँख-मिचौली रहती है—लेकिन आपलोग कुछ नहीं देखते। आपलोग यहाँ बैठे-बैठे भी कुछ नहीं देखते। प्रोतोपोवसे नताशाकी जरा-सी सांठ गांठ है [गाता है] 'ले लो यह खजूर, रानी जी।'

[चला जाता है]

वेर्शिनिन—ठीक ही तो है. [हँसता है] मगर है गोरख-धन्धा ही। [कुछ देर चुप्पी] जब आग शुरू हुई तो मै दम छोडकर भागा-भागा घर गया, वहाँ जाकर मैने देखा कि हमारा घर तो बिल्कुल ठीक-ठाक खतरेसे एकदम बाहर है, लेकिन मेरी छोटी-छोटी लडकियाँ सोनेके कपडे पहने ही दरवाजेमे खडी है। उनकी माँका कही कोई पता नही था। लोग चीखते-पुकारते इधरसे उधर भाग रहे थे। कुत्ते, घोडे यहाँ-वहाँ दौड रहे थे। मेरे बच्चोके चेहरे, खौफ या प्रार्थना या पता नही क्यो, फक पडे थे। चेहरे देखकर मेरा दिल मसोसकर रह गया। मैंने सोचा, हे भगवान, इन बच्चोको अब सारी जिन्दगी बिताने को सहारा कौन-सा बचा है? मैंने उनके हाथ पकडे और दौड पडा। वे अब इस दुनियाँ मे किसके सहारे दिन काटेंगे—इस बातके सिवा और बात ही दिमाग़में नहीं थी. ... [कुछ देर रुककर] मैं जब यहाँ आया तो देखा, यहाँ इनकी माँ रो, चीख रही है, नाराज हो रही है।

[माशा तकिया-चादरा लेकर लौट आती है और सोफे पर बैठ जाती है]

वेर्शिनिन—जिस समय मेरी बच्चियाँ सोने के कपडे पहने दरवाजेपर खडी थीं और सारी सडक लपटोसे लाल-लाल हो रही थी, चारो तरफ भयानक कोलाहल छाया हुआ था—तो मुझे लगा शायद वर्षों पहले जब दुश्मन अचानक हमला कर दिया करते थे और लूटपाट करना, आग लगाना शुरू कर देते थे, तब भी शायद ऐसा ही कुछ दृश्य हो जाता होगा। और सच पूछा जाय तो आज मै और जो कुछ पहले होता था उसमे फर्क ही क्या है? इसी तरह जब थोडा सा वक्त, यानी दो-तीन सौ साल और बीत

जाये, तो लोग हमारे आजके जीवनके ढर्रेको भी बड़े भयभीत होकर घृणा-भरी मुस्कुराहटोंसे देखा करेंगे। आजकी हर चीज उन्हें बड़ी बेहूदी और बोझिल, बड़ी विचित्र और कष्टदायक लगेगी। आह, कैसी विचित्र मनमुग्ध वह जिन्दगी होगी...कितनी अद्भुत। [हँसता है] माफ कीजिये, मैं फिर सिद्धान्त बघारने लगा हूँ। आज्ञा दें तो चालू रखूँ। भविष्यके बारेमें बोलते रहनेकी मेरे मनमें न जाने कितनी ललक है। इस वक्त जरा तरङ्गमें हूँ [कुछ देर चुप रहकर] लगता है आप सब लोग सो गये। हाँ, तो मैं कह रहा था कि कैसी अद्भुत वह जिन्दगी होगी.. क्या आप उसकी कल्पना ही करके देख सकते हैं? आज इस शहर भरमें आप जैसे सिर्फ तीन आदमी हैं, लेकिन आनेवाली पीढ़ियोंमें और होंगे . फिर और होंगे, फिर और बढ़ेंगे..। एक समय आयेगा जब दुनियाँकी सारी बातें ठीक उसी प्रकारका रूप ले लेंगी जैसे रूप का आप समर्थन करते हैं...जैसा रूप आप चाहते हैं। लोग ठीक आपके सपनोंकी दुनियाँके अनुसार जियेंगे, लेकिन धीरे-धीरे आप भी पुराने पड़ते जायेंगे—तब ऐसे-ऐसे लोग इस धरतीपर जन्म लेंगे जो आपसे अच्छे होंगे [हँसता है] आज पता नहीं मैं कैसी विचित्र मानसिक स्थितिमें हूँ। जिन्दगीके लिये मेरे दिलमें बड़ा भयानक प्यार उमड़ रहा है [गाता है]

'सभी प्यारसे बँधे हुए हैं, बूढ़े और जवान,
प्यार-भावना इस धरतीपर सबसे शुद्ध महान।'

माशा—[गुनगुनाती है] तनन : तनन तन तुम...

वैशिनिन—[जवाबमें गुनगुनाता है] तूम तनन-तनन

[हँस पडता है]

[फेदोतिकका प्रवेश]

फेदोतिक—[नाचता है] जल गया—जल गया—जल गया रे।
मेरा घर-बार सब जल गया रे।

इरीना—यह क्या बेहूदा मजाक है ? तुम्हारा क्या सब कुछ जल गया ?

फेदोतिक—[हँसकर] इस धरतीपर मेरा जो भी कुछ था सब स्वाहा हो गया। कुछ भी नही बचा। मेरा गिटार जल गया, कैमरा जल गया, सारे पत्र जल गये। जो नोटबुक मै तुम्हे देनेवाला था वह भी जलकर भस्म हो गई।

[सोल्योनी का प्रवेश]

इरीना—[सोल्योनी से] नहीं, वैसिली-वैसिलिच, आप फौरन चले जाइये। आप यहाँ नहीं आ सकते।

सोल्योनी—क्यो, बैरन साहब यहाँ तो आ सकते है ? मै ही नही आ सकता ?

वर्शिनिन—अच्छा, अब तो हमे चलना चाहिये। आग कैसी है, अब ?

सोल्योनी—लोग कहते है कि अब तो समाप्त हो चली है। नहीं साहब, मै बिलकुल नही समझ पाता कि बैरन तो यहाँ रह सकते है, मै आ भी नही सकता।

[इत्रको शीशी निकालकर अपने ऊपर छिडकता है।]

वर्शिनिन—[गुनगुनाता है] तर-र-र-तनन. ताम..

माशा—तर-र-र-र. ताम.

वर्शिनिन—[सोल्योनीसे हँसकर] आओ, खानेके कमरेमे चले।

सोल्योनी—बहुत ठीक, चलकर हम सब इसे लिख डालेगे। शायद मुझे अपनी बात फिर कभी साफ करनी पडे। डर बस यही है, कही

बतख-बाबू भडक न उठें.. [तुज़ेनबाख़ की ओर देखकर] चुक-चुक-चुक-चुक...

[फेदोतिक और वार्शिनिनके साथ चला जाता है]

इरीना—इस कम्बख्त सोल्योनीने भी कमरेमे कैसी तम्बाकू की बदबू भर दी है। [साश्चर्य] बैरन साहब सो गये ! बेरन, बेरन !

तुजेनबाख़—[जागकर] हाँ ? मै तो बहुत थक गया.. ईंटोका भट्टा। नही नही, मै नींद मे नही बर्रा रहा हूँ, यहाँ से सीधा ईंटोके भट्टे पर ही जाऊँगा .काम करना शुरू करूँगा। करीब-करीब सब कुछ तय हो चुका है [इरीनासे कोमल स्वरमे] तुम कैसी दुबली-पतली, सुन्दर सलोनी और प्यारी-प्यारी हो। मुझे तो लगता है जैसे तुम्हारी सुनहरी कान्ति अँधेरे वातावरणमे रोशनी बिखरा रही हो...तुम बहुत उदास हो...जीवनमे घोर असन्तुष्ट. है न ? अच्छा, आओ, मेरे साथ चलो। आओ, हमलोग साथ-साथ काम करें।

माशा—बैरन साहब, अब आप भी जाइये।

तुजेनबाख़—[हँसकर] अरे, क्या तुम भी यहीं हो ? मैने तुम्हे तो देखा ही नहीं। [इरीनाका हाथ चूमकर] अच्छा-नमस्कार, मै चलता हूँ, अब तुम्हे देखता हूँ और फिर उस दिन की बात याद करता हूँ—तो लगता है जैसे उस बातको न जाने कितने युग बीत गये है, जब जन्म-दिन की पार्टीमे तुमने परिश्रम करनेके आनन्दमे भरी जिन्दगीका सपना देखा था। वह सब क्या हो गया ? [उसका हाथ चूमता है] अरे, तुम्हारी आँखोमे तो आँसू भर आये. अच्छा थोडा सो लो, रोशनी फैल रही है। करीब करीब सुबह हो ही चुकी है काश, मै तुम्हारे ऊपर अपना जीवन निछावर कर पाता.. इतनी छूट मुझे मिल जाती।

माशा—बैरन साहब, सचमुच आप अब चले जाइये।

तुजेनबाख—मै जा रहा हूँ—[चला जाता है]

माशा—[लेटकर] फ्योदोर, सो गये क्या तुम ?

कुलिगिन—ऑऽऽ ?

माशा—अच्छा हो, तुम भी घर जाकर लेटो।

कुलिगिन—मेरी प्यारी माशा. मेरी जान।

इरीना—यह बहुत थक गई है। फैद्या, इसे थोड़ा आराम कर लेने दो।

कुलिगिन—मै बस जा ही रहा हूँ.. आह, मेरी खूबसूरत बीबी प्राण-धन, मै तुम्हे प्यार करता हूँ।

माशा—[झुँझलाकर फ्रेंचमें व्याकरणके रूप बोलती है] मै प्यार करता हूँ, तुम प्यार करते हो, आप प्यार करते है; वह प्यार करता है, वे प्यार करते है—तू प्यार करता है।

कुलिगिन—[हँसकर] वाह, क्या गजबकी औरत है। तुम्हें मेरी पत्नी बने हुए सात साल हो गये लेकिन लगता ऐसा है जैसे कल ही हमलोगोंकी शादी हुई हो। कसमसे, तुम भी क्या कमालकी औरत हो. .मै तो बड़ा सन्तुष्ट हूँ, सन्तुष्ट हूँ !

माशा—मै तुमसे ऊब उठी हूँ, ऊब उठी हूँ.. [एकदम उठ बैठती है] और एक बात ऐसी भी है जो मेरी खोपड़ीसे ही नहीं निकलती। देखो न, कितनी झुँझलाहट पैदा करनेवाली बात है यह मेरे सिरमे ठुकी हुई कीलकी तरह खटक रही है। मुझसे चुप नही रहा जा रहा। मै आन्द्रे भैयाके बारेमे कह रही हूँ। उन्होंने लेकर सारे घरको बैंकमे गिरवी रख दिया है और भाभीने वह सारा रुपया झटककर अपने पास रख लिया है। तुम तो जानते ही हो कि घर सिर्फ उन्हींका नही है। घर तो हम

चारों का है। अगर उनमें जरा भी शिष्टता और समझ है तो उन्हें खुद सोचना चाहिये।

कुलिगिन—इन सबको लेकर क्यों परेशान होती हो? तुम्हें क्या पड़ी है? आन्द्रूशा नाक तक कर्जेमें डूबे हैं। इतना जानना काफी है।

माशा—कुछ भी हो, गुस्सा आने की तो बात ही है।

कुलिगिन—हम कोई भिखमंगे नहीं हैं जी। मैं काम करता हूँ—हाई-स्कूलमें पढ़ाने जाता हूँ। इसके अलावा मैं प्राइवेट-ट्यूशन भी कर लेता हूँ। मैं अपने काममें मस्त हूँ, मेरे बारेमें कोई इधर-उधर ऐसी-वैसी बात नहीं कह सकता।

माशा—चाहिये तो मुझे भी कुछ नहीं, लेकिन अन्याय देखकर बड़ा गुस्सा आ जाता है [कुछ देर रुककर] फ्योदोर, अब तुम जाओ।

कुलिगिन—[उसका चुम्बन लेकर] तुम बहुत थक गई हो। घण्टे-आध घण्टे आराम कर लो। मैं कहीं भी कुछ देर बैठकर तुम्हारी राह देखता रहूँगा। [जाते हुए] मैं सन्तुष्ट हूँ मैं सन्तुष्ट हूँ—सन्तुष्ट हूँ।

इरीना—देखो तो सही, हमारे आन्द्रे भैया कैसे ओछे दिलके हो गये हैं। इस औरतके साथ तो मानो बुड्ढे खूसटसे होते जा रहे हैं। कभी समय था जब प्रोफेसर होनेके लिए यह कितना परिश्रम करते थे और कल यह शेखी बघार रहे थे कि 'आखिरमें ग्राम पञ्चायतका मेम्बर हो गया..।' यह मेम्बर हैं और प्रोतोपोव चेयरमैन है—इस पर सारी बस्ती हँसती है, काना-फूसी करती है। मगर एक यही हैं कि न कुछ देखते हैं, न जानते हैं। यही देख लो न बच्चा-बच्चा आग बुझाने दौड़ा जा रहा है और भैया हैं कि अपने

कमरेमे बैठे है—इन्हे जैसे दुनियासे कोई मतलब ही नही। बस वायलिन बजानेके सिवा कुछ भी नहीं करते...[असहाय-सी हताश स्वरमें] हाय.. क्या हो रहा है, कैसा गजब है.. भयकर ! [रोने लगती है] मुझसे अब और सहा नही जाता. बिल्कुल नही सहा जाता। बिल्कुल भी नहीं।

[इरीना प्रवेश करके अपनी श्रृंगार-मेज़को ठीक-ठाक करने लगती है]

इरीना—[जोर-जोरसे सिसकियॉ भरते हुए] मुझे यहॉसे धक्का देकर निकाल दो, भगा दो. मुझसे अब यह सब नहीं सहा जाता...

ओलगा—[चोककर] क्या हुआ ? बहन क्या हुआ ?

इरीना—[सिसकते हुए] कहॉ गया ? सब कुछ कहॉ चला गया ? कहॉ है सब कुछ ? हाय भगवान ! उफ, सब कुछ भूल गई। मुझे तो एकदम याद नही रहा...दिमागमे कितनी सारी चीजे एक दूसरीमें गडबड हो गई है। इतालवी भाषामे 'खिडकी' या 'छत' को क्या कहते है यह तक तो मुझे ध्यान नहीं आ रहा . दिमागसे हर चीज उडती चली जा रही है। रोज कुछ न कुछ भूलती जा रही हूँ। जिन्दगी फिसलती चली जा रही है।. फिर कभी नहीं लौटेगी . हमलोग कभी भी मॉस्को नहीं जा पायेगे. मैं अच्छी तरह जानती हूँ, हमलोग मॉस्को नहीं जा पायेगे .

ओल्गा—बहन . मेरी बहन

इरीना—[अपने आप पर सयम करके] उफ, मै भी कैसी खराब हूँ। मुझसे काम नहीं होता . अब काम करना भी नही चाहती जी भरकर कर लिया. बहुत कर लिया। मै टेलिग्राफ-क्लर्क थी—

आज मैं नगर-सभामें काम करती हूँ। वहाँ जो भी काम दिया जाता है वह मुझे रत्तीभर अच्छा नहीं लगता। उन सबसे मुझे घृणा है। मैं चौबीस सालकी होने आ रही हूँ—बरसों से गंदे काम करते हुए.. मेरे दिमागका सारा रस निचुड़ता चला जा रहा है सूखती चली जा रही हूँ, बुढ़िया और कुरूपा होती जा रही हूँ। कहीं एक तिल भर तो शान्ति नहीं मिलती। समय आँधीकी तरह भागा चला जा रहा है। हमेशा लगता रहता है जैसे वास्तविक और सुन्दर जिन्दगीसे दिन-दिन दूर होती चली जा रही हूँ। पता नहीं किन अजानी गहराइयोंमें डूबती चली जा रही हूँ मैं हार चुकी हूँ.. कभी-कभी मुझे खुद आश्चर्य होता है कि कैसे जिन्दा हूँ—क्यों नहीं मैं आत्म-हत्या कर डालती?

ओल्गा—मत रोओ बहन, यों मत रोओ। देखो, मुझे भी इससे कितना दुख होता है।

इरीना—मैं रो नहीं रही. बिलकुल नहीं रो रही रोना तो चुक गया. लो, अब तो नहीं रो रही, अब नहीं रोऊँगी. कभी नहीं रोऊँगी।

ओल्गा—इरीनी, मैं तुमसे बहनकी तरह कहती हूँ। तेरी हितैषी मित्रकी तरह कहती हूँ अगर मेरी सलाह मानो तो बेरनसे शादी कर डालो!

[इरीना रोने लगती है]

ओल्गा—[पुचकार कर] तुम्हीं देखो, तुम उसकी कितनी इज्जत करती थी हो। उनके बारेमें तुम्हारे विचार बड़े ऊँचे हैं। क्या हुआ अगर वे जरा कुरूप हैं। लेकिन आदमी कितने अच्छे हैं। ऐसा भी है कि, और सभी कोई तो प्यारके लिये ही शादी नहीं, बल्कि फ़र्जकी दृष्टिसे भी करते हैं। खैर, यह मेरा अपना मत है। मैं

तो बिना प्यार किये ही शादी करूँगी। मुझसे तो कोई भी शादीका प्रस्ताव करे, मै उसीसे शादी कर लूँगी। हॉ बस, आदमी भला हो मै तो बूढे तकसे शादी करनेको तैयार हूँ।

इरीना—अभी तक तो आशा लगी रही कि हमलोग मॉस्को चले जायेगे—वहॉ मै अपने सच्चे प्रेमीसे मिलूँगी—मै उसे सपनोमे देखती रही हूँ ..उसे निरन्तर प्यार करती रही हूँ, लेकिन अब लगता है, वह सब बकवास है, कोरी बकवास...और कुछ नही।

ओल्गा—[अपनी बहनको बॉहोमें बॉध लेती है] मेरी बहन, प्यारी बहन, मै सब समझती हूँ। जब बैरन ने फौजकी नौकरी छोड दी थी और सादा कोट पहनकर हमारे यहॉ आये थे तभी मेरे मनमे आया—कैसे कुरूप लगते है ये! मै तो सचमुच रोने-रोनेको हो आई। उन्होने मुझसे पूछा.. 'क्यो रोती हो?' मै उन्हे कैसे बताती?—लेकिन भगवान अगर तुम दोनोकी जोडी मिला दे तो मुझे बडी खुशी हो.. वह तो मै ने एक बातकी बात कही। तुम खुद जानती हो—मेरा मतलब दूसरा है।

[नताशा हाथमें एक मोमबत्ती लेकर बिना कुछ बोले दाहिने दरवाजेमे मचको पार करती हुई बायें दरवाज़ेकी ओर चली जाती है]

माशा—[उठ बैठती है] ऐसी चुपके-चुपके घूमती है, जैसे गॉवमें आग इसीने लगाई हो।

ओल्गा—माशा, तुम तो बेवकूफ हो। बुरा मत मानना, घर भरमें अगर कोई बुद्धू है तो तुम।

[कुछ देर चुप्पी]

माशा—ओल्गा और इरीना दीदी, मैं आपके सामने अपना 'पाप' स्वीकार करना चाहती हूँ—मेरे दिलमें बड़ी उथल-पुथल मची है। मैं बस तुम्हारे सामने ही स्वीकार कर रही हूँ, फिर कभी किसीके सामने कुछ नहीं बोलूँगी [धीरे-से] यह मेरा गुप्तभेद है, लेकिन आपसे छिपानेमें क्या है। मेरे दिलमें बात समा नहीं रही [कुछ देर ठिठक कर] मैं प्यार करने लगी हूँ...प्यार करने लगी हूँ। मैं किसीको प्यार करने लगी हूँ। आपलोगोंने अभी-अभी उसे देखा है...अच्छा लो, अब सीधा ही बताये देती हूँ...मैं वेर्शिनिनको प्यार करती हूँ!

ओल्गा—[अपनी मसहरीके पीछे जाते हुए] छोड़ो भी। तुम कुछ करो, मुझे नहीं सुनना।

माशा—लेकिन मैं करूँ क्या? [अपने माथेको हाथोंसे दबा लेती है] पहले तो मुझे वह बड़े विचित्र-अनोखे-से लगे.. फिर उनपर बड़ी दया आई...फिर अचानक मैं उन्हें प्यार करने लगी। उनके स्वर, उनकी बातें, उनके दुर्भाग्य और उनकी दोनों लड़कियों, सभीको प्यार करने लगी।

ओल्गा—[पर्देके पीछेसे] खैर, मुझे तुम्हारी कोई बात नहीं सुननी। मुझे तुम्हारे बुद्धू-पनेकी एक भी बात नहीं सुननी।

माशा—उँह, ओल्या दीदी, तुम खुद बुद्धू हो...मैं तो उन्हें प्यार करने लगी हूँ—मेरी यही कमबख्ती है। मतलब, मेरी तकदीरमें यही लिखा है। और उन्हें भी मुझसे प्यार है। बस, यही बुरी बात है। है न यही बात? अच्छा क्या यह गलत है? [इरीनाकी बाँह थामकर उसे अपनी ओर खीचती है] मेरी प्यारी दीदी, हमलोग कैसे अपनी-अपनी जिन्दगियाँ बिताएँगी? हमारा क्या होगा?. जब हम कोई उपन्यास पढते है तो सब कुछ बडा सहज,

बडा बासी-बासी लगता है, लेकिन जब खुद प्यारमें पड जाते हैं तो लगता है जैसे न तो कोई कुछ देखता है, न समझता है.. सारी बातोंको हमें खुद ही सुलझाना होगा। मेरी प्यारी दीदी, मेरी बहन...जो सत्य था सो मैंने आपके सामने कह दिया। अब एकदम मुँह बन्द करके बैठी जाती हूँ...मैं गोगोलके पागल जैसी बनी जाती हूँ...चुप.. बिलकुल चुप।

[आन्द्रे और उसके पीछे-पीछे फैरापोण्टका प्रवेश]

आन्द्रे—[गुस्से से] समझमें नहीं आता, तुम आखिर चाहते क्या हो?

फैरापोण्ट—[अधीरतासे दरवाजेमें से ही] आन्द्रेसर्जीएविच , मैं आपको दस बार तो बता चुका।

आन्द्रे—पहली बात तो यह कि मैं आन्द्रे सर्जीएविच् बिलकुल नहीं,—तुम्हारे लिए सरकार हूँ।

फैरापोण्ट—सरकार, कोयला झोंकनेवाले पूछते हैं कि क्या वे आपके बगीचेमें होकर नदी तक चले जायँ? वर्ना उन्हें बेकार ही दुनिया भरका चक्कर लगाकर जाना पडेगा।

आन्द्रे—बहुत अच्छा उनसे कह दो—ठीक है। [फैरापोण्ट चला जाता है] मेरी तो नाकमें दम आ गया इनके मारे। ओल्गा कहाँ है? [ओल्गा मसहरीके पीछेसे निकल कर आती है] मैं तुमसे आलमारीकी ताली माँगने आया था। मेरी तालियाँ—जाने कहाँ खो गईं। तुम्हारे पास एक छोटी-सी चाबी है न?

[ओल्गा उसे चुपचाप चाबी दे देती है। इरीना मसहरीके पीछे चली जाती है। एक चुप्पी]

आन्द्रे—कैसी भीषण आग थी, उफ! अब तो बुझने लगी है भाडमें जाय, इस फैरापोण्टके बच्चेने मुझे इतना झल्ला दिया कि मैं भी

क्या बेवकूफीकी बात कर बैठा—'सरकार!' [कुछ देर चुप रहकर] ओल्या, तुम क्यों बोलती नहीं ?. [फिर एक क्षण चुप्पी] अब तो यह बेवकूफी और व्यर्थका रूठना-मटकना छोड़ दो .अच्छा माशा, तुम भी यहीं हो, और इरीना भी है। बड़ा अच्छा हुआ। तो आओ, आज हमलोग बैठकर सारी बातें हमेशाके लिए साफ कर लें। तुम्हें मुझसे क्या-क्या शिकायतें हैं ? क्यों ?

ओलगा—आन्द्रूशा, अब छोड़ो भी। कल बातें करेंगे, [घबरा जाती है] आजकी रात कैसी मनहूस है।

आन्द्रे—[एकदम बौखलाकर] जोशमें मत आओ मैं तुमसे बहुत ही शान्तिसे पूछ रहा हूँ कि तुम्हें मुझसे शिकायतें क्या क्या हैं, मुझसे साफ-साफ कहो न...।

[वेर्शिनिनका स्वर—त न न न् त् म—त न न् .]

माशा—[उठ खड़ी होती है। ऊँचे स्वरसे] त्‌म त न न—तन न. [ओलगासे] अच्छा ओल्गा दीदी, नमस्कार। ओल्गा खुदा हाफिज। [पर्देके पीछे जाकर इरीनाका चुम्बन लेती है] खूब अच्छी तरह सोना.. आन्द्रे भैया, नमस्कार.. अच्छा हो, तुम अब इनका पीछा छोड़ दो। ये बहुत थक गई हैं.. सारी बातें कल तय कर लेना।

[चली जाती है]

ओलगा—आन्द्रे भैया, इन सब बातोंपर कल ही बात-चीत कर लेंगे न [पर्देके पीछे चली जाती है] अब हमलोगोंके सोनेका समय हो चला है।

आन्द्रे—मुझे जो कहना है, जब वह सब कह लूँगा, तभी जाऊँगा। सीधी

बात पहले तो यह कि तुम्हें मेरी पत्नी नताशाके खिलाफ कुछ शिकायतें है—और वे आजसे नही, जिस दिन मेरी शादी हुई उसी दिनसे है। मेरी तो राय यह है कि नताशा, अद्भुत स्त्री है—बडी विचारवान, बडी ईमानदार, बडी स्पष्टवक्ता और बडी सम्मान-योग्य। मै अपनी पत्नीको प्यार करता हूँ—उसकी इज्जत करता हूँ, समझीं तुमलोग? मै उसकी इज्जत करता हूँ—और दूसरोसे उम्मीद करता हूँ, वे भी उसकी इज्जत करे। मै फिर कहता हूँ कि वह बहुत महान और सहृदय औरत है और उससे तुम्हे जो-जो शिकायते है वे सब तुम्हारी बहक है—बुड्ढियो जैसी सनक है बुड्ढियाँ न कभी अपनी भाभियोको पसन्द करती है, न कर सकती है। सारी दुनियाका कायदा है। [कुछ देर चुप रहकर] दूसरे : तुम लोग मुझसे इसलिए भी नाराज हो कि मै प्रोफेसर क्यो नहीं बना—कुछ पढने-लिखनेका काम क्यों नहीं करता। लेकिन मैं प्रशासक [ऐडमिन्स्ट्रेटर] जेमस्त्वोकी नौकरीमें हूँ। ग्राम-पचायतका मेम्बर हूँ, और समझता हूँ कि यह नौकरी भी इतनी ही पवित्र और महान है, जैसी पढने-पढाने की। अगर तुम सुनना ही चाहती हो, तो मै सुनाये देता हूँ कि मै ग्राम-पचायतका मेम्बर हूँ और मुझे इस पर गर्व है [कुछ देर चुप रहकर] तीसरे, एक बात और भी कहना चाहता हूँ। मैने तुम्हारे बिना पूछे ही घरको गिरवी रख दिया है। हाँ, चाहो तो इस बात पर तुम मुझे कुसूरवार ठहरा सकती हो। तुमसे इसके लिए माफी चाहता हूँ। मुझे पैंतीस हजार कर्जेकी वजहसे यह सब करना पडा है। जुआ अब मै कहाँ खेलता? ताशोको बहुत पहले ही तिलाजलि दे चुका। लेकिन अपने बचावके लिए सबसे बडी बात मै यह कह सकता हूँ कि तुमलोग

अविवाहित लडकियॉ हो, सो पिताजी की पेंशन तुम्हे मिल जाती है। मुझे क्या मिलता है? कह लो, अपनी मजदूरी .

[चुप्पी रहती है]

कुलिगिन—[दरवाजेसे ही] यहॉ माशा है क्या? [चिन्तित होकर] गई कहॉ? अजब झंझट है।

[चला जाता है]

आन्द्रे—अब सुनेंगी थोडे ही। नताशा, बडी महान् महृदय औरत है। [मञ्चपर इधरसे उधर घूमता है। फिर रुक जाता है] जब मैंने इससे शादी की थी तो सोचा था, हमलोग बडे प्रसन्न रहेंगे, सबके सब खुश रहेंगे, लेकिन.. हाय, भगवान् [रोने लगता है] बहनो, मेरी प्यारी बहनो, मैंने जो भी कुछ कहा है उसे सच मत मानना उस पर विश्वास मत करना।

[चला जाता है]

कुलिगिन—[दरवाज़ेसे ही बडी बेचैनीसे] माशा कहॉ है? यहॉ नहीं है क्या? अजब बात है?

[चला जाता है]

[सडकपर आग बुझानेवालोंकी घण्टी बजती है। मञ्च बिलकुल खाली है]

इरीना—[पर्देके पीछेसे] ओल्गा, यह फर्शको कौन खटखटा रहा है?

ओल्गा—डाक्टर शैबुतिकिन है...नशेमे धुत है।

इरीना—[कुछ देर रुककर] ओल्गा! [अपने पर्देसे मुँह निकाल कर झॉकती है] तुमने सुना कुछ? फौज यहॉसे हटाकर कहीं ले जाई जा रही है। फौजवालोंका कहीं बहुत दूर तबादला हो जायेगा।

ओलगा—कोरी अफवाह ही अफवाह है।

इरीना—ओल्या, हमलोग फिर अकेली रह जाएँगी न?

ओलगा—अच्छा?

इरीना—मेरी दीदी, मेरी बहन, मेरे दिलमें बैरनकी बडी इज्जत है। उनके बारेमें मेरे विचार बडे ऊँचे है। वे बहुत ही अच्छे आदमी है। मैं राजी हूँ कि उनसे शादी कर लूँगी.. बस, किसी तरह हमलोग मॉस्को चले चले.। तुम्हारे हाथ जोडती हूँ—जैसे भी हो चलो। मॉस्कोसे [बढकर इस दुनियामें कुछ नहीं है, चलो ओल्या, चले वहीं चले..।

[पर्दा गिरता है]

चौथा अंक

[उसी वर्षकी शरद ऋतु । ठीक दोपहरीका समय । प्रोज़ोरोव परिवारके मकानका पुराना बगीचा । दोनों ओर देवदारके पेड़ोंकी एक लम्बी चली जाती सड़क—और उसके छोर पर एक नदीका दृश्य । नदीके दूसरे किनारे पर जंगल । दाहिनी ओर घरका बरामदा । एक मेज़ पर रखे काँचके गिलासों और बोतलोंसे स्पष्ट है कि अभी यहाँ बैठकर शॅम्पेन पी जा रही थी । कभी-कभी सड़कसे बगीचेको पार करते हुए लोग नदीकी ओर आते-जाते रहते हैं । पाँच सिपाही दनदनाते हुए गुजर जाते हैं । मज़ेमें आया हुआ आनन्दपूर्ण मुद्रामें, शेबुतिकिन बागमें एक आराम-कुर्सी पर बैठा, बुलाये जानेकी राह देख रहा है । उसकी यह मनस्थिति पूरे अंकमें चलती है । उसके सिर पर फौजी टोपी और हाथमें छड़ी है । इरीनाके साथ कुलिगिन [सफाचट मूँछे और छाती पर गोदना] और तुज़ेनबाख़ बरामदेमें खड़े फैदोतिक और रोदेसे विदा ले रहे हैं । कूचकी वर्दी पहने हुए दोनों अफसर सीढ़ियोंसे नीचे उतर रहे हैं]

तुज़ेनबाख़—[फैदोतिकका चुम्बन लेते हुए] फैदोतिक, तुम बड़े अच्छे आदमी हो.. । देखो न, हमलोगोंने कैसे साथ-साथ हँसी-खुशी दिन बिता दिये.. [रोदेका चुम्बन लेकर] एक बार फिर . नमस्कार, मेरे दोस्त ! विदा दो । .

इरीना—अगली बार मिलने तकके लिए विदा ।

फैदोतिक—अगली बार मिलनेको नहीं—अन्तिम बार विदा । हमलोग फिर कभी मिल ही कहाँ पायेंगे, कभी . ?

कुलिगिन—कौन जाने ? [आँसू पोछकर मुसकराता है] लो देखो, मैं भी तो रोने लगा ।

इरीना—कभी न कभी हमलोग जरूर मिलेंगे ।

फ़ेदोतिक—शायद कभी दस-पन्द्रह साल बाद ! लेकिन तब शायद हमलोग एक-दूसरेको पहचान भी मुश्किलसे पायें और अगर मिलें भी, तो शायद बड़े मरेमन और बुझे-बुझेसे । [कैमरेसे तस्वीर उतारता है] चुपचाप खड़ी रहो । . आखिरी बार, एक और ।

रोदे—[तुजेनबाखको गले लगाकर] हमलोग अब एक-दूसरेको नहीं देख पायेंगे । [इरीनाका हाथ चूमता है] आपने हमारे साथ जो-जो किया है उसके लिए धन्यवाद—शुक्रिया ।

फ़ेदोतिक—[परेशानी से] अरे भाई, जरा ठहरो तो सही ।

तुजेनबाख—भगवानने चाहा तो हमलोग फिर मिलेंगे । हमें पत्र लिखना । सुना, हमें लिखना भूलना मत ।

रोदे—[बागमें चारो ओर दूरतक देखते हुए] अच्छा वेलि-वृक्षो विदा दो [जोरसे चीखता है] ओऽऽहोऽऽ [कुछ देर ठहरकर] गूँजती आवाजो, अब विदा दो ।

कुलिगिन—कौन जाने तुम पोलैण्डमें जाकर शादी ही कर डालो । तुम्हारी पोलिश पत्नी तुम्हें गोदमें भरकर कहेगी—'मेरे कोखोनी ।'

[हँसता है]

फ़ेदोतिक—अब तो अपने पास आध घण्टेमें भी कम समय है । हमारी फौजमेंसे बजरेके साथ सामान लदवाकर सिर्फ सोल्योनी ही जा रहा है । हमलोग सब मुख्य हिस्सेके साथ रहेंगे । फौजकी तीन टुकड़ियाँ आज जा रही हैं, तीन कल और चली जायेंगी । इसके बाद तो सारी बस्तीमें शान्ति और सन्नाटा छा जायेगा ।

तुजेनबाख़—साथ ही साथ एक भयङ्कर उदासी और मुर्दनी भी तो छा जाएगी।

रोदे—मार्या सर्जाएव्ना कहाँ गई ?

कुलिगिन—माशा बागमें है।

फैदोतिक—उनसे भी तो विदा ले लें हमलोग।

रोदे—अच्छा, अब विदा दें। हम वहीं चले चलेंगे, या लीजिये मैं यहींसे चिल्लाना शुरू करता हूँ। [जल्दी-जल्दी तुजेनबाख़ और कुलिगिनको गले लगाकर इरीनाका हाथ चूमता है] यहाँ हमलोगोंका समय कैसे आनन्दमें बीत गया।

फैदोतिक—[कुलिगिनसे] कभी-कभी अपनी याद दिलानेको यह यादगार है। आपके लिए पेन्सिल और एक नोटबुक है। अब हमलोग यहींसे सीधे नदी पर चले जाएँगे।

[जाते हुए दोनों मुड-मुडकर देखते है।]

रोदे—[जोरसे पुकारकर] हल्लोऽऽ।

कुलिगिन—[उसी तरह जोरसे] अल–विदाऽऽ

[नेपथ्यमें रोदे और फैदोतिक माशासे मिलते हैं और उससे विदा लेते हैं। वह भी उनके साथ चली जाती है।]

इरीना—ये लोग चले गये.. [बरामदेकी अन्तिम सीढ़ी पर बैठ जाती है]

शेबुतिकिन—मुझसे विदा लेनेका तो शायद उन लोगोंको ध्यान भी नहीं आया..।

इरीना—और आप आखिर डूबे हुए किस सोचमें थे।

शेबुतिकिन—अरे हाँ, मैं खुद भी भूल गया था। पर खैर, मैं तो उनसे फिर जल्दी ही मिल लूँगा। कल ही तो जाना है। जी हाँ, मेरे

पास एक दिनका समय और है। सालभरमें मेरा नाम रिटायर्ड लोगोंकी सूचीमें आ जायेगा। इसके बाद तो यहीं लौट आऊँगा और बाकी सारी जिन्दगी तुमलोगोंके पास ही बिता दूँगा। [जिस अखबारको पढ रहा था उसे जेबमें रखता है और दूसरा निकाल लेता है] इसबार यहाँ आकर मैं एकदम नई तरहकी जिन्दगी शुरू करूँगा। ऐसा शान्त सीधा बन जाऊँगा कि बस। भगवान्से डरा करूँगा। सबसे बडी अच्छी तरह व्यवहार करूँगा।

इरीना—डाक्टर साहब, आपको तो सचमुच अपने जीवनका ढर्रा बदल ही देना चाहिये। जो भी हो—आपके लिए यह बहुत जरूरी है।

शैबुतिकिन—हाँ, मुझे खुद भी यही लगता है [धीरे-धीरे गुन-गुनाता है] तरारा .रा रा...बूम.. तरारा...रा बूम...

कुलिगिन—अरे, हमारे डाक्टर साहब पूरे चिकने घडे हैं, चिकने घडे !

शेबुतिकिन—हाँ, तुम मुझे सिखाने-पढानेका जिम्मा ले लो तो भले ही कुछ सुधर जाऊँ शायद !

इरीना—फ्योदोरने अपनी सारी मूछें मुडा डाली हैं। अब इनकी ओर देखा तक नहीं जाता।

कुलिगिन—क्यों ? क्या बुराई है ?

शेबुतिकिन—तुम्हारा चेहरा अब कैसा लगता है, मैं बता सकता हूँ लेकिन बताऊँगा नहीं।

कुलिगिन—छोडिये भी.. क्या होता है मूछें मुडा लेने से ?.. हमारे हेड-मास्टर साहब मुँछ-मडे हैं और जब मैं उनका सहायक हेड-मास्टर हो गया तो मैंने भी सफाचट करा ली। अगर किसी को पसन्द नहीं है तो मैं क्यों चिन्ता करूँ ? मुझे तो सन्तोष है। मूछें रहें या न रहें, मुझे दोनों तरह सन्तोष है।

[बैठ जाता है]

[पृष्ठभूमिमें एक बच्चा-गाड़ीमें बच्चा सुलाये हुए आन्द्रे उसे इधर-से-उधर धकेलता रहता है]

इरीना—डाक्टर साहब, सचमुच मेरे मनमें बड़ी कुलबुलाहट मच रही है। कल आप छायादार सड़क पर गये थे न, सच सच बताइये वहाँ हुआ क्या ?

शेबुतिकिन—क्या हुआ ? कुछ नहीं। कोई खास बात नहीं, [अख़बार पढ़ता है] कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं है।

कुलिगिन—किस्सा यह है कि सोल्योनी और बैरन कल थियेटरके पास छायादार सड़क पर मिले।

तुजेनबाख़—ऊँह, छोड़िये भी वाकई [अपने हाथको जोरसे झटक कर घरके भीतर चला जाता है]

कुलिगिन—थियेटरके पास सोल्योनीने बैरनको चिढ़ाना और तंग करना शुरू कर दिया। इनसे सहा नहीं गया। इन्होंने भी कुछ तेज बातें कह दीं...गाली वाली।

शेबुतिकिन—मुझे कुछ नहीं पता। लेकिन यह सब बकवास है।

कुलिगिन—एक गिरजाघरके टीचरने लेखके अन्तमें लिख दिया—'बकवास।' अब इस शब्दको लैटिनका समझकर शिष्य बड़ा परेशान हुआ [हँसता है] अजब मजाक है। लोग कहते हैं सोल्योनी इरीनाको प्यार करता है, इसीलिए बैरन साहबसे उसे घृणा है। यों है तो यह स्वाभाविक ही। इरीना लड़की बड़ी अच्छी है [नेपथ्यसे—'आओ हल्लोऽऽ !' का स्वर]

इरीना—[चौंककर] पता नहीं क्यों, आज जरा-जरा-सी बातसे मैं सहम उठती हूँ। [कुछ देर रुककर] मेरी तैयारी पूरी हो चुकी। खानेके

बाद ही मै सारा सामान भेज दूँगी। कल मेरी और बैरनकी शादी हो जायेगी। कल हमलोग ईंटोके भट्ठेवाले मैदानमे चले जायेगे—फिर अगले दिन ही मै स्कूलमे पहुँच जाऊँगी। अब एक नया-जीवन शुरू हो रहा है. हे भगवान्, मेरे ऊपर दया रखना—देखूँ, ईश्वर अब मेरी सहायता किस प्रकार करते है। जब मैने टीचरीका इम्तहान पास किया था तब मनमे ऐसा आनन्द, ऐसा उल्लास उमडा कि मै रो पडी थी [कुछ देर रुककर] सामान ले जानेके लिए थोडी देर बाद गाडी आ जायेगी।

कलिगिन—और तो सब ठीक है, मगर न जाने क्यो, मुझे इस सबमे वह गम्भीरता दिखाई नहीं देती जो इस तरहकी बातोमे होती है. . आदर्श ही आदर्शकी बाते है—गम्भीरता है ही नहीं। खैर, जो हो मेरी हार्दिक कामना है तुम सुखी होओ।

शेबुतिकिन—[गद्गद होकर] मेरी बेटी, मेरी सोनेकी चिडिया!

कुलिगिन—हाँ, आज मारे अफसर लोग चले जायेगे और बाकी सारी चीजे धीरे-धीरे जैसे जाया करती है, जाती रहेगी। लोग चाहे जो कहे—माशा कमालकी औरत है। मै तो उसपर जान देता हूँ और अपने भाग्यको सराहता हूँ। इस जिन्दगीमे लोगोंकी भी तरह-तरहकी तकदीरे होती है। यहाँ आबकारीके महकमेमे एक आदमी है—नाम है कोजीरेव। हम और वह साथ-साथ पढे थे, पर उसे पाँचवे क्लासमे ही स्कूलसे निकाल दिया गया क्योकि वह कभी—'ऊतकोजेकुतियुम*' का अर्थ ही नहीं समझ पाया। अब वह बडा दीन-हीन मरियल सा रहता है और जब

* लैटिन शब्द : UT Consecutivum = नतीजेमें

कभी मैं उससे मिलता हूँ तो कहता हूँ—कहो 'ऊत कोजेकृतियम,'—कैसे हो ? तो वह जवाब देता है.. "यों ही 'कोजेकृतियम' सा ही हूँ।" फिर खाँसने लगता है। और एक मैं हूँ जिन्दगीमें जब देखो तब सफल ही होता रहा। तकदीरका सिकन्दर ..द्वितीय श्रेणीमें मैंने स्तानिस्लावकी डिग्री ली और अब दूसरोंको वही—'ऊत कोजेकृतियम' शब्द पढाता हूँ। यह तो ठीक है कि मैं बहुत-सों से ज्यादा तेज और समझदार आदमी हूँ, लेकिन मेरी खुशीका असली कारण यह नहीं है।

[कुछ देर चुप्पी रहती है]

[घरमें पयानोपर 'माता-मेरी' की प्रार्थना बजती है]

इरीना—कल सन्ध्याको मैं यह 'माता मेरी' की प्रार्थना नहीं सुन रही होऊँगी.. प्रोतोपोवसे नहीं मिल रही होऊँगी [एक क्षण रुककर] प्रोतोपोव ड्राइंगरूममें बैठे हैं। आज फिर आ गये हैं वे।

कुलिगिन—अभी तक अपनी हेड-मास्टरनी नहीं आई।

इरीना—नहीं, उन्हें आज बुलवाया है। काश, तुम जान पाते कि ओल्गा दीदीके बिना यहाँ अकेले रहना कितना मुश्किल है। अब वे स्कूलकी हेड-मास्टरनी हो गई हैं, स्कूलमें रहने लगी हैं। सारे दिन व्यस्त रहती हैं और यहाँ मुझे बड़ा अकेला-अकेलापन लगता है। मैं ऊब उठी हूँ। यहाँ कुछ भी तो करनेको नहीं है। जिस कमरेमें मैं रहती हूँ उस तकसे मुझे नफरत हो उठी है। अब तो मैंने जान लिया है कि जब किस्मतमें मॉस्को जाना ही नहीं बदा, तो फिर जो है सो सब ठीक ही है। तकदीरका खोट है, इसमें किसीका क्या बस है.. सच है 'होना है वही जो मंजूरे खुदा होना है।' निकोलाय ल्वेवोविचने जब दुबारा मुझसे विवाह-

प्रस्ताव किया तो मैने उसपर फिर विचार किया, और तय ही कर डाला है। आदमी वे अच्छे है. .सचमुच इतने अच्छे है कि देख-देखकर बडा आश्चर्य होता है। अब तो अचानक मुझे ऐसा लगने लगा है जैसे मेरी आत्मामे पख उग आये हो। मन बडा हल्का हल्का लगता है और फिरसे मनमे धुन उठती है काम करो...काम करो। सिर्फ कल एक बात हो गई—कोई रहस्यमय है जो मेरे सिर पर मॅडरा रहा है—ऊपर चक्कर काट रहा है।

शेबुतिकिन—बकवास है।

नताशा—[खिडकीसे] हेड-मास्टरनी।

कुलिगिन—हेड-मास्टरनी आ गई। चलो, अब भीतर चले।

[इरीनाके साथ भीतर चला जाता है]

शेबुतिकिन—[अखबार पढता हुआ धीरे-धीरे गुनगुनाता जाता है] तरारा बूम. तरा रारा बूम ..

[माशा पास आ जाती है। पीछे आन्द्रे बच्चागाडीको धकेल रहा है]

माशा—आप यहॉ गुमसुम जमे बैठे है।

शेबुतिकिन—हॉ, हॉ—तो बात क्या है?

माशा—[बैठ जाती है] कुछ नही . [कुछ देर चुप रहकर] आप मॉ को प्यार करते थे न?

शेबुतिकिन—जी जान से।

माशा—और वे भी आपको करती थीं?

शेबुतिकिन—[कुछ देर रुककर] इसका तो मुझे ध्यान नही है।

माशा—मेरा 'आदमी भी यहीं है क्या?—हमारी एक बावर्चिन थी मार्फा,

वह अपने सिपाही पतिको यों ही कहा करती थी—'मेरा आदमी यही है क्या ?"

शैबुतिकिन—अभी तक तो नहीं है।

माशा—जब खुशीको झपटकर, लडकर टुकडे-टुकडे नोच-नोचकर छीनना पडे और फिर भी वह हाथसे चली जाये, जैसे मेरे हाथसे चली जा रही है तो आदमी धीरे-धीरे चिडचिडा और कटखना बन जाता है. [अपनी छाती पर उँगली रखकर] मैं यहाँ भीतर-ही-भीतर धधक रही हूँ. [बच्चागाडीको धकेलते आन्द्रेको देखकर] एक यह हमारे आन्द्रे भैया है। हमारी तो सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। जैसे हजारों आदमी मिलकर कोई घण्टाघर खडा करें उसमें अथाह धन और अमाप श्रम लगे, और फिर अचानक वह भहरा कर नीचे आ गिरे, खील-खील बिखर जाय, सारी-की-सारी मेहनत बिना किसी वजह चली जाय बिल्कुल वैसा ही हमारे आन्द्रे भैयाने किया है।

आन्द्रे—घरमें शान्ति कब होगी ? उफ, कैसा शोरगुल है।

शैबुतिकिन—अभी हुई जाती है [घडी देखकर] मेरी यह घण्टी वाली घडी पुराने ढगकी है [घडीमें चाबी भरता है। घडी बजती है।] पहली, दूसरी और पाँचवी फौजी टुकडियाँ एक बजे जा रही है. [कुछ देर ठहरकर] और मैं कल जा रहा हूँ।

आन्द्रे—हमेशाके लिए ?

शैबुतिकिन—पता नहीं। शायद सालभरमें लौट आऊँ। बाकी, भगवान की मरजी। यहाँ रहूँ या वहाँ, मेरे लिए फर्क क्या है ? .

[दूर सडक पर वीणा और वॉयलिनके स्वर आता है]

आन्द्रे—सारा शहर एकदम खाली-खाली हो जायेगा। जैसे कोई ढक्कन

रखकर पूरे शहरको घोट दे...[कुछ देर रुककर] कल थियेटर के पास कोई घटना हुई है सो, सारे शहरमे उसीकी चर्चा है। लेकिन मुझे तो कुछ पता नहीं।

शैबुतिकिन—अरे साहब, कोई बात भी हो ? महज बेवकूफी। हुआ यह कि सोल्योनी, बैरनको चिढा रहा था : बैरन साहब बिगड़ खडे हुए और लगे उसे बुरा-भला कहने। नतीजा यह हुआ कि आखिरकार सोल्योनीने द्वन्द्वके लिए ललकार डाला। [घड़ी देखता है] मै समझता हूँ वक्त हो चुका। ठीक साढे-बारह बजे उस झाडी मे छिपकर नदीके पार हम देखेगे—ठॉय-ठॉय। [हँसता है] सोल्योनीको मुग़ालता है कि वह लर्मन्तोव है। वह तो लर्मन्तोवकी तरह कुछ लिखता-लिखाता भी है...मजाक नही, यह उसका तीसरा द्वन्द्व है।

माशा—किसका ?

शैबुतिकिन—सोल्योनी का।

माशा—और बैरनका ?

शैबुतिकिन—बैरनका क्या ? [कुछ देर चुप्पी]

माशा—मेरी तो कुछ भी समझमें नहीं आता। जो भी हो, आपको उन्हें ऐसा करने नही देना चाहिये। क्या ठीक है, वह बैरनको घायल कर दे या मार-मूर ही डाले।

शैबुतिकिन—माना, बैरन आदमी बहुत अच्छे है, लेकिन एक बैरन दुनियोंमें बना रहे या कम हो जाय इससे दुनियाका, क्या बनता बिगडता है ? उन्हें लड लेने दो। कोई बात नहीं। [बागके पार "ओ ऽ" और "हल्लो" की आवाजे] जरा ठहरो, यह समर्थक-स्क्वोर्त्सोव चिल्ला रहा है। नावमें सवार है।

[कुछ देर चुप्पी रहती है]

माशा—मैं तो समझती हूँ कि, द्वन्द्व-युद्धमें भाग लेना या डाक्टरकी हैसियतसे भी वहाँ उपस्थित रहना घोर पाप है।

शेबुतिकिन—यह तो सिर्फ लगता ऐसा है। असलमें हमलोग सत्य नहीं हैं। यह संसार भी सत्य नहीं है, हमलोगोंका कोई अस्तित्व ही नहीं, हमें तो सिर्फ लगता ऐसा है कि हमारा अस्तित्व है। और जो कुछ सिर्फ लगता हो उसमें कुछ तथ्य नहीं होता।

माशा—कैसे लोग सारे दिन बकते रहते हैं [जाते हुए] एक तो इस ऐसे मौसममें रहना; जब हर वक्त बरफ पडनेका खतरा हो, और उसके ऊपरसे फिर ये सारी ऊल-जलूल बातें। [रुक जाती है] मेरा मन घरके भीतर जानेको नहीं करता। नहीं, मैं भीतर नहीं जा पाऊँगी। वेर्शिनिन जब आजाएँ तो बता दीजिये [पेडोंवाले रास्ते पर चलते हुए] चिड़िया दक्षिणकी ओर उड़ी जा रही हैं। [ऊपर देखती है] बत्तखो, जंगली बगुलो...मेरी चिड़ियो... सुन्दर-सुन्दर चिड़ियो!

[चली जाती है]

आन्द्रे—अब हमारा घर बिल्कुल सूना-सूना हो जायेगा। सारे अफसर जा रहे हैं। तुम जा रहे हो—इरीनाकी शादी हुई जा रही है—रह गया मैं, अकेला इस घरमें।

शेबुतिकिन—और तुम्हारी बीबी?

[फैरापोण्ट कुछ कागज लेकर प्रवेश करता है]

आन्द्रे—अरे भाई, बीबी तो बीबी ही है—बडी ईमानदार, भली, सहृदय सब कुछ हो सकती है, फिर भी उसकी कुछ बातें उसे ओछा और स्वार्थान्ध बना डालती हैं। खैर जो भी हो, वह मनुष्य नहीं है। मैं तुमसे दोस्तके नाते कहता हूँ। तुम्हीं तो एक ऐसे आदमी हो, जिसके सामने मैं अपना दिल खोलकर रख

सकता हूँ। मै उसे प्यार करता हूँ, यहाँ तक तो ठीक ही है, लेकिन कभी-कभी तो वह मुझे ऐसी गँवार और फूहड लगती है कि उस समय मेरी समझमे नहीं आता, क्या करूँ। उस वक्त इन सब पर भी ध्यान नहीं जाता। मैंने उसे प्यार दिया है या मै उसे प्यार करता हूँ—

शेबुतिकिन—[उठ खडा होता है] आन्द्रे बेटा, कल मै जा रहा हूँ और हो सकता है अब हमलोग फिर कभी भी न मिल पाये। इसलिये मेरी तुम्हें एक सलाह है : टोपी लगाओ, छडी लो और चल पडो। चलते चले जाओ, चलते चले जाओ, भूलकर भी पीछे मुडकर मत देखो—जितनी दूर चले जाओगे उतना ही अच्छा है। [कुछ देर चुप रहकर] लेकिन खैर, जो तुम्हारे मनमें आये सो करो—फर्क क्या पडता है।

[दो अफसरोंके साथ सोल्योनी मंचको पार करता है। शेबुतिकिनको देखकर उधर घूम पडता है। अफसर अपने रास्ते चले जाते हैं]

सोल्योनी—डाक्टर साहब, वक्त हो गया। साढ़े-बारह बज गये। [आन्द्रे से नमस्कार करता है]

शेबुतिकिन—एकदम ? उफ, तुम सबके मारे तो मेरी नाकमें दम है। [आन्द्रेसे] आन्द्रूशा अगर कोई मुझे पूछे तो कह देना, मैं अभी सीधा आता हूँ। [ठण्डी साँसे लेता है]

सोल्योनी—उफ, 'मुँहसे निकले बात नहीं, जब चढा पीठ पर हो भालू।'

[डाक्टरके साथ चलते हुए] बुढऊ, क्या टरटरा रहे हो ?

शेबुतिकिन—[इस आत्मीयताका विरोध करते हुए] आओ चलो।

सोल्योनी—कैसा लग रहा है ?

शैबुतिकिन—[झुँझलाकर] जैसे गद्दे पर मुग्दर पड़ा मस्ता रहा हो।

सोल्योनी—यार, ऐसे मत बौखलाओ। मैं ज्यादा कुछ थोड़े ही करूँगा। बस, गोलीसे तीतरकी तरह उसे खत्म ही तो कर दूँगा। [इत्र निकाल कर अपने हाथों पर छिड़कता है] आज तो मैंने पूरी बोतल खत्म कर डाली, फिर भी इनसे बदबू आती है। मेरे हाथोंमे मुर्दों जैसी बदबू आती है। [कुछ देर चुप रहकर] अच्छा हाँ,... तुम्हें वह कविता याद है "उद्विग्न हृदय है खोज रहा तूफानी-सागर, जैसे बैठी हो शान्ति, बना तूफानोंका घर।"..

शैबुतिकिन—हाँ, हाँ.. "मुखसे निकले बात नहीं जब चढ़ा पीठ पर हो भालू।"

[सोल्योनीके साथ चला जाता है। 'हल्लो ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ।' की आवाजें सुनाई देती हैं। आन्द्रे और फेरापोण्टका प्रवेश]

फेरापोण्ट—यह आपके दस्तखत करनेको कागज है।

आन्द्रे—[हताश और असहायसे ढगसे] मुझे अकेला छोड़ दो, मेरा पीछा छोड़ दो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ—[बच्चा-गाड़ीके साथ चला जाता है]

फेरापोण्ट—लेकिन कागजोंपर तो दस्तखत होने ही हैं।

[नेपथ्यमें वापस चला जाता है]

[इरीनाके साथ चटाईका बुना टोप पहने तुज़ेनबाख़ आता है। कुलिगिन "अरी ओ माशाऽऽऽ।' पुकारता हुआ मच पार करके चला जाता है]

तुज़ेनबाख़—लगता है कि बस्तीभरमें यही एक ऐसा आदमी है जिसे अफसरोंके जानेकी खुशी है।

इरीना—और होनी भी चाहिये [कुछ देर रुककर] अब हमारा शहर खाली हो जायेगा।

तुजेनवाख़—अच्छा इरीना, मै अभी आ रहा हूँ ।

इरीना—जा कहाँ रहे हो ?

तुजेनवाख—मुझे जरा शहरमे जाना है। फिर अपने साथियोको विदा करने भी जाना है ।

इरीना—झूठ बोलते हो । निकोलाय, आज तुम ऐसे उखडे-उखडेसे क्यो हो ? [कुछ देर रुककर] कल थियेटरके पास क्या बात हो गई थी ?

तुजेनवाख़—[बेचैनीकी मुद्रासे] मै अभी एक घण्टेमे यहीं तुम्हारे पास आये जाता हूँ । [उसका हाथ चूमता है] मेरी अप्सरा [उसके चेहरेकी ओर देखते हुए] लगातार पाँच सालसे मै तुम्हे प्यार करता आ रहा हूँ, फिर भी जैसे मेरा प्यार पुराना नहीं पडा । तुम मुझे रोज-रोज और भी ज्यादा अच्छी लगती जाती हो । कैसे सुन्दर-सुन्दर चमकदार तुम्हारे बाल है—कैसे अद्भुत तुम्हारे नयन है । कल मै तुम्हें यहाँसे ले जाऊँगा ! हम लोग खूब काम करेगे—धनी हो जायँगे.. तब जैसे मेरे सारे सपने साकार हो उठेगे। तुम्हें भी प्रसन्नता होगी। बस, मुझे सिर्फ एक ही शिकायत है कि तुम मुझे प्यार नहीं करती ।

इरीना—यह मेरे बसमे नहीं है, बैरन । मानो, मै तुम्हारी पत्नी बनूँगी और पतिव्रता स्वामि-भक्त रहूँगी। लेकिन तुम्हारे लिए मनमे प्यार नहीं है, मै क्या करूँ ? [रो पडती है] मैंने कभी जिन्दगीमे प्यार नहीं जाना । हाय, मैने प्यारके कैसे-कैसे सपने देखे है। रात-रात भर लगातार वर्षों मैने सपनोंमे प्यारको पाला है, लेकिन जैसे आज मेरी आत्मा उस अनमोल पयानोकी तरह रह गई है

जिसकी खोलनेकी चाबियाँ खो गई हों। [कुछ देर चुप रहकर] तुम बड़े उद्विग्न लगते हो।

तुज़ेनबाख़—सारी रात मैं सो नहीं पाया हूँ...कभी मेरे जीवनमें कोई ऐसी कोई बात नहीं हुई। जो मुझे डराये या तंग करे—बस, यही खोई हुई चाबी मेरे दिलमें भी कसकती रहती है, मुझे सोने नहीं देती। मुझसे कुछ बात करो न...? [कुछ देर चुप रहकर] मुझसे कुछ बोलो।

इरीना—मेरे पास तुमसे बोलनेको क्या है ?—क्या बोलूँ ?

तुज़ेनबाख़—कुछ भी।

इरीना—ना—ना

[चुप्पी]

तुज़ेनबाख़—कभी-कभी जिन्दगीमें कैसी-कैसी छोटी, नगण्य और महत्वहीन बातें अहम और महत्वपूर्ण बन जाती हैं। आदमी उन पर हँसता है, उन्हें बेवकूफी और बकवास समझता है, लेकिन फिर भी उन्हींसे जा भिड़ता है और तब लगता है कि उन्हें रोकने और टालनेका कोई उपाय नहीं है। खैर, छोड़ो—अब इस बारेमें हम बातें नहीं करें। मैं खुश हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे इन देवदारुके पेड़ोंको, चीड़के दरख्तोंको, भोजके वृक्षोंको जीवनमें पहली बार ही देख रहा हूँ, और लगता है जैसे ये सबके सब बड़ी उत्सुकतासे मुझे निहार रहे हैं, मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कैसे हरे-भरे सुन्दर पेड़ हैं—इनकी छायामें जिन्दगी कैसी अद्भुत होनी चाहिए थी . ['हल्लोऽऽहोऽ का' स्वर] मैं अब चलूँ वक्त हो गया देखो वह पेड़ मुरझा गया है लेकिन फिर भी दूसरोंके साथ कैसा हवामें झूमता है। मुझे भी यही लगता है कि मैं अगर मर भी गया तो किसी-न-किसी प्रकार जीवनमें मेरा हिस्सा

रहेगा। अच्छा मेरी इरीना—अब विदा दो। [उसका हाथ चूमता है] तुमने मुझे जो कागज दिये थे वे मेरी मेज पर कलैण्डरके नीचे रखे हैं।

इरीना—मैं भी तुम्हारे साथ चल रही हूँ।

तुजेनबाख—[चौंककर] नहीं...नहीं। [तेज़ीसे चला जाता है। फिर रविश पर रुककर] इरीना।

इरीना—कहो, क्या बात है?

तुजेनबाख—[समझमें नहीं आता क्या कहे] आज मैंने सुबह कॉफी ही नहीं पी। जरा मेरे लिए बनानेको कह देना।

[तेज़ीसे चला जाता है]

[इरीना विचारोंमें खोई-खोई-सी चुपचाप खड़ी रहती है। फिर दृश्यकी पृष्ठभूमिमें टहलती चली जाती है। वहाँ झूले पर बैठ जाती है। आन्द्रे बच्चा-गाड़ी लिये आता है। फैरापोण्ट फिर प्रगट होता है]

फैरापोण्ट—आन्द्रे सर्जेएविच, ये कागज मेरे बापके नहीं, सरकारी कागज हैं। मैंने तो इन्हे बना नहीं लिया।

आन्द्रे—उफ! सब कहाँ चला गया? मेरे उस अतीतको क्या हो गया, जब मैं जवान था, प्रसन्न था, चतुर और विद्वान् था? जब एकसे एक अनूठे मेरे सपने और विचार थे और जब मेरा भूत और वर्तमान आशाकी किरणोंसे जगमगाया करता था? जीवनकी देहलीज पर पाँव रखते ही हम ऐसे बुझे-बुझे-से, मरियल, रूखे, मुर्दार, उदास, आलसी, निकम्मे और दुःखी क्यों हो जाते हैं? हमारे शहरको बने हुए दो-सौ साल होने जा रहे हैं एक लाख आदमी यहाँ रहते हैं। इन सबमें एक भी तो ऐसा नहीं है जो शेष सब दूसरों जैसा न हो—दूसरोंसे कहीं भी अलग हो—एक

भी सन्त हुआ हो, या हो, एक भी महान् उद्‌भट विद्वान् हो, कोई कलाकार रहा हो, या जिसमे कोई भी ऐसी खास बात रही हो कि मन मे उससे ईर्ष्या उपजे या उसके चरण-चिह्नो पर चलनेकी उत्कट लालसा हो बस, सब खाते है, पीते है, सोते है और फिर ठिकाने लगते है। जो पैदा होते है वे भी खाने-पीने सोनेमे लग जाते है, और एक-रसतासे बचनेके लिये ऊल-जलूल गप्पों, वोद्‌का, ताश और मुकदमेबाजीमे वक्त गुजारते है। पत्नियाँ पतियोको धोखा देती है और पति झूठ बोलते है। ऐसा भाव दिखाते है जैसे न तो उन्हे कुछ सुनाई देता है, न दिखाई। और इस गन्दगी, गलाजत का बोझ सिरसे पाँव तकका बच्चोके ऊपर लदा है.. उनके भीतरकी दैवी दीपशिखा बुझ जाती है और वे भी वैसे ही दयनीय, मरे-मराये बिल्कुल अपने माँ-बापो जैसे प्राणी बन जाते है। [फैरापोण्टसे गुस्सेसे]. क्या चाहिये तुझे ?

फैरापोण्ट—ऐंऽऽ? ये कुछ कागज हस्ताक्षर करनेको है।

आन्द्रे—हमेशा मेरी जानके पीछे लगा रहता है।

फैरापोण्ट—[उसे कागज देते हुए] यहाँ के खजानेका कुली अभी-अभी बताता था कि इस जाडेमे पीटर्सबर्ग मे दो-सौ डिग्री तक बरफ पडी।

आन्द्रे—वर्तमान घृणास्पद जरूर है, लेकिन जब मै भविष्य की बात सोचता हूँ तो लगता है कि वह जरूर अच्छा होगा। मनमे बडा हल्कापन, निश्चिन्तता जागती है।...क्षितिज मे एक प्रकाश फूटता चला आ रहा है, स्वतन्त्रता मुझे तो साफ दीख रही है। मै देख रहा हूँ कि मै और मेरी सन्ताने, आलस्यसे, जौ की शराबसे, इन

बत्तख और खीरेके कबाबोंसे, इन दावतो और सोनेसे, इस कमीनी और परोपजीवी जिन्दगीसे, छूट जायेगी, मुक्ति पायेगी।

फैरापोण्ट—और वह कहता था कि दो हजार आदमी बर्फसे जमकर मर गये, लोगोमे त्राहि-त्राहि मच गई। मुझे ठीक याद नहीं बात पीटर्सबर्गकी है या मॉस्कोकी।

आन्द्रे—[कोमल भावनाओंके आवेशमें] मेरी प्यारी बहने, मेरी अनोखी बहने [गद्‌गद्‌कण्ठसे] मेरी माशा, मेरी बहन !

नताशा—[खिड़कीसे झाँककर] यह इतने जोर-जोर से कौन बोल रहा है ? अरे आन्द्रूशा तुम हो ? तुम सोफी मुन्नीको जगाकर मानोगे [फ्रेंच में] सोफी सो रही है—उसे मत जगाओ भालू ! [गुस्सेसे] अगर तुम्हें बातें ही करनी हैं तो यह बच्चीवाली गाड़ी किसी औरको दे दो... [फैरापोण्टसे] मालिकसे गाड़ी ले लो।

फैरापोण्ट—अच्छा, सरकार। [गाड़ी ले लेता है]

आन्द्रे—[उचकचा कर] जोर-जोरसे तो मैं नहीं बोल रहा था।

नताशा—[अपने बच्चेको थपकते हुए, कमरेके अन्दरसे] बौबिक मुन्ना ! बेटा बौबिक; अरे दुष्ट।

आन्द्रे—[कागजों पर निगाह डालते हुए] बहुत अच्छा, इन्हें देख लेता हूँ और जहाँ जरूरत होगी हस्ताक्षर कर दूँगा—इसके बाद तुम इन सबको पञ्चायतमे ले जाना [कागज पढ़ता हुआ घरमें चला जाता है। फैरापोण्ट गाड़ीको धकेलता बाग में दूर ले जाता है]

नताशा—[कमरे में से] बौबिक बेटा, तेरी अम्माका नाम क्या है ?—बेटा मुन्ना, अच्छा देख ये कौन है ? ये तेरी मौसी ओल्या है। मौसीसे बोलो—"गुडमौर्निंग मौसी।"

[एक लडकी और एक लडके का घूम-घूमकर गानेवालोकी वीणा और वॉयलिन बजाते हुए प्रवेश। वेर्शिनिन, ओल्गा और अनफ़ीसा घरसे निकलकर चुपचाप एक मिनट गाना सुनते रहते है। इरीना आगे आ जाती है]

ओल्गा—हमारा बगीचा तो अब आम रास्ता ही हो गया। लोग आते-जाते है, घोडो पर चढकर घूमते है। दाई माँ, इन लोगोको कुछ दे दो।

अनफ़ीसा—[गानेवालो को पैसे देती है] जाओ, अब चले जाओ, भगवान् तुम्हारा भला करे बेटा [गानेवाले झुककर अभिवादन करते हुए चले जाते हैं] बेचारे! लोगोके पास खाने-पीनेको हो तो क्यो गली-गली गाते मारे फिरे [इरीना से] इरीना बेटी नमस्कार। [उसे चूमती है] अरे मेरी मुन्नी, बेटी, बरसो हो गये मुझे तो तुझे देखे। अब तो मै ओल्याके साथ हाईस्कूलके ही सरकारी मकानमे रहने लगी हूँ न! क्या करूँ, बुढापेमे यही भगवान्की मर्जी थी। अरे मै पापिनी इतने आरामसे सारी जिन्दगीमे कब-कब रही होऊँगी? खूब बडा मकान है! मुझे अपने लिए एक पूरा अलग कमरा है, अलग खटिया है। और खर्चा सारा सरकारी है. रातमे तडके ही मेरी आँखे खुल जाती है। हे भग-वान्, हे माता मेरी, मुझ जैसा सुखी संसारमे और कौन होगा?

वेर्शिनिन—[घडी देखकर] ओल्गा सर्जाएव्ना हमलोग, अब चलते है कूचका वक्त हो गया है.. [कुछ देर रुककर] मेरी कामना है, तुम्हे सब कुछ मिले तुम सुखी होओ। मार्या सर्जाएव्ना कहाँ गई.?

इरीना—कहीं बगीचेमे होगी . मै जाकर अभी देखे लाती हूँ।

वेर्शिनिन—हॉ, जरा जाना तो। मुझे जल्दी है।

अनफीसा—मैं भी चलकर उसे देखूँ [चिल्लाती है] माशेन्का.. होऽऽ [इरीना के साथ बागमें दूर चली जाती है] अरे ओऽऽऽऽ।

वेर्शिनिन—हर चीजका अन्त होता है। देखो न, अब हमलोग बिछुड रहे हैं .. [अपनी घडी देखता है] बस्तीवालोने हमे विदा-भोज दिया था न, सो हमलोग बैठे-बैठे शराब पीते रहे। मेयरने भाषण दिया। मै खाता रहा, सुनता रहा, लेकिन दिल मेरा यहॉ तुम्हारे पास लगा था [बाग़ मे चारो ओर देखते हुए] आपलोगोंमे मेरा मन बहुत-बहुत रम गया था।

ओल्गा—क्या हमलोग फिर कभी मिल पायेगे ?

वेर्शिनिन—शायद कभी नहीं ! [कुछ देर चुप्पी] मेरी पत्नी और दोनो छोटी बच्चियॉ यहॉ दो महीने और रहेगी।...अगर कोई बात हो जाय, या उन्हें कुछ जरूरत पड़े तो मेहरबानी करके...

ओल्गा—हॉ-हॉ, जरूर। आप बिल्कुल खातिर जमा रखिये [कुछ देर चुप रहकर] लेकिन कल सुबह बस्तीमे एक भी सैनिक नहीं रह जायेगा। सिर्फ़, याद रह जायेगी, और सचमुच, हमारे लिए तो जैसे जिन्दगी नये सिरेसे शुरू होगी। [कुछ देर चुप रहकर] पता नहीं क्या बात है, हम जैसा चाहती है, सब बाते ठीक उससे उल्टी होती है। मै हेडमास्टरनी नहीं बनना चाहती थी और आज वही बन गई हूँ। अब लगता है हम लोग मॉस्को भी नहीं रह पायेगे।

वेर्शिनिन—खैर, आप लोगोको बहुत-बहुत धन्यवाद। अगर कुछ भूल हो गई हो तो मुझे माफ कर देना। मै बहुत देर बक-बक करता रहा,

इसके लिए भी माफ करना। मेरे खिलाफ मनमे कोई दुर्भावना मत रखना।

ओल्गा—[आँखे पोंछकर] माशा क्यो नहीं आई अभी तक ?

वेर्शिनिन—विदा होते समय तुमसे और क्या कहूँ ? अब इसकी क्या दार्शनिक व्याख्या करूँ ?. [हँसता है] जीवन बडा कठोर है। हममेंसे बहुतोंको तो यह बिल्कुल सूना-सूना, खोखला, आशाहीन लगता है।.. फिर भी हमें मानना पडता है कि जिन्दगी अधिक-अधिक आसान और स्पष्टतर होती जा रही है। लगता है वह दिन दूर नहीं जब यह आनन्द और उल्लाससे भर उठेगी [घडी देखकर] अब मेरे चलनेका वक्त हो गया। पुराने जमानेमे लोग दिन-रात लडाइयोमे लगे रहते थे। उनकी जिन्दगी कूच—हमलों और विजयोसे ही भरी रहती थी, लेकिन अब वह सब अतीतकी बाते रह गई। हालाँकि उस युगके बाद एक ऐसा खाली स्थान, एक ऐसी दरार रह गयी है कि उसे भरनेवाली कोई चीज अभी तक हमारे पास नहीं है। मानवता उस दरारको भरनेवाले तत्वकी खोजमें है, जोरोमे खोज है और निश्चय ही एक दिन उसे खोज निकालेगी...काश, यह काम कुछ जल्दी हो जाता। [कुछ देर ठहर कर] तुम नहीं जानती ओल्गा, काश, परिश्रम और उद्योग भी सस्कृतिमे घुल-मिल जाते और सस्कृतिका गठबन्धन इनसे हो पाता तो कैसा अच्छा होता। [घडी देखकर] लेकिन, खैर, अब मेरा चलनेका समय हो गया।

ओल्गा—लो, यह आ गई।

[माशाका प्रवेश]

वेर्शिनिन—मै विदा माँगने आया हूँ।

[ओलगा उन्हे विदा मांगनेके लिए छोडकर अलग हट जाती है]

माशा—[उसके चेहरेको देखते हुए] अलविदा ! [एक प्रगाढ चुम्बन]

ओल्गा—बस-बस !

[माशा सिसक-सिसककर रो पडती है]

वेर्शिनिन—मुझे लिखना।...भूल मत जाना मुझे . अब चलने दो... समय हो गया है...ओल्गा सर्जीएव्ना, इसे सभॉलना, मुझे... मुझे अब चलना है। देर हो रही है [बडा उद्विग्न हो उठता है। ओल्गाका हाथ चूमता है। फिर माशाका आलिंगन करता है और तेजीसे चला जाता है]

ओल्गा—बस माशा !—अब बस करो बहन।

[कुलिगिनका प्रवेश]

कुलिगिन—[परेशानीसे] कोई बात नहीं। इसे रो लेने दीजिये...इसे रो लेने.. मेरी माशा.. मेरी प्यारी माशा...तुम मेरी पत्नी हो माशा, और जैसी भी हो, मै बहुत खुश हूँ.. मुझे कोई शिकायत नहीं है...आरोपका एक शब्द भी मैं नहीं कहता। देख लो, यह ओल्गा गवाह है . हमलोग इसी पुराने जीवनको फिर अपना लेगे। मै अब आगे एक भी शब्द नही कहूँगा...एक भी सकेत नहीं करूँगा।

माशा—[आँसू पीकर]—एक झुके हुए ढालू समुद्रके किनारे पर हरा-हरा शाह बलूतका पेड खडा है, बलूतके उस पेड पर सोनेकी एक जजीर है शाह-बलूतके उस पेड पर सोनेकी जजीर है. हाय, मै तो पागल हुई जा रही हूँ ..सागरके ढालू झुके किनारे पर...एक हरा-हरा शाह-बलूतका पेड...

ओल्गा—माशा, अपनेको जरा सँभालो बहन, जरा धीरज रक्खो माशा. . इसे जरा-सा पानी लाओ।

माशा—अब मैं कहाँ रो रही हूँ ?

कुलिगिन—हाँ, अब तो यह नहीं रो रही। यह तो बडी अच्छी है।

[कहीं गोली चलनेकी हल्की-सी आवाज़]

माशा—एक झुके हुए समुद्रके किनारे पर हरा-हरा शाह बलूतका एक पेड खडा है, बलूतके उस पेड पर सोनेकी जंजीर है। हरी हरी बिल्ली है, बलूत भी हरा-हरा है—अरे मैं तो दोनोंको गडमड किये दे रही हूँ [पानी पीती है] मेरी जिन्दगी बिल्कुल असफल रही। मेरी कोई चाह नहीं रही ..मैं चुप होकर बैठी जीऊँ। खैर! सागर-तटका अर्थ क्या है? यह शब्द क्यों हर वक्त मेरे दिमागमें गूँजते रहते हैं .मेरी खोपडीमें सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है।

[इरीनाका प्रवेश]

ओल्गा—अब अपनेको शान्त करो माशा। देखो, कैसी अच्छी लडकी है हमारी माशा। आओ भीतर चलें अब।

माशा—[झुँझलाकर] मुझे भीतर नहीं जाना। छोड दो मेरा पीछा।

[सिसकने लगती है, लेकिन फिर फ़ौरन ही अपनेको सँभाल लेती है]

मैंने अब इस घरमें जाना छोड दिया है, मैं नहीं जाऊँगी।

इरीना—अच्छा, अगर हमलोगोंको कुछ बात नहीं करनी तो चुपचाप साथ-साथ ही बैठे रहें। तुम्हें पता है, मैं कल चली जाऊँगी?

[कुछ देर चुप्पी]

कुलिगिन—आज तीसरे दर्जेके एक लडकेसे मैंने नकली मूँछें और दाढी छीन ली—देखो तो [दाढी और मूँछें लगाता है] मैं हू-बहू-

जर्मन-मास्टर जैसा लगता हूँ [हँसता है]. .. लगता हूँ न ? ये लडके भी कम्बख्त बडे मसखरे होते है !

माशा—तुम तो सचमुच, जर्मन-मास्टर जैसे दिखाई देते हो।

ओगा—[हँसते हुए] हाँ हूबहू !

[माशा रोने लगती है]

इरीना—माशा फिर यह क्या है ?

कुलिगिन—बुरी बात है।

[नताशा का प्रवेश]

नताशा—[नौकरानी से] क्या कहा ? सोफी मुन्नीके साथ प्रोतोप्रोव बैठेंगे और आन्द्रे सर्जाएविच बॉबिकको इधर-उधर घुमाएँगे। इन बच्चोंके साथ भी कितना कुछ करना पडता है [इरीना से] इरीना कल तुम चली जाओगी ? कैसे अफसोसकी बात है। एक हफ्ते और रुक जाओ न.. [कुलिगिन को देखते ही एक चीख मारती है। कुलिगिन हँस पडता है और दाढ़ी-मूँछें उतार लेता है] हाय, तुमने तो ऐसा डरा दिया। [इरीना से] मेरा तुम्हारे साथ कैसा मन लग गया था। तुम सोचती हो, तुमसे बिछुडनेका मुझे दुःख नहीं है ? तुम्हारे कमरेमे अपने वायलिनके साथमे आन्द्रेको रख दूँगी, वहीं बैठे-बैठे रगडा करेंगे...उनके कमरेमें सोफीको रख देंगे। कैसी प्यारी-प्यारी भोली बच्ची है। वह क्या बच्ची नहीं है हमारी ? आज मेरी तरफ ऐसी भोली-भोली आँखोंसे देखती रही—बोली : 'अम्मा'।

कुलिगिन—सचमुच, बडी प्यारी बच्ची है।

नताशा—कल मैं यहाँ बिल्कुल अकेली रह जाऊँगी [ठण्डी साँस भरके] सबसे पहले तो मैं इस देवदारुके पेडोंके रास्तेको कटवा दूँगी।

इसके बाद यह मोरपखीका पेड उडवा दूँगी। रातमे ऐसा भद्दा दिखाई देता है इनके मारे [इरीना से] बहन, यह कमरमे बँधा पटका तुम्हे बिल्कुल भी नहीं खिलता। अच्छी पसन्द नहीं है। तुम्हे तो कुछ हल्के रगका खिलेगा।.. .. इसके बाद मै खूब फूल लगवाऊँगी . फूल ही फूल.. फिर ऐसी खुशबू रहा करेगी.. [कडक कर] उस कुर्सी पर यह खानेका काँटा क्यो पडा है ? [घर में जाते हुए नौकरानी से] मै पूछती हूँ उस कुर्सी पर वह खानेका काँटा क्यो पडा है ? [चीखकर] जबान बन्द कर !

कुलिगिन—आज यह अपनी पर आ रही है।

[नेपथ्यमे कूचका बाजा बजता है। सब सुनते है]

ओल्गा—वही लोग जा रहे है।

[शेबुतिकिनका प्रवेश]

माशा—हमारे ही लोग जा रहे है। उन्हे यात्रा शुभ हो ! [अपने पतिसे] अब हमे भी घर चलना चाहिये। मेरा दुपट्टा और टोप कहाँ गया ?

कुलिगिन—मैने उन्हें भीतर घरमे ले जाकर रख दिया है. अभी लाये देता हूँ।

ओल्गा—हाँ, अब समय हो चुका। हम लोग घर चले।

शेबुतिकिन—ओल्गा सर्जीएव्ना।

ओल्गा—क्या बात है ? [ठिठक कर] क्या है ?

शेबुतिकिन—कुछ नहीं। पता नहीं तुमसे कैसे कहूँ.. [उसके कानमे फुसफुसाता है]

ओल्गा—[चौंक कर] है, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

शेबुतिकिन—हाँ, यही हुआ है। मै तो थककर चकनाचूर हो गया हूँ।

चिन्तासे मरा जा रहा हूँ...अब एक शब्द भी बोलनेको जी नहीं करता। [उद्विग्नतासे] पर खैर, दुनियाका इससे कुछ नहीं बनता-बिगडता।

माशा—हो क्या गया ?

ओल्गा—[इरीनाको बाँहोंमें भरकर] आजका दिन बडा मनहूस है! समझमें नहीं आता, कैसे तुम्हे बताऊँ। मेरी प्यारी बहन।

इरीना—क्या हुआ ? जल्दी बताओ न, क्या हुआ ? भगवान्के लिये जल्दी बताओ!

[रो पडती है]

शेबुतिकिन—अभी-अभी तुजेनबाख बैरन एक द्वन्द्व-युद्धमे मारे गये।

इरीना—[चुप-चुप रोते हुए] मुझे पता है! मुझे मालूम है।

शेबुतिकिन—[दृश्यके पीछेकी ओर बागकी एक बेंच पर बैठ जाता है] मेरा तो दम निकल गया.. [जेबसे एक अखबार निकाल कर] अब इन्हें रोने दो [गुनगुनाता है] त-रा-रा-रा तूम. ऐऽऽ... किसीका क्या आता-जाता है।

[एक-दूसरेको बाँहोंमें भरे तीनों बहने खडी हैं]

माशा—हाय, सुनो, कूच बाजेकी आवाजे सुनो, वे सब हमसे दूर चले जा रहे है। एक अभी-अभी गया है.. हमेशाके लिये चला गया। हमलोग अपने जीवनको नये सिरेसे शुरू करनेके लिये अब फिर अकेली बच गई है। हमे जिन्दा रहना पडेगा, जीवित रहना ही होगा।

इरीना—[ओल्गाकी छातीपर हाथ रखकर] समय आयेगा जब हर आदमी समझ जायेगा कि, यह सब क्यों होता है ? दुनियामें यह दुःख और मुसीबते क्यो है ? तब कोई भी रहस्य जैसी चीज

नहीं रह जायेगी। लेकिन तब तक हमें जिन्दा तो रहना ही पड़ेगी। हमें काम करना पड़ेगा। मेहनत और केवल मेहनत करनी पड़ेगा। कल मैं अकेली ही जाऊँगी और जिन-जिनको मेरी जरूरत है उन्हींकी सेवामें सारी जिन्दगी लगा दूँगी। अब शरद है, जल्दी ही शिशिर आकर हमें बर्फमें छा देगा. लेकिन मैं काम में लगी रहूँगी, लगी ही रहूँगी।

ओल्गा—[अपनी दोनों बहनोंको गले लगाकर] कैसा मनोहर, कैसा आशाप्रद, विश्वासदायक लगता है संगीत। मनमें जिन्दा रहनेकी अदम्य चाह जागती है। हे भगवान, यों ही समय गुजरता चला जाएगा—और हम लोग भी इसीके बहावमें हमेशा—हमेशाके लिये चली जाएँगी। लोग हमें भूल जाएँगे, हमारे चेहरोंको भूल जाएँगे, हमारे स्वरोंको भूल जाएँगे और पता नहीं हममें कितनी-कितनी बातें हैं जिन्हें कोई भी याद नहीं रखेगा। लेकिन हमारे दुख-दर्द, हमारे कष्ट, पीछे जीनेवालोंके सुखमें बदल जाएँगे, दुनियाँ में शान्ति और सुख छा जायेगा। तब लोग सुख से रहा करेंगे, और अपने पहलेवालोंको करुणापूर्ण स्वरमें याद किया करेंगे, आशीर्वाद देंगे। प्यारी बहनो, हमारे जीवनका अन्त यहीं नहीं हो जायेगा। हमलोग जीवित रहेंगी, यह संगीत कैसा आनन्ददायक, कैसा सुखद है कि मन होता है थोड़ी देर और चलता रहे, ताकि हम जान लें कि हम किसलिये जिन्दा हैं, हमें पता चल जाये कि हम यह क्यों दुख भोग रही हैं। काश, हम सिर्फ इतनी-सी बात जान पातीं। काश, इतनी बात जान लेतीं।

[संगीत धीरे-धीरे डूबता जाता है। बड़ा खुश-खुश हँसता हुआ कुलिगिन दुपट्टा और टोप लाता है। आन्द्रे बॉबिकको बैठाकर बच्चा-गाड़ीको धकेलता ले जाता है]

शेबुतिकिन—[गुनगुनाता है] तरा रा रा...बूम.. रे...ए...[अखबार पढ़ता है] कोई फर्क नही पड़ेगा.........कुछ भी नहीं बने-बिगड़ेगा।

ओल्गा—काश, हम सिर्फ समझ पातीं. .जान पातीं...।

[परदा गिरता है]